गीतावली सटीक

گیتاولی سٹیک

मूल गोसाईं तुलसीदासजी व टीका
श्रीवैजनाथजी कृत ॥

जिसमें

सातोंकाण्ड रामायणकी सम्पूर्णकथा अनेक
उत्तम२रागों में वर्णित है ॥

उसको

श्रीमत्कविजन मानसोल्लासक महामहोपाध्याय श्रीवैजनाथजी ने हरिभक्तों व सज्जनों के सरलता हेतु उत्तमरीति से ब्रजभाषा में टीका किया ॥

लखनऊप्रदेशान्तर्गत हैदराबादनिवासि मुंशी देवीदीनजीकी अभिरुचि और महात्मा हरिभक्तों व अन्य विद्यानुरागियोंके उपकारार्थ

पांचवीं बार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छापागया

अगस्त सन् १९०४ ई०

इस सत्कोंमें जितने प्रकारकी रामायण छपी हैं उनमें से कुछ इसमें लिखी हैं ॥

यह प्रसिद्ध पुस्तक गोस्वामि तुलसीदासजी की काव्य भारत वर्ष में है जिसके पढ़ने पढ़ाने से मनुष्य इसलोक में जीवन्मुक्त होकर अन्त में मुक्ति पाता है और इसके काण्ड पाठशालाओं में भी पढ़ाये जाते हैं और यह पुस्तक हरएक के घरमें होनी चाहिये और बहुतसे छापेखानोंमें यह पुस्तक लाखोंप्रति छपी है इस छापेखाने में बहुतसे रूपों में यह पुस्तक छपी है सो नीचे लिखे के अनुसार यह पुस्तक मिलेगी ॥

रामायण मूल तुलसीकृत बहुत मोटे अक्षरों की

बहुत मोटे अक्षरों में है जिसको बालक और वृद्ध सुगमता से पढ़सक्ते हैं ऐसे मोटे अक्षरों की आजतक कहीं नहीं छपी तसवीरों और क्षेपक समेत है ॥

रामायण मूल तुलसीकृत

जो बहुतसी प्रतियों से शुद्ध कीगई कोई दोहा चौपाई रहने नहीं पाया और इसके काण्ड अलग अलग भी मिलते हैं ॥

रामायण तुलसीकृत टीका सुखदेवलालकृत

इस टीका को मैनपुरीनिवासि श्रीसुखदेवलालजी ने रचाहै इसमें सर्वोत्तमगुण यहहै कि श्रीगोस्वामि तुलसीदासजी महाराज की रामायणके अर्थ को स्पष्टरीति से सरल देशभाषा में बखाना है न्यूनाधिक्य नहीं किया ॥

॥ श्रीगुरुगणेशाय नमः ॥

गीतावलीसटीक

॥ बालकाण्ड ॥

॥ श्लोक ॥

शशाङ्कास्यकन्दाभकौशेयवस्त्रं किरीटच्छविं कर्णयोः कुण्डलाढ्यम् ॥ करे चापबाणं कुजावामभागं भजे सन्ततं रामकैशोररूपम् १ ॥

दोहा ॥ श्रीगुरुकृपा वारिधर चरण कमल सुखमूल । तिन को करों प्रणाम जिन हरो सकल मम शूल ॥ जनकसुता रघुनन्दपद बारबार शिरनाइ । गीतावलि मन दीपिका टीका रचौं बनाइ ॥ रसिकलता सिय कल्पतरु बैजनाथ पितुधाम । सियवल्लभ पद शरणयुत गुरु दीन्हों यह नाम ॥ गुण प्रताप यश कीर्ति जो प्रभुके गावत वेद । यथारूप वर्णनकरों न्यारेन्यारे भेद ॥ गुण यथा ॥ जगव्यापक जग वशिकरण जंगल सराहत जाहि । जग चाहत जेहि तेहि सुकवि गुण गण कहिये ताहि ॥ कीर्तियथा ॥ होत जो अस्तुति दानते कीरति कहिये ताहि । यश यथा ॥ होत बाहुबलते सुयश कहत सुसज्जन वाहि ॥ प्रताप यथा ॥ कीरति सों अरु सुयशसों होत शत्रु उर ताप । जग डरात सब आपही कहिये ताहि प्रताप ॥ प्रभुकी लीला तीनि विधि गायक चारि प्रकार । मागध बन्दी सूत अरु अर्थी चौथ विचार ॥ लीला इक ऐश्वर्य कहि इक माधुर्य सराहि । दोउ मिलाइ जो भाषिये मिश्रित कहिये ताहि ॥ मागध मधुरी कीर्तिको ऐश्वर्य बन्दि प्रताप । पौराणिकमिश्रितयशै सबगुणस्वारथ आप ॥

जहां ऐश्वर्य मिश्रित यश प्रताप कीर्ति गुण सबको वर्णन होय ताको चरित कही तहां पौराणिक भावकरि गोसाईं जी

रामचरित मानस प्रथम वर्णन करें ॥ पौराणिक भाव यथा ॥ कहौं रामकी कथा सुहाई । सादर सुनहु सुजन मन लाई ॥ तहां श्रेष्ठ वक्ता अधिकारी करेहैं ॥ यथा ॥ रामचरित मुनिवर्य बखानी । सुनी महेश परम हितमानी ॥ पुनः ॥ भरद्वाजमुनि प्रश्न किय याज्ञवल्क्य मुनि पाइ ॥ पुनः ॥ सुनु शुभ कथा भवानि रामचरित मानस विमल । कहा भुशुण्ड बखानि सुना विहँगनायक गरुड़ ॥ लीला मिश्रित ॥ यथा ॥ गुरु गृह गये पढ़न रघुराई ॥ इति माधुर्य ॥ जाकी सहजश्वास श्रुतिचारी । इति ऐश्वर्य ॥ सो प्रभु पढ़ यह कौतुक भारी ॥ इति मिश्रित ॥ निज निज रुचि सब लेहिं बुलाई ॥ इति माधुर्य ॥ निमिषमात्र महँ भुवन निकाया । रचै जासु अनुशासन माया ॥ इति ऐश्वर्य ॥ भक्तिहेतु सोइ दीनदयाला । चितवत चकित धनुषमख शाला ॥ इति मिश्रित स्तुति ते कीर्ति ॥ यथा ॥ गुरु आगमन सुनत रघुनाथा ॥ अरु ॥ राम कस न अस कहहु तुम ॥ इति ॥ दानते कीर्ति ॥ यथा ॥ मुनि दुर्लभ जो परम गति तोहिं दीन भगवान ॥ इति ॥ यश यथा ॥ रिपु रणजीति सुयश सुर गावत ॥ इति ॥ प्रताप यथा ॥ जबते रामप्रताप दिनेशा ॥ अरु ॥ जीतेहु मनहिं सुनी अस रामचन्द्रके राज ॥ इति ॥ गुण यथा ॥ जहँ तहँ नर रघुपति गुण गावहिं ॥ अरु ॥ भजहु प्रणत प्रतिपालक रामहिं । शोभा शील ज्ञान गुणधामहिं ॥ इति ॥ अरु सिद्धांत यह है नाम रूप लीला धाम परात्पर हैं ॥ प्रभुकी भक्ति बिना जीवको कल्याण नहीं ॥ नाम यथा ॥ राकारजनी भक्ति तुव राम नाम सोइ सोम । अपर नाम उडुगण विमल ॥ इति ॥ रूप यथा ॥ शम्भुविरञ्चिविष्णुभगवाना । उपजैं जासु अंशतेनाना ॥ इति ॥ लीला यथा ॥ विधिहरिशंभु नचावनहारे । तेउ नहिं जानहिं मर्म तुम्हारे ॥ इति ॥ धाम यथा ॥ अवध सरिस प्रिय मोहिं न सोऊ ॥ इति भक्ति ॥ भक्तिहीन विरंचि किन होई ॥ इति ॥ मानस रामायण रोजनामा राम चरित्र को है ॥ ताको

खाता कवितावली गीतावली विनयहै ॥ तहां मुग्ध भक्तनको मन दृढ़ता हेतु ॥ नामप्रताप रूपप्रताप गुणनको प्रताप भक्ति को प्रताप ऐश्वर्य लीलामें बन्दीभावकरि कवितावली में कहे तहां उत्तम कवि अधिकारी कहे ॥ वीररसको अधिकार ॥ बंदी भाव यथा ॥ जय जय जय जानकीरमन ॥ जयकार बन्दीजनन की संप्रदायहै ॥ आशीर्वाद यथा ॥ रंककेनिवाज रघुराजराजा राजनके उमरिदराज महाराज तेरी चाहिये । इति कवि अधिकारी यथा ॥ वाणी विधि गौरि हर शेषहू गणेश कही सही भरी लोमश भुशुण्डि बहुवारखी । दश चारि भुवन निहारि नरनारि देखे नारदको वरदान नारदसोपारखी ॥ तिनकह्यो जगमें जगमगात जोड़ी एक दूजे को कहैया को सुनैया चष चारखी । कहेउ रमारमन सुजान हनुमान कहि सिय सी न तिय न पुरुष राम सारखी ॥ इति शोभाको प्रताप यथा ॥ ऐश्वर्य यथा ॥ रामविरोध न राखिसकैं तुलसी विधि श्रीपतिशंकरसौरे ॥ नाम को प्रताप यथा ॥ राम नाम रावरो दाम चामकी चलाईहै ॥ अरु नाम प्रताप बलीहै ॥ इति रूपको प्रताप ॥ लायकहैं भृगुनायक से धनुशायक सौंपि स्वभावसोंपाये ॥ इति गुणनको प्रताप यथा ॥ दश चारि नव तीनि इकीससबै ॥ रूप १ लावण्यता २ सौंदर्य ३ माधुर्य ४ सौकुमार्य ५ नवयौवन ६ सौगन्ध ७ सौवेष ८ भाग्यवान् ९ षडंग उज्ज्वलत्व १० ॥ इति दशगुणमाधुरी के ॥ ऐश्वर्य १ वीर्य २ तेज ३ बल ४ ॥ इति ॥ चारिप्रतापके आदभ्र १ नियतात्मा २ वशीकरण ३ वाग्मी ४ सर्वज्ञ ५ संहनन ६ स्थैर्य ७ धैर्य ८ वदान्य ९ ॥ इति ॥ नवगुण ऐश्वर्य के सौम्य १ रमण २ व्यापक ३ ॥ इति तीनिगुण सहज ॥ सौशील्य १ वात्सल्य २ सौलभ ३ गांभीर्य ४ क्षमा ५ दया ६ कारुण्य ७ आर्द्रता ८ उदारता ९ आर्जव १० शरणत्व ११ सौहार्द १२ चातुर्य १३ प्रीति १४ कृतज्ञ १५ दान १६ नीति १७ प्रसिद्ध १८ कुलीन १९ अनुराग २० निर्बर्हण २१ ॥ इति इक्कीस गुणकीर्तिके इत्या-

दि सबै गुणके भरे रघुवीरको निहारि शारदा की मति पंगुभई समता लायक उपमा न पायो ताते फिरगई ॥ इति गुण उदाहरण गीतावली के प्रथम पदमें लिखव ताते इहां नहीं लिखा भक्तिप्रताप यथा ॥ जनकोप्रण राम न राखे कहां ॥ इति ॥ वीर रस यथा ॥ युद्धवीर यथा ॥ राम शरासन ते चले तीर ॥ इति दानवीर यथा ॥ सो समाज महाराजजी के एकदिन दान भो त्याग वीर यथा ॥ राजिव लोचन रामचले ॥ इति दयावीर ॥ तौलौं न दापदल्यो दशकन्धर जौलौं विभीषण लात न मार्यो ॥ इति हेतु यथा ॥ जोपै जानकीनाथ सों प्रीति न लाई ॥ अरु गरीबनेवाज न दूसरो ऐसो ॥ औ कृपालु न दूजो ॥ सिद्धान्त यथा ॥ मनसों प्रणरोपि कहै तुलसी रघुनाथ बिना दुख कौन हरै ॥ इति कवितावली ॥ अथ मध्यम भक्तनकी आश पूर्ण करिबेको अरु कलियुग के भय निवारणार्थ स्वार्थीभाव करि गोसाईंजी गुणनकी गानयुत बिनतीकरैहैं ता में श्रेष्ठ स्वार्थी अधिकारीकरैहैं ॥ वात्सल्य अरु शांतरसकी अधिकारताहै नवधा भक्ति शरणागतहेतु है ॥ स्वार्थीभाव यथा ॥ कबहुँक कर कृपाल रघुनायक धरिहौ नाथ शीश मेरे ॥ अधिकारी यथा ॥ जाके चरण विरञ्चि सेइ सिधि पाई शंकरहू ॥ इति ॥ कलियुगको भय यथा ॥ कोपि तेहिकलिकाल कायर मोहिं घालत धाइ ॥ इति दादि पाइबो यथा ॥ दईदीनहिं दादि सो सुनि सुजनसजन बधाइ ॥ इति ॥ इहां सातभूमिकामें विनयकीन्हों यथादीनता ॥ केहिविधि देउँ नाथहिं खोरि ॥ इति मान मर्षता २ काहेतेहरि मोहिं बिसारे ॥ इति ॥ भयदर्शन ३ राम कहत चलु ॥ इति मत्सर ॥ ऐसी मूढ़ता या मनकी ॥ इति श्वासन ४ ऐसे राम दीन हितकारी ॥ इति मनोराज ५ कबहुँक हौं यहि रहनिरहौंगो ॥ इति ॥ विचारना ६ केशव कहि न जाय का कहिये ॥ इति ॥ अथ गुण उदार ७ ऐसो को उदार जग माहीं ॥ सौहार्द ॥ जानत प्रीति रीति रघुराई ॥ दया ॥ देव दूसरो दीनको दयाल ॥ प्रीति ॥

पुनीत परिहरिपांवरनपर प्रीति ॥ सौशील्य ॥ सुनि सीतापति शीलस्वभाऊ ॥ इतिनवधा ॥ श्रवणकथामुखनाम हृदयहरि॥ इति हेतु यथा ॥ कस मन मूढ़ राम बिसराये ॥ वात्सल्य रस यथा ॥ सुतकी प्रीति प्रतीत मित्रकी॥इति॥ शान्तरस यथा ॥ जो निजमन परिहरै विकार ॥ इति ॥ सिद्धान्त यथा ॥ हरिहि हरिता विधिहि विधिता शिवहि शिवताजिनदई ॥ सोजानकी प्रति ॥ इति विनयपत्रिका ॥ अथगीतावली ॥ कुन्दनसे जिन के मन निर्मल ॥ प्रेमा पराभक्ति में प्रौढ़ा तिनके अनुराग युत माधुरी अवलोकनहेतु ॥ रूपकी माधुरी माधुर्य्य लीला माधुर्य्य गुण मधुर कीर्ति मंगलीक मागध गायक भावकरि गोसांई जी गान करैहैं ॥ तहां श्रेष्ठ गायक अधिकारीहैं शृंगार रसहै ॥ गायक भाव यथा ॥ तुलसिदास प्रभु सोहिलो गावत उमँगि २ अनुराग ॥ इति श्रेष्ठगायक ॥ अधिकारी यथा ॥ गावत विविध विमल वरवानी ॥ इति ॥ रूपकीमाधुरी यथा ॥ रहे एकटकनारि जनकपुर लागत पलक कल्पवितयेरी ॥ अरु निरखहु तजिपलक सफल जीवनलेखौरी॥ इति ॥ रूपकी माधुरी यथा ॥ माधुरीविलासहास गावतयश तुलसिदास ॥ इति मधुरगुणयथा ॥ यो शिशुको गुण नामबड़ाई ॥ औ रूपशील गुणधामराम ॥ इति मधुर कीर्ति यथा ॥ कलकीरति गावत तुलसिदास ॥ इति शृंगार रस यथा ॥ लजित लताजाल हरत छवि वितानकी ॥ औ मधुकरपिकवरहिं मुखर ॥ इति विभाव ॥ निजकरराजीव नयन पल्लवदल रचतशयन ॥ इति अनुभव ॥ सियअंगलिख धातुराग सुमनन भूषण विभाग॥ इतिसंचारी ॥ प्यासपरस्पर पियूष प्रेम पानकी ॥ इतिस्थायी ॥ प्रभुके अनूपरूपकी माधुरी को अवलोकन सिद्धान्तहै ॥ यथा ॥ सखी रघुनाथमुखछविदेखु॥ सखी रघुनाथ रूप निहारु ॥ इति ॥ अथ चारिउ ग्रन्थनको प्रयोजन गोसाईं जीको ॥ मानसयथा ॥ मोससदीन न दीनहित तुम समान रघुवीर । असजियजानि कृपानिधिहरहुविषमभव

भीर ॥ इति ॥ कवितावली यथा ॥ तुलसी निहारिकैरिदिये सरखतहैं ॥ इति ॥ विनययथा ॥ मुदितमाथ नावतवनी तुलसी अनाथकी पीर रघुनाथसहीहै ॥ इति ॥ गीतावली यथा ॥ तुलसिदास जियजानि सुअवसर भक्ति दान तव मांगि लियो ॥ इति रसिकलताश्रिताकल्पद्रुमसियवल्लभपद शरणागत वैजनाथ कृत गीतावली मणिदीपिकाटीकायां प्रथम भूमिका समाप्तः॥

श्लोक ॥ कन्दाभंजलजायताक्षममलंशुभ्रम्प्रभाकुण्डलं शोभाढ्यम्मुकुटांगदादिपदिकंग्रैवेयमुक्तावलिम्॥ पाणौकार्मुकशायकंकटितटेकौशेयवस्त्रेषुधिं सीतास्याब्जमधुव्रतंरघुवरंवन्देप्रसन्नाननम् १ नगभुजांकमृगांकगताब्दके असितपंचमिभागवकार्तिके ॥ जनकजापतिपादरजाश्रयं अवलिगीतकृतामणिदीपिका २ ॥

सो० ॥ नीलकमलसमश्याम कोमल बालस्वरूपसोइ । तेहि नितकरौंप्रणाम कौशलेश महराजसुत १ जनकसुता दिशिवाम ब्याहसाज कैशोर वपु । बसो सुमसउरधाम श्रीरघुनन्द प्रसन्नमुख २ करिकर सम भुजदण्ड धनुशरकर कटितूण धर । कामादिक रिपुखण्ड शरणागत रघुवीरके ३ सिंहासन सुखमूल राजत राजसमाजयुत । रहहुसदा अनुकूल मोपै श्रीरघुनाथजी ४ इति ॥

श्लोक ॥ नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभागम् ॥ पाणौमहाशायकचारुचापं नमामिरामंरघुवंशनाथम् ॥

अर्थ ॥ रघुवंशके नाथ श्री रामको मैं नमस्कार करताहूं ॥ कैसेहैं श्रीराम नीलकमलसम श्यामल कोमलअंगहैं जिनके पुनः वामभाग में श्रीसीताजी विराजमान हैं जिनके पुनः पाणि बिषे अमोघ बाण अरु सुन्दरधनुषहै जिनके ऐसेरघुवंशनाथ श्रीराम को मैं नमस्कार करता हौं ॥ इति ॥ कमल सम

श्यामकोमल अंगकहि बालरूप सूचित करे । सीतावामभाग कहि विवाहआदि सूचित करे । करमें अमोघबाण सुन्दरधनुष कहि रावणवध आदि वनकीलीला सूचित करे । रघुवंश नाथ कहि राजसिंहासनआसीन सूचितकरे ॥ इति ॥ अथवा श्याम कोमल स्वरूप जिज्ञासू भक्तको ध्यान है । सीता युक्त किशोर रूप ज्ञानी भक्तको ध्यान है । धनुषबाण करधरे वीररूपआरत भक्तनको ध्यान है । रघुवंशनाथ उदाररूप यह अर्थार्थीभक्तन को ध्यान है । अथवा श्यामरंग कोमलअंग यामेंरूप वर्णनकरे । वामांगसीता युक्त विराजमान हैं । जहां ऐसोधाम वर्णन करे ॥ धनुषबाण करमें खलनके वधहेतु याते लीलावर्णन करे रघुवंशनाथ रामनामवर्णनकरे अथवा कोमलअंग तुरीय अवस्था है सीतायुक्त आसीन सुषुप्ति अवस्था धनुषबाणयुत वेग स्वप्नअवस्था रघुवंशनाथ राम जाग्रत् अवस्था है अथवा कोमलअंग यह यजुर्वेदको सिद्धान्त है सीतायुत यह सामवेदको सिद्धान्त है करमें धनुषबाण यह ऋग्वेदको सिद्धान्त है नमामि रामं रघुवंशनाथं यह अथर्वणवेदको सिद्धान्त है ॥ इति ॥ अथवा रामनामते प्रणव अरु बीज अरु सोहं तीनि महामन्त्र उत्पन्न भये चौथा रामनाम चारिउकरके गर्भित यह श्लोकके चारिउ चरण हैं ॥ पाणौयथा ॥ प्रथम चरणमें कोमलांगकी कोमलता का ओकार अरु मकारका अनुस्वार मिलि ओमिति प्रणव गर्भित है दूसरे चरणमें समारो ॥ इति ॥ रकारकी ओकारनिकारिआदि मकारका अकार रकार में मिलाइ मकारकी अनुस्वारकरि विपरीतसे दीर्घराकार में अनुस्वारमिल रामिति बीज गर्भित है । तीसरे चरणमें महात्मा आदिकी मकारको अनुस्वार करि हकारमें मिलाइ अकार निकारि सकारमें ओकार मिलाइ विपरीतकर देखिये सोहमिति गर्भित है । चौथेचरण में राममिव वर्त्तमान नाम है ॥ इति ॥ अब तीनिउंकी उत्पत्ति रामनामते ॥ यथा ॥ प्रथमबीज यथा ॥ राम इतिस्थिते मोनु-

स्वारः। मकारस्यानुस्वारोभवतिहसेपरेपदान्तेच मकारकोअनु-स्वार दीर्घरकारमिलि रामिति बीज सिद्ध प्रणव यथा राम इति स्थिते वर्ण विपर्य्यय सूत्रकरि रकार मध्यआई अकार आदि गई अरम् असभयो स्त्रोर्विसर्गः। सकाररेफयोर्विसर्जनीयादेशो भवत्यधातोरसेपदान्तेच धातोःपदान्तेनतुरसे ॥ इति रकारकी विसर्गभई अःम् असभयो ॥ अतोत्युः। अकारात्परस्यविसर्जनीयस्योकारोभवत्यतिपरतः अउम् असभयो उओ अवर्णउवर्णपरेसहओकारोभवति। मोनुस्वारः। मकारस्यानुस्वारोभवति ओमिति प्रणवसिद्धिः॥ सोहं यथा ॥ सशब्देनहकारेण सोहं मुक्तंतथैवच वर्णागमोसूत्रकरि सुट्को आगमभयो ॥ टित्वादाद्यौकित्वादंते ॥ इति सराहम इतिस्थिते ॥ स्त्रोर्विसर्गः॥ इति रकारकी विसर्गभई ॥ अतोत्युः॥ इति उकारभई उओ इति ओकारभई सोहम असभयो एङोतोतः इति अकारलोपभई सोहं मोनुस्वारः ॥ इति मकारकी अनुस्वार सोहमिति सिद्धि सोहं ज्ञानकाण्ड प्रणव कर्मकाण्ड बीज उपासनाकाण्डनाम लवको अधिकारी है ॥ इति मंत्रमयश्लोक है १ आजु सुदिन तहां भौम तौ सुदिननहीं है इहां सुदिनकाहेसे लिखे। तहां भौम को जन्मा बालक रूपवान्होत ताते आजसुदिन कहे ॥ सुघरी तहां एकदिनमें सातोदिन पौने चारचार दण्ड भोगकरत तहां जो वर्त्तमान प्रभात ताको छठवां दूसरे ताको छठवां तीसरे थाको दुघरिया प्रसिद्धमेंकहत तहां मध्यकाल में सोमवारकी घड़ीहोत ताको जन्माबालक शीलवान्होत ताते शुभघरी सुहाई तामें जन्मभयो सुनि सखीप्रतिसखी वा कोविद वा देवता वा कविकी उक्तिहै कि आजसुदिन ताहूमें सुहावनीघरी शुभसेंरूप शीलआदि गुणकेधाम अपनेनामरूप लीलाधामसेंसबकोरमावनहारे ऐसे राम श्रीरघुनन्दनमहाराज श्रीकोशलेन्द्रमहाराज के धाममें स्वइच्छित प्रकटभये आइ तहांरूपगुणते माधुर्य गुणधाम शीलगुणते ऐश्वर्यगुणधाम तहां परमदिव्यगुण अनेकहैं

तामें कुछ लिखतहौं ॥ प्रथमरूप जो विनाभूषणै भूषितहोइ १ सौन्दर्य जो सब अंग सुठौर २ माधुर्य जाके देखनेमें तृप्तिनहोइ ३ सौकुमार्य ४ लावण्यता ॥ यथा ॥ मोतीकोपानी ५ सौगन्ध ६ सौवेष सुन्दरवेष ७ नवयौवन ८ स्वच्छता शुद्धता सुखमादीप्ति प्रसन्नता इति उज्ज्वलत्व ९ सौभाग्यत्व भाग्यवान् १० इति माधुर्य ॥ सौशील शीलवान् १ वात्सल्य २ सौलभ्यसरल ३ गाम्भीर्य अगाध ४ क्षमा ५ दया ६ करुणा ७ उदार ८ आर्जव सर्वपूजनीय ९ आर्द्रव जनदुःख देखिकै द्रवउठै १० प्रीति ११ कृतज्ञ सलूकमानिबो १२ चातुर्य्यता १३ ज्ञान १४ नीति १५ लोक प्रसिद्ध १६ कुलीनत्व १७ अनुराग १८ सौहार्द १९ शरणपाल २० शत्रुनिबर्हण जीतिबो २१ ॥ इति यश कीर्तिदायक ॥ आदश्च अनन्त १ नियन्तात्मा प्रेरक २ वशीकरण ३ वाग्मी सहजपरावनी ४ सर्वज्ञ ५ सहजनन अजित् ६ स्थैर्य स्थिरता ७ धैर्य ८ वदान्य सत्य ९ रमण १० सौम्य समता ११ व्यापकत्व १२ धृतिपकरस १ श्रीमान् २ धर्म ३ ऐश्वर्य ४ सत्य ५ मोक्ष ६ वैराग्य ७ शौर्य सबद विजाई ८ बीज वीरता ९ तेज १० बलबली ११ शक्ति अघटघटना १२ इत्यादि अपारहैं प्रमाणंशिवसंहितायाम् ॥ तत्रहेतु स्त्वदीयन्तु रूपंसौन्दर्यसुत्तमम् ॥ माधुर्ययौवनारम्भः सौगन्धासु कुमारता १ लावण्यंपरमाकान्तिः सौशील्यंखलुसौहृदम् ॥ सौल भ्यं परवात्सल्यं प्रसन्नात्तस्वभावतः २ शक्तिर्नानाविधासर्वेकला प्राविण्यमाश्रमस ॥ अन्येपितेस्युः कल्याणगुणाःसर्वत्रसर्वजित् ३ पुनः वाल्मीकीये ॥ इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामोनामजनैःश्रुतः ॥ नियन्तात्मामहावीर्योद्युतिमान्धृतिमान्वशी १ बुद्धिमान्नीतिमान्वाग्मी श्रीमञ्छत्रुनिबर्हणः ॥ विपुलांसोमहाबाहुः कम्बुग्रीवोमहाहनुः २ महोरस्कोमहेष्वासोगूढजत्रुररिन्दमः ॥ आजानुबाहुःसुशिरः सुललाटःसुविक्रमः ३ समःसमविभक्ताङ्गःस्निग्धवर्णःप्रतापवान् ॥ पीनवक्षाविशालाक्षोलक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः ४ धर्मज्ञःसत्यसन्धश्च प्रजानाञ्चहितेरतः ॥ यशस्वीज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यःसमाधिमा

नू ५ प्रजापतिसमःश्रीमान् धातारिपुनिषूदनः ॥ रक्षिताजीवलोकस्य धर्मस्यपरिरक्षितः ६ रक्षितःस्वस्यधर्मस्यस्वजनस्यचरक्षितः ॥ वेदवेदांगतत्त्वज्ञो धनुर्वेदेचनिष्ठितः ७ सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान्प्रतिभानवान् ॥ सर्वलोकप्रियःसाधुरदीनात्माविचक्षणः ८ सर्वदाभिगतःसद्भिः समुद्रइवसिन्धुभिः आर्यःसर्वसमइचैव सदैवप्रियदर्शनः ९ सचसर्वगुणोपेतः कौशल्यानन्दवर्द्धनः ॥ समुद्रइवगाम्भीर्येधैर्येणहिमवानिव १० विष्णुनासदृशोवीर्येसोमवत्प्रियदर्शनः ॥ कालाग्निसदृशः क्रोधेक्षमयापृथिवीसमः ११ धनदेनसमः त्यागे सत्यधर्मइवापरः ॥ तमेवगुणसम्पन्नं रामं सत्यपराक्रमम् १२ ॥

मू० राग आसावरी ॥ आजु सुदिन शुभघड़ी सुहाई ॥ रूप शील गुणधाम रामनृप भवन प्रकट भयआई १ अति पुनीत मधुमास लग्नग्रह बारयोग समुदाई ॥ हर्षवन्त चरअचर भूमिसुर तनरुह पुलक जनाई २ वर्षहिं विबुध निकरकुसुमावलि नभदुन्दुभी बजाई ॥ कौशल्यादि मातुमनहर्षित यहसुख वरणिनजाई ३ सुनिदशरथ सुतजन्मलिये सबगुरुजनविप्रबुलाई ॥ वेदविहितकरि क्रियापरमशुचि आनँदउरनसमाई ४ सदनवेदध्वनिकर तमधुरमुनिबहुविधिबाजवधाई ॥ पुरवासिन प्रिय प्राण नाथहित निजसम्पदालुटाई ५ मणितोरण बहुकेतु पताकन पुरीरुचिर करिछाई ॥ मागधसूत द्वार बन्दीजन जहँ तहँ करहिं बड़ाई ६ सहजशृंगाराकिये बनिताचलि मंगल विपुल बनाई ॥ गावहिं देहिं अशीषमुदित चिरजियो तनयसुखदाई ७ वीथिनिकुमकुम कीचअरगजा अगर अबीरउड़ाई ॥ नाचहिं पर नर नारि प्रेमभरि देहदशा

बिसराई ८ अमितवसन गजतुरँग धेनुमणि जातरूप अधिकाई ॥ देतभूप अनुरूप जाहि जोइ सकल सिद्धि गृहआई ९ सुखी भये सुरसंत भूमिसुर खलगण मनम-लिनाई ॥ सबहि सुमन विकसतरवि निकसत कुमुद वि-पिन बिलखाई १० जो सुखसिंधुकरतसो करते शिवबि रंचिप्रभुताई ॥ सो सुखअवधउमँगिरहो दशदिशि कौन यतन कहिगाई ११ जे रघुवीरचरणचिन्तक तिनकी गति प्रकट दिखाई ॥ अबिरल अमल अनूपभक्तिदृढ़ तुलसिदास तवपाई १२ ॥

टी०। भगवत् के अनेकरूपहैं तामें शीलादि गुणनकेधाम राम रूप आजुसुदिन शुभघड़ीमें श्रीचक्रवर्ती महाराजकेघरमें प्रकट भये अथवा शीलादिगुणनको धाम बालरूपजिसरूपके उपासक शिव ब्रह्मा विष्णु हैं ॥ तत्रप्रमाणं महारामायणे शिववाक्यं ॥ अहंविधातागरुडध्वजश्च रामस्यबाले समुपासकानाम् ॥ गुणान नन्तं कथितुंनशक्तः सर्वेपुभूतेष्वपिपावनस्ते १ अतिपुनीतएकतौ ऋतुराज दूसरे वर्षाकोआदि शिरोभाग तीसरे शसिसोंपृथ्वीपरि-पूर्ण ताते अतिपुनीत चैत्रमास जामें घामशीतसम अरु सुन्दर कर्कलग्न पांचग्रहउच्चके मेषकेसूर्य मकरकेमंगल तुलाके शनै-श्चर कर्ककेवृहस्पति मीनकेशुक्र इति पांचग्रहउच्चकेमंडलेश्वर योगहै वारभौम योग सुकर्महै अथवा सुकर्महै ॥ यथा वाल्मीकिये॥ ततश्चद्वादशेमासे चैत्रेनावमिकेतिथौ ॥ नक्षत्रेदितिदैवत्येस्वो च्चसंस्थेषुपञ्चसु १ ग्रहेषुकर्कटेलग्ने वाक्पताविंदुनासह ॥ प्रोद्य मानेजगन्नाथंसर्वलोकनमस्कृतम् ॥ कौशल्याजनयद्रामंदिव्यल क्षणसंयुतम् २ अरुचरजेचलतेअचरजेनहींचलतेतेसबहर्षसहित तहां अचर पृथ्वी हरितह्वैरहीहै आकाश निर्मल वृक्ष फूलरहे हैं चरमनुष्यादि भूमिसुरजेब्राह्मणते प्रेमकरिपुलकिततातेरोमाञ्च

खड़ेहैं ॥ प्रभुको ब्रह्मण्यदेव जानि अथवा भूमिसुरवशिष्ठविश्वा-
मित्रके पुलकभई २ वर्षाहं इति विबुध जे देवता निकरसमूह
कुसुमावली फूलनकीपंक्तिवर्षिरहेहैं ॥ नभजो आकाशहैतामेंदुंदु-
भीकही नगारा वजावतेहैं निर्भयहोइकै कि हमारेदुःखकेहरण-
हारप्रकटभये अबकुछभयनहीं है कौशल्या आदिमातातिनकाजो
सुखहै सो वर्णनकरनेयोग्यनहीं है चौथेपनपुत्रहोना अकथनीय
हर्षहै ३ सुनिइति ॥ दशरथमहाराज पुत्रकोजन्मसुनिकै सवजे
कुलके वृद्ध कुलरीति के जाननेवाले और विप्र जो वेदाभ्यासी हैं
तिनकोबुलाया वेदविहितकही वेदरीति करके नान्दीमुख श्राद्ध
जातकर्मआदि शुचिकही परमपवित्र जो क्रियाकरेसो करके जो
आनन्दहुआ सो उरमेंनहींसमातहै ४ सदन जो मन्दिरहै उसमें
मुनिमधुरस्वरसेवेदध्वनिकरत और बहुतप्रकारसे बधाई बाजत
है ॥ प्रियनाथजोरघुनाथहैं उनके हेतु पुरवासिननिजनिजसंपदा
लुटाइदी इससे राजधानी सनाथहुई इससे प्रियनाथकहे ५ म-
णिनसहित तोरण जो बन्दनवारहैं बहुकेतुकहीध्वजा और पता-
का जो फहरातहैं परन्तु चिह्नयुत यथा गरुडध्वज चक्रवर्ती म-
हाराजके ध्वजामें कचनारको वृक्षहै और पताका चिह्नरहितहै
उन केतु पताकनसे पुरी छाइगई है ॥ मागधढाढ़ी आदि जो मंग-
लीक कीर्ति और वंश प्रशंसक हैं और सूतपौराणिकजो पावन
यश वर्णन करते हैं औरे वन्दीजनजो प्रतापयुतविरदावली उ-
च्चार करते हैं ते जहांतहां मागधराग तालयुत मंगलीक कीर्ति
गानकर रहेहैं और पौराणिक यश कहरहे हैं वन्दीजनप्रतापयुत
विरदावली कहरहे हैं ६ सहज शृंगारकही जो साधारण में प-
हिनेथीं वही शृंगार से चलीं मंगल विपुल बनायकै दधिहरदी
दूब पूंगीफल तुलसीदल फल फूल कंचन थारमें घृत अगर धूप
कपूर आदि ताकीआरती सजतमें शृंगार करनाभूलिगईप्रेमान-
न्दमें मग्नउठिधाईं ते मधुरस्वरसेगानकरती हैं और आशीर्वाद
देती हैं कि भूपकेतनय हमारे सुखके देनहार आनन्दसे चिरंजीव

रहैं ७ वीथी जो गली हैं तामें कुंकुम केसर चन्दन कपूर अ-
रगजा आदिकी कीच मचिरही है ॥ और अगर धूपकीधूम और
अबीर उड़िरहा है पुरवासी नरनारि प्रेमानन्दके भरे नाचरहे हैं
देहदशा बिसारि लज्जा रहित ८ वसन दुशाला आदि गजहाथी
तुरंगघोड़े धेनु गो मणि मुक्तादि जातरूप सोना इत्यादि अधि-
काई कही बहुत अमित संख्यारहित अनुरूप कही जाको जामें
रुचि उसको वहीवस्तु चक्रवर्ती महाराज देतेहैं ॥ और कमती
नहीं होती काहेसे सकल सिद्धि अणिमादि गृहमें आईं इससे
परिपूर्ण है ९ देवता सन्त ब्राह्मण आदि सब सुखीहुये और
खलगण जो दुष्टराक्षस आदि हैं तिनके मन मलीनहुये यथा प्र-
भातसूर्य उदयभये से सब सुमन विकसित कहे प्रफुल्लित होते
हैं और कुमुद जो कोकावेलि है ताके वन बिलखात कही स-
म्पुटितहोत यथा कुचाली रात्रि में खल कुमुदसम प्रफुल्लित रहे ॥
सज्जन कमलसम मलीन रहे जब सुचालरूपी दिनहुआ तब स-
ज्जन प्रफुल्लित खलमलिन भये १० सुख सिंधु यथा आनन्द
जल उत्सव तरंग क्रीड़ा जलजन्तु शोभा सुखमा सौकुमार्य्य रत्न
भक्तितट सुजनभक्त अधिकारी ॥ इत्यादि सुख सिंधुसे श्रीरघु-
नाथजी गोलोक साकेतविहारी हैं वही आनन्दसिंधुमें से एकली-
करकही बूँदमात्रसे अर्थात् जिनके अंशांश से विरंचि विष्णु शिव
की प्रभुताईकही उत्पत्ति पालन संहार शक्ति हैं ॥ तत्रप्रमाणं स
दाशिवसंहितायाम् ॥ तदूर्ध्वेतुस्वयंभातो गोलोकःप्रकृतेःपरः ॥
वाङ्मनोगोचरातीतो ज्योतिरूपःसनातनः १ तस्मिन्मध्येपुरंदि
व्यंसाकेतमितिसंज्ञकम् । योषिद्रत्नमणिस्तंभप्रमदागणसेवित
म् २ तत्रास्तेभगवान्रामःसर्वदेवशिरोमणिः। तत्रादौचिन्तयेत्तेजो
वह्निरूपंसुशक्तिकम् ३ तेजसामहताश्लिष्टमानन्दैकाग्रमन्दिरम् ।
यदंशेनसमुद्भूता ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः । उद्भवन्तिविनश्यन्ति का
लज्ञानविडम्बनैः ४ ताते जेहिके एकबूँदते ब्रह्माआदिकी प्रभुताई
सोई सुखसिंधु अवधमें दशदिशि उमँगिरही है उसको कौनयत्न

से गायके कहौं ११ जिनका चित्त प्रभुके चरणकमल की चिन्तवन अहर्निश करत ऐसे जे रघुवीर के चरण चिंतक हैं मनुमहाराजादि तिनकी गति प्रकट देखिपरत ॥ अभिप्राय यह है कि जिनको ब्रह्मादि ध्यानमें न पायो ते परस्पररूप भक्तन के बालक भये स्ववश से पराधीन भये यामें प्रभुको सौलभ्यगुण दिखायो अथ भगवद्गुणदर्पणे ॥ श्लोक ॥ आत्मानंमानुषंमन्येरामंदशरथात्मजम्। योहंयस्ययतश्चाहं तं मां ब्रूत महेश्वराः १ तब कही ताही समय में अविरल अन्तररहित अनन्य अमल वासना रहित अनूप कुटिल जीवनको उद्धार करनहारी भक्ति और कौन कीहै ताते अनूप कलिकी भयकरके टीलन परी ताते दृढ़करि भक्ति तुलसीदास पाई १२ ॥

मू० रागजयतश्री ॥ सहेली सुन सोहिलोरे सोहिलो सोहिलो सोहिलो सोहिलो सब जग आज ॥
पूतसुपूत कौशल्या जायो अचल भयो कुल राज १
चैत चारु नौमी सित मध्य गगन गत भान ॥
नखत योग ग्रह लग्न भले दिन मंगल मोद निधान २
व्योमपवनपावक जलथलदिशि दशहु सुमंगलमूल ॥
सुरदुन्दुभी बजावहिं गावहिं हर्षहिं बर्षहिं फूल ३
भूपति सदन सोहिलो सुनि बाजे गहगहे निशान ॥
जहँतहँ सजहिं कलशध्वजचामर तोरणकेतु वितान ४
सींचि सुगंधरचे चौके गृह आंगन गली बजार ॥
दलफल फूल दूब दधिरोचन घर २ मंगल चार ५
सुनि सानन्द उठे दशरथनन्दन सकल समाज समेत ॥
लिये बोलि गुरुसचिव भूमिसुर प्रमुदित चले निकेत ६
जातकर्म करिपूजि पितरसुर दिय महिदेवन दान ॥

तेहि अवसर सुततीनि प्रकटभये मंगलमुदकल्यान ७
आनँद महँ आनंद अवध आनंद बधावन होय ॥
उपमाकहौं चारिफलकी मोहिं भलनकहै कविकोय ८
सजि आरती विचित्रथार करि यूथ २ भरि नारी ॥
गावतचलीं बधावा लै लै निज २ कल अनुहारी ९
असही दुसही मरहु मनहिं मन वैरिन बढ़हु विषाद ॥
नृपसुत चारि चारु चिरजीवहु शंकर गौरि प्रसाद १०
लै लै ढोव प्रजा प्रमुदित चलि भाँति २ भरि भार ॥
करहिं मान करि आन रायको नाचहिं राजदुवार ११
गज रथ बाजि बाहनी बाहन सबन सवाँरे साज ॥
जनुरतिपतिऋतुपतिकोशलपुर विहरतसहितसमाज १२
घंटा घंटि पखाउज आउज झांझ बेनु डफतार ॥
नूपुर पुनि मंजीर मनोहर करकंकन झनकार १३
नृत्य करहिं नट नटी नारि नर अपने अपने रंग ॥
मनहुं मदनरति विविधरूपधरि नटत सुदेश सुढंग १४
उघटहिं छन्दप्रबन्ध गीत पद राग ताल बन्धान ॥
सुनिकिन्नर गन्धर्व सराहत बिथकेहैं विबुध बिमान १५

टी० सहेलिन सों अपर सहेली कहती हैं हे सहेली सोहिलो सुनु बालक जन्म उत्सव को गान सोहिलो कहावतहै श्रीरघुनन्दन को जन्मोत्सव सब ब्रह्मांडमें ह्वैरहा है याते बहुबार लिखे अथवा भूपसदन में सोहिलो सुनि सब चारि दिशा में सोहिल भयो ताते पांचबार लिखे अथवा मागध सूत बन्दीजन ब्राह्मण ग्रामस्त्री आदि पांच शब्द ताते अथवा पांचदेश आनन्द भये अथवा पांच तत्त्वन को आनन्द भयो वा प्रेमावेश ते पांचबार लिखे काहेते सब जगह सोहिलो भयो श्रीकौशल्या महारानी पूत सु-

पूत जाये एकतो बड़ी रानीके दूसरे भाइनमें बड़े तीसरे शुभ घड़ी चौथे पांचग्रह उच्च ताते सुपूत पूत जाये अब कुल को राज अचल भयो १ चैत मास चारु सुन्दर नौमीतिथि सित शुक्ल पक्ष मध्य आकाशमें सूर्य अभिजित मुहूर्त नक्षत्र पुनर्वसु योग सुकर्मा आदि अथवा राजयोग मण्डलेश्वर पांच ग्रह उच्च यथा मेष के सूर्य मकर के मंगल तुला के शनैश्चर कर्क के बृहस्पति मीन के शुक्र लग्न कर्क भलो मंगल दिन इत्यादि सब मोद कही आनन्द के निधान हैं २ व्योम आकाश निर्मल ह्वैरहा है अग्नि समाधान है पवन शीतल मन्द सुगन्ध बहरही है जलनिर्मल मन्दमन्द बहत थल पृथ्वी हरित ह्वैरही है दश दिशामें सुमंगलमूल कही विविध प्रकार के शकुन होते हैं आकाश में देवता विमानमपर हर्षिके दुन्दुभी बजावत और फूल वर्षत अप्सरा नृत्यत और मंगल मय गान कररही हैं ३ भूपति के सदन में सोहिलो सुनि निशान कही नगारा ते गहगहे कही उत्सव के भरे बाजत भये जहां तहां कलश और ध्वजा और चमर तोरण कही चन्दनवार और केतु ध्वजा द्वै लिखे केतु छोटा ध्वजा बड़ा वितान सामियाना इत्यादिक सजत कही रचत हैं वा शोभा देरहे हैं ४ सौगन्धित जल गुलाब आदि छिरकि कै चौके रचत भये मोतिनकी गृहके आंगन में गलिन में द्वारद्वार बजारन में दुकानन के आगे ताते तीन जगह लिखे और तुलसीदल फूल रोचन हल्दी दूब दही इत्यादि घर २ द्वार २ में मंगलाचार ह्वै रह्यो है ५ दशस्यन्दन श्रीदशरथ महाराज पुत्रको जन्मसुन सहित समाज आनन्द से उठे गुरुवशिष्ठ सचिव सुमंतादि भूमिसुर अपर ब्राह्मण तिनको बुलाइ कै निकेत जो है राजमन्दिर ताके भीतरको प्रमुदित चले एक आनन्द ते उठब एक आनन्दते भीतर चलब ताते द्वैवार लिखे ६ जातकर्म आदि दशकर्म हैं प्रथम गर्भाधान १ द्वितीय सीमन्त कर्म २ तृतीय जातकर्म ३ चतुर्थ नामकरण ४ पञ्चम अन्न प्राशन ५ षष्ठम चूड़ाकर्म ६ सप्तम कर्णवेध ७ अष्टम यज्ञोपवीत ८ नवम

विवाह ९ दशम मृतककर्म १० इत्यादि कर्म्म भयेते जीव शुद्ध गतिको प्राप्त होतहै तहां जातकर्म ते विवाहपर्यंत सात कर्मनके आदिमें अद्भुत एक नाम नान्दीमुख श्राद्धको अधिकार तथापि जातकर्म बालक जन्मसमय होत ताके आदि में विशेष होत यथा नान्दीमुख श्राद्ध माङ्गलिकहै ताते पूर्व मुख बैठत सर्वत्रसव्ये नैवकर्त्तव्यं सव्यते सर्व्व कर्म होत गौरी आदि चतुर्दश मातृकन की औ गणेश वरुणकी पूजाहोत पिष्टस्य बदराग्निर्माय तेषुति लान्दधि हरिद्राकंचप्राक्षिप्य चौरीठा बेरफल तिल दधि हल्दी मिलाय ताके नव पिण्ड बनतहैं पुनः दूर्वासने नवधा विभज्य बेदी पर दूब बिछाइ नौ पिण्डदान होत देवतीर्थेनैवकर्त्तव्यता देव तीर्थ कही सम्मुख हाथते पिण्डादेना मात्रादित्रय पित्रादित्रय मातामहादित्रय इति नौगन्ध दूर्व्वाक्षतताम्बूलैस्संपूज्य कुश-स्थाने दूब चन्दन अक्षत पानसों पिण्डनकी पूजा संकलपदक्षिणा इति नान्दीमुख श्राद्धकरि जातकर्म यथा प्रथम सूतिकागृहविषे पिता और आचार्य जातंस्वर्णेन मधुघृतं चतुर्वारं भोजयति सुवर्णकी अंगूठी वा अशर्फीसों घृत सहत मिलाय चार बार बा-लक के मुखमें लगावत भूप इति मन्त्रकर पुनः कुशोदकैः बालं प्रोक्षयति कुशसों जल बालकपर छिरकत पुनः अग्नि इति मन्त्र बालकके दहिने कानके लगे आठौ कण्डिका आचार्य पढ़त पुनः पंचविप्र स्थापयति पुनः श्रित इति मन्त्रसों देशअभिमन्त्रयतिपुनः बालक अभिमन्त्रयति पुनः बालककी माताको अभिमन्त्रित करत पुनः माता दोनी में जल लेकर आपन दक्षिणस्तन धोकर बालक की नालपर डारत आपो इति मन्त्रसों पुनः वर्णदक्षिणा पुनःभूमि पंच संस्कारकरि बेदीबनाय उसपर दोनी में अग्निधर गणेशगौरी बरुण पूजि पीपरि सरसों घृतसों सात आहुति सांडा इति मन्त्रसे सौसूठी अनाजभरि पूर्णपात्र द्रव्य सहित विप्रको देत पुनः पुत्र पिता अभिषेक पुनः तिलदान पुनः शिवमंत्रसे छूरा अरु सूतकी पूजाकरि सूतते बांधि नाल छूरासे छीनत तब नाऊ बारी डोमिन

हाड़ीदान पावत तबतो सूतक मानत सो दशरथमहाराज मन्दिर में गये नान्दीमुख श्राद्धकरि पुनः ज्ञातकर्म्मकरि ताते श्राद्ध से पितरपूजे जातकर्म से सुरपूजे और महिसुरनको दानदीन्ह प्रजनको दान न देनेपाये ताही अवसर में तीनसुत और प्रकटभये मंगलरूपी भरत मुदरूपी लक्ष्मण कल्याणरूपी शत्रुघ्न ताते मंगलमुद कल्याणलिखे ७ श्रीरघुनाथजी को जन्मसुनि शुद्ध आनन्दभयो पीछे तीनों भाइनको जन्म सुने ताते आनन्द में आनन्द भयो श्रीअयोध्याजी में आनन्द वधावनहोत। जो चःरिउ भाइनको चारिफलकी उपमाकहौं तौ कोई कवि मोको भलोकवि न कहैगो और विवाहसमय में कहे हैं। जनुपायेमहिपालमणि क्रियन सहित फल चारि। तिसविषे यह अभिप्राय है प्रथम उद्यम क्रियाकरि शत्रुनाश भयेते अर्थ फलकी प्राप्ति होत सो कल्याणरूपी शत्रुघ्नहैं द्वितीय विधिपूर्वक अनुष्ठान ते अधर्म का नाशहोत ताते धर्म फलकी प्राप्तिसों मंगलरूपी भरत जी हैं तृतीय रतिक्रिया सों मनमें मोद बढ़त सो काम फलकी प्राप्ति सों मदरूपी लक्ष्मणजी हैं चतुर्थ भक्ति क्रियाकरि वासना नाश भयेते मोक्षफल प्राप्तहोत सो आनन्दरूपी रघुनाथजी हैं सो जन्मपर्यन्त तीनफल अन्तकालमें मोक्ष सो यहां मोक्षरूपी रघुनाथजी प्रथमही प्राप्तभये धर्म अर्थ कामरूपी तीनिभाई पीछे प्राप्त भये ताते कर्म्मविपर्य्यय होगये उपमा समता लायक न भई ताते प्रतिपालकारमें कहै और विवाह में जो कहे हैं तहां रघुनाथ जी जनकपुर में मुनिसंगगये हैं यहां धर्म अर्थरूपी भरतशत्रुघ्न महाराजके संगहीगये पीछे रघुनाथजी जनकपुरमें मिले यथा सुत उरलाय दुसह दुखमेटे। मृतकशरीर प्राण जनु भेंटे॥ तहां रघुनाथजी पीछे मिले तहांउत्प्रेक्षालंकार में कहे यहां प्रतीतहै ८ मणिन सों विचित्र कंचनके थारनमें आरती सजि २ हाथन में लिये यूथके यूथ श्रेष्ठ स्त्री वधावन लेले गावतचलीं निजकुल की अनुहारि तहां ब्राह्मणी हल्दी, दूब, अक्षत औ गान भूषण

वस्त्र चाल सतोगुणी क्षत्रियाइनी मोती मणि द्रव्य आदि चाल गान भूषण वस्त्र रजोगुणी वैश्य स्त्रीसहित द्रव्य मेवाआदि लिये चाल गान भूषण बसन रजोगुणी सतोगुणी मिश्रित इत्यादि तीनि वरणकी बधावनारती ९ शत्रु तीनि प्रकार । एक असही जो कछु करि न सकै । बिगारिबेकी आशा राखै दुसही कही समय पाय घातकरै सो मनहीं मन मरै । और वैरीकही ता जो बिगारै की सामग्री सदाकरै तिनके विषाद बढ़ो यह आशीर्वाद तीनिबरण को है नृप सुत सुन्दरि चारिउ शंकर गौरि प्रसाद ते चिरंजीवि रहौ यह आशीर्वाद ब्राह्मणी देती हैं १० अब प्रजनको लिखत ढोवाकही मंगलीकपदार्थ अपनी जाति अनुहार यथा माली फूल फल दरजी वस्त्र अहिर दधि मनिहार झालरि तंबोली पान इत्यादि सब भारकही डाली भरि भांति भांति लिहे चले ते राजद्वार पर नाचत गावत आनन्दते राजाकी दुहाईदेत ११ राजन की यह संप्रदाय है कि उत्सव में चतुरंगिनी सेना सजत ताते सेनाके मालिक जेहैं ते अपनी अपनी फौजबिषे वाहन आदि सब साज सँवारते भये हाथी घोड़ा रथ पैदल प्रथम हाथिनपर झूलें जरीकी तापै हौदा अंबारी मणियोंसे जटित सोनेकी तिनपर भूषण वस्त्र पहिरे अस्त्र शस्त्रलिये राजसमाज सवार है रथन में ध्वजा पताका जरीके फहरात घंटी शब्दकरत विविध भूषण वस्त्र सहित घोड़ानहे तिनमें महारथी सवार अरु घोड़नपर जरीकी जीनें हैं कल हमेल पूजी दुमची झलझलाति तिनपर राजकुमार षोड़श वर्ष वाले किरीट कुण्डल पहिरे सवार बाहनी पैदर सेना उर्दी पहिरे अस्त्र सजे व्यूह बांधे कामदार दाहिने बायें कवायदसों सजग राजमार्ग में घूमते हैं ताते उत्प्रेक्षा करत सेनापति मानों कामदेव है सेना सोई मानों वसंतऋतु है सो सहित समाज अयोध्याजी में घूमते हैं १२ घण्टा हाथिनके घंटी रथनकी पखाउज मृदंग आउज तासे झांझ आदि सेना में बाजत मृदंग बेनु डफ करताल नूपुर आदि निरत करनकी समाजमें बाजतमंजीर पाय-

जेव तेहिकी मनोहर धुनि कङ्कनकी झनकार आम छिनकी होत नटनटी ढाढ़ी कलाउँत कथिक वारमुख्य अपने अपने रंगमें नृत्तत कोई संगीत कोई तांडव शार्दूल उलथाटेकी आदि गति नाचत मानो मदनरति विविध वेषधरि शुद्ध अंग शोभा समेत नाचत १४ इत्यर्थः छंदके प्रवन्ध तिनको गीतकीगतिमें घटतनामगावतहैं यथा आजु सुदिनयहुपदहरिपदछंदहै रागमें आसावरी लिखाहै सहेली सुनि यहु पदकाहू छंदमें है। रागजैत श्री लिखा। आज महामंगल पद चौपैयाछंद। रागविलावल लिखा। अवध वधावने पद में दोहा हरिगीतिका छंद। राग केदार लिखा। इत्यादि राग भैरव १ मालकौस २ हिंडोर ३ दीपक ४ श्री५ मेघ ६ इत्यादि तिनके तान तालस्वरकी वन्धानकही कमतीज्यादानहींहोततिनकोसुनिकिन्नर गन्धर्व प्रशंसा करत अरु देवतनके विमान थकित ह्वै रहेहैं १५॥

मू० कुंकुमअगरअरगजाछिरकहिं भरहिंगुलालअवीर॥ नभप्रसूनझरिपुरीकोलाहलभइमनभावत भीर १६ वड़ी वयसविधिभयोदाहिनोगुरुसुरआशिर्वाद ॥ दशरथ सुकृतसुधासागरसवउमंगे हैंतजिमर्याद १७ ब्राह्मणवेदवदत विरदावलिजयध्वनिमंगलगान॥ निकसतपैठत लोगपर स्परवोलतलगिलगि कान १८ वारहिंमुक्तारतन राजमहिषीपुरसुमुखिसमान ॥ वगरे नगर निछावरिमणिगण जनुजुवारिजवधान १९ ॥

टी० केसरि कपूर अगरचन्दनमें मिलाइ ताको अरगजाछिरकतहैं तापै अवीरगुलाल लगावत नभते देवता फूलनकी झरिलगाये पुरमें कोलाहल शब्द है जो वहुत दिनते चाहतरहैं सो पाये तात मन भावत भीरभई १६ वड़ी वयस चौथी अवस्थाविषे विधाता दाहिनो भयो ताते गुरुवशिष्ट सुर अग्नि आदि तिनके आशीर्वादते साठिहजार वर्षकी अवस्था पीछे चारि पुत्रभये ॥ यथा

बाल्मीकीय के श्लोक ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि जातस्यममकौशिक ॥ दशरथमहाराजके सुकृतरूपी सुधासमुद्र मर्यादा छांड़िकै उमँगे ताते ब्रह्माण्डभरि आनन्द में डूबिगयो १७ इत्यर्थः ॥ ब्राह्मणकी वेदध्वनि बन्दीजननकी विरदावली प्रतापको वर्णन प्रजनकी ध्वनि नारिनको मङ्गलगान गुणिनको कीरति गान तेहि शब्द करिकै सुनि नहीं परत ताते जोरते कानमें लागिके कहत अरु कामकाजी निकसत पैठत राजद्वार में १८ गजमुक्ता मोती रत्न पद्मराग वैडूर्य पिरोजा विद्रुम मरकत पुखराज हीरा आदि वारन करती हैं राजाकी रानी और पुरकी स्त्री समान बराबर रानिनकी बरोबर पुर नर नारिके वारन करिबेमें यह देखिपरत कि रानिन की समान सुख पुरवासिनों को भी भयो निछावरि करत में जो मणिगण गिरे ते नगरमें बगरे कही बिथरिपरे कैसे शोभित होत मानों जुवार यव धान तहां अपर अनाज बालीके भीतर व छीमी में गुप्तरहत जुआरि यव धान बाली में खुलेरहत खेत कटे यथा बिथरत तथा मणिगण पुरमें बिथरे १९ ॥

मू० कीन्हवेदबिधिलोकरीति नृप मन्दिर परम हुला स ॥ कौशल्या केकयी सुमित्रा रहसविवश रनिवास २० रानिनदियो बसनमणि भूषन राजा सहन भँडार ॥ मा गधसूत भाट नट याचक जहँतहँ करहिं कवार २१ विप्र बधू सनमानि सुवासिनि जनपुरजन पहिराय॥ सनमाने अवनीश अशीसतईशरमेशमनाय २२ आठसिद्धिनव निद्धि भूतिसब भूपति भवन कमाय॥ समौ समाज राज दशरथको लोकप सकल सिहाय २३ ॥

टी० वेदरीति जातकर्म्म पोतनाराछिना लोकरीति तरवारि वेलसउठा सरसौ उरद गोवरकी उपरी सूतिकागृहमें अग्निराखव इत्यादि महाराज हुलासपूर्वक करतभये कौशल्या केकयी

सुमित्राआदि रनिवास सब रहसविवश कही परमहर्ष के वश हैं २० कपड़ा मणिनके भूषणरानिनदियो सहन भण्डार रुपया अशरफी आदिक खजाना राजादियो सो पाय मागध सूत वन्दी-जन परस्पर कवार कही जहां तहां क्रय विक्रय करतहैं २१ विप्र वधुनको सन्मान कस्यो और सुवासिनि कही सौभागिनि को सहसभांति पहिरावन देतभयो जन आसरेवाली पुरजन समान वासी तिनको दशरथमहाराज सन्मान करतेभये सो पाइ शिव विष्णुको मनाय आशीर्वाद देतभये २२ आठसिद्धि अणिमा १ महिमा २ गरिमा ३ लघिमा ४ प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ वसिता ७ ईशता ८ निधियथा ॥ खर्व १ नील २ मुकुन्द ३ कच्छप ४ मकर ५ शंख ६ पद्म ७ महापद्म ८ कुंद ९ इति द्रव्यकी गिनती निधिकही भूति राजश्री सप्तांग यथा राजा १ मन्त्री २ मित्र ३ कोश ४ देश ५ कोट ६ सैन्य ७ यथा ॥ स्वाम्यमात्यसुहृत्कोश राष्ट्रदुर्गबलानिचेत्यमरः। इत्यादि आठसिद्धि नवनिद्धि भूति ऐश्व र्य्य सप्तांगराज श्री सो महाराज के भवनमें कमाहिं कही सेवामें लगी हैं पुत्र उत्सव समय में जो महाराजको समाजहै ताको देखि लोकप इन्द्र वरुण कुवेरादि सिहात ललचातहैं २३ ॥

मू० कोकहिसकै अवधवासिनको प्रेमप्रमोद उछाह॥ शारद शेष गणेश गिरीशहि अगम निगम अवगाह२४ शिव विरंचिमुनिसिद्धिप्रशंसत बड़े भूपकेभाग॥ तुलसि दासप्रभु सोहिलोगावत उमँगि उमँगि अनुराग २५ ॥

टी० जो प्रेमप्रमोद उछाह अवधवासिनको है ताके कहिबे को शारदा शेप गणेश शिव शास्त्र वेद तिनको अगमहै ताको और को कहिसकै २४ शिव ब्रह्मादि देवता नारद बाल्मीकि वशिष्ठ अ-गस्त्यादि मुनि लौमस आदि सिद्धसो सब भूप महाराज दशरथ के भाग्यकी प्रशंसा करतहैं कि महाराज की बड़ी भाग्यहै सोई समय की समाज हृदय में आनि तुलसीदास अनुराग में बूड़े

उमँगि २ प्रभुके जन्म उत्सव के सोहिलो गावत हैं २५ ॥

रा० बि० आजु महामंगलकोशलपुर सुनिनृपकेसुत चारि भये ॥ सदनसदनसोहिलो सुहावन नभअरुनगर निशान हये १ सजिसजि यानअमरकिन्नरमुनिजानिसम यसुरगान ठये ॥ नाचहिं नभ अप्सरामुदितमन पुनिपुनि वर्षतसुमन चये २ अतिसुखवेगिबोलि गुरुभूसुरभूपति भीतर भवन गये ॥ जातकर्मकरिकनकबसनमणि भूषित सुरभिसमूह दये ३ दलरोचनफलफूलदूबदाधियुवतिनभ रिभरिथार लये ॥ गावतचलीं भीरभइवीथिनबंदन बांकुर बिरद दये ४ ॥

टी० । श्रीचक्रवर्ती महाराजके चारि पुत्र भये उनकोसुनि आजु अयोध्याजी में महामंगल होरहाहै सोकहत सदन सदन कही घरघरमें सोहिलो सुहाये कही श्रवणरोचक होरहेहैं नभ विषे देवतनके विमाननपर नगर में द्वारद्वार निशान हयेकही बाजाबाजि रहे हैं मंगलीक १ विमानसजि सजि देवता किन्नर मुनि सो समय जानि सुरजो गंधर्व ते गानठाने नभ बिषे विमानन पर अप्सरा मुदित मनते नाचिरही हैं बारबार समूह फूल वर्ष रहेहैं २ अत्यन्त सुखपूर्वक जल्दीसे बोलावते भये गुरुवशिष्ठ भूसुर ब्राह्मण तिनसहित दशरथ महाराज भवनके भीतरको गये तहां नान्दीमुख श्राद्ध जातकर्मकरि पितृ देवतनको पूजि सुवर्ण और वसन मणि सींग खुर मढ़े सोनेसों ऐसी भूषितगऊसमूह दान देतभये ३ दल तुलसी रोचन हल्दी सुपारी नारियल फूल दूब दही इत्यादि कञ्चन थारनमें भरिभरि युवती मधुर स्वरते गावत चलीं ताते बीथी जो हैं गली तिनमें भीरभई बन्दीजन ते विरद कही सनातन यश वंशको बांकुर कही उत्तम सो बये कही वर्णन करे अथवा महाराज को यश प्रताप ताको बन्दीजन बये कही बोये सो नवांकुर भयो इहां पुत्र जन्मोत्सव सो खेत है पुरानो यश प्रताप बीज

है वन्दीजन बोवनहार हैं बखान करिबो सोई बोवब है सुनिकै हर्षहोना सोई नवीन अंकुर है ४ ॥

मू० कनक कलश चामरपताक ध्वज जहँ तहँबन्दन वारनये ॥ भरहिं अबीर अरगजाछिरकहिं सकललोगयक रंगरये ५ उमगि चल्यो आनन्दलोक तिहुंदेतवसनमंदिर रितये ॥ तुलसिदासपुनि भरेदेखियत रामकृपा चितवनि चितये ६ ॥

टी० । सुवर्ण के कलश चमरपताका ध्वजाते जहांतहां रचित हैं बन्दनवार झालरि नये कही नवीन झुकीहैं केशरि कपूर चंदन मिलाइ अरगजा छिरकहिं तापै अबीर लगाइ देहिं तेहि रंगकरि के सकल लोक एकरंग रंगिगयो तिहूंलोक में आनन्द उमँगि चलो ताते नेवछावरि देत में सवन अपने घर तये कही खालीकरि दीन सबैडारे गोसाईं जी कहत कि श्रीरघुनाथजीकी कृपा चितवनि के चितयेते फिर भरेघर देखि परत ६ ॥

रागजैतश्री ॥ गावैंविबुधबिमलबरबानी ॥ भुवन कोटि कल्याण कन्दजोजाये पूतकौशल्यारानी १ मास पाखतिथिवारनखतग्रह योगलगनशुभठानी ॥ जलथल गगनप्रसन्नसाधुमनदशदिश हियहुलसानी २ वर्षतसुम नवधावनगरनभहर्षनजातबखानी ॥ ज्योंहुलासरनिवास नरेशहि त्योंजनपदरजधानी ३ अमरनागमुनिमनुजस परिजनविगतविषादगलानी ॥ मिलहिं मांझरावणरज नीचर लंक शंकअकुलानी ४ ॥

टी० । विबुधजे देवता ते विमल बरबानीते यशगावतहैं कि जो कौशल्यारानी पुत्रजायो है सो कोटिनभुवनके कल्याणरूपी जल देबेको कन्दकही मेघ उत्पन्न भयो अथवा कल्याणफलके वृक्षको कन्द कही मूलहै १ मासचैत शुक्लपक्ष तिथिनौमी वार भौमनक्षत्र

पुनर्वसु ग्रह उच्च योग सुकर्म्म लग्न कर्क तामें उच्च बृहस्पति चन्द्रमा स्वक्षेत्री इति शुभठानीकही शुभस्थानमें हैं जलनिर्मल थल पृथ्वी हरित आकाश विमल सो प्रसन्नताहै साधुनकेमन और दशोंदिशा हृदय में हुलसातभई २ नगरमें बधावा बाजत नभते देवता फूलवर्षत सो हर्ष कहानहीं जात जो हर्ष रनिवास अरु राजाको है सोई जनपद देशवासी राजधानी अयोध्यावासिनको है ३ अमर इन्द्रादि नाग वासुकीआदि मुनि कश्यपादि मनुज पृथ्वी के राजा सपरिजनकही प्रजनसहित विषाद दुःख ग्लानि लज्जा तातै विकसतभये विषाद ग्लानि छूटिगई इहां इन्द्रादि जो मालिकहैं तिनके रावण सों पराजय की ग्लानिरही तातै प्रजनके विषाद रहो सो प्रभुको जन्मभयेते इहांते छूटि सोई विषाद ग्लानि शंका अकुलानी रूप है लंकमांझ रावणको अरु निशाचरनको मिली इन्द्रादिकी ग्लानि सो अकुलानी रूप है रावणको मिली प्रजनकी विषाद सो शंकारूप है निशाचरनको मिली ॥ तथा ॥ (इहां निशाचर रहहिं सशंका) और (दश- मुख बोलिउठा अकुलाना) ४ ॥

मू० । देवपितरगुरुविप्रपूजिनृप दियेदानरुचिजा नी ॥ मुनिवनितापुरनारिसुवासिनि सहसभांतिसन- मानी ५ पाइअघाइअशीशतनिकसत याचकजनभये दानी ॥ ज्योंप्रसन्नकैकयीसुमित्रहि होहुमहेशभवानी ६ दिनदूसरेभूपभामिनिदोउ भईसुमङ्गलखानी ॥ भयोसो- हिलोसोहिलोमोजनु सृष्टिसोहिलेसानी ७ नाचतगावत मोमनभावत सुखसोअवधअधिकानी ॥ देतलेतपहिरत पहिरावतप्रजाप्रमोदअघानी ८ ॥

टी० । प्रथम नान्दीमुखश्राद्धकरि पितृ पूजे जातकर्मकरि देव पूजे पीछे गुरु वशिष्ठ अपर ब्राह्मणको रुचिदेखदान दिये अरु

मुनि वनिता अरुन्धती आदि पुरनारि सुवासिनी सौभागिनी जिनको लोकप्रसिद्ध सोहागिलै कहतहैं पितृमातृ के संतोष हेतु पूजेजात तिनको सहसभांति सन्मानकरे ॥ यथा ॥ आसन नमस्कार मधुरवचन इच्छाभोजन सर्वांग भूषण वस्त्र द्रव्य इत्यादि ५ अघाइकै दानपाये ताते याचक दानीभये मन्दिरते निकसत में अशीशदेतहैं हे महेशभवानी ऐसेही केकयी सुमित्रापर प्रसन्न होहु ६ नौमीपुनर्वसु कर्क में रघुनाथजीभये दशमी पुष्यमीन में भरतजी भये ताते दूसरे दिन रानी सुमंगलखानिकही कौशल्या केकयी एकादशी श्लेषा कर्कमें लक्ष्मण शत्रुघ्न संगही भये ताते सोहिलो में सोहिलो लिखे उत्सव में सबमगनहैं ताते सब सृष्टि मानो सोहिलो में सानी है प्रथम तेहि अवसर सुततीनि प्रकट भये यह लिखे इहां दिनदूसरे भूप भामिनी दोऊभाई सुमंगल खानी अरु छठी तीनिदिनमें लिखे ॥ यथा ॥ जो आजु काल्हि परौं जागरण होहिंगे ताको उत्तर नौमी मध्याह्नकाल कर्क में रघुनाथजीभये दशमी बुधमीन में भरतजी भये सो कर्कते मीनतक सैंतिसदण्ड सैंतालीसपलको अन्तरहै सो प्रभुजन्म पीछे द्वैदण्ड में सबको बोलाये बीसदण्डतक नान्दीमुखश्राद्ध जातकर्म करे पन्द्रह दण्डतक ब्राह्मणन को दान देतबीते प्रजन को दान बाकी रहे ताही समयमें भरतजी भये ताते तेहि अवसर लिखे एकादशी बृहस्पति कर्कमें लक्ष्मण शत्रुघ्न भये सो नौमी में कर्कते एकादशी की कर्कतक एकसैबीसदण्डका अन्तर साठिदण्डको दिनरात्रि के हिसाब दुइदिन होत ताते दिन दूसरे लिखे गिनती में तीन दिन ताते तीनदिनमें छठीलिखे वा कल्पान्तरहै ७ प्रथम चारि भाइन के जातकर्मादि न्यारे न्यारे भये ताते विप्रनको दान लिखे अब प्रजनको दान लिखत हैं मनभावत पाये ताते अवध में सुख अधिकानी ताते नाचत गावत हैं देतडाली ढोवा निछावरि लेत नाम बकसीस पहिरावत झँगुली टोपी पहिरत जामा पगिया दुशाला ताकरिकै प्रजा प्रमोद में अघाने हैं ८ ॥

मू०। गाननिशानकुलाहलकौतुक देखतदुनीसिहा-
नी ॥ हरिविरंचिहरपुरशोभाकुलि कोशलपुरीलोभानी ९
आनँदअवनिराजरवनीसब मांगहुकोषिजुड़ानी ॥ आ-
शिषदैदैसरहहिंसादर उमारमाब्रह्मानी १० विभवविला-
सबैठिदशरथकी देखिनजिनहिंसोहानी ॥ कीरतिकुशल
भूतिजेऋधिसिधि तिनपरसबैकुहानी ११ ॥

टी०। गानबाजाको कोलाहल ताकोकौतुकदेखि दुनी सिहानी ललचानी हरिपुर वैकुण्ठ विरंचिपुर ब्रह्मलोक हरपुर कैलास तिनकी कुलिशोभा कोशलपुरी पर लोभानी ताते अनत शोभा नहींहै ९ अवनि पृथ्वी ताके पतिकी रवनी कही रानी सब आनन्दहैं काहेते पतिसुखते मांगजुड़ानी पुत्रसुखते कोषि जुड़ानी ताते अथवा जो आनन्दसमय भयो ताकी अवनी कही भूमि काहेते मांगकोषिजुड़ानी उमा रमा ब्रह्माणी आशीर्वाददैदै सराहती हैं कि ब्रह्माण्डके स्वामी इनके पुत्र भयेते अहोभाग्य हैं १० श्रीदशरथ महाराज को विभव विलास बाढ़ोदेखकर जेहिको नहीं सोहानी तिनपर कीरति कुशल भूति जे ऋद्धि सिद्धि सब कुहानी कही रिसाइगईं ताको कहतहौं प्रथम विभव द्वैप्रकार एक मुनिकै एक देखिकै सब दबिजाय सो यज्ञरक्षाकरब अहल्यातारब विभव रघुनाथजीको जनकपुरमें कुटिलराजा सुनेरहे परन्तु सुहानो नहीं कुटिलता कीन्हें किये तिन राजनपर कीरति कुहानी ताते अपकीरति को प्राप्तभये दूसरे विभव प्रसिद्ध धनुतोरबे कों परशुराम जी देखेरहे परन्तु सुहानो नहीं दुर्वचनकहे तिनकी जय कुहानी पराजयको प्राप्तभये अरु विलास द्वैप्रकार एकशोभा अवलोकन सुखविलास एकभोगसुखविलाससोशोभाअवलोकनसुखविलास रघुनाथजीको फटिकशिलापररहो सो जयन्ता को नहीं सोहानो श्रीमहारानीजीके चोंचमारो तापैऋद्धि कुहानी एकधनऋद्धिपिता कोधाम ताते रहितभयो (रामविमुख राखा तिन नाहीं) दूसरी

लनऋद्धि सर्वांग शोभायुत सो नेत्रहीनभयो दूसराभोगविलास सदासंयोग सो रावणको ना सोहानी जानकीजी को वियोगकियो ता रावणपै कुशल कुहानी ताते वंशसमेत नाशभयो अरु बाढ़िद्वै प्रकार की एक बलकरिकै परहित सो सुग्रीवके हितको बलपठाये सो बालिको न सुहानी तापर सिद्धि कुहानी सिद्धि यह कि सन्मुख वीर न जीते सो कुहाइ गई ताते तुरन्त प्राणनाश भये दूसर बाढ़ि आपन हित वचन करके समुद्रसों राहमांगे लंकाजावेको सो समुद्र को नाहीं सोहानी तापै भूति कुहानी ताते ऐश्वर्य रहितभयो अगाधसमुद्रपै वानरनकेकरते सेतुबांधो इत्यादि रघुनाथजीकी करतव्यता दशरथ महाराज की है ११ ॥

मू० । छठीबारहौंलोकवेदविधि करिसोविधानविधानी ॥ रामलषणरिपुदवनभरतधरे नामललितगुरुज्ञानी १२ सुकृतसुमनतिलमोदबासिविधि यतनयंत्रभरिघानी ॥ सुखसनेहसबदियोदशरथहि खरिखलेलथिरथानी १३ अनुदिनउदयउछाहउमँगिजग घरघरअवधकहानी॥तुलसीरामजन्मयशगावत सोसमाजउरआनी १४

टी०। लोकरीति वेदविधानसहित छठी बारहौं करतभयो विधान जानै सो विधानी गुरुज्ञानी वशिष्ठते रामलषण रिपुदवन भरत ऐसे ललितनामधरे आगे छठी बारहौंको विस्तार है १२ प्रथम सुगन्धित फूल तिलमें मिलाइ बन्दकरिधरत सो फूलनकी सुगंध तिलमें आइजात ताको वासवकही सो वासे तिलपेरत जो कोल्हू में रही सो खरी छन्नामें रही सो खलेल छानिकै शुद्ध भयो सो फुलेल ताको बड़े आदमी लगावत और गरीब खलेल पैसाको लै पानीमें घोरि बार मींजि धोय सफाकरे कछुतेल सुगंधित बारनमें रहिगयो महागरीब दसरीकी खरीलै घोरि मींजि बारधोइ खरी निकारिडारे कछुसुगन्ध बारन में रहिगयो ॥ इति दृष्टांत ॥ अब दृष्टांत यथामनु महाराजकी सुकृती फूलहै पुत्रकी वासना सुना

सुगन्धहै सोई सुकृतरूपी फूलनते वासना सुगन्ध वरदान पाये को मोदरूपी तिलनमें मिली सो वासव है विधाता गंधी है यतन यन्त्रहै यथा जयजयसुरनायक यह प्रार्थना कारणभयो यतनयंत्र (तुमहिंलागि धरिहौं नरवेषा) यह कार्यसिद्धिभयो सो पैरब अवतार भये पर शुद्ध प्रेमानन्दको सुख सो फुलेलहै सोई दशरथ महाराजको शुद्ध प्रेम सुखभयो सोई सनेहकही फुलेल विधाता को देव है अरु परमार्थ स्वार्थ सहित प्रेम सोई खलेल अरु खरी है सो थिर नाम पृथ्वी ताको स्वार्थिक प्रेमभार उतारिबे ताको विधाता खरीदियो अरु थानी नाम है दिग्पालन को परमार्थिक प्रेम जगत् सहित आपनो भलाचाहत तिनको विधाता खलेल दियो १३ यथा चन्द्रमाकी एककला प्रतिदिन उदयहोत बढ़त पन्द्रहदिन में पूर्णहोत तथा अवधमें उत्सवरूपी चन्द्र प्रतिदिन उछाहरूपी कलाकी उदय बढ़त है यथादिनमें जन्म तीनिमें पानी तीनिमें छठी तीनि में बारहौं उछाह इत्यादि उमँगिके जगमेंघर घर अवधकी कहानी सोई चांदनी है सो रामजन्मको उज्ज्वलशीतल प्रकाशको यशगावत तुलसीदास सोसमाजके उत्सवरूपीचंद्रमाको हृदयमें आनि याते हृदयकी मलीनता अंधकारजाइ १४॥

मू० । रागकेदार ॥ अवधबधावने घरघरमंगलसाज समाज ॥ सगुनसुहावनेमुदितकरत सबनिजनिजकाज १ छन्द ॥ निजकाजसजतसँवारि पुरनरनारिरचनाअनगनी ॥ गृहअजिरअटनिबजारवीथिन चारुचौकैंविधिघनी २ चामरपताकवितानतोरण कलशदीपावलिबनी ॥ सुखसुकृतशोभामयपुरीविधि सुमतिजननीजनुजनी ३ दोहा ॥ चैतचतुर्दशिचांदनी अमलउदितनिशिराज ॥ उडुगणअवलिलसीदशदिशिमें उमँगतआनँदआज ४॥

टी० । पुरीकी शोभा वर्णनकरत श्रीअयोध्याजी में घरघर में

मंगलके साज सहित समाज वधावाहोतहै अरु सगुन सोहावनें होत हैं ताते सब आनन्दते आपने काज करतहैं १ पुरके नरनारि आपने काजकी रचना अनेक सवाँरि सजत हैं घर घर प्रति आँगन प्रति अटारिन पर वजारन में गलिन में सुन्दरी चौकें बहुविधिसों वनी हैं २ चवँरपताका चँदवा वन्दनवार सुवर्ण के कलश मणिन के दीपनकी पांति गलिन में घरनमें वनीहैं ऐसीपुरी सुख सुकृत शोभामयी ताको विधिकी सुन्दरि मति सोई जननी मानो जनी कही उत्पन्नकरी है ३ अब आकाशकी शोभा कहिके पुरमें मिलावैंगे चैत चतुर्दशीको निर्मल उदय भयेते चांदनी शोभितहै रेनु धूममेघ तमरहित आकाश में उडुगण नक्षत्र ताकी पांतीलसीं कहे शोभित हैं ताते आजु दशदिश में आनन्द उमँगतहै ४ ॥

छं० ॥ आनन्दउमगतआजुविबुध विमानविपुलबनाइकै ॥ गावतबजावतनटतहरषत सुमनवरषतआइकै ५ नरनिरखिनभसुरपेखिपुरछवि परसपरसचुपाइकै ॥ रघुराजराजसराहिलोचन लाहुलेतअघाइकै ६ ॥

दो० ॥ जागियेरामछठीसजनीरी रजनीरुचिरनिहारि ॥
मंगलमोदमढ़ीमूरतिजहँ नृपकेबालकचारि ७

आज कौन आनन्द उमँगत है विबुध देवता विमान समूहबनाइ तापैसवार अवधको देखिवे हेत सो देखि हरषत ताते नाचत गावत बजावत फूल बरषत इत्यादि उमंग है ५ अब पुरकी और आकाशकी शोभा एक में देखावत नर आकाश देखि देवता पुरकी शोभा देखि परस्पर आनन्द पाइ रघुराज की राज को प्रशंसा करिकै लोचन कही नेत्रन को लाहु अघायकै लेते हैं ६ पुरी और व्योम रात्रीकी शोभा देखि सखीसों सखी कहती है हे री सजनी आज रघुनन्दनकी छठी है ताकी रजनी रुचिरनिहारिकै जागिये जहां मङ्गल मोदरूपी मंदिरमें नृपके चार बालक हैं मूर्तिमान् ७ ॥

छं० ॥ मूरतिमनोहरचारिविरचि विरंचिपरमारथम ई॥अनुरूपभूपहिजानिपूजन योगविधिशंकरदई ८ तिन कीछठीमंजुलमठी जगसरसजिनकीसरसई ॥ कियनींद भामिनिजागरण अभिरामिनीयामिनिभई ९ ॥

दो० ॥ सेवकसजगभयेसमय साधनसचिवसुजान ॥
मुनिवरगुरुसिखयेलौकिक वैदिकविविधविधान १०

छं० ॥ वैदिकविधानअनेकलौकिक आचरतमुनिजानिकै॥ बलिदानपूजामूलिकामुनिसाधिराखीआनिकै ११ ॥

टी० । विरंचि जे ब्रह्मा ते चारि मूरति मनोहर परमारथमई विरचि है तिनको पूजिवे को अनुरूप श्रीदशरथमहाराजको जानि विधि शंकर मिलिदियो है स्त्रष्टिद्वारा विधिकोदेना (जो स्वरूपबस शिव मनमाहीं) याते शंकरको देना ८ मंजुलमठीकही मन्दिर में तिनकी छठी है जिनकी सरसई ते जगत् सरसहै ते नींदकिये हैं अरु भामिनी जागरण करती हैं ताते यामिनी रात्रिसों अभिरामिनीकही आनन्ददायकभई यामें अभिप्राय यहहै कि जग उत्पत्ति पालन नाशकर्त्ता परमब्रह्मते भक्तनहेतु बालक भये ॥ प्रमाणशिवसंहितायाम् ॥ उद्भवेप्रलयेहेतूरामएवइतिश्रुतिः ९ समयके साधनहारे सेवक अरु सुजन सचिव ते सब सजगभये मुनिवर जे गुरुवशिष्ठ ते लौकिक वैदिक विधान विविधप्रकारको सिखाये १० वैदिक विधान मुनिसों सुनिकै लौकिक विधान अनेक प्रकार जानिकै ताको आचरतकही पूजत लौकिक विधान में छठी में स्त्री जरानामे राक्षसी जो जरासिन्धुको जोरि दियेहै प्रसिद्ध भागवत में ताकी पूजा भीतिमें हरदी चौरीठा सों चित्रमन्दिर बनावत ताके बीच जराराक्षसी की मूर्त्ति बनावत ताकी पूजा हेतु छः कलश धरत तामें बीराबताशा द्रव्यधरि दीपकबारि जल अक्षत सेंदुर हरदी घी मिठाई सों पूजत माता बालकको लैकै बैठत ताको छठी नाम प्रसिद्धहै पुतराधरब दीपक बारबका-

जरदेब झालरि बांधव इत्यादि लौकिक अथ वैदिकप्रमाणपद्दि विधाने प्रथम पार्वतीकी पूजा ॥ श्लोक ॥ आदौस्वस्त्ययनंकृत्वा गौर्य्यास्संपूजनम्पुनः ॥ पीछे स्वामिकार्त्तिककीपूजा ॥ गौर्य्याः पुत्रोयथास्कन्दःशिशुसंरक्षितःपुरा । तथासमाप्ययस्वालोरक्ष तांषष्ठिकोनमः ॥ इत्यादि वैदिक तिनपूजाहेतु वलिदान कुम्ह ड़ाकी वतियांआदि मूलिकामणी नवग्रह को यथा रविको मदार मोती १ चन्द्रमा पलाश विद्रुम २ भौम खैरपन्ना ३ वुध चिर्चिरा पुखराज ४ गुरुपीपरि हीरा ५ शुक्र गूलरि नीलक ६ शनि शमी लहसुनियां ७ राहु दूव पिरोजा ८ केतु कुश श्यामरमणि ९ इति मूलिकामणि आदि आनिकै साधिराखो ११ ॥

मू०। जे देवदेवीइष्टनिजहितलागिचित्तसनमानिकै॥ ते यन्त्रमन्त्रसिखाइराखत सवनसोंपहिचानिकै १२ ॥
दो०॥सकलसुवासिनिगुरुजनन पुरजनपाहुनलोग ॥
विबुधविलासिनिसुरमुनी याचकजोजेहियोग १३
छं० ॥ जेहियोगजेतेहिभांतिते पहिरायपरिपूरणकिये ॥
जयकहतदेतअशीश तुलसीदासज्योंहुलसतहिये १४
ज्योंआजुकालिहहुपरहुंजाग्नन होहिंगेनेवतेदिये ॥ तेधं न्यपुण्यपयोधिजोतेहि समयसुखजीवनजिये १५ ॥

टी०। जे षट्मुख आदि देवता पार्वती आदि देवी तिनको अपने हितलागि चित्तसों सनोमान करिकै पूजतहैं ते देव देवी पूजने वालेनसों प्रथमहीं पहिचानकरके आपनो यन्त्र मन्त्र षोडशो- पचार पूजा सिखाइ राखत हैं याते इससमयको पूजापाइवो हमारी अहोभाग्यहै कदाचित् प्रेमवशते विधिपूर्वक भूलि न जाइ यन्त्र मन्त्र तन्त्रसारमें प्रसिद्धहै १२ सकल सुवासिनकहे उत्तम कुलकी अहिवाती स्त्री गुरुजन आपुतेऊंचे पदवाले पुरजन सा- मान्यवासी नेहवाले पाहुनसम्बन्धीलोग विबुधविलासिनी देव

स्त्री सुरदेवतामुनिवशिष्ठादि याचकसूतबंदीमागधादि १३ जोजेहि योगको है ताको तेहि भांतिको पहिराइ परिपूर्ण करे ते जयजयकार करत आशीशदेत सबके हृदयमें कैसी हुलासी है यथा तुलसीदासको हृदय हुलसत १४ ज्यों आजु कौशल्यानन्दन की छठी त्यों काल्हि कैकेयीनन्दनकी तथा परौं सुमित्रापुत्रनकी छठीजागरण तीनिदिन होइ ऐसे कहि जाको नेवता दियो ते पुण्यके पयोधि धन्यहैं जो त्यहि समयके सुख जीवन में जिये अथवा जे त्यहि समयमें रहे १५ ॥

दो० भूपतिभागावलीसुर नरनागसरहिसिहाहिं ॥
तियवरवेषअलीबनी सम्पतिसिद्धिकमाहिं १६

छं० अणिमादिशारदशैलनन्दनिबाललालहिपालही॥
भरिजन्मजेपायोनते परितोषउमारमालही १७
निजलोकाबिसरेलोकपतिघरकीनचरचाचालही ॥
तुलसीतपततिहुँतापजगजनुप्रभुछठीछायालही १८

टी० । भूपकीभागावलीको त्रिलोकमें प्रशंसा होत सबसिहात हैं सम्पत्ति लक्ष्मी वर स्त्री वेषसों अणिमादि सिद्धि अलिवेषसों कमातकही परिचर्या करतहैं १६ अणिमादि जो सिद्धि शारदा पार्वती ते बालरूप प्रभुको लालन पालनकरती हैं जो सुख जन्म भरि न पाये सो बालरूप श्रीरघुनन्दन को खेलाइ बालभाव को परितोष उमारमा को प्राप्त भयो १७ इन्द्रादिकन को अपना लोक ऐसा भूला जो घरकी चरचातक नहीं करतहैं गोसाईंजी कहत कि जगत् तीनि तापमें तपत प्रभुकी छठी मानों छाया पाई है ताते सब सुख है १८ ॥

मू० रागजैतश्री ॥ बाजतअवधगहगहेआनंदबधाये॥ नामकरनकेरघुबरनकेनृपसुदिनशोधाये १ पायरजाय सुरायकोऋषिराजबोलाये॥ शिष्यसचिवसेवकसखा सा

दुरशिरनाये २ साधुसुमतिसमरथसबै सानंदसिधाये ॥ जलदलफलमणिमूलिकाकुलकाजलिखाये ३ गणपगौरि हरपूजिकैगोवृन्ददुहाये । घरघरमुदमंगलमहागुणगान सुहाये ४ ॥

टी०। आजुअवधमें आनन्दबधावा गहगहे कही ललिताईसों बाजतहैं चारिउ राजकुमारनके नामकरणहेतु नृपसुदिनशोधाये हैं १ श्रीदशरथ महाराजकी आज्ञापायके ऋषिराज वशिष्ठजी बोलावतेभये ताको सुनिकै ऋषिके शिष्य सेवक सब अरु महाराजके सचिव अरु सेवक अरु सखा आदरते आइ माथनाये २ शिष्य सेवक सब साधुहैं सचिव सुमति हैं सखा समरथहैं तिनको आनन्द सो वशिष्ठजी लिखाये सामग्रीआनिबेको जलतीर्थादिको दल तुलसी आम्र बिल्व दूर्वादि पान मणि मुक्ता विद्रुमपन्ना पुखराज हीरा नीलम लहसुनियां श्याममणि मूलिका नवग्रहकी क्रमते लजारू कूट वरियारा ककूदनि मोथा सरसों दारुहरदी सरफोंका लोध अथवा सातौ ओषधी आरपदी आदि फल नारियल सुपारी आदि इत्यादि सबकाज करिबेको लिखा इत्यादि ये ३ प्रथम आरम्भमें मंगलकेअर्थ गणेश गौरी शिवको पूजे पुनः पंचामृत पंचगव्यके हेतु गौबनके वृन्ददुहाये सो उत्सव सुनि पुरमें घर घर मुदमंगल सगुणके गान सुन्दरहोतहैं ४ ॥

मू०। तुरतमुदितजहँतहँचलेमनकेभयभाये॥सुरपतिशासनघनमनोमारुतमिलिधाये ५ गृहआँगनचौहटगलीबाजारबनाये ॥ कलशचमरतोरणध्वजासुवितानतनाये ६ चित्रचारुचौकैंरचींलिखिनामजनाये॥ भरिभरिसरवरवापिकाअरगजासनाये ७ नरनारीपलचारिमेंसबसाजसजाये ॥ दशरथपुरछविआपनीसुरनगरलजाये ८॥

टी० । मनभावतभये ताते कार्यकरनेवाले तुरतही आनन्द

ते जहां तहां को चले कैसी शीघ्रता मानौ इन्द्रकी आज्ञासों पवन मिलि मेघधाये ५ बाजार गली चौहटा सुन्दर बनाये गृहके आँगन लिपवाये तामें सोनेके कलशधरे चमर अरु बन्दनवार बँधवाये ध्वजारोपे चँदवाताने ६ चित्रविचित्र चारु चौकैं रचे तिनमें नाम लिखि जनाये कि यह चौक कौशल्यानन्दन की है यह केकयी-नन्दनकी है यह सुमित्रासुतनकी है सर तडाग वर श्रेष्ठ वापिका बावली तिनमें केसरि कपूर चन्दन आदिको अरगजा भराये ७ जो कार्य वशिष्ठजी कहैं सो सबचारिपलकहेथोरेहीबीचमेंनरनारी सबसाज सजिदियो ताते पुरकी शोभादेखि सुरनगरलजातहै ८।

मू०। विबुधविमानबनाइकैआनंदितआये ॥ हरषसुमनवरषनलगेगयेधनजनुपाये ९ बरेविप्रहूवेदकेरघुकुलगुरुज्ञानी ॥ आपुवशिष्ठअथर्वणीमहिमाजगजानी १० लोकरीतिविधिवेदकी करिकह्योसुबानी ॥ शिशुसमेतबेगिबोलिये कौशल्यारानी ११ सुनतसुवासिनिलैचलीं गावतबड़भागीं ॥ उमारमाशारदाशचीदेखिसुनिअनुरागीं १२ ॥

टी०। काहेते सुरनगर लजात विबुध जे देवता ते विमान बनाइकै आनन्दते अपनीपुरीछांडि इहांको चलेआये ताते शोभा रहित अपनाको मानि लजात हैं हर्षसहित देवता फूल वर्षतहैं मानो गयोधनपायो रावणकी भय करिकै ऐश्वर्य जातीरही सो अब प्रभुकीकृपासे पावेंगे ताते मानो गयेधनपाये ९ मंगलकार्यमें चारि वेदकेआचार्य चारिहूदिशिमें बैठार ताते अपनेअपनेवेदके मन्त्र उच्चारणकरत ताके हेतु रघुकुलके गुरुज्ञानी वशिष्ठजी बरे कही नेवते अरु उपरोहिती कार्यहेतु वशिष्ठजी आपुही अथर्वणी हैं तिनकी माहिमा जगत् जानत है १० ते वशिष्ठजी वेदकीविधि करि लोकरीति करबेको कहे वेदविधि यथा ॥ नामकरणविधाने अभ्युदयकादि कृत्वा नान्दीमुखप्रतिज्ञावरणसंकल्पस्वस्त्ययनं

शान्तिगणेशवरुणगौरीपूजनं चतुर्दशमातृपूजनं ब्राह्मणान्भोज-यतिघृतेनहवनंकुर्यात् अश्वत्थपत्रेनामलिखित्वापूजनं इत्यादि करि लोकरीति यथा बालकको स्नानकराय नवीनवस्त्रपहिराय ताकी मातागोदलैकै चौकपर पूर्वमुखबैठत अरु बालकको नाम पीपरकेपत्तापरलिखि पूजनकरि नाम बालकके कानमें सुनाइदेत तीनिबार विप्रशर्मान्त क्षत्रीवर्मान्त वैश्यगुप्तान्त शूद्रदासान्त लोकरीति करिबे को वशिष्ठजी मधुरवाणी ते कहे शिशुसहित कौशल्यारानीको बेगि चौकपर बोलायो ११ सोसुनिबडीभागिनी सुवासिनी गावती लेचलतीभईं सो समाजदेखि गानसुनि उमा रमा इंद्राणी अनुरागती भईं १२ ॥

मू० । निजरुचिवेषविरंचिके हिलिमिलिसँगलागी ॥ तेहिअवसरतेहुँलोककी सुदशाजनुजागी १३ चारुचौकबैठतभईं भूपभामिनिसोहैं ॥ गोदमोदमूरतिलिये सुकृतीजनजोहैं १४ सुखसुखमाकौतुककला देखिसुनिमुनिमोहैं ॥ सोसमाजकहवरणिकैऐसोकविकोहै १५ लगेपढ़नरक्षाऋचाऋषिराजविराजे ॥ गगनसुमनझरिजयजयबहुबाजनबाजे १६ ॥

टी० । तेउमाआदि अपनीरुचिकीअनुरूप वेषरचिकै हिलिमिलिकैस्नेहपूर्वकसाथमें चलीं आगेत्रैलोक्यमें रावणकीभयकरिके मानों संकटादशारही सो व्यतीतभई जेहिअवसरमें रघुनाथजी आंगनकोनिसरे तेहिअवसरमें आजुतीनिहुँलोककी सुदशाकही मंगलदशाजागी तातेमंगलकीदशाउदयभई ॥ प्रमाणजातके ॥ मंगलासकलमंगलोदयः १३ भूपभामिनी कौशल्याआदि सुन्दरी चौकपर बैठी शोभितहैं गोदमें आनन्दकीमूर्त्तिलिहे जिनको सुकृतीजन जोहतहैं १४ तासमयको सुखशोभा कौतुककीकला ताको देखिसुनि मुनिनके मनमोहत सो समाजको कौनकविहै

जो उपमादै वर्णनकरै १५ ऋषिराज वशिष्ठजी ते रक्षाऋचा पढ़न लगे ॥ प्रमाणनामकरणविधाने ॥ यथा ॥ ॐ अंगांगादभिजाता सिहृदयादभिजायसे ॥ आत्मावैपुत्रनामासित्वंजीवशरदांशतम् ॥ इत्यादि पठनलगे विराजेऋही शोभितहैं गगनतेदेवताजय जयकारकरि फूलवर्षतहैं बहुतप्रकारके बाजाबजनेलगे १६ ॥

मू० । भयेअमंगललंकमेंसकसंकटगाजे ॥ भुवनचारि दशकबड़ेदुखदारिदभाजे १७ बालविलोकिअथर्वणीहँसिहरहिजनायो ॥ शुभकोशुभमोदमोदकोरामनामसुनायो १८ आलवालकलकौशल्यादलबरनसुहाये ॥ कन्दसकलआनन्दकोजनुअंकुरआये १९ जोहिजानिजपिजोरिकैकरपुटशिरराखे ॥ जयजयजयकरुणानिधेसादरसुरभाखे २० ॥

टी० । एककही शंका संकट संकटादशा गाजे ताते लंकामें अमंगल होनलगे जो चौदह भुवनके दुखदारिदभागते लंकामें निवासकरे १७ बालरूप प्रभुको देखि अथर्वणी जे वशिष्ठजी ते हर जो शिवजी तिनसों हँसिकै जनाये कि जोरूप तुम अपने मन में गुप्तराखे सोई रूप आजु जगत्में प्रसिद्धहै औ जो नामगुप्त जपतेहो सोई नाम इनको सब जगत् आजुते प्रसिद्ध जानैगो हँसे याते कि भक्त ऐसे होते हैं शुभकर्त्ता भक्ति ताके शुभकर्त्ता रामनाम मोदकर्त्ता ज्ञान ताको मोदकर्त्ता रामनाम सोई राम नामसुनाये प्रसिद्धकरे अथवा पीपरकेपत्तापरलिखि ताकी पूजा करि सो बालकके कानमें सुनाये ॥ प्रमाणं नामकरणविधाने ॥ अश्वत्थपत्रे नामलिखित्वा पूजनं पाद्मे स्वदक्षिणकर्णे अमुकवर्मासीतित्रिवारं श्रावयति ॥ माता बालकको चौक में लैकै पूर्वमुख बैठत आचार्य तीनिबार नाम बालकके कानमें सुनावत १८ प्रथम जन्मसमय कल्याण कन्दकही मूल सूचितकरे अब नाम-

करणमें अंकुरित होवो कहत आलबालकही थाल्हा कौशल्याजी हैं बालरूप अंकमें सोई अंकुरमें हैं रामनामके द्वै वरण नाम-करणमें प्रकटहोवो सोई दोदलहैं प्रभुको प्रसिद्ध देखिबो सोई मानों सब आनन्दको कन्द अंकुर आयो है १९ शंकरको वशिष्ठ जीजनाये सोसुनिकै जोहिकही देखिकै जानिकै जो नामसुनो सो जोरिकही मिलाइकै कि जो हमारेमनमेंहै सोईरूप है जोहम जपते हैं सोईनामहै यहजानिकै करपुट हाथजोरि माथे धरिनम-स्कारकरिकै कहे जयहोय जयहोय हे करुणानिधे ऐसा आदरते सुरनसहित शिवजी कहे २० ॥

मू० । सत्यसंधसांचेसदाजेआखरआषे ॥ प्रणतपाल पालेसही जेफलअभिलाषे २१ भूमिदेवदेवदेखिकैनरदेव सुखारी ॥ बोलिसचिवसेवकसखापटधारीभंडारी २२ देहुजायजेचाहियेसनमानसँभारी ॥ लगेदेनहियहरषिकै हेरिहेरिहँकारी २३ राम निछावरिलेनको हठिहोतभि खारी ॥ बहुरिदेततेहिदेखियेमानहुँधनधारी २४ भरतल षणारिपुदलनहूं धरेनामविचारी ॥ फलदायकफलचा रिकेदशरथसुतचारी २५ भयेभूपबालकनकेनामनिरूप मनीके ॥ गयेशोचसंकटमिटे तयतेपुरतीके २६ सफ लमनोरथविधिकिये सबविधिसबहीके ॥ सबकेहैगा येसुने सबकेतुलसीके २७ ॥

टी० । जे आखरआखे ते सांचे हैं ताते सत्यसिन्धु सदा हौ कौन आखरआखे नृपतौ तनयहोवेमें आई सोई आनि प्रकट भये जो कहे सो करे जे फलअभिलाषे मनुमहाराज चाहनतु-महिंसमानसुत सो अभिलाषपाये ताते आपु प्रणतपालहौ २१ भूमिदेव वशिष्ठजी के अरु देवतनके वचनसुनि नरदेव जे श्री-

दशरथमहाराजको पूर्वजन्मकी सुधिआई ताते सुखारी भयेतें दानदेबेकी इच्छाकरे तेहिहेत बोलाये सचिव सेवकसखा पटधारी वसनशालाकेअधिकारी भंडारी खजाञ्चीआदि२२सबनको आज्ञा दिये कि जाको जो रुचै ताको सोई देउ आदर सो संभारि करि कैतेहृदयमेंहर्षसहितदेनलगे हेरि देखिहँकारीबोलाइकै२३ देवता प्रभुकी निछावरि हठकरिकैलेतेहैं मानों भिखारीहैं तिनहोंको पीछेदानदेते देखो मानों धनधारी कुबेरहैं २४ यथा रामनामधरे तैसे भरत लक्ष्मण शत्रुहननाम विचारिकैधरे श्रीदशरथमहाराज के जो चारिपुत्रहैं ते अर्थ, धर्म, काम, मोक्षादि चारिफल हैं तिनहूंके फलदायकहैं २५ जबतक बरहौं नहीं होत तबतक सूतिकागृहविषे अनेक भयरहती हैं ताते तिनको शोचसंकटरहा सो जब भूप बालकनकेनाम अनूपभये नीके निर्विघ्न बरहौं पारभयो तबते पुरकी त्रियनके शोचगये ताते संकट मिटे २६ तब सब विधिके मनोरथ विधाता सफलकरे सोई चरित्र गाये सुने अबहूं सबके मनोरथ औ तुलसीके सफलहोइहैं २७॥

मू०रा०बि०। सुभगसेजसोहतकौशल्यारुचिररामशिशु गोदलिये ॥ बारबारविधुबदनविलोकतलोचनचारुचकोरकिये १ कबहुंपौढ़िपयपानकरावत कबहुंकराखतलाइ हिये ॥ बालकेलिगावतहलरावत पुलकितप्रेमपियूषपिये२ विधिमहेशमुनिसुरसिहातसबदेखतअंबुदओटदिये॥ तुलसिदासऐसोसुखरघुपति पैकाहूपायोनविये ३ ॥

टी०। बालकेलिवर्णनकरतहैं मणिनमय प्रकाशमानमंदिर बिषे क्षीरफेन सम कोमल सुन्दरी सेजपर कौशल्याजी विराजमान सुन्दरबालकरूप रघुनाथजीको गोदमें लिहे अपने नेत्र चकोर किहे प्रभुको मुखचन्द्र बारबार देखती है १ कबहूं

पौढ़िकै दूध पियावत है कबहूं हृदय में लगाइ राखत कबहूं पुलकांग ह्वै प्रेम अमृतपिये हाथपै डुलावत बालकेलि गान करिकै २ ब्रह्मा शिव मुनि नारदादि सुर इन्द्रादि ते मेघनकी ओटदैकै देखत हैं सिहात कहीं ललचात सन्मुख देखे सुख न रही ताते बादर ओटते देखत श्रीतुलसीदास कहतहैं कि जो सुख कौशल्यारानी को है ऐसा सुख रघुपतिपै काहू वियोकहीं दूसरे ने नहीं पायो है ३ ॥

मू० राग सोरठ ॥ ह्वैहौलालकबहिंबड़े बलिमैया ॥ रामलषणभायते भरतरिपुदवनचारुचारौभैया १ बाल विभूषणवसनमनोहर अंगनविरचिबनैहौं ॥ शोभा निरखिनिछावरिकरि उरलाइवारनेजैहौं २ छगनमगन अँगनाखेलिहौमिलि ठुमुकिठुमुकिकबधैहौ ॥ कलबलवचनतोतरेमंजुल कहिमासोंहिंबोलैहौ ३ पुरजनसचिवराव रानीसब सेवकसखासहेली ॥ लेहैंलोचनलाहुसफल लखि ललितमनोरथबेली ४ जासुखकीलालसालटूशिव शुकसनकादिउदासी ॥ तुलसीतेहिसुखसिन्धुकौशलामगनपैप्रेमपियासी ५ ॥

टी० । मैया बलिजाइ हे लाल कब बड़ेहोइहौ राम लषणके मनमें भावते भरत शत्रुहनके मनभावते सो सुन्दर चारौ भैया कब बड़े होइहौ १ नूपुर करधनी कठुला पहुँची कड़ा अङ्गद इत्यादि बाल विभूषण रूप झंगुली टोपी आदि वसनते अंग अंगमें विरचिके बनैहौ अंग उबटन नेत्रांजन कपोलपै कपोल पत्र भाल तिलक डिठौना शीशपै बार गुहि सोनेकी किरिनि की लटकनी आदि बनाय ताकी शोभा देखि निछावरि करि उरमें लगाय मैं निछावरि ह्वै जैहौं २ पगनसों दौरि हाथले खेलौना लै कानसों सुनि नेत्रन सों देखि मुखसों बोलि रस

नासों सीठी चीजखाय इति छा अंगनसों मगन है कब आंगन में खेलिहौ अरु मोको मिलिके कब ठुमुकि २ भगिहौ कल कही सुनिबे में मधुर बलकही बुद्धिमें बलिष्ठ ताको कलबल कही ते तोतरे शब्दमें होत ते तोतरे मंजुल वचन सो मोको कब मा कहि बोलैहौ तहां वचन तीनप्रकार होत प्रथम बावले जो आकार आदि स्वर वकार अक्षर उच्चारण होत ताको अर्थ भावते जानि परत जाको बोलैया बावला कहावत दूसरे तोतरे वचन जो तवर्ग के तरेके वर्गनके अक्षर उच्चारण होत सफा तवर्ग के ऊपर तीन वर्गके अक्षरको तवर्गते बोध होत ॥ यथा ॥ कूकुर को तूतुर चलौ को तलौ टूटको तूत इत्यादि ताको बोलने वाला तोतरा कहावत ते वचन सुनिबे में कल अर्थ बूझबे में बल चाही तीसरे चातुरे वचन जो चवर्गादि सब वरण शुद्ध उच्चारण ॥ यथा ॥ गणेशादि सुनत अर्थ बूझिपरै ताको बोलैया चतुर कही ३ महाराज ॥ सब सखा सचिव सेवक रानिनकी सहेली ते सबमनोरथ बेली फलित देखि कब लोचनको लाहु लेहैं ४ जा सुखपै शिव जी लटू कही आसक्त हैं जासुखपै शुक सनकादि जगते उदास रहते गोसांईजी कहत सोई सुखसिन्धु में कौशल्या मगन हैं पै प्रेमकी पियासी हैं आनन्द मगन ज्ञानदेश ताको त्याग प्रेम भक्तिदेश ताते ग्रहण प्रेमकी विह्वल दृष्टिते लालन पालनकी पियास भक्ति प्रेमके आगे ज्ञानानन्द तुच्छ ॥ प्रमाणंभागवते ॥ श्रेयःश्रुतिम्भक्तिमुदस्यतेविभो क्लिश्यन्तियेकेवलबोधलब्धये ॥ तेषामसौक्लेशलएवशिष्यते नान्यद्यथास्थूलतुषावघातिनाम् ५ ॥

मू० । पगनकब चलिहौ चारौ भैया ॥ प्रेमपुलकिउर लाइ सुवनसब कहतसुमित्रा मैया १ सुन्दरतनशिशुवसन भूषण नखशिखनिरखिनिकैया ॥ दलितृणप्राणनि वारिकरिकरि लेहैं मातुबलैया २ किलकनिनटनि चल

निचितवनिभंजि मिलनिमनोहरतैया ॥ मणिखम्भनप्रतिबिम्बझलकछवि छलकहिभरिअँगनैया ३ बालविनोदमोदमंजुलविधु लीलाललितजोन्हैया॥ भूपतिपुण्यपयोधिउमँगिपुर घरघरअनँदवधैया ४ ह्वैहैंसकलसुकृतसुखभाजन लोयनलाहुलुटैया ॥ अनायासपाइहैंजन्मफल तोतरेवचनसुनैया ५ भरतरामरिपुदवनलषणके चरित सरितअन्हवैया॥ तुलसीतबकेसेअजहुंजानिबे रघुवरनगरबसैया ६ ॥

टी०। सुमित्रा मैयासब पुत्रनको उरमें लगायके प्रेमसों पुलकि कहतीहैं कि चारिउभैया कब पगनचलिहौ १ सुन्दरतन में बाल अवस्थाके वसनभूषण नख शिखलौं निकैयाकही शोभा निरखि तृणतोरि मातुसब बलैया लेहैं २ किलकनि नाचनि चलनि भागिकै मिलनि इत्यादि बाल केलिकी मनोहर छविकी प्रतिबिम्ब सों मणि खम्भनसेंपरी ताकी छविकी झलक अँगनाई भरिकै छलकिजाय आकाश आदि सबदिशनको ३ चारिउ भाइनको बाल चरित ताकोमोद सोई मंजुल उज्ज्वल विधु कही पूर्ण चन्द्रमाहै पूर्णचन्द्र देखि समुद्र उमगि कोलाहल करत इहां पुण्यके पयोधि भूपति उमगि हैं घरघर में आनन्द वधाई बाजैगी सोई कोलाहल है चन्द्रमें चाँदनी होत इहां लीला सोई जोन्हैया कही चाँदनी है ४ अरु जे लोचन लाहुके लुटैया जनकपुरवासी आदि जे बालचरितके तोतरे वचन नहीं सुने किशोर अवस्था की छवि को लोचनन सों लाहुलूटैं॥ यथा॥ राज समाज भूरिभागी जिन लोयन लाहुलहे इकठौरी. ते सकल सुकृतके भाजन ह्वैहैं॥ यथा॥ हम सब धन्य सुकृत सुखरासी। भय जग जनमि जनकपुरवासी॥ अरु जे तोतरे वचनके सुनैया हैं अवध वासी ते अनायास कही विना परिश्रम जन्मको फल पैहैं सुकृतार्थ ह्वै हैं यथाअवध-

वासी सबनरनारि कृतार्थ रूप ५ इहां माधुर्यलीलाको वर्णन ताको सिद्धान्त माधुरीछवि प्रभुके अवलोकनते जीव कृतार्थ होत अरु लीला श्रवण आदिते साधनकरि माधुरी सिद्धिकी प्राप्ति ताके अर्थ गोसाईं तुलसीदासजी कहत हैं जे राम भरत लक्ष्मण शत्रुहन चारिउभाइन के चरितरूपी सरितके अन्हवैया कही जे लीला श्रवणमें मगन हैं ते जैसे तबके चरितके देखैया कृतार्थ रहे अवधवासी तैसे अवधवासी अबके लीलाके श्रवण करैया तेऊ अवधवासी जानना चाहिये ताते रघुवर नगर बसैया कहे ६ ॥

मू०। रागकेदार॥ चुपरिउबटिअन्हवाइकैनयनआंजे रचिरुचि तिलकगोरोचनकोकियोहै ॥ भ्रूपरअनूपमसि बिन्दुबारेबारेबारविलसतशीशपरहेरिहरैहियोहै १ मोदभरेगोद लियेलालतसुमित्रादेखि देवकहैंसबकोसुकृतउपवियोहै ॥ मातुपितुप्रियपरिजनपुरजनधन्य पुञ्जपुण्यपेखिपेखिप्रेमरसपियोहै २ लोहितललितलघुचरणकर कमलचारु चालचाहिसोछविसुकविजियजियो है ॥ बालकेलिवातवशझलकिझलमलत शोभाकीदियटिमानो रूपदीपदियोहै ३ रामशिशुसानुज चरितचारुगाइसुनि सुजननसादरजनमलाहुलियोहै ॥ तुलसीविहाइदशरथ दशचारिपुर ऐसासुखयोगविधिविरच्योनदियोहै ४ ॥

टी०। चारिमासकी अवस्था वर्णन है ताते उबटनलगाइ तेल सुगंधित चुपरि स्नान कराइकै नेत्रन में अंजन दियो माथपै रुचि पूर्वक रचि कही सँवारि सुन्दर गोरोचन को तिलक कियो भ्रूनाम भौंह तापै अनूपमसि बिंदु दियो जाको डिठौना कहते हैं शीशपर बारे बारे कही छोटे कोमल सचिक्कन बार विलसत कही शोभित हैं सो हेरि कही देखते हृदय को हरिलेत हैं १ मोद आनन्द भरि सुमित्राजी श्रीरघुनाथजी को गोद में लिहे लाल-

तकहि दुलारत देखि देवता कहत हैं की स्वको सुकृत उप-
जियो कही उदय भयो है सो कहत माताके पिताके प्रिय स्नेही
परिवार के जन पुरवासी ते पुण्य के पुञ्ज धन्य हैं जे प्रभुकी
माधुरीछवि पेखि कही देखिके प्रेमरस नेत्रनभरि पान करत
हैं २ लोहित कही लाल ललित सुन्दर लघुकही छोटे चरण हैं
औ हाथ कमल से ताकी चाल डोलावत ताकी छवि देखि सुकवि
को जिय जियो है शोभा कहिवे को हरष भयो ताते उत्प्रेक्षा
करत सुमित्रा जो हाथन पर लिहे हैं सोई मानो शोभाकी दियटि
है प्रभुको रूप दीपक है दियो है मानो धरो है बाल केलि सोई
वात नाम बयारि ताकी वश ह्वै जो पांव हाथ डोलावत सोई
मानो टेमि झलमलाइ कै झलकत है,३ सानुज भाइन सहित
प्रभुको बालचरित सुजन आदरते गाइके अरु सुनिकै जन्म
को लाहु लियो कृतार्थ भयो है गोसाईंजी कहत की एक दशरथ
को छाँड़ि चौदह भुवन में ऐसे सुखके योग ब्रह्माने वियो कही
दूसरे को नहीं रच्यो है ४॥

मू०। रामशिशुगोदमहामोदभरेदशरथकौशल्याहुलल
किलषणलाललयोहै ॥ भरतसुमित्रालयेकैकेईसुवनशत्रु
हन प्रेमपुलकमगनमनभयोहै १ मेढ़ीलटकनमेनिकनक
रचितबालभूषणबनाइ आछेअंगअंगठयोहै ॥ चाहिचु
चकारि चूमिलालतलावतउर तैसेफलपावतजैसेसुबीजब
योहै २ घनओटविबुधविलोकिबरषतफूल अनुकूलबच
नकहतनेहनयोहै ॥ ऐसेपितुमातुपूतपुरपरिजनविधिरजा
नियत आपुभरिएईनिमयोहै ३ अजरअमरहोहुकरैंहरिह
रछोह जरठजठेरिनसुआशिर्वाददयोहै॥ तुलसीसराहैंभा
गतिनकोजिनकेहिये डिम्भरामरूपअनुरागरंगरयो है ४

टी०। श्रीदशरथमहाराज महामोदभरे गोद में राखि राम-लालजीको लिये तैसेही ललकिकै कौशल्याजी लषणलाल को लियो सुमित्राजी भरतजीको कैकेयी शत्रुहनजीको लियो चारिहू जनके तनमें प्रेमपुलकि तामें मनमगनभयो १ मेढ़ीकहीदुइचोटी दाहिने बाँयेंकी एक वीचकी तीनौचोटी गुहि पीछे बांधत ताको मेढ़ीकही सो कलाबत्तूसों बांधि तामें किरनि के गुच्छनकी लट-कनीलागीं मणिकनकजटित बालअवस्थाके भूषण कड़ा पहुंटा पहुंची कठुला बजरबटा बघनहा करधनीआदि अंगअंगमें ठये कही पहिराये हैं अच्छीप्रकारते चाहसो चुचकारि चूमि लालत दुलारकरि उरमें लगावत तैसे फलपावत जैसे पूर्वजन्ममें सुकृत रूपी बीजवोयो २ घनओट देवता देखत अरु फूल वर्षि नेहनये होनेकी चाहसों अनुकूलवचन कहत की पितु दशरथ से माता कौशल्यासों पूत रामसे पुरीअयोध्यासी परिजन रामसम्बन्धी ऐसी समाज विधाता जन्मभर में एक यही निर्माण कियाहै ३ जेठ बड़ीउमिरिके स्त्री पुरुष आशीर्वाद देत की अजर अमर होहु हरिहर सदा छोहकरैं यह माधुर्यदशाहै अरु ऐश्वर्य देशमें ऐसाहै की अजर अमर तुम्हारो रूप सदा एकरसहोते तुमहोहु जारूपकी छोह हरिहर करत बालरूपके उपासना करत॥ प्रमाणम् महारामायणे शिववाक्यम्॥ अहंविधातागरुडध्वजश्च रामस्यबालेसमुपासकानाम्॥ अरु जरठ जो मनुजठेरी शतरूपा तिनको पूर्वहीं आशीर्वाद दियो ताते प्रकटभयो है ताते तुलसी वाकी भाग्यको सराहत जिनके हृदय डिंभबालरूप के अनुराग रंगमें रँगे हैं ४॥

मू०। रागआसावरी॥ आजुअनरसेहैंभोरकेपयपियतननीके॥ रहतवैठेठाढ़ेपालनेझुलावतहूं रोवतराममेरेशोचसबहीके १ देवपितरग्रहपूजिये तुलातौलियेघीके॥ तदपिकबहुंकबहुंकसखिऐसेहीआरतजबपरतदृष्टिदुष्टती

के २ वेगिबोलिकुलगुरु छुयेमाथेहाथअमीके ॥ सुनत आइऋषिकुशहरेन्नृसिंहमन्त्रपढ़िजोसुमिरतभयभीके ३ जासुनामवरबससदाशिवपार्वतीके ॥ ताहिझरावतकौशल्यायह प्रीतिकीरीतिकीहुलसततुलसीके ४ ॥

टी० । आजु भोरहीते अनरसकही उदास हैं ताते नीकेपय कही दूधनहीं पियत और न बैठेरहैं न ठाढ़ेरहैं पलना में झूलत हूं रोवत श्रीलालजी सो शोच मेरे ताते सबही के शोचहै १ देव पितृ ग्रहआदि नितपूजियत और घृतको तुलादिदान रोगनिवारणअर्थ करियत है हे सखी ताहूपर कबहूं २ ऐसे आरत मचलात जब कबहूं दुष्टतिय की दृष्टिमें परतहैं २ कुलके गुरुवशिष्ठजी को वेगि बोलावो अमृतरूपी हाथ से छुवैं सो सुनतेही ऋषि आइ के कुशहरे कही कुशहाथ में लै बांधा हरे नरसिंह मंत्रसों ॥ तंत्रशास्त्रे ॥ यथा ॥ ॐनमोनृसिंहायहिरण्यकशिपुवक्षस्स्थलविदारणायत्रिभुवनव्यापकायभूतप्रेतपिशाचशाकिनीडाकिनी कीलनोन्मूलनायस्तम्भोद्भवंसमस्तदोषान् हनहनशरशरचलचलकम्पकम्पमथमथ हुंफट् हुंफट् ठंठः महारुद्रजापितस्वाहा ॥ इति ॥ जाके सुमिरतभीय जो भूतबाधाआदि ताहू के भयहोत ३ जासु कही जिन रघुनाथजी को नाम शिव पार्वतीजी की सदा सर्व साधनहै ॥ कूर्मपुराणे शिववाक्यम् ॥ गोप्यंगोप्यतमंभद्रे सर्वस्वंजीवनंमम ॥ रामनामपरंब्रह्म कारणानांचकारणम् १ ॥ आदित्यपुराणे शिववाक्यम् ॥ अहंजपामिदेवेशि रामनामाक्षरद्वयम् ॥ श्रीसीतायास्वरूपस्य ध्यानंकृत्वाहृदिस्थले २ ॥ केदारखण्डे शिववाक्यम् ॥ रामनामसमंतत्त्वं नास्तिवेदान्तगोचरम् ॥ यत्प्रसादात्परांसिद्धिं संप्राप्तामुनयोमलाम् ३ ऐसे रघुनाथजी तिनको माधुर्य्यमो कौशल्याजी झरावती हैं यह प्रीतिकी रीति भक्तवत्सलता प्रभुकी तुलसी के हृदयमें हुलास कही आनन्द होत है ४ ॥ इत्यर्थः ॥

मू० । माथेहाथऋषिजबदियो रामकिलकनलागे ॥ महिमासमुझिलीलाविलोकि गुरुसजलनयनतनपुलकिरोमरोमजागे १ लियोगोदधायेगोदते मोदमुनिमनअनुरागे ॥ निरखिमातुहर्षीहियेआलीओट कहतमृदुवचनप्रेमकेसेपागे २तुमसुरतरुरघुवंशकेदेतअभिमतमांगे ॥ मेरेविशेषिगतिरावरीतुलसीप्रसाद जाकेसकलअमंगलभागे ३

टी० । माथेपर हाथ वशिष्ठजी के धरतही प्रभु किलकनलगे याते वशिष्ठजी उपरोहितीकर्म हमारो प्राप्ति हेतु ग्रहण करे ताके सुफल हेतु यह कृतज्ञ ऐसो लभ्यगुण है महिमा यथा शिव संहितायाम् ॥ अयोध्यापतिरेवस्यात्पतीनांपतिरीश्वरः ॥ अन्येषांमथुरादीनां रामांशाःपतयोयतः १ ॥ महेश्वरतन्त्रेशिववाक्यम् ॥ वासुदेवादियद्रूपमवताराःप्रकीर्तिताः ॥ तेषामैश्वर्यदातृत्वात् स्वयंपूर्णोत्तमोत्तमम् २ इतिरामोविग्रहवान् स्वयं ब्रह्मसनातनः ॥ आत्मारामश्चिदानन्दो भक्तानुग्रहकारकः ३ इति महिमा समुझि वर्त्तमानलीला विलोकि वशिष्ठजी के रोम रोम में प्रेम जगो नेत्रन बिषे जलभरि आयो है १ चित्तउमँगि रोमांचहोइ कण्ठ वचनरुकिजाय विह्वल दृष्टि प्रेमकी दृगन द्वार दरशाय ॥ ऐसा प्रेम वशिष्ठजी को देखि माताकी गोदछाँड़ि प्रभुधाये तब वशिष्ठजी गोदमें लैलियो ताते मोदमें मन अनुरागे कही रंगिगयो सो देखि मातु हर्षी हियेमें ताते आलीके ओटते कोमल वचन अमृत के ऐसे पागे कहती हैं २ तुम रघुवंश के कल्पवृक्ष सदाहो माँगे ते वाञ्छितफल देतहो ताहूपर मेरे तौ केवल रावरी कही आपुही की गति है सिवाय आपके और दूसरा भरोसा नहीं है गोसाईंजी कहत काहेते कौशल्या जी कहती हैं प्रसाद कही जिनकी कृपाते हमारे सकल अमंगल भागिगयो ३ ॥

मू०। अमियविलोकनिकरिकृपा मुनिवरजबजोये॥ तबतेरामअरुभरतलषणरिपुदवन सुमुखिसखिसकलतनयसुखसोये १ लाइसुमित्रालियेहिये फणिमणिज्योंगोये॥ तुलसीनिछावरिकरतमातु अतिप्रेममगनतनसजलसुलोचनकोये २ मातुसकलकुलगुरुवधू प्रियसखीसुहाई॥ सादरसबमंगलकियेमहिमन महेशपरसुवनसुधेनुदुहाई १ बोलिभूपभूसुरलिये अतिविनयबड़ाई॥ पूजिपायँसनमानिदानदिये लहिअशीशमुनिवरषैंसुमनसुरसाई २ घरघरपुरबाजनलगे आनन्दबधाई॥ सुखसनेहतेहिसमयकोतुलसीजानैजाकेचेरेहैं चहुंभाई ३॥

टी०। मुनिवर वशिष्ठजी की कृपाकरि अमृतरूपी नजरिसों जब देखे हे सखी तबते श्रीराम भरत लक्ष्मण शत्रुहन इत्यादि सब तनय सुख सोये १ फणि सर्प जैसे मणिको गोय कही चोराय राखत ताहीविधि सुमित्राजी बालकन को हृदय में लगाये गोसाईंजी कहत कि कौशल्याजी नेवछावरि करत अत्यन्त प्रेम में मगन ताते नेत्रन के कोयनमें जल भरा है २ प्रथम तीनि पद जन्म के छांड़ि बारापद बारामहीना के कहे ताते पन्द्रहम पद चैत्र में वर्षोत्सव को है माता कौशल्यादि कुलगुरुवधू अरुन्धती आदि अपर जे प्रिय सखी हैं ते सब आनन्द मंगल करतीभई आदरते महि पृथ्वी सोई मणि ताके महेश पार्थिव पूजाकराय स्नान हेतु सवन सुधेनु कपिलाआदि दुहाये अथवा क्षीरेश्वर महादेव को पूजबे हेतु सुधेनु दुहाईं महिम्नस्तोत्र सों दूध सों स्नान कराये अथवा मही के मणि नाग तिनके महेश नागेश्वर पर दूध चढ़ाइबे हेतु सवन सुधेनु दुहाये १ श्रीदशरथमहाराज ब्राह्मणनको बोलाइ तिनको अतिआदरते बिनती बड़ाई करि पायँ

पूजि दान दै सन्मान करि अशीष लहे सो सुनि सुरसाई इन्द्र फूलवर्षे २ आनन्द वधाई घर घरमें बाजनेलगी पुरमें तासमय को सुख सोई जानै जाको चित्त चारो भाइनको चोरो है अथवा पुरवासिन को प्रभुपर जो सनेह ताको सुख ताही अवसरको तुलसी जानत जाको चित्त चारो भाइनको चेरो है ताते ३ ॥

मू० । रागधनाश्री ॥ याशिशुकेगुणनामबड़ाई ॥ कोक हिसकैसुनौनरपति श्रीपतिसमानप्रभुताई १ यद्यपिबु धिवयरूपशीलगुणसमयचारुचारौभाई ॥ तदपिलोकलो चनचकोरशशिरामभक्तिसुखदाई २ सुरनरमुनिकरिअ भयदनुजहति हरिहिधरानिगरुवाई ॥ कीरतिविमलविश्व अघमोचन रहीसकलजगछाई ३ याकेचरणसरोज कपटतजि जेभजिहैंमनलाई ॥ सोकुलयुगलसहिततरि हैंभव यहनकछूअधिकाई ४ सुनिगुरुवचनपुलकितन दम्पतिहर्षनहृदयसमाई ॥ तुलसिदासअवलोकिमातुमु ख प्रभुमनमेंमुसकाई ५ ॥

टी० । वशिष्ठजी कहतहैं कि या शिशु कौशल्यानन्दन श्याम-सुन्दर जो हैं ताके रूपके गुणनामकी बड़ाई अत्यन्तहै हे नरपति ताको को कहिसकै कदाचित् श्रीपति के तुल्य कहिये तिनकी प्रभुताई समानकही थोरी है इनके आगे ॥ प्रमाणंशिवसंहिता याम् ॥ ब्रह्मकोटिश्चविष्णुश्च रुद्रकोटिशतानिव ॥ सृष्टिस्थि तिलयानांच कर्त्ताश्रीरघुनन्दनः १ सदाशिवसंहितायाम् ॥ विष्णु कोटिप्रतीपालं ब्रह्मकोटिविसर्जनम् ॥ रुद्रकोटिप्रमथनं मातृको टिविनाशनम् २ सर्व्वसौभाग्यनिलयं सर्व्वानन्दैकदायकम् ॥ कौशल्यानन्दनंरामं केवलम्भवखण्डनम् ३ पुनःमहारामायणे ॥ धर्मादिरक्षणविधौसुरपालनाय येचासुरान्दलयितुंबहुशोवताराः ॥

सर्वस्यकारणंकलारघुनाथएकोऽयोध्याधिनाथसुतएवपरःपरेशः४ विनयपत्रिका यथा ॥ हरिहि हरिता विधिहि विधिता शिवहि शिवता जिन दई । सो जानकीपति मधुर मूरति मोदमय मंगल-मई ॥ इत्यादि १ यद्यपि बुद्धि, अवस्था, रूप, शील सों चारौं भाई बरोबरि सुन्दरहैं तदपि लोक के लोचन चकोरन को राम-चन्द्र पूरण सुखदायक भक्तन के सुखदेनहारे २ अब स्वरूपको गुण कहत सुर नर मुनिनको अभयकारी है दनुज रावणादि हति पृथ्वीकी गरुवाई हरी है अरु इनकी कीर्त्ति संसार के पाप छुड़ावनहारी और निर्म्मल कीर्त्ति सब जगमें छाइरही है इहां दनुजहते में यह कहैको चाही सो नहीं कहे ताते सुर नर मुनिन ते पृथ्वीको हलुकाई दानते दनुजनको मुक्ति दानते कीर्त्ति कहे इहां सुर मुनि अभयदान में करुणा दया गुणहै दनुज हतन में शौर्य्यगुण तिनको मुक्तिदेबे में करुणा गुणन ते कीर्त्ति विशेष होत यह ग्रन्थ में कीर्त्तिहीको अधिकारहै ३ अब नामकी बड़ाई करत याके कही इनके पदकमल में मनलगाइ कपट छांड़ि इनके नामको भजो सो मातापक्ष पितापक्ष दोऊ कुल सहित भवसा-गर तरि है यह प्रभुता कछू अधिक नहीं नामको प्रताप अनन्त है ॥ प्रमाणं विष्णुपुराणे ब्रह्मवाक्यम् ॥ अहं च शंकरो वि ष्णुस्तथासर्वेदिवौकसः ॥ रामनामप्रभावेण संप्राप्तास्सिद्धिमुत्त माम् १ भविष्योत्तरपुराणे नारायणवाक्यम् ॥ भजस्वकमले नित्यं नामसर्व्वेशपूजितम् ॥ रामेतिमधुरंसाक्षान्मयांशकीर्तयेदि ति २ अग्निपुराणे शिववाक्यम् ॥ नभयंयमदूतानां नभयंरौरवा दिकम् ॥ नभयंप्रेतराजस्य श्रीमन्नामानुकीर्त्तनात् ३ इत्या-दि ४ वशिष्ठजी के वचन सुनि दम्पति रानी राजा दुहुनको तन पुलकिकै प्रेममें मगनभयो ताते हर्ष हृदयमें नहीं समात गोसाईं जी कहत प्रभु माताको मुख देखि मनमें मुसक्यात कि आजु दैत्य वध भूमिभार उतारब सुनि हर्षि हिय यहीको फिरि दुःख मानैगी वनयात्रा आदि ५ ॥

मू०। रागबिलावल॥ आजअवधआगमीयकआयो॥ करतलनिरखिकहतसबगुणगण बहुतनपरचोपायो १ बूढ़ोबड़ोप्रमाणिकब्राह्मणशंकरनामसुहायो ॥ सँगशिशुशिष्यसुनतकौशल्याभीतरभवनबोलायो २ पाँयपखारिपूजिदियोआसन अशनवसनपहिरायो ॥ मेलेचारुचरणचारोसुत माथेहाथदिवायो ३ नखशिखबालविलोकिविप्रतन पुलकिनयनजलछायो ॥ लैलैगोदकमलकरनिरखत उरप्रमोदअनमायो ४ जन्मप्रसंगकह्योकौशिकमिस सियास्वयंवरगायो ॥ राममरतरिपुदवनलषणको जयसुखसुयशसुनायो ५ तुलसिदासरनिवासरहसवश भयोसबकेमनभायो ॥ सनमानोमहिदेवअशीशत सानँदसदनसिधायो ६ ॥

टी०। आज श्रीअयोध्याजी में एक आगम को कहनेवाला अर्थात् सामुद्रिकी आयो है सो करतल कही हाथ देखिकै गुण गण कही गुण अरु अवगुण जो कुछ होत सो सब सांचे कहत काहेते जानियत वाको परचो बहुते जनोंने पायो है ताते सांचु है १ शङ्कर ऐसा नाम बूढ़ो ब्राह्मण प्रमाणिकहै छोटे लरिका सङ्ग में शिष्य हैं गणेश स्वामिकार्त्तिक काकभुशुण्डि आदि सो सुनि श्रीकौशल्या जी भवन के भीतर बोलायो २ श्रीकौशल्या जी विप्रन के पांयधोय आसनपर बैठाय भोजन करवाय नवीन वसन पहिरायो तब चारिउ पुत्रनको पांय लगाय माथपर हाथ दिवायो ३ नखते शिखातक बालकरूप प्रभुको देखि शङ्करजी को तन प्रेम सों पुलकि नेत्रन में जल भरिआयो गोद में लेकर कमल देखत जो स्वरूप मन में सो हाथपै पाय याते प्रमोद मनमें नहीं अँबात है ताहीते नेत्र जलसों भरिआये हैं ४ जन्म प्रसङ्ग पूर्वजन्म की तपस्या सों विश्वामित्र की यज्ञरक्षा हेतु जैहैं

जनकपुर में श्रीविदेहकन्या को स्वयंवर में धनुष तोरि विवाह करिहैं यज्ञरक्षाहेतु अहल्या तारब धनुषभङ्ग लङ्का जीति इत्यादि जय रघुनाथ जी को कहे प्रभु में प्रीति भक्तिको सुख भरतजीको कहे मेघनाद वध आदि सुयश लक्ष्मणजी को अश्वमेध में जात यज्ञ घोड़ा लाइवो सुयश शत्रुहनजी को कहे ५ गोसाईं जी कहत कि सबके मन भायो भयो तातें रनिवास आनन्द वशहै विप्रको सन्मान करे तातें आशीर्वाद देत शिवजी आनन्द सहित आपने धाम को सिधाये ६ ॥

मू०। रागकेदार ॥ पौढ़ियेलालपालनेहौंझुलावों ॥ करपदमुखचखकमललसतलखि लोचनभ्रमरभुलावों १ बालविनोदमोदमंजुलमणि किलकनि खानिखुलावों ॥ तेइअनुरागतागगुहिवेकहु मतिमृगनयनिबुलावों २ तुलसीभनितभली भामिनिउर सोंपहिरायफुलावों ॥ चारुचरितरघुवरतेरेहि मिलिगाइचरणचितलावों ३ ॥

टी०। इहां बालकेलि में कौशल्या जी सहित गोसाईं जीकी विलक्षण उक्ति है ताको भावीकजन जानत हैं चित्त बुद्धि अहंकार मनसों वचनसों कर्मसों आसक्तता बरनेहैं हे लाल पलना परपौढ़िये हौं कहे मैं झुलावों इहां हाथ कर्म इन्द्रियनमें बली ताको झुलाइबे में लगाइ कर्म आसक्त भये हाथ पांव मुख चक्षु जे नेत्र इत्यादि कमल हैं ते लसत कही शोभित देखि तातें लोचन भ्रमरकरि भुलावों इहां लोचन ज्ञान इन्द्रियनमें बली तातें लोचन द्वारा मनको भ्रमरकरि भुलायो मनचंचल है तातें कर पद मुख नेत्रादि चारिस्थानकरि मन आसक्तकरे १ बालकेलि को आनन्द सोई उज्ज्वली मंजुलमणि कोहै तिनके प्रकटिबे हेतु किलकनि खानि है ताको खुलावों खानिते मणि निकसाइबो तिनके

गुहिबे हेतु अनुराग सोई डोराहै तासों गुहनहारी मति जो है बुद्धि मृगनयनी सुन्दर बड़े हैं नेत्र जाके ताको बुलावों गुहिबे हेतु इहां किलकनि खानिते बालकेलि मणि प्रकटि ताको गुहनहारी बुद्धि सुनयनी स्त्री है ताको अनुराग धागा हैं अनुराग सों बालकेलिको जोरबगुहब है पद वनबहार है इहां बालकेलिमों बुद्धि आसक्त करे २ ऐसा जो हार है ताको पहिरिबेको स्त्री चाही तहां तुलसीकी भनित कही काव्यरूप भामिनि के उर में पहिराय काहे ते रामचरित्र के संग भली है ताके उरमें बालकेलिके हार बुद्धिको गुहा आगे रविकुलमंडन रामलला इहु पद हार सरीखे बालकेलिको है सो काव्य के कंठभाग में है सोई पहिरावबहै सो पहिराइके फुलावों प्रफुल्लित करों बालचरित हार पहिरि काव्य भली भई देखि हृदय को हुलासभयो तामें अभिमान आसक्त भयो हे रघुवर सोई भनित के संग तुम्हारे सुन्दर चरित गावों यामें वचन आसक्त भयो वचननमें लगाइ चित्त आसक्तभयो ३ ॥

मू० । सोइयेलालल्लाड़िलेरघुराई ॥ मगनमोदलिये गोदसुमित्राबारबारबलिजाई १ हँसेहँसतअनरसेअनरस तप्रतिबिम्बनिज्योंझांई ॥ तुमसबकेजीवनकेजीवनसकल सुमंगलदाई २ मूलमूलसुरवीथिबेलितमतोमसुदलअधि काई ॥ नखतसुमननभविटपओटमनो क्षपाछटकिछबि छाई ३ होप्रभातअलसाततातेरी बानिजानिमैंपाई ॥ गायगायहलरायबोलिहों सुखनींदरीसुहाई ४ बछरूछ बीलेछौनामगनमेरे कहतमल्हायमल्हाई ॥ सानुजहिय हुलसततुलसीके प्रभुकिलकतलरिकाई ५ ॥

टी० । सुमित्राजी गोदमें लिहे मोदमें मगन ह्वै बार २ वारन

जाइ कहती हैं हे लाल लाड़िले रघुराई सोइये १ बालविनोद में मगनहै कहती हैं हे लाल तुम हँसेते हँसतहौ उदास भयेते उदास होतहौ यथा प्रतिविम्बन में झाईं सो मैं जानतहौं कि तुम सब जीवनके जीवन कही जियावनहारहौ सबको सुन्दर मंगल देनहारहौ अथवा हँसेते हँसतहौ यथा सुग्रीव विभीषणादिते सज्जनसों अनरसेते अनरसतहौ यथा बालि रावणादि लषणसों जैसे प्रतिविम्बनि कही दर्पनीमें जैसा मुखकरो तैसाही देखिपरत झाईं कही परछाहीं ताते तुमतौ सब जीवनके जीव सुंदर मंगल देनहारहौ सबको समान परन्तु जो जैसा भाव करत ताको तैसाही होजातहौ २ अब रात्रीकी शोभा वेलिकरि वर्णन करतहैं तामें मूल नक्षत्र सोई मूलहै सुरवीथी सोई वेलिहै तम अन्धकार तोम समूह सोई दलनकी अधिकाई है नखत सोई फूलहैं नभ सोई वृक्ष है तापर वोड़ीकही आश्रित ह्वै क्षपा जो रात्रीहै सोई फलित वेलिसी छटकि कही फैलिकै छविसों छाय रहीहै मूलनक्षत्र को याते मूलमें लिखे कि श्रावण में पूर्वते धनराशिके संग में सांझको मूल उदयहोत अरु पूर्वहीते रात्रीको विस्तारहै अरु श्रावणमें पूर्वहीते सुरवीथी सांझसमय पश्चिमका सीधीरहत तहां शिशुमारचक्रके वामकोण के समीप मूलनक्षत्र सिंहपूछ की आकार लांबी ग्यारह नक्षत्र सों मूलकी उदयहै तहां एकतौ सुरवीथीके मूलस्थान में दूसरे लम्बा प्रमाण तीसरे मूलनाम ताते मूलनक्षत्र को सुरवीथी वेलिको मूलकहे मुहूर्त्तचिन्तामणि में प्रसिद्धहै ३ हे तात तेरी बानि मैं जानिपाईहौं कि अलसातहौ काहेते कि जमुहातहौ ताके अर्थ गाइ गाइ हलराइकै सुन्दरि सुखनींदको वोलैहै ४ मल्हाइ दुलराय दुलराय कहती हैं हे मेरे बछरू छबीले छौना छगन मगन अब सोइये गोसाईंजी कहत हैं कि सहित अनुज प्रभुकी ललित लरिकाईं मेरे हृदयमें हुलसत है यह पद श्रावणमासको है ५ ॥

मू० । ललनलोनेलैरुवा बलि मैया ॥ सुखसोइयेनीं

दबेरियाभईचारुचरितचारौभैया १ कहत मल्हायलाय उरछिनछिनछगनछबीलेछोटेछैया॥ मोदकन्दकुलकुमुदचन्दमेरेरामचन्द्ररघुरैया २ रघुवरबालकेलिसंतनकी सुभगशुभदसुरगैया ॥ तुलसीदुहिपीवतसुखजीवतपय सुप्रेमघनोघैया ३॥

टी०। जिनके ऐसे चरित्र सुन्दर चारों भैया तिनपै मैया चलिजाइ हे ललन लोने बछरा अब नींदकी बेरिया भई ताते सोइये १ मल्हाइकही दुलराइकै क्षणक्षणपै हृदय में लगाइकै कहती हैं सोइये अरु पद हृदय कर नेत्र श्रवणादि छः अंगनसों छवीले बालक प्यारसों छैया कहे मोदकन्द आनन्द को मूल कुल कुमुद कोकावेली ताको चन्द्रमा ऐसे मेरे रामचन्द्र रघुकुल के रैया इत्यादि बार बार कहती हैं २ रघुवर बालकेलि सन्तनकी सुन्दर शुभदेनहारी कामधेनु है प्रेम सोई दूध है ताको तुलसी दुहि पीवत है घनो कही बहुत अघैया अघायकै यहां एदोतोतः करि अकार लुप्त है सोई पय पान किहे सुखपूर्वक जीवत है पदान्त विषे स्थित एकार व ओकार तिहिते परे अकार को लोपहोत ताते घनो अघैया को घनोघैया ह्वै गयो ३॥

मू०। सुखनींदकहत आलीआलीआइहौं।। रामलषणरिपुदवनभरतशिशु करिसबसुमुखिसोवाइहौं १ रोवनिधोवनिअनखानि अनरसनिडीठमूठनिठुरनसाइहौं ॥ हँसनि खेलनि किलकनि आनन्दनि भूपति भवन बसाइहौं २ गोदविनोदमोदमयमूरति हरषिहरषि हलराइहौं ॥ तनुतिलतिलकरिवारिरामपर लेहौंरोगबलाइहौं ३ रानी रावसहितसुतपरिजन निरखिनयनफलपाइहौं ॥ चारुचरितरघुवंशतिलककेतहँ तुलसीमिलिगाइहौं ४॥

टी० । लालन पालने में सुमित्रा जी की नवीन उक्ति है हे लालन सुखनींद कहत हैं हे आली मैं आइहौं श्रीरामादि शिशुन को सुमुख कही प्रसन्नता सों सोवाइहौं १ रोवनि धोवनि लोक कहनूति है अनखानि जो दुर्भाव ते हा हमारे ताकी नजरि न लागै अनरसनि उदासीनता डीठि नजरि मूठी टोनादि निठुर जो है ताको नशावोंगी अरु हँसनि खेलनि किलकनि आनन्दनि आदि भूपति के भवन में बसावोंगी जब बालक सुखसों सोवत तब जागे पर आनन्दते खेलत है २ बालकेलि आनन्दमय मूरति ताको गोदमें लैके हर्षिकै हलराइहौं अरु तन को तिलतिल करिकै श्री रामलालपै वारिकै रोगरूपी बलाय सो मैं लेउँगी ३ रानी राजा पुत्रपरिवार सहित निरखिकै नेत्रनको फलपाइकै श्रीरघुवंशतिलकके सुन्दर चरित तिनको तुलसी मिलिगाइहौं ४ ॥

मू० । राग आसावरी ॥ कनकरतनमयपालनोरच्यो मनहुमारसुतहार । विविध खिलौना किंकिनिलागेमंजुल मुक्ताहार ॥ रघुकुलमण्डनरामलला १ जननिउबटिअन्हवाइकैमणिभूषणसजिलियेगोद । पौढ़ायेपटपालनेशिशु निरखिमगनमनमोद ॥ दशरथनन्दनरामलला २ मदन मोरकीचन्द्रिका झलकनिनिदरततनजोति ॥ नीलकमल मणिजलदकीउपमाकहेलघुमतिहोति ॥ मातुसुकृतफल रामलला ३ लघुलघुलोहितललितहैं पदपानिअधरएक रंग । कोकविजोछविकहिसकै नखशिखसुन्दरसबअंग ॥ परिजनरंजनरामलला ४ ॥

टी० । अब इहिपद विषे कविकी उक्ति है तामें तीनि अभिप्राय हैं प्रथम पलना पर बालस्वरूप की शोभा वर्णन है दूसरे बालचरित में चन्द्रमाके सोलहपदन करिकै सोलहकला

वर्णनहैं तीसरे यथा चन्द्रहार चन्द्रमाकी कलनके आकार बनत सो स्त्री गरेमें पहिरत तथा बालचरित चन्द्रमाकी सोलह कलाको चन्द्रहार सरीखे भणितरूपा भामिनी के गरे में शोभित हैं ॥ उदाहरण॥ तुलसी भणित भली भामिनि उरसों पहिराइ फुलाचों॥ अब चन्द्रमा की सोलह कला यथा ॥ अमृतां मानदां तुष्टिं पुष्टिं प्रीतिं रतिं तथा ॥ लज्जां श्रियं स्वधां रात्रिं ज्योत्स्नां हंसवतीं तथा १ छायां पूर्णां तथा वा.म.ममांचन्द्रकलाः स्मरेत् इति रामार्चन चन्द्रिकाके तीसरे खण्ड शंखस्थापनमें प्रसिद्धहै॥ यथा चन्द्रकला तथा रघुकुल मंडनादि सोलह विशेषण इहिपदविषे हैं उस चन्द्रहार में द्वैपक्षकी कलाके आकार सुवर्णके मणिजटित बनत इत चन्द्रहार में सोलहपद की छायाआदि की सोलहपद अन्तके तिनकी छाया लैकै यह पद कहे हैं उस चन्द्रमा की अमावसको पन्द्रह कला लोप है एक कला रहत सो ओषधिन में वासकरि सजीव करत तिनको गौवैं चरत ताके दूध में घी में अमृत की आसार रहत ताही घीके होमादिते देवता प्रसन्न होत तब फिरि कला एक एक बढ़तहैं इति चन्द्रमा स्तोत्र में प्रसिद्ध है यथा॥ अमावस को ओषधिन में सजीव चन्द्रमा की एक कला तथा बालचरित चन्द्रमा में सुमित्राजी के गोदमें शयन वर्णन करे हैं सोई अमावस है॥ यथा॥ सोइये लाल लाड़िले रघुराई ॥ इति॥ पूर्णिमाको सोलहकला पूर्ण रहत सो कौशल्याजी के द्वारा जाग्रत् वर्णन करेहैं ॥ यथा॥ जननी कहै बार बार भोर भयो प्यारे॥ इति ॥ पूर्णिमा है अब बालचरित चन्द्रमाके सोलहकला को चन्द्रहार सरीखे वर्णन करत हैं कनक सुवर्ण, रत्न, वज्र, पद्मराग, वैदूर्य, मुक्ता, पिरोजा, मरकतादि करिकै जटित पालनो ताको मानो सुतहार कसी बढ़ई मोर जो कंदर्प सोई रच्योहै जयपुर आदि पश्चिम देशमें बढ़ईको सुतहार कहत तापलना विषे विविध खिलौना किंकिणी मंजुल मुक्तनके हार लगे हैं चन्द्ररथ में मृगाहै बालचरित चन्द्रमा में पलना मृगनयनी झुलावनहारी है चन्द्रमें

की एक कला अमावसको ओषधी सजीवन करत बालचरित में ओषधी रघुकुल ताके मंडन रामलला हैं चन्द्रहार में अमावसकी अमाकला सुमेरुस्थाने रहत बालचरित चन्द्रहार में सुख नींद कहत आली आइहौं अरु पालने रघुपतिहि झुलावै इन द्वैपदकी आशय लैकै सुमेरु स्थानेहै उहां ओषधी सजीवन अमाकला इहां रघुकुलमंडन रामलला १ जननी श्रीकौशल्याजी श्रीरामललाको उबटन लगाइ स्नान कराइ मणिनके भूषण कठुला कड़ा पहुँची अंगदादिसजि झंगुली टोपी पहिराय मोदकी भरी गोद में लेती भई पुनः पटु सुन्दर पलनापर पौढ़ाइ शिशुरूप प्रभुको निरखि मोदसे मग्न होती भई अब यथा चन्द्रहार में एक जन्म रातकी दूसरी चौदशि की कला के आकार सुमेरु समीप गुहही रहत ताही भांति बालचरित चंद्रमा के द्वै पदकी आशय इहिपद विषे है गुही है ॥ प्रथम नामकरणको पद यथा ॥ गोदमोदमूरति लिये सुक्कालीजन जो है नामकरणों में उबटि स्नान कराय वसन पहिराय माता गोदमें लेत ताको अभिप्राय यहहै जननी उबटि अन्हवाइ मणिभूषण सजिलियो गोद दूसरो अभिप्राय इस पद का है ॥ झूलत रामपालने सो है। भूरिभाग जननीजन जोहै ॥ ताके हेतुहै पौढ़ाये पटुपालने उस चन्द्रकी जन्मरात्रिको चराचर सुखी होत बालचरित में नामकरण में नाम सुनि सब सुखीभये जन्मरात्रि को वामकला सुन्दरि इहां दशरथनंदन रामलला अतिसुन्दर २ मदनके मोरकी चंद्रिका को निदरतहै तनुकी ज्योति अरु नीलकमल की कोमलता चिकनाई मणिकी झलक मेघकी श्यामता इत्यादि उपमा कहिये तो मति थोरी होतहै इहां उपमा वृथाते प्रतापी अलंकार है उहां चन्द्रहार में शुक्ल द्वितीया को और कृष्ण तेरसिकी कला के आकार सुमेरु के तीसरे स्थानपर गुही रहत बालचरित चंद्रमा को द्वैपदकी आशय इहां है एक तो नील कञ्ज जलद पुंज मरकतमणिसदृश श्याम काम कोटि शोभा अंग अंगन पर वारी और दूसरे सुभग सेज सोहत कौशल्या रुचिर

रामशिशु गोदलिये उहां द्वितीयाको अमृतकला सुकृती जानि सब नमस्कार करत इहां मातु सुकृतफल रामललाको अनेक ब्रह्माण्ड नमस्कार करत उहां द्वितीयाको अमृताकला इहां मातु सुकृत फल रामलला ब्रह्माण्ड के मंगलकर्त्ता ३ लघुनाम॥ छोटे छोटे सुन्दरलाल हाथ पांव ओठ एकरंगकेहैं और नखते शिखालों सबअंग अत्यन्त सुन्दर हैं तिनकी उपमा को ऐसा कवि है जो कहिसकै ते परिजनके आनन्ददाता रामलला अनूप हैं हां चन्द्रहार में शुक्ल तीज कृष्णद्वादशी की कलाकी आकार चतुर्थ स्थानपर रहत तथा बालचरित्र चन्द्रमा के द्वैपद की आशय इहां पदबिषे है एक तौ बंधुक सुमन अरु पदकञ्ज दूसरे पुरजन सचिव राव रानी सब सेवक सखासहेली लेहैं लोचनलाहू ॥ इति॥ उहां तीजको मानदा कला इहां परिजनरञ्जन रामलला सब को सन्मानदायक ४ ॥

मू०। पगनूपुरकटिकिंकिणीकरकंजनपहुँचीमंजु। हियहरिनखअद्भुतबनोमनुमनसिजमणिगणगंजु॥ पुरजनसुरमणिरामलला ५ लोचननीलसरोजसेभ्रूपरमसिबिन्दुबिराज। जनुविधुमुखछविअमीको रक्षकराखेरसराज॥ शोभासागररामलला ६ गभुवारीअलकावलीं लसैंलटकनललिततललाट। जनुउडुगणविधुमिलनकोचलेतमविदारिकरिबाट॥ सहजसुहावनरामलला ७ देखिखिलौनाकिलकहीं पदपानिविलोचनलोल। विचित्रविहंगअलिजलजज्योंसुषमासरकरतकलोल॥ भक्तकल्पतरुरामलला ८॥

टी०। पग में नूपुर कटि में किंकिणी करकमलन में सुंदरी पहुँची हृदय में कठुला तामें बघनहा इत्यादि कैसे शोभित हैं

मानो कंदर्पकी मणिगणनके गञ्जनहारे भूषणहैं इहां रूपक औ उत्प्रेक्षा अलंकार है चन्द्रहार में शुक्ल चतुर्थी कृष्ण एकादशी कला पंचम स्थानपै गुही रहत इहां द्वै पदकी आशय इहां पद एक तो रुचिर नूपुर किंकिणी मनुहरत रुनुझुनु करनि दूसरे तुलसी तन कैसे अजहुँजानि वै रघुवर नगर बसैया वहां चौथिको तुष्टिकला तुष्टतादाता इहां परिजन सुरमणि रामलला पुरवासिन को चिन्तामणि है ५ नील कमल सम नेत्र तिनपै सुन्दरी भौंहैं तापै मसिबिन्दु डिठौना विराजमान कैसोहै मानो सुखचन्द्रमाने छविरूप अमृत के रक्षाहेतु रसराज शृंगार ताको रक्षककरि राख्यो है इहां पूर्ण उपमा अरु उत्प्रेक्षा अलंकार है उहां चन्द्रहारमें शुक्लपंचमी कृष्णदशमीकी आकार षष्ठस्थान पै रहत इहां बालचरितके द्वैपदकी आशयहै एक तो नूपुर अनूप मातिविंदुवारे २ बार दूसरे नेकु विलोकियें रघुवरनि उहां पंचमी को धृतिकला इहां शोभासागर रामलला ६ गभुवारी कही नवीन सचिक्कण श्याम अलकावली बार सुवर्ण के तारनसों गुहि मोतिन के गुच्छनकी लटकनि ललाटपर शोभित है सो मानो उडुगण जे नक्षत्र ते आपनो स्वामीजानि मुख चन्द्रमाको मिलनचले तमअंधकार ताको विदारिकै यह करिकै इहां लटकन नक्षत्र है मुख चन्द्रमाहै वारतमहै ताको दोउदिशि समेटेते लकीर सो वाटहै ॥ इहां उत्प्रेक्षा है उहां चन्द्रहार में छठी औ नवमीकी कला इहां द्वै पदकी आशय बालचरित की एक तो टेढ़ी लटकनि मणिकनक जटितबाल भूषणबनाइ आछे अंगअंग ठयो है दूसरे द्वै वरु विहंग विलोकिये बालकबालिपुर उपवन बाग उहां छठीको प्रीतिकला प्रीति गुण थे सहज शोभायमान तथा इहां सहज सुहावन रामलला सहजही में सबसों प्रीति ताते सबको सुहावने ७ खिलौननको देखि किलकतहैं अरु हाथ पांव नेत्रचंचल हैं सो कैसे शोभित होत ज्यों शोभासरनिपै विचित्रपक्षी अरु भँवर कमल ते परस्पर कल्लोल करिरहे हैं इहां सुवा कबूतर मोर आदि खि-

लौना ते विचित्र पक्षीहैं हाथपद कमलहैं नेत्र अरु अलकावली भँवरहैं किलकनि शब्दचंचलता कल्लोल है ज्यों जानन पर्य्याय सो उत्प्रेक्षालंकार है उहां चन्द्रहारमें शुक्लसप्तमी कृष्णअष्टमीकी कलाके आकार एक सामने गुही रहत बालचरित चन्द्रमा के द्वै पदकी आशय एकतौ छगनमगन अँगना खेलत चारु चारौ भाई दूसरे जासु नाम सरबस सदाशिव पार्वती के ताहि झरावत कौशल्या यह प्रीतिकी रीति हिये हुलसत तुलसीके उहां सप्तमीको रतिकला सुखको स्थान है तथा भक्तकल्पतरु रामलला भक्तन के मनोवाञ्छित सुखदेवेको कल्पवृक्षके समान सदाहौ ८॥

मू०। बालबोलबिनुअर्थकेसुनिदेतपदारथचारि। जनु इनवचननतेभयो सुरतरुतापसत्रिपुरारि ॥ नामकामधु करामलला ९ सखीसुमित्रावारहीमणिभूषणवसनविभा ग। मधुरझुलाइमल्हावईगावैउमँगिउमँगिअनुराग ॥ हैजगमंगलरामलला १० मोतीजायोसीपमेंअरुअदिति जन्म्योजगभान । रघुपतिजायोकौशल्यागुणमंगलरू पनिधान ॥ भुवनविभूषणरामलला ११ रामप्रकटजब तेभये गयेसकलअमंगलमूल । मीतमुदितहितउदितहैं नितवैरिनकेउरशूल ॥ भवभयभञ्जनरामलला १२ ॥

टी०। बाल अवस्था के वचन कैसे हैं बिन अर्थ के परन्तु सुनतमें सुननहारको चारिफल देत हैं ताको सुनि आपको लघु मानि कल्पवृक्षवृक्ष भयो त्रिपुरारि आपुको लघुमानि तापसभयो अथवा इनहीं वचन सुनि कल्पवृक्ष औ त्रिपुरारि औ तापस वे चारिपदारथके दाताभये उहां चन्द्रहार में शुक्ल आठै कृष्णसातै की कला इहां द्वै पदकी आशय एकतौ कलबल वचन तोतरे बोलत दूसरे महिमा समुझि लीला विलोकि गुरु सजल नयन रोमरोम जामे उहां आठैको लज्जाकला सबको सन्तोषदायक

इहां नामका मधुकरामललाको नाम कामधेनु है ९ सखिन सहित सुमित्रा जी निछावरि करती हैं मणिभूषण वसन विभागकही अलग अलग अरु धीरेते झुलाइ दुलराइ अनुरागते उमँगिकै गावत हैं चन्द्रहार में शुक्लनवमी को कृष्ण अष्टमीकी आकार कला सामने रहत इहां द्वै पद बालचरित चन्द्रमाके हैं एकतो लाइसुमित्रा लिये हिये फणि मणि ज्योंगोये दूसरे बालकेलि अवलोकि मातु सब प्रेम मग्न आनन्द अनमाये उहां नवमीको श्रीकला मङ्गलदायक इहां है जगमंगल रामलला १० सीपने मोती जायो सो रूप मंगलगुणको निधान है काहेते मङ्गलीक चौकमें पूराजात अरु मंगलीक भूषण में गुहाजात जो सौभागिनी पहिरत हैं अरु अदितिने भानुको जन्म्यो सो रूप गुणके निधान प्रतापवान् लोकनके भूषण हैं अरु रघुपति को श्रीकौशल्याजी जायो ते मङ्गलगुण रूपगुण प्रतापगुणादि सबके निधान अरु अनेकन भुवन के विभूषणहैं रूपगुणनिधान यथा ॥ प्रमाणं माहेश्वरतन्त्रे ॥ रूपौदार्य्यगुणैः श्रीमाञ्जगन्मोहनविग्रहः । परंसाधारणंरूपं नित्यंद्विभुजशोभनम् ॥ मंगल यथा ॥ सनत्कुमारसंहितायाम् ॥ मंगलायतनंदेवं रामं राजीवलोचनम् ॥ इहां तुल्ययोग्यतालङ्कार है उहां चन्द्रहारमें शुक्लदशमी कृष्णपञ्चमी कला बालचरित के द्वैपद एकतो सादर सब मंगल किये दूसरे मुख शोभापर वारौं अमितअसमसर उहां दशमी को स्वधाकला सबको सुखदायक है इहां भुवन विभूषण रामलला ११ अब एकादशी को चन्द्रमा का प्रताप विशेष प्रकट होत है ताही भांति बालचरित चन्द्रमाको प्रकट कहत चन्द्र उदय भये तमनाशत श्रीरामके प्रकट भये अमंगल नाशभयो उहां चकोर कोकी मुदित इहां मीत मुदित उहां नक्षत्र मुदित इहां हितकार मुदित उहां कमलके फूल होत इहां वैरिनके शूलभई उहां दिनकी तापनाश होत इहां भवभयभञ्जनहार श्रीराम हैं उहां चन्द्रहारमें शुक्ल एकादशी कृष्णच-

तुर्थीकी कला इहां बालचरितके द्वै पद एकतौ या शिशु के गुण नामबड़ाई को कहिसकै सुनहु नरपति श्रीपतिसमान प्रभुताई । पुनःतदपि लोकलोचन चकोर शशि रामभक्त सुखदाई ॥ याके चरणसरोज कपटतजि जो भजिहै मनलाई । सो कुलयुगलसहिते तरिहै भव यह न कछू अधिकाई ॥ यहहै राम प्रकट जब ते भये औ दूसर पद सादर सुमुखि बिलोकिरामशिशु रूपअनूपभूप लिहेकनियां । सुनि कुलवधू झरोखन झांकत रामचन्द्र छवि चन्द्रबदनियां ॥ यह उदय होनाहै उहां रात्रिकला एकादशी को तीनि पहरले प्रकाशित अरु दिनकी तापकी भयको नशावनहारी रात्रि कलाहै इहां भवभयभंजन रामलला भव संसार ताकीभय जन्ममरण ताको नाशकरणहारे ॥ प्रमाणंसदाशिवसंहितायाम् ॥ कौशल्यानन्दनंरामं केवलंभवखण्डनम् १२ ॥

मू० । अनुजसखाशिशुसंगलैखेलनजैहैंचौगान। लंकाखरभरपरैगी सुरपुरबाजिहैंनिशान ॥ रिपुगणगंजनरामलला १३ रामअहेरेचलहिंगे जबगजरथबाजिसँवारि। दशकन्धरउरधकधकीअबजनिधावैंधनधारि ॥ अरिकरिकेहरिरामलला १४ गीतसुमित्रासखिनकेसुनिसुनि सुरमुनिअनुकूल । दैअशीषजयजयकहैंहर्षितबर्षैंफूल ॥ सुरसुखदायकरामलला १५ बालचरितमयचन्द्रमा यह सोराकलानिधान । चितचकोरतुलसीकियो करिप्रेम अमीरसपान ॥ तुलसीकेजीवनरामलला १६ ॥

टी० । भरतादि अनुज औ सखा अपर बालकनको संग लैकरि चौगान कंदुक के खेलिबेको जाइँगे तब लंका में खरभर परैगी ताते सुरपुर में नगाराबाजैंगे इहां भविष्यबात है सो एक पद भूपकी गोदकी शोभा अरु तीनिपदन में कौशल्याजी को जाग्रत् रघुनाथजी के कहे सो चन्द्रका उदयहोना है कौशल्याजी

पूर्णिमाहैं पचेये पदकी आशय इहां है ताते कहे हैं खेलनजैहैं यह भविष्यहै उहां शुक्लद्वादशी कृष्णतीज चन्द्रहारमें इहां त्रैपद हैं एकतौ संगअनुज अनेक शिशु अरु करतलगाहि ललितचाप भञ्जन रिपु निकरदाप तीसर शिवजी ज्योतिषी ह्वै कहे हैं॥ रामलषण रिपुदमन भरतको जय सुख सुयश सुनायो॥ उहां द्वादशीको ज्योत्स्नाकला प्रकाश ते तमनाशक इहां रिपुगण गञ्जन रामलला हैं १३ जब श्रीरघुनाथ जी हाथी रथ घोड़ा साजि शिकारको चलैंगे तब दशकंधर के उर में धकधकी उठैगी कि धनुधारि इहां जनिदारैं उहां चन्द्रहारले शुक्लत्रयोदशी अरु कृष्ण द्वितीयाकी कला इहां द्वैपदकी आशय एकतौ सवग दुरित दुखदले सुरकहै आजु अनय सकल सुखको सुकाल दूसरो चारु चरित रघुवर तेरेते हियमें लगाइ चरणन चितलावो उहां तेरसिको हंसवतीकला प्रतापवान् तथा अरि करि केहरि रामलला १४ सखिनसहित सुमित्राजी के गीत सुनि देवता मुनि अनुकूलह्वै आशिषदै जयजयकहि हर्षते फूल वर्षत चन्द्रहार में शुक्लचतुर्दशी कृष्णपरेवाकी द्वैकला यहां द्वैपद एकतौ मगनमोदालाये गोद सुमित्रा वारवार बलिजाई दूसर मनहुँ वेदवंदी मुनिवृन्द सूतमागधादि विरदवदतजय २ जयति कैटभारे उहां चतुर्दशी की छायाकला सुखदायक इहां सुरसुखदायक रामलला हैं १५ जैसे चन्द्रमा सोलहकला को निधान है तैसे इहां बालचरित चन्द्रमा सोलहकला का निधान उहां चकोर इहां तुलसी आपन चित्तचकोर उहां अमी इहां प्रेमअमी उहां ओषधिनको जीवन इहां तुलसी के जीवन उहां चन्द्रकी जन्मते पूर्णिमातक अरु एक अमावसकी सोलहकला चन्द्रहार में पूर्णचन्द्रमा नीचे बीच में रहत बालचरितके द्वैपद हैं एक पूर्णिमाकी आशयरहै सब पलरोंकि थकित निकर चकोर मानो शरद इन्दु विलोकि चकोर सम्बन्धते पूर्णिमा है दूसरी अमावसै की कला तुलसी दुहि पीवत सुखजीवनपै सुप्रेमघनो

घैया अमाको ओपधी सजीव ताको गौवैं चरत ताके क्षीर में अमी ताको आशय तुलसी के जीवन रामलला पूर्णिमा को चकोर खुशी ताकी आशय चित्तचकोर तुलसी करयो यही है आशयते तुलसी को नाम द्वैबार कहे अब चन्द्रहार को बालचरित चन्द्रहार को रूपक यथा उहां चन्द्रहार सुवर्ण मणिन सों बनत इहां बालविनोदमोद मंजुलमणि उहांमणि खानिते निकरत इहां किलकनि खानि खोलावों इहां सुन्दरवर्णते सुवर्ण कवि स्वर्णकारहै उहां पटहारिनि धागा सो गुहत इहां तेहि अनुराग तागगुहिबेको मतिमृगनयनिबोलावौं उहां चंद्रहार पहिरि कोऊ सुंदरिस्त्री खुशहोत इहां तुलसी भनित भली भामिनि उरसो पहिराइ फुलावौं उहां चंद्रकी हावकला रचि बटोरि एक हार बनाय अपनी मेहनति लगावत इहां (चारुचरित रघुवर तेरे तेहि मिलिगाइ चरण चितलावौं) इहि पदविषे अभेदरूपक अरु श्लेष अलंकार है युक्तियापदकी बडीगूढ़ है जो अच्छो तरहसों साफचित्तकरि विचारकरी तब चित्तमें याकी आशय चढ़ी १६॥

मू० । रागकान्हरा॥पालनेरघुपतिहिझुलावै ॥ लैलैना मसप्रेमसरस्वर कौशल्याकलकीरतिगावै १ केकिकण्ठ द्युतिश्यामवरणवपु बालविभूषणविरचिबनाये ॥ अलकैं कुटिलललितलटकनिभ्रू नीलनलिनद्वौनयनसुहाये२ शिशुस्वभावसोहतजबकरगहि वदननिकटपदपल्लवलाये ॥ मनहुँशुभगयुगभुजगजलजभरि लेतसुधाशशिसोसचुपाये ३ उपरअनूपविलोकिखिलौना किलकतपुनिपुनिपाणि पसारत ॥ मनहुँउभयअम्भोजअरुणसो विधुभयविनय करतअतिआरत ४ तुलसिदासबहुवासविवशअलिगुंजत सोछविनहिंजातबखानी ॥ मनहुँसकलश्रुतिऋचामधुपह्वै विशदसुयशवरणतवरबानी ५ ॥

टी०। पालने में रघुपति को झुलावती है लै लै नाम यथा मोदकंद कुलकुमुदचन्द्र मेरे रामचन्द्र रघुरैया बाछरू छौना छबीले इत्यादि नाम लैलै स्वर सहित प्रेमते प्रभुकी कीरति सुन्दरि ताको कौशल्याजी गावतिहैं १ पलनामो कैसोहै प्रभुको रूप मोरकंठसम द्युति श्यामवरण तन है तामें वालविभूषण नूपुर कड़ा किंकिणी पहुंची बघनहा कठुलादि विचित्र स्वर्ण मणिनसों बनाये हैं अलकैं बार कुटिल टेढ़े ते कलावत्तूनते गुहि मोतिनके गुच्छनके लटकनी सुन्दरी भौंहनपर शोभित नीलकमलसम दोऊनेत्र सुहावने लागत इहां रूपक औलुस उपमालंकारहै २ बाल सुभावते करसों गहि पदकी पौली कोमल लाल ताको मुखके निकट को लावत सो कैसी शोभित होत मानौं दुइसर्प सुन्दरि सचुपायेकही आनन्दते कमलन में भरि २ अमृत चन्द्रमाते लेत हैं हाथसर्प पदकमल मुखचंद्रछवि अमृत इहां उत्प्रेक्षालंकारहै ३ ऊपर पलना विषय मणिन के खेलौना प्रकाशमान अनूपहैं तिनको देखिकै किलकतहैं और बारबार हाथ पसारत हैं सो मानौं दुइकमल चन्द्रमा की भयकरिकै अति आरतह्वै रविसों बिनती करत हैं प्रयोजन कि अस्त जनिहोहु खेलौना प्रकाशते सूर्य्य हाथ कमल मुख चन्द्रमा पसारब आरतता किलकनि बिनती चन्द्रमा विरोधते भयसंपुट ह्वैजावें की इहां उत्प्रेक्षालंकार है ४ श्रीगोसाईंजी कहत हैं कि प्रभुके अंग की वासकेवशह्वै भ्रमर गुंजरत सो छवि बखान करत नहीं बनत मानौं सब वेदनकी ऋचा भ्रमरह्वैकै विशद उज्ज्वल सुंदरयश वर श्रेष्ठ वाणीते वर्णन करत हैं गानकरिकै ५॥

मू०। झूलतरामपालनेसोहैं॥ भूरिभागजननीजनजो हैं १ तनमृदुमंजुलमेचकताई॥ झलकतबालविभूषणझाई २ अधरपाणिपदलोहितलोने॥ सरशिंगार भवसारस सोने ३ किलकतनिरखिविलोकिखिलौना॥ मनहुंवि

नोदलरतछविछौना ४ रंजितअंजनकंजविलोचन ॥ भ्राजतभालतिलकगोरोचन ५ लसैमसिबिन्दुवदनविधुनीको ॥ चितवतचितचकोरतुलसीको ६ ॥

टी० । श्रीरामलला झूलतपलनामें सोहत तेहि शोभाको बड़ीभाग्यवाली माता जोहै कही देखतीहै १ कैसी शोभाहै सुन्दर कोमलतनकी श्यामताई में बाल अवस्था के भूषण झलकत हैं तिनकी झाईं परछाईं अंग में झलकत २ ओठ हाथपांव लाल अरु प्यारे हैं सो सब शोभा मिले ऐसी उपमा देखातहै कि श्यामतन सो शृंगार रसको तड़ाग है सो तामें हाथ पद ओठते सरस कही कमल भवनाम उत्पन्न भये अरु भूषण आदि ते सारसपक्षी सोने के शोभितहैं सारस में पक्षी औ कमल दोऊ हैं यथा ॥ सारसःपक्षिभेदःस्यात्क्लीबेतुसरसीरुहः ॥ इत्यमरः ॥ झूला बिषे जो २ खेलौना हैं सो झूलतमें चञ्चल ह्वै रहे हैं तिनको निरखि आपहू चञ्चल ह्वै किलकतहैं सो मानों विनोद कही आनन्द में छविके छौना छोटे बालक परस्पर लरतहैं चञ्चलता छोटे हाथ पद खेलौनों की मुखकी किलकार लरबहै ४ कमल समनेत्रन में अंजन शोभित भाल गोरोचन को तिलकराजत ५ मुखचन्द्र पै डिठौना शोभित तेहि सुन्दर मुख चन्द्रको चकोर ह्वै तुलसीको चित्त निरखतहै ६ ॥

मू० । रागचंचरीक ॥ राजतशिशुरूपरामसकलगुणनिकायधाम कौतुकीकृपालब्रह्मजानुपाणिचारी ॥ नीलकंजजलदपुंजमरकतमणिसदृशश्याम काममकोटिशोभाअंगअंगउपरवारी १ हाटकमणिरत्नखचितरचितइन्द्रमंदिराभ इन्दिरानिवाससदनविधिरच्योसँवारी ॥ विहरतनृपअजिरअनुजसहितबालकेलिकुशल नीलजलदलोचनह

रिमोचनभयहारी २ अरुणचरणअंकुशध्वजकंजकुलिश चिह्नरुचिर भ्राजतअतिनूपुरवरमधुरमुखरकारी ॥ किंकिणीविचित्रजालकम्बुकंठललितमाल उरविशालकेहरिनखकंकनकरधारी ३ चारुचिबुकनाशिकाकपोलभाल तिलकभ्रुकुटी श्रवणअधरसुन्दरद्विजछविअनूपन्यारी ॥ मनहुंअरुणकंजकोशमंजुलयुगपाँतिप्रसव कुन्दकलीयुगल २ परमशुभ्रवारी ४ चिक्कनचिकरावलीमनोखडंघ्रिमंडलीबनीविशेषि गुंजतजनुबालककिलकारी ॥ यकटकप्रतिबिम्बनिरखिपुलकतहरिहरषिहरषि लैउछंगजननीरसभंगजियविचारी ५ जाकहँसनकादिशम्भुनारदादिशुकमुनीन्द्र करतविविधयोगकामक्रोधलोभजारी ॥ दशरथगृहसोइउदारभंजनसंसारभार लीलाअवतारतुलसिदासत्रासहारी ६ ॥

टी०। सकल समूह गुणन के धाम श्रीरामहैं ॥ प्रमाणं शिवसंहितायां ॥ रूपसौंदर्यमाधुर्यचातुर्यस्थिरतादयः ॥ सौकुमार्य्यंचसौगन्ध्यं त्वयिसर्वेंगुणाःस्फुटाः १ चक्रवर्त्तिकुलोद्भूतोहंसचिह्नदुकुलवान् ॥ विद्याविनयसम्पन्नः शौर्य्यवीर्यपराक्रमी २ गन्धर्वशास्त्रनिपुणः कामशास्त्रविशारदः ॥ वदान्योदर्शनीयश्च नित्यस्वाधीनयौवनः ३ कलासुकुशलोक्लेशः स्वभावःस्मितभाषणः ॥ कोमलःपेशलःसाधु वत्सलोकश्मलाशयः ४ कोशलेशसुतःश्रीमान्कौशलेयगुणाम्बुधिः ॥ इत्यादि गुणनके धाम श्रीराम परब्रह्म हैं प्रमाणंरामतापिन्यां ॥ रमन्तेयोगिनोनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि ॥ इतिरामपदेनासौ परब्रह्माभिधीयते १ पुनः सनत्कुमारसंहितायाम् ॥ रामंसत्यंपरब्रह्म रामात्किञ्चिन्नविद्यते। इत्यादि परब्रह्मश्रीराम जानुपाणिचारिकही वैयां २ चलत ताते कृपालहैं अरु गुणनके धामते शिशुरूप राजत ताते कौतुकी

हैं ते श्रीराम कैसे शोभित यथा नीलकञ्ज तद्वत् कोमलश्याम पुनः जलद मेघवत् गांभीर्य्य श्याम पुनः मरकतमणिसदृश प्रकाशमान ता स्वरूप के अंग अंग पर कोटिन मारकी शोभा वारनकरिये इहां चारि विशेषण उपमेयकी ताते चारि उपमा कहे १ जेहि नृप दशरथ महाराजके मन्दिरमें कंचन में मणिरत्न सों खँचित कही चित्रसारी रचित हैं यथा इंद्रमन्दिरकी आभा शोभा अथवा इन्दिरा लक्ष्मीको ऐसो निवास सदनमंदिर ताको ब्रह्माने रचिकै सँवारो तामें अजिर जो आंगन है तेहिबिषे हरि श्रीरघुनाथजी बालकेलि में कुशल अनुज जो भरत लक्ष्मण शत्रुहन तिन सहित विहरत हैं जिनके नेत्र नीलकमल सम ते भारीभय जो भवसागरको जन्ममरणआदि बन्धन ताके मोचन कही छोड़ावन हारे हैं मणि सर्पके रत्न पर्वतमें ताते मणिरत्न कहे २ अरुण लाल चरण तिनमें अंकुश ध्वज कमल वज्रादि चिह्न शोभित हैं सुन्दर मधुर शब्द जामेंहोत ऐसे श्रेष्ठ नूपुर शोभित हैं अरु किंकिणी विचित्र मणिनते सुवर्ण करिकै रचित जाल कही सघन सो कटि बिषे शोभित है अरु कम्बु शंखतद्वत् कंठ बिषे तीनि रेखा तामें सुन्दर माला तामें बघनहा सो विशाल उरपर शोभित कर कमल में कंकण शोभित हैं ३ दाढ़ी नाशिका कपोल भाल तापै तिलक भ्रुकुटी कान ओठ आदि सुन्दर हैं ताके बीचमें द्वै दांत तिनकी छवि अनूप सो न्यारी है सो मानौं लाल कमल के कोशमें दुइपांतिको प्रसव है परम सुन्दरी बारीकही छोटी दुइ २ कुन्दकी कली इहां लाल कमलको कोश तामें दांतनके स्थान दुइ पांतिन को प्रसव है दुइ दुइ दतियां कुन्दकी कली हैं ४ बार चिक्कन सो मानौं भौंरहैं किलकनि सोई गुंजार है इकटक प्रतिबिम्ब को निरखि हर्षि २ पुलकत ताको देखि न जनी रस भंग जियमें बिचारिकरि डरि न जाइ व नजरि न लागि जाइ यह बिचारि कनियां में लैलियो ५ जिन रघुनन्दन को सनकादि शम्भु नारद शुकदेव आदि पा-

वबेकी विविध प्रकार को योग यतन करतहैं काम क्रोध लो-
भादि जारिकै ते श्रीरघुनन्दन श्रीदशरथ महाराज के घर विषे
लीला करिबे हेतु अरु संसार को भार भंजिबे हेतु तुलसीदास
के त्रास हरणहारे सोई क्षिति में विराजमान हैं ६ ॥

मू० । रागकान्हरा ॥ आँगनफिरतघुटुरुवनधाये ॥ नील
जलजतनुश्यामरामशिशु जननिनिरखिमुखनिकटबोला
ये १ बन्धुकसुमनअरुणपदपंकज अंकुशप्रमुखचिह्नब-
निआये ॥ नूपुरजनुमुनिवरकलहंसन रचेनीड़देबाँहबसा
ये २ कटिमेखलवरहारग्रीवदर रुचिरबाहुभूषणपहिरा-
ये ॥ उरश्रीवत्समनोहरहरिनखहेममध्यमणिगणबहु
लाये ३ शुभगचिबुक द्विज अधरनाशिका श्रवणकपोल
मोहिंअतिभाये ॥ भ्रूसुन्दरकरुणारसपूरण लोचनमनहुं
युगलजलजाये ४ भालविशाललिलितलटकनवरबालदशा
केचिकुरसोहाये ॥ मानौंदोउगुरुशनिकुजआगेकरिशशिहि
मिलनतमकेगणआये ५ उपमा एक अभूतभईतब जब
जननी पटपीतओढ़ाये ॥ नीलजलदपरउडुगणनिरखत
तजिसुभावमनुतड़ितछपाये ६ अंगअंगपरमाननिकर
मिलिछविसमूहलैलैजनुछाये ॥ तुलसिदासरघुनाथरूप
गुणतौकहौजोविधिहोहिंबनाये ७ ॥

टी० । आंगनमें बैयां२ धाये फिरतहैं नीलकमल सम श्याम
श्रीरघुनाथजी को बालरूपको मुख निरखि माता निकट
को बोलावती भई १ बन्धुक दुपहरी के फूलसम लालपद
कमल विषे अंकुश है मुख्य जिनमें ते चिह्नते बनिआये कही
शोभित हैं ॥ प्रमाणं महारामायणे ॥ रेखोर्ध्ववर्ततेमध्ये दक्षिण
स्यांघ्रिपंकजे ॥ पार्श्वयोःस्वस्तिकंज्ञेयमष्टकोणंतथैवच १ लक्ष्मी

हलंचमुशलं सर्पोबाणोम्बरंतथा ॥ पद्ममष्टदलंचैव स्यन्दनं वज्रमेवच २ वामांगुष्ठेतथाप्येतेरेखोर्ध्वावामतःस्थिता॥ रेखोर्ध्वा दक्षिणेचैवस्वस्तिकोवज्रिपादपः ३ अंकुशंचध्वजंचैव मुकुटंच क्रमेवच ॥ सिंहासनंयमोदण्डं चामरंक्षत्रमुद्यतम् ४ नृचिह्नं यवमालेमेचतुर्विंशतिलक्षणम् ॥ क्रमेणैवप्रवर्ततेश्रीरामस्यां घ्रिदक्षिणे ५ ऊर्ध्वरेखायथासव्ये वामतःसरयूस्तथा॥ गोष्पदंपा दमूलेच तदाद्यासागराम्बरा ६ कुम्भंचैवपताकाच जम्बूफल मथोद्यतम्॥ अर्द्धचंद्रोदरश्चैव षट्कोणंचत्रिकोणकम् ७ गदा तथाचजीवात्मा बिन्दुरंगुष्ठमध्यगः ॥ सरय्वादक्षिणेकोणेल क्षणंज्ञेयमुत्तमम् ८ गोपदाद्यातथाशक्तिः सुधाकुण्डमथोद्यतम् ॥ त्रिवलीकामपात्रंच पूर्णसिन्धुसुतस्तथा ९ वीणावंशोधनुस्तूणो मरालश्चन्द्रिकेतिच ॥ चतुर्विंशतिचिह्नानिचरणेवामकेविभोः१० यानिचिह्नानिरामस्यचरणेदक्षिणेसति ॥ तानिसर्वाणिजान क्याःपादेतिष्ठंतिवामके ११॥ अरु नूपुरकी शोभा कैसी है मुनि जन मनन शीलते कलहंस हैं तिनके बसायबेहेत रघुनाथजी नीडकही उरकुल रचि तामें मुनिनके मन कलहंसरूपी बांहदै बसाये हैं नूपुर उरकुल मुनिमन हंस वेद उपदेश बसाइबो अ म्बरीष प्रह्लादादि ये भक्त वत्सलता सोई बांहदेबो है २ कटि बिषे मेखल किंकिणी है शंखसम कण्ठ बिषे हार है बाहुभूषण कही कंकण भुजबल अंगद जोसन कडा पहुंचीआदि पहिराये उरबिषे श्रीवत्सचिह्न दक्षिणावर्त पीतरोमराजीहै तहां मनको हरणहार बघनहाहै सुवर्ण मणिनसों जडित कठुलाहै ३ सुन्दर दाढ़ी दांत ओठ नाशिका कान कपोल मोको अतिभावत हैं भ्रू भौंहैं सुन्दरी हैं करुणारससों पूरण कही दयाके भरे कमल सम नेत्र हैं ४ भालविशाल कही सुन्दर ऊंचा तापै ललित शो भायमान श्रेष्ठमणिन सों अरु हेमतारन सों गुही लटकनी माथपै लटकतीहै अरु बालअवस्थाके कोमल बार ताकी कवि उत्प्रेक्षा करत है मानौं दोऊ गुरू बृहस्पति शुक्र औ शनि मं-

गल इनको आगेकरि चन्द्रमा के मिलबेहेत अन्धकार के गण समूह आयो है चन्द्रमा सो तम डेरात ताते बृहस्पति देवगुरु हैं शुक्रदैत्य गुरुवंश एकहै कश्यपादि ताते दोऊ गुरुहैं शनिग्रहराज रविके पुत्र हैं ताते बड़े हैं कुज भौम चन्द्रमा के मित्रहैं ताते इनको आगेकरि वार सोई तमगणलों चन्द्रमा सो मिलनआ-योहै सुवर्ण बृहस्पति है हीराशुक्र है लालमणि मंगलहैं नील-मणि शनिहै मुख चन्द्रमा है विरोध मिटावन हेत आयो है ५ सब भूषण पहिराये पर जननी पीतपट ओढ़ाये ताकी एक अ-भूत उपमा भई सो कहत हैं श्यामतन सोई नीलमेघ तापै भूषणरूप नक्षत्रन को देखि पीतपट दामिनी मानों चंचलता स्वभाव छाँड़ि स्थिरहै मेघनक्षत्रादि को अपना में छिपाय लियो है जो न भई न होय सो अभूत उपमा है अंग अंग पर समूह छविलैलै मानों अनेगिन कामदेव छाये हैं ताते श्रीरघुनाथजी के रूपकी शोभा गुणनकी प्रशंसा को करिसकै गोसाईंजी कहत हैं कि कहौं तौ तौ ब्रह्माकेबनायेहोहिं प्राकृत एतो स्वयंअव्यक्त हैं७॥

मू० । रागकेदार॥रघुबरबालछविकहौंबरनि ॥ सकलसु खकीसींवकोटिमनोजआभाहरनि १ बसीमानहुँचरण कमलनिअरुणतातजितरनि ॥ रुचिरनूपुरकिंकिणीम नुहरणिरुनझुनुकरनि २ मंजुमेचकमृदुलतनु अनुहरत भूषणभरनि ॥ जनुसुभगशृंगार शिशुतरु फर्योहैअद्भुत फरनि ३ भजनिभजगसरोजनयनन वदनविधुजीत्योल रनि ॥ वसेकुहरनिसलिलनभउपमाअपरदुरिडरनि ४ लसतकरप्रतिबिम्बमनिआँगनघुटुरुवनिचलनि ॥ जल जसम्पुटसुछबिभरिभरिधरतज्योंउरधरनि ५ पुण्यफल अनुभवतिसुतहि त्रिलोकिदशरथघरनि ॥ बसततुलसी हृदयप्रभुकौलकनिललितलरखरनि ६ ॥

टी० । श्रीरघुनाथके बालस्वरूपकीछवि वर्णनकरिकहतहौं सो कैसीछविहै सबसुखकी मर्यादा है अरु कोटिनकामकी छवि हरणहारीहै १ चरणमें जो लाली सोमानों सूर्यनकोताजि अरुणता पायनमें बसी है अरु नूपुर सुंदर किंकिणीको रुनुझुनुशब्द सो मनको हरेलेत है २ सुंदर श्याम कोमलतन बिषे भूषणकी भरनि पहिराउ सो तनकी अनूप है सो मानों शृंगारको छोटा वृक्ष अद्भुत फरनि फराहै शृंगार श्यामहै ताते शरीर छोटा वृक्ष है भूषणफूलहैं एकतौ छोटेवृक्षको फलिबो दूसरे अनेकनरंगके फल ताते अद्भुत फरनिहै ३ उपमारूपी युद्धमें भुजोंने सर्पन को जीत्यो नयनोंने कमलनको जीत्यो मुखचन्द्रने चन्द्रमाको जीत्यो लरनिकहीं समतारूपयुद्धमें हारिमानिके भागिगये तेकहांरहे सर्प बिलमें बसे कमल जलमें बसे चन्द्र आकाश में बसे अरु औरौ उपमा डरिकैदूरिकही लुकाइरहीं ४ मणि अंगिनाई बिषे बैयांचलिबेमें हाथनकी प्रतिबिम्ब कैसीशोभादेत मानोंकमलकेसम्पुट में सुन्दर छवि भरि भरि धरणी अपने उरमें धरती है हाथनको प्रतिबिम्ब कमलको सम्पुटहै चलतमेंपरछाहीं मिटत सोधरणी के उरमें धरबहै ५ श्रीकौशल्याजी पुत्रको देखि पुण्यकोफलताको अनुभव करती हैं तेहि अवसरकी किलकनि सुन्दर लरखरनि प्रभुकी सो तुलसी के हृदय में बसतहै ६ ॥

मू० । नेकुविलोकिधौंरघुबरनि ॥ चारिफलत्रिपुरारि तोकोदियोकरनृपघरनि १ बालभूषणबसनतनुसुन्दररुचिररजभरनि ॥ परस्परखेलनिअजिरउठिचलनिगिरि गिरिपरनि २ झुकनिझांकनिछाहँसोंकिलकनिनटनि हठिलरनि ॥ तोतरीबोलनिविलोकनिमोहनीमनुहरनि ३ सखिवचनसुनिकौशल्यालखिसुढरपांसेढरनि ॥ लेतभरिभरिअंकसैंतत पैतज्योदुहकरनि ४ चरितदेखताविबु

धतुलसी ओटदैजलधरनि ॥ चहतसुरसुरपतिभयो सुर पतिभयोचहैतरनि ५ ॥

टी०। कोई समय कौशल्याजी की नजरि अन्ते है तब कोई सखी कहत है हे नृपघरनि चारिउ कुमारनको नेकु देखतौ तो-को त्रिपुरारि ने चारों फल कर बिषे दियो है १ बाल अवस्थाके भूषण बसन सुन्दर तिनमें रज लगी है। आंगनमें परस्पर खेल-त उठिकैचलत गिरिगिरि परत २ झुकिकैझांकत अरु छाहींआपनी सों लरत किलकि किलकि नाचतहैं तोतरी बोलनि त्रिलोकानि मोहनी अरु मनोहरहै ३ सखीके बचन सुनि कौशल्याजी अको-रामें भरिलेती हैं मानोंउठाइबो नहीं है जीते दांवपर यथा द्रव्य धरी जाको पासापरा सोद्रव्य दोऊ हाथसों खैंचिलेत ताकोपैतसैं तब कही सोई जीते दांव कैसो पैत दुहूंहाथते मानों कौशल्या जी सैंतती हैं ४ ऐसे चरित्रनको मेघनकी ओटते देखि देवता तृप्त नहीं होते ताते सुरसुरपतिभयो चाहत जामें हजार नेत्र सों देखी अरु इन्द्र सूर्यभयोचाहत जामें विश्वभरकेनेत्रनसोंदेखी ५॥

मू०। रागजैतश्री॥ भूमितलभूपकेबड़भाग ॥ राम लषणरिपुदवनभरतशिशु निरखतमनअनुराग १ बाल विभूषणलसतपाइमृदुमंजुलअंगविभाग॥ दशरथसुकृत मनोहरबिरवनि रूपकरहजनुलाग २ राजमराल विरा जतविहरत जेहरहृदयतड़ाग॥ तेनृपअजिरजानुकरधाव त धरनचटकचलकाग ३ सिद्धिसिहातसराहतमुनिमन बड़ेभूपकेभाग॥ ह्वैवरुविहँगविलोकियबालकबासिपुरउप वनबाग ४ परिजनहितरावरानिनकियेमज्जनप्रेमप्रया ग ॥ तुलसीफलताकेचारोमणिमरकतपंकजराग ५ ॥

टी०। पृथ्वीतल बिषे श्रीदशरथ महाराजके बड़भाग्य याते चारों कुमारन को अति अनुरागते देखत हैं १ बाल समय के

भूषण सुन्दर कोमल शरीरपाइकै विभाग कही अलग अलग कैसे लसत शोभादेत मानों दशरथ महाराज के सुकृतरूपी मनोहर सुन्दर विरवनके करह फूलनकी कली जब निसरै लागत ताको करह कहतसोलागहै सुकृतरूपी बिरवाकरहे अब फलिकै फैलैंगे विवाहादि फलहैं २ जे राजमराल हंसरूपी हरके उरमानसर में विहरत हैं तेई श्रीरघुनाथजी दशरथमहाराज की अँगनाई विषे चटक गौरवाचालकहीं चंचल काकके गहिबेकोजानुकर बैयांबैयां धावत ताते भूपकी बड़ीभाग्यहै ३ सिद्धिसिहात वाञ्छाकरतकी ऐसीभाग्य हमारी न भई मुनिसराहतहैं कि दशरथमहाराज सब सों धन्य हैं अरु देवता किन्नर नाग कहत कि देवतनछांड़ि पशु पक्षी ह्वैये सुरपुर छांड़ि बरु वाग वनमें बसिये जामें रघुनाथजीके बालरूप को भरिनेत्रन देखिये ४ परिवार रानिनसहित राव श्री चक्रवर्ती महाराज प्रेमरूपी प्रयाग में मज्जन कियो ताते गोसाई जी कहत कि चारों फल पाये मरकत श्याममणि पंकजराग हीरा प्रेम प्रयाग को रूपक यथा प्रीति की अधीन दृष्टि सो श्वेतरंग गंगाजी हैं नेहकी ललित दृष्टि सो हरितरंग यमुनाजी हैं लग्नकी उत्कण्ठा दृष्टि सो अरुण रंग सरस्वतीजी हैं प्रेमकी विह्वलदृष्टि सो नील श्वेत अरुण मिले त्रिवेणी हैं आशक्ति की यकटकदृष्टि सो अचल अक्षयबटहै लागकी चोपदृष्टि सो सुन्दरक्षेत्र है अनु-रागकी मत्तदृष्टि माधव है प्रणयकी सौम्यदृष्टि सो भरद्वाजहै जैसे प्रयाग में मत्त मगनभयो तब चारिकुमार सोई चारि फल पाये मरकतमणि श्रीराम भरत पंकजराग लक्ष्मण शत्रुहन ५ ॥

मू० । राग आसावरी ॥ छगनमगन अंगना खेलत चारु चारौभाई ॥ सानुजभरतलाललषणरामलोनेलोनेलरिका लखिमुदितमातुसमुदाई १ बालबसनभूषणधरेनखशिख छबिछाई ॥ नीलपीतमनसिजसरसिज मंजुलमाला न मानोइनदेहनतेद्युतिपाई २ ठुमुकिठुमुकिपगुधरनि

नटनिलरखरनिसुहाई ॥ भजनिमिलनिरूठनिठिठुकनि किलकनिअवलोकनि बोलनिबरणिनजाई ३ जननीस कलचहुंओरआलबालमणिअंगनाई ॥ दशरथसुकृतवि बुधबिरवाविलसताबिलोकिजनुविधिबरबारिवनाई ४ ह रिविरंचिहरिहेरशामप्रेमवरवशताई ॥ सुखसमाजरघुरा जकेवरणतविशुद्धमनसुरनिसुमनझरिलाई ५ सुमिरत श्रीरघुवरनिकी लीलालरिकाई ॥ तुलसिदासअनुरागअ वधआनन्दअनुभवततबकोसोअजहुंअघाई ६ ॥

टी० । हाथ पांव मुख नेत्र कान रसनादि छःअंगन सों मग्न ह्वै आंगन में खेलत सुन्दर चारिउ भाई भरत शत्रुहन श्रीराम लषण आदि लोने २ लरिका देखि सब मातु आनन्द हैं १ बाल समयके भूषण बसन धारणकिये तासों नख शिख छविछाई है कामके नीलपीत कमलन की माला सुन्दरीते मानों इनहीं देह- नते द्युतिपाई है २ ठुमुकि ठुमुकि पगधरनि गिरपरनि सुन्दर नाचनिभागनि मिलनि रूठिरहनि परस्पर ठिठुकनि प्रसन्नह्वै मिलनि किलकनि अवलोकनि बोलनि आदि वर्णी नहीं जात यह ३ मणिअंगना मानों आलबालकही थाल्हा है चारिउपुत्र मानों दशरथमहाराजके सुकृतके कल्पवृक्ष हैं तिनको विलसत देखि ब्रह्माने मातारूप बारीबनायो चारिउ दिशिते रूंधिदियो है ४ ब्रह्मा विष्णु शिवादि श्रीरघुनाथजी बिषे प्रेमकी बरबशताई देख रघुराज दशरथजीके सुखसमाज को विशुद्ध मनते वर्णन करत अरु देवता फूल वर्षत विशुद्ध परम पवित्र ५ श्रीरघुनाथादि चारिउ भाइन की लरिकाई की लीला सुमिरतमात्र गोसाईंजी अनुरागरूप अवध में आनन्द को अनुभव तब को अस अजहूं अघाइके करत है ६ ॥

मू० । रागबिलावल ॥ आंगनखेलतआनन्दकन्द ॥

रघुकुलकुमुदसुखदचारुचन्द १ सानुजभरतलषणसंग सोहैं ॥ शिशुभूषणभूषितमनमोहैं २ तनुद्युतिमोरचन्द्र जिमिझलकै ॥ मनहुँउमँगिअँगअँगछविछलकै ३ कटि किंकिणीपदपैंजनिबाजै ॥ पंकजपाणिपहुँचियाराजै ४ कठुलाकंठबघनहानीको ॥ नयनसरोजमैनसरसीको ५ ॥

टी० । आनन्दके कन्द कही मूल ते आंगनमें खेलत हैं रघुकुलकोकी के हेतु सुन्दर चन्द्रसम सुखदायकहैं १ सहित शत्रुहन भरत लषण संग बिषे शोभित हैं बाल समयके भूषण भूषित कही अंग अंगमें पहिरे हैं सो मनको मोहत हैं २ तनुकी द्युति मोरके चन्द्रिका सम झलकतिहै कैसी द्युतिहै मानों छवि उमँगिकै अंगअंगपर छलकि रहीहै ३ कटिमें किंकिणी अरु पांयन में पैंजनी बाजतहै कमलसे करमें पहुँची राजतहै ४ कंठमें कठुला तामें बघनहा राजत सुन्दरनयनकमल कामसरोवरके ऐसेहैं ५ ॥

मू० । लटकनलसतललाटलटूरी ॥ दमकतद्वैद्वैदतुरियां रूरी ६ मुनिमनहरतमंजुमसिबुन्दा ॥ ललितबदनबलि बालमुकुन्दा ७ कुलहीचित्रविचित्रझँगूली ॥ निरखत मातुमुदितमनफूली ८ गहिमणिखम्भडिम्भ डगडोलत ॥ कलबलवचनतोतरेबोलत ९ किलकतिझुंकिझांकतप्रति बिम्बनि ॥ देतपरमसुखपितुअरुअम्बनि १० सुमिरत सुषमाहियहुलसीहै ॥ गावतप्रेमपुलकितुलसीहै ११ ॥

टी० । माथेपै बारनकी लटुरी तामें मणि हेमकी लटकनी शोभितहै रूरीसुन्दरि द्वैद्वै दतियां चमकदार विराजतहैं ६ मसि बिंदु सुन्दर जो मुनिनको मनुहरतहै सुन्दर बदन बालरूप मुकुन्दपै मातु बलिहारी हैं ७ कुलही टोपी जामें चित्रसारी है झँगुली विचित्र जामें विशेष चित्रता है ताको निरखत मातु

आनन्द मन फूली है ८ मणि खम्भपकरे डिंभ कहीं बालकते डगडोलते में कलकही सुनिवेमें सुन्दर बल सो बूझिपरै ऐसे सुन्दर तोतरे वचन बोलत हैं तव रागके तरेके वर्ण उच्चार तोतरे ९ प्रतिबिम्ब को झुकिकै झांकत तव किलकत हैं तासों माता पिता को परम सुख देत हैं १० सुमिरण मात्र सुषमा शोभा हृदयमें हुलसत ताते प्रेममें मग्नहै तुलसी गावतहै ११ ॥

मू० । रागकान्हरा ॥ ललितसुतहिलालतिसचुपाये॥ कौशल्या कलकनकअजिरमहँ ।सिखवत चलनि अँगुरे यालाये १ कटिकिंकिणिपैंजनियांपांयनबाजत रुनु झुनु मधुररिंगाये ॥ पहुँचीकरनिकंठकठुलाबन्यो केहरि नखमणिजटितजराये २ पीतपुनीतविचित्रझंगुलिया सोहतश्यामशरीरसुहाये ॥ दतियांद्वैद्वैमनोहरमुखछवि अरुणअधरचितलेतचोराये ३ चिबुककपोलनासिका सुंदर भालतिलकमसिबिंदुवनाये॥ राजतनयनमंजुअंजनयुत खंजनकंजमीनमदनाये ४ लटकनचारुभृकुटिया टेढ़ी मेढ़ीसुभगसुदेशसुभाये ॥ किलकिकिलकिनाचत चुटकीसुनि डरपतजननीपाणिछुटाये ।५ गिरिघुटुरुवन टेकिउठि अनुजनतोतरिबोलतपूपदेखाये ॥ बालकेलिअवलोकिमातुसबप्रेममगनआनँदनअमाये ६ देखतनभघन ओटचरितमुनियोगसमाधिविरतिविसराये ॥ तुलसिदासजेरसिकनयहिरसतेजनजड़जीवतजगजाये ७ ॥

टी० । श्रीकौशल्या जी सचुकही आनन्दपाये ललित सुत रघुनाथजीको लालति कही दुलरावति अरु कलकही सुन्दर कनकमणिजटित अंगनाईमें प्रभुको अंगुरियापकरे चालसिखावतीहै १ मधुररिंगाये कही चलायेते कटिमें किंकिणी पांयकीपैंजनी

रुनुझुन बाजती हैं करमें पहुँची कंठमें कठुला बन्यो है तामें बघनहा जड़ा कही कनकमणिनसों जटितहै २ पवित्र कौशेयवस्त्र पीत रंगकी झँगुली सुन्दर श्यामशरीरपर शोभित है मुखकी मनोहर छवि तामें द्वै द्वै दँतियां तापर लाली अधर चित्त ताको चोराये लेत दाढ़ी ३ कपोल नासिका सुन्दर है माथपर तिलक तहां मसिबिंदु डिठौना बनाहै अञ्जन सहित नयन कैसे राजत जे कंज मीन खंजन को मद नवाये हैं ४ टेढ़ी भौंहनपर सुन्दरी लटकनी है तापै मेढ़ी गुहे बार हे सुदेश कही माथेपै शोभादेत सुभाय कही सहजही में शोभादेत माताकी चुटकी सुनिसुनि किलकि किलकि कै नाचतहैं अरु हाथछांड़ेपर जननी मनमें डेरात कि अस न होइ गिरिपरैं ५ गिरिकै घुटुवनसों टेकि सहित अनुज उठत जब माता मालपुआ देखावत तब तुतराइकै बोलत हैं इत्यादि बालकेलि देखि सब माता प्रेम में मग्न आनन्द उर में नहीं अँवात है ६ आकाश में मेघओटते मुनिजन चरित देखि योग समाधि वैराग्य बिसारि दये गोसाईंजी कहत कि प्रभुकी प्रेमभक्ति रस में जे रसिक न भये ते जन जड़हैं उनको जीवन जाये कही वृथाहै इहां भक्ति आगे ज्ञान तुच्छ है ॥ प्रमाणं महारामायणे ॥ येरामभक्तिममलां सुविहाय रम्यां ज्ञाने रताः प्रतिदिनं परिक्लिष्टमार्गे ॥ आरान्महेन्द्रसुरभींपरित्यज्यमूर्खा अर्कंभजन्तिसुभगेसुखदुग्धहेतुम् ७॥

मू० । रागललित ॥ छोटीछोटीगोड़ियांअँगुरियांछबीलीछोटीनखद्युतिमोतीमानोंकमलदलनपर॥ललितआंगनखेलैंठुमुकिठुमुकिचलैंझुंझुनझुंझुनपांयँपैंजनीमृदुमुखर १ किंकिणिललितकटिहाटकजटितमणि मंजुकरकंजन पहुँचियांरुचिरतर ॥ पियरीझीनीझंगुलीसांवरेशरीरखुलीबालकदामिनिओढ़ीमानोंवारेवारिधर २ उरबघनहाकंठकठुलाझँडूलेकेशमेढ़ीलटकनिमसिबिंदुमुनिमन

हर ॥ अंजनरंजितनयनचितचोरै चितवनिमुखशोभा परवारौंअमितअसमसर ३ चुटुकिबजावतीनचावतीकौशल्यामातुबालकेलिगावतिमल्हावतिसुप्रेमभर ॥ किलकिकिलकिहँसैद्वैद्वैदतुरियांलसैं तुलसीकेमनबसैंतोतरेवचनवर ४ ॥

टी०। छबीली अंगुरी छोटी छोटे पांयन में तापै नखकी द्युति मानों कमल दलनपर मोती हैं सुन्दर आंगन में खेलत ठुमुकु ठुमुकु चलत में पांयन की पैंजनी झुंझुनु झुंझुनु मृदुमधुर मुखर शब्दकरिरहीहै १ कटिमें सुन्दर किंकिणी शोभित हाथन में हेम मणिजटित सुन्दर पहुँची शोभित सांवरेशरीरपै शोभा देनहारी महीन पीतरंगकी झँगुली शोभित सो मानों छोटीदामिनी छोटा मेघ ओढ़ेहै २ कंठमें कठुला तामें वघनहा सो उरपै शोभित गभुवारे बारन की लटकनी युत मेढ़ी माथपर मसिबिन्दु सो मुनिन को मनहरत अंजनयुत नयनन की चितवनि चित्तको चोराये लेत मुख शोभापै काम अमित वारौं ३ श्रीकौशल्याजी प्रेम की भरी बालकेलि दुलराइकै गावती औ चुटकी बजावत ताते प्रभु नाचत हैं अरु किलकि किलकि हँसत हैं तामें द्वै द्वै दतियां मुखमें शोभादेत श्रेष्ठ तोतरे वचन बोलत सो तुलसी के मन में बसतहैं ४॥

मू०। सादरसुमुखिविलोकिरामशिशुरूपअनूपभूपालियेकनियां ॥ सुंदरश्यामसरोजवरणतननखशिखसुभगसकलसुखदनियां १ अरुणचरणनखज्योतिजगमगतरुनुझुनुकरतपायँपैंजनियां ॥ कनकरतनमणिजटितरटतकटिकिंकिणिकलितपीतपटतनियां २ पहुँचीकरनपदि

केहरिनखउरकठुला कंठमंजुगजमनियां ॥ रुचिरचिबु
करदअधरमनोहरललितनासिकालसतनथनियां ३ चि
कटभृकुटिसुषमानिधिआनन कलकपोलकाननगफनि
यां॥ भालतिलकमसिबिन्दुविराजतसोहतशीशलालचौ
तनियां ४ मनमोहनीतोतरीबोलनिमुनिमनहरनिहँसनि
किलकनियां ॥ बालसुभायविलोलविलोचनचोरतचित
हिचारुचितवनियां ५ मुनिकुलवधूझरोखनझांकतराम
चन्द्रछविचन्द्रवदनियां॥ तुलसिदासप्रभुदेखिमगनमइ
प्रेमविवशकछुसुधिनअपनियां ६ ॥

टी०। सखिनकी उक्ति कुलवधून सों कहत हैं सुसखि आ-
दर सहित देख तो अनूप बालरूप श्रीरामको भूप कनियांमें लिहे
हैं सुन्दर श्याम कमलवरन तनमें सब अंग सुन्दर सब सुख
के दानी हैं १ लाले चरण कमलन में मोतिनकीसी ज्योति नख
जगमगाइ रहे हैं पैंजनी रुनुझुनु करत सुन्दर कनकमणिन रत्नन
करि जटित कटि बिषे किंकिणी रटत वारंवार शब्दकरत तहां
कलित कही शोभित पीतपट तनियां कछनी शोभित है २ करबिषे
पहुँची उरपै पदिकहार बघनहायुत कठुला कण्ठमें गजमोतिन
को कण्ठा शोभित सुन्दर दाढ़ी दांतनसहित ओठ मनु हरत तापै
सुन्दर नासिका को बुलाक शोभित है ३ टेढ़ी भौंहैं शोभानिधि
मुखारविन्द सुन्दर कपोल तहां काननमों नगफनियां कर्णभू-
षण सोहत माथपै तिलक तहां मसिबिन्दु डिठौना विराजत
शीशपर लालरंग की चौतनियां टोपी चौगोसिया सोहत है ४
मनको मोहनहारी तोतरी बोलनि हँसनि किलकनि मुनिनको
मन मोहत है बालसुभायते चञ्चल नेत्रनकी सुन्दरि चितवनि
चित्तको चोराये लेतहै ५ इत्यादि सखी के वचनसुनि कुलकी
वधू झरोखे से झांकती हैं श्रीरामचन्द्र की छवि देखि चन्द्रवद-

नियां चन्द्रवदनी स्त्री गोसाईंजी कहत हैं कि प्रभुकी छविदेखते स्त्री प्रेमसें मगन ह्वै गईं कछु अपनी सुधि न रही यह सत्योपाख्यानमें प्रसिद्धहै ६ ॥

मू० । रागबिलावल॥सोहतसहजसोहायेनैन॥खंजन मीनकमलसकुचततबजबउपमाचाहतकविदैन १ सुन्दर सबअंगनिशिशुभूषणराजतजनुशोभाअयलैन ॥ वड़ो लाभलालचीलोभवश रहिगयेलखिसुषमाबहुमैन २ भोर भूपलियेगोदमोदभरे निरखतवदनसुनतकलबैन ॥ वाल करूपअनूपरामछविनिवसततुलसिदासउरऐन ३ ॥

टी० । बिन अंजन सोहत ताते सहज सोहाये नयनन की उपमा देबेको कवि चाहत तब खञ्जन मीन कमल संकोच को प्राप्त होत १ सुन्दरे सव अंगन में वालविभूषण कैसे राजत मानों भूषणही हैं अनेकन रूपधारे कामहै सो इहां शोभालेवे हेतु आयो है तहां वहुत सुषमाकही शोभा देखि वड़ोलाभ मानि लालच वशपरि इहां प्रभुके रूपमें अंगन पर रहिगयो २ प्रभातकाल भूप श्रीदशरथमहाराज मोदकही आनन्दवश गोदमें लिहे प्रभुके सुखसदन वदनको निरखत अरु सुन्दर अमृतमय मधुर वचन सुनत ऐसो वालरूप प्रभुको अनुपमैहै जाकी छवि सो तुलसीदासके उरऐनकही मन्दिर में सदा निवसतकही वसतहै यहपद द्वारदर्शन जो कवितावली में मंगलाचरण है इहां वालअवस्था समाप्त आगे पौगण्ड है ३ ॥

मू० । रागललित ॥ भोरभयोजागहुरघुनन्दन ॥ गत व्यलीकभक्तनउरचन्दन १ शशिकरहीनछीनद्युतितारे ॥ तमचुरमुखरसुनहुमेरेप्यारे २ विलसतकंजकुमुदबिलखाने ॥ लैपरागरसमधुपउड़ाने ३ अनुजसखासबबोलनआ

ये ॥ वन्दिनअतिपुनीतगुणगाये ४ मनभावतोकलेऊकी जै ॥ तुलसिदासकहजूठनिदीजै ५ ॥

टी०। माता कहतीहैं हे रघुनन्दन भोरभयो जागहु कैसे हो तुम व्यलीक जो है कपट सो गत कही जातरहाहै जिनके ऐसे जे भक्त हैं तिनके उरके चन्दनहौ १ चन्द्रमा की किरण हीन भई नक्षत्र की प्रकाश थोड़ी रही तमचुर कुक्कुट बोलत ताको सुनहु हे मेरे प्यारे २ कमल प्रफुल्लित भये कोकाबेली संपुटभई कमलकोशते रसधूरिलै भ्रमर उड़ाने ३ अनुज अरु सखा सब तुमको बोलाइबे हेतु आये अत्यन्त पवित्र यश वंदीजन गाइ रहेहैं ४ जो इच्छा होइ सो कलेऊ करिकै तुलसीदास को जूठनि दीजै ५ ॥

मू०। प्रातभयोतातबलिमातुविधुवदनपरमदनवारौं कोटिउठौप्राणप्यारे ॥ सूतमागधवन्दीवदतविरदावली द्वारशिशुअनुजप्रियतमतिहारे १ कोकगतशोकअव लोकिशशिछीनछविअरुणमय गगनराजतरुचिरतारे ॥ मनहुँ रविबालमृगराजतमनिकरकरिदलितअतिललित मणिगणबिथारे २ सुनहुँतमचुरमुखरकीरकलहंसपि ककेकिरवकलितबोलतविहंगयारे ॥ मनहुँमुनिवृन्दर घुवंशमणिरावरेगुनतगुणआश्रमनिसपरिवारे ३ सर निविकसतकंजपुंजमकरन्दवर मंजुतरमधुरमधुकरगुंजा रे ॥ मनहुँप्रभुजन्मसुनिचैनअमरावतीइन्दिरानन्दम न्दिरसँवारे ४ प्रेमसंमिलितवरवचनरचनाअकनिरामं राजीवलोचनउघारे ॥ दासतुलसीमुदितजननिकरैंआर ती सहजसुंदरअजिरपांवधारे ५ ॥

टी०। हे तात प्रातभयो मैं मातु बलिजाउँ तुम्हारे चंद्रवदनपर

कोटिन सदन वारों हे प्राणप्यारे उठौ पौराणिक कथिक भाट सो बिरदावली करिरहे हैं द्वारपर बालक प्रियसखा अनुज ठाढ़ेहैं १ शशिकी छविहीन देखि चक्रवाक शोकरहितभयो भानुउदय आगमकी ललासी सें आकाश विषे नक्षत्र कैसे राजत मानों बाल रविरूप सिंहने तमसमूह हाथिनको विदारि माथा फारि मणि सुन्दर गजमुक्ता बिथरायो है रवि सिंह तम हाथी नक्षत्र मुक्ता २ कुक्कुट बोलत औ शुक हंस कोयल मोर ते रवकलित कही सुन्दर शब्द करत तिनके बच्चा बोलत सो सुनौ हे रघुवंशमणि मानों आपको गुणानुवाद सुनि जन परिवार सहित आश्रमन सें गुनत कहे वर्णत हैं पक्षी मुनि मुरकुल आश्रम शब्द गुण वर्णन ३ तड़ागन सें विपुल कमल फूले तिनके श्रेष्ठरस के हेतु तिनपर मंजुतर कहे अतिसुन्दर भौंर गुंजत मधुर मधुर सो मानों प्रभुको जन्म सुनि देवपुरी सें आनन्द भयो तिन देवतनको नृत्यगान है कमल फूले सो मानों इन्दिराकही लक्ष्मी आनन्द मंदिर सँवारे हैं ४ प्रेम सहित श्रेष्ठ वचननकी रचनासुनि श्रीरघुनाथजी कमल से नेत्रखोले गोसाईं जी कहत कि मुदित मनसें माता आरति करत भई सहजही सें सुन्दर आंगनको आवते भये ५ ॥

मू० । जागियेकृपानिधानजानरायरामचन्द्रजननीकहैं वारवारभोरभयोप्यारे ॥ राजिवलोचनविशालप्रीति वापिकामराल ललितकमलवदनउपरमदनकोटिवारे १ अरुणउदितविगतशर्वरीशशांक किरणहीनदीनदीप ज्योतिमलिनदुतिसमूहतारे ॥ मनहुँज्ञानघनप्रकाशबीते सबभवविलास आशत्रासतिमिरतापतरनितेजजारे २ बोलत खगनिकरमुखरमधुकर प्रतीतिसुनहुँ श्रवणप्रा णजीवनधनमेरेतुमवारे ॥ मनहुवेदवन्दीमुनिवृन्दसूतमा गधादि बिरदवदतजैजैजैजयतिकैटभारे ३ विकसितकम

लावलीचलेभ्रपुंजचंचरीक गुंजतकलकोमलधुनित्यागि कंजन्यारे ॥ जनुविरागपाइसकलशोककूपगृहविहाइ भृत्यप्रेममत्ताफिरतगुणतगुणातिहारे ४ सुनतवचनप्रिय रसालजागेअतिशैदयालभागेजंजालविपुलदुखकदम्बटारे ॥ तुलसिदासअतिअनन्ददेखिकैमुखारविन्द छूटेभ्रमफन्दपरमद्वन्दभारे ५ ॥

टी० । हे कृपानिधान हे जानराय जान ब्रह्मा शिवादिकन के राजा अथवा कृतज्ञ राय रामचन्द्र प्यारे भोरभयो जागिये इत्यादि बारबार जननी कहत हैं राजीव कमलसम सुन्दर नेत्र प्रीतिरूपी बावली के हंस ललित सुन्दर वदन कमलपर कोटिन मदनवारे हैं १ अरुण सूर्य उदय भयो शर्वरी जो रात्री सो विगत कही बीतिगई शशांक चन्द्रमा किरणहीन भयो दीन दीपकी ज्योति मलिनभई तारे नक्षत्रनको प्रकाश मलिन भयो सूर्य नहीं मानों ज्ञानघन कहो समूह प्रकाश भयो ताते रात्री नहीं है भव को विलास में मोर तोर इत्यादि बीतिगयो आश त्रासरूप अंधकारको तोपरूप सूर्य्यके तेजनेजारे भस्मकरे २ हे प्राण जीवनधन मेरे वचननकी प्रतीति करो पक्षी समूह शब्द करिरहे भ्रमर गुंजारि रहे हैं तिनको श्रवणदैसुनों मानों वेदधुनि मुनिनकी अरु बंदी सूत मागध आदि ते विरदावली कहतमें जैजैधुनि होतहै इहां हंस सुवा मुनिहैं वेदधुनि करत मुरगा वंदी हैं विरदावली कहत कोकिल मोर पौराणिकहैं यशवर्णत भ्रमर मागधहैं कीरति गावत इहां मेरेवारे शब्दमें माधुर्य कैटभारे में ऐश्वर्य ३ विकसित कही फूले कमलन की पांति तिनमें सांझ के संपुट में परि भ्रमर जे बन्द रहे ते निकसि चले कमलन को त्यागि समूह भ्रमर न्यारेहैं मधुर धुनिसों गुंजत मानों कमलनको त्यागि भृंग नहीं गुंजतहैं भृत्य नाम तुम्हारे सेवक हैं तुम्हारी कृपाते वैरागपाइ शोककोपरूपी घर विहायकै प्रेम मगन तुम्हारे गुणानुवाद को गुणतकहे

गान करतहैं ४ रसाल प्रिय वचन सुनि अतिशय दयाल श्रीरघु-नाथजी जागे गोसांईंजी कहत प्रभुको कमलवदन देखि दास अत्यन्त आनन्दभये काहेते जंजाल जो मोह सो भागे तासों भ्रम फन्द सों छूटे अरु परमद्वन्द्वकहे राग द्वेष भोरकही भारी इत्यादि दुःख कदम्बकही समूह ताको टारेकही अर्थात् छोड़ाइ दिये तासों दास आनन्द भये ५॥

मू०। बोलतअवनिपकुमारठाढ़ेन्टपभवनद्वाररूपशील गुणउदारजागहुमेरेप्यारे॥ बिलखितकुमुदिनिचकोरचक्रवाकहरषभोरकरतशोरतमचुरखगगुंजतअलिन्यारे १ रुचिरमधुरभोजनकरिभूषण सजिसकलअंग रंगअनुज बालकसबविधिविधिसंवारे॥ करतलगहिललितचापभंजनरिपुनिकरदापकटितटपटपीततूणशायकअनियारे २ उपवनमृगयाविहार कारणगवनेकृपाल जननीमुखनिरखिपुण्यपुंजनिजविचारे॥ तुलसिदाससंगलीजैजानदीनअभयकीजै दीजैमतिविमलगावैचरितवरतिहारे ३॥

टी०। राजभवन के द्वारपर राजन के बालक ठाढ़े बोलिरहे हैं तुम्हारे दरश हेतु रूप आदि माधुर्य गुणके धाम शील आदि उदार गुणके धामहैं मेरे प्यारे जागहु भोरभयो कुमुदिनि कोंकावेली और चकोर बिलखित कहे दुःखित भये भोरभयेते चक्रवाक वियोगते संयोगभया ताते हर्षित भयो तमचुर कुक्कुट बोलिरहे हैं अपर पक्षी बोलत हैं अलिभ्रमर कमलनसों निसरि न्यारे बाहर गुंजत हैं इत्यादि वचनसुनि जागे इति शेपः ताको अध्याहारकहो १ इत्यर्थः अनुज बालकनके संग सुंदर मधुर भोजनकरि भूषण सब अंगनसें साजि संगमें अनुज अपर बालकनको अनेक विधिते सँवारे करसें धनुष लिहे सुन्दर जोरी रिपुगनके दाप जो

अहंकार ताको दलनहारो है कटिबिषे पीतपट औ तरकस जामें शायकबाण अनियारेकही पैनेहैं २ उपवनको मृगाके शिकारहेतु कृपालु रघुनाथजी गवने जातभये ता अवसर प्रभुको मुख देखि जननी आपने पुण्यके पुंज समूहविचारे मृगमारि कृतार्थ करत ताते कृपालुकहे गोसाईं जी कहत कि दीनजानि मोको संगलीजे कृपाकरि भवभयते अभयकीजै अरु निर्मलमति दीजै जासों तुम्हारे वर कहे श्रेष्ठचरित गावों ३ ॥

मू० । रागनट ॥ खेलनचलियेआनँदकन्द ॥ सखाप्रिय नृपद्वारठादेविपुलबालकवृन्द १ तृषिततुम्हारेदरशकारणचतुरचातकदास ॥ वपुषवारिदवरषिछविजलहरहुलोचनप्यास २ बंधुवचनविनीतसुनि उठेमनहुँकेहरिबाल ॥ ललितलघुशरचापकरउरनैनबाहुविशाल ३ चलतपद प्रतिबिम्बराजतअजिरसुषमापुंज ॥ प्रेमवशप्रतिचरण महिमनुदेतआसनकंज ४ देखिपरमविचित्रसुषमाचकितचितवहिंमात ॥ हरषविवशनजातकहिनिजभवनविहरहुतात ५ देखितुलसीदासप्रभुछविरहेपलसबरोंकि ॥ थकितनिकरचकोरमानहुँशरदइंदुविलोकि ६ ॥

टी० । भरतादिकी उक्तिहै आनन्दकन्दकहे मूल वा आनन्दजलदायकमेघ श्रीरघुनाथजी खेलबेको चलिये जे तुम्हारे प्यारेसखा अरु बालकनके वृन्द राजदुवारपर समूह ठाढ़े हैं तुम्हारे हेतु १ चतुर अनन्यचातक सो दास ते तृषित कहे दरशके प्यासे हैं स्वाती सो तुम्हारेहेतु वपुष देहरूप वारिदकही मेघ तासों छविरूप जलवराषि तिनके नेत्रनकी प्यासहरहु २ अनुज भरतादिकेनरम वचनसुनि उठे मानों केहरि कही सिंहके बालक सो ललित लघु कहे सुन्दर छोटेछोटे वाणधनुष करमें सोहत हृदयचौड़ा बड़ेबड़े नेत्रविशालकहे लम्बायमान सुन्दर भुजा ३अजिर आंगन मणिन-

मय जामें शोभासमूहहै तामें चलत पदको प्रतिबिम्ब परत सो कैसी राजत मानों आपको कठोर जानि पृथिवी प्रेमवश प्रभुके प्रतिचरण पद पदप्रति कमलको आसनदेत ४ प्रभुकी परमविचित्रशोभानिरखि माता चकित चितवतहै प्रेमवशते यह नहीं कहिसकति कि हे तात निजभवनमें विहरो वाहर न जाव ५ गोसाईंजी कहत कि तासमय प्रभुकी छविदेखि पलकरोंकि सव यकटकह्वै कहेहैं कौनी भांति यथा शरदृऋतुकीपूर्णिमाको पूर्णचन्द्रमा निरखि अनेकन चकोर थकित ह्वैरहे इहां बाल पौगण्डलैके वालचरित चन्द्रमाकी पूर्णिमाहै आगे पौगण्डकिशोर संधिहै ६ ॥

मू० । विहरतअवधवीथिनराम ॥ संगअनुजअनेक शिशुनवनीलनीरदश्याम १ तरुणअरुणसरोजपदबनि कनकमयपदत्रान ॥ पीतपटकटितूणवरकरललितलघु धनुबान २ लोचननकोलहतफल छविनिरखिपुरनर नारि ॥ वसततुलसीदासउरअवधेशकेसुतचारि ३ ॥

टी० । भरतादि अनुज अरु अनेक बालक संगलिहे नवीनमेघ समश्याम श्रीरघुनाथजी अवधकी वीथिन में विहरतहैं १ तरुण नवीन अरुण लालकमलसम पाँवन में सुवर्णतारनरचित पदत्रान पनहीं पहिरे शोभित कटिमें पीतपट अरु तरकस धारणकिये श्रेष्ठकरकमलनमें छोटेछोटे धनुषबाण लिहे २ सो छवि निरखि पुरके नरनारि नेत्रनको फलपावत गोसाईंजी कहत कि अवधेश महाराजके चारिपुत्र मेरे उरमें विहरत ३ ॥

मू० । जैसेरामललिततैसेलोनेलषणलाल ॥ तैसेईभरत शीलसुषमासनेहानिधि तैसेईसुभगसंगशत्रुशाल १ धरे धनुशरकरकसेकटितरकसी पीरेपटओढ़े चलैंचारुचाल ॥ अंगअंगभूषणजरायके जगमगात हरतजनकेजीकोति

मिरजाल २ खेलतचौहटघाटवीथिनवाटिकनप्रभुशिवसु प्रेममानसमराल ॥ शोभादानदैदैसन्मानतयाचकजन करतलोकलोचननिनिहाल ३ रावणदुरितदुखदलैसुरक है आजुअवधसकलसुखकोसुकाल ॥ तुलसीसराहैसिद्धि सुकृतकौशल्याजीकेभूरिभागभाजनभुआल ४ ॥

टी०। जैसे सुन्दर श्रीरघुनाथजी तैसे लोनेकही लावण्यतायुत लषणलाल तैसे शीलशोभा सनेहके समुद्र भरतजी तैसे सुन्दर संगमें शत्रुहनजी १ धनुषबाण हाथमें लिहे कटिमें तरकस कसे पीताम्बर ओढ़े सुन्दर हंसकीसीचाल चलत हेममणिनसों जड़ाऊ भूषण अंग अंगमें जगमगत सो जननकेजीको तिमिरजाल कहे अज्ञानहरत २ शिवजी के मनरूपी मानसरके हंस प्रभुसरयू के घाटन में चौकनमें गलिनमें बागन में खेलत अरु शोभारूपी दान दै दै अनुरागी याचकनको सन्मान करत अरु समग्रलोक जननके नेत्रनको निहालकरत ३ देवता कहत कि अयोध्याजी में तो सब सुखको सुकालहै परन्तु हमको रावण पापरूपी दुःख है ताको आजुइदलैं जामें त्रैलोक्यमें सुखको सुकालहोइ गोसाईं जी कहत कि श्रीदशरथमहाराज औ कौशल्याजी बड़ेभाग्य के पात्रहैं तिनको सुकृती सिद्धिजन सराहत हैं ४ ॥

मू०। ललितललितलघुलघुधनुशरकरतैसीतरकसिक टिकसेपटपियरे ॥ ललितपनहींपांयपैंजनीकिंकिणिधुनि सुनिसुखलहैमनरहैनितनियरे १ पहुंचीअंगदचारुहृदय पदिकहारुकुण्डलतिलकछविगड़ीकविजियरे ॥ शिरसि टोपीलालनीरजनयनविशालसुन्दरवदनठाढ़ेसुरतरुसिय रे २ सुभगसकलअंगअनुजबालकसंगदेखिनरनारिरहे

ट्योंकुरंगदियरे ॥ खेलतअवधखोरिगोलीभौंराचकडोरी मूरतिमधुरबसैंतुलसीकेहियरे ३ ॥

टी० । करमें छोटेवाण धनुष कटिमें छोटी तरकसी पीतपट बांधे पांयन में जराऊ पनहीं औ पैंजनी कटिमें किंकिणी की धुनि सुनि सुखकोपाय मनु सदासमीप रहत १ करमें पहुँची भुजमें अंगद वहूटा उरपै पदिकहार काननमें कुण्डल भालपै तिलककी छवि कविके जीमें बसी है शिरपै लालटोपी धारण कमल से नयन ते प्रभु सुरतरु कल्पवृक्ष सियरे कही ताकी छाँहीं में ठाढ़े हैं २ अनुज अरु बालकनके संग सब अंग सुन्दर प्रभुको देखि सब नरनारि कैसे रहे यथा मृगा दीपक एकटक ह्वै देखत अवध की गलिनमें गोली भौंरा चकई खेलत ऐसी मधुर मूरति प्रभुकी तुलसी के हियमें बसत ३ ॥

मू० । छोटीएधनुहियांपगनछोटीछोटीएकछोटीकटिछोटिएतरकसी ॥ लसतझंगूलीझीनीदामिनिकीछविछीनीसुंदरशिरपगियाजरकसी १ वयअनुहरतविभूषणविचित्रअंगजोहेजियआवतसनेहकीसरकसी ॥ मूरतिकीसूरतिकहीनपरैतुलसीपैजानैसोइजाकेउरकसकैकरकसी २

टी० । सुन्दर छोटी धनुही करमें पगनमें सुन्दरी छोटी छोटी पनहीं कटिमें कछनी अरु सुन्दरि छोटीसी तरकसी सुन्दर श्याम तनुमें पीतरंगकी महीन झँगुली जो दामिनी की छविछीने है सुन्दरसुख शिरपै जरकसी पाग सम लहै १ अवस्थाकी अनुहारि सुन्दर भूषण अंगमें जिनको देखेते सरकसी कहे जबरई सनेह हृदय में आवत तामूरतिकी सूरति तुलसीसों नहीं कही जात यह गति सो जानै जाके उरमें करकसी कसके छवि सो मूरति की सूरतिको जानै २ ॥

मू० । रामलषणयकओरभरतरिपुदवनलालएकओर

भये ॥ सरयुतीरसमसुखदभूमितलगनिगनिगोइयांबाँटि
लये १ कंदुककेलिकुशलहयचढ़िचढ़िमनकसिकसि
ठोंकिठोंकिखये ॥ करकमलनविचित्रचौगानेखेलनलगे
खेलरिझये २ व्योमविमाननविबुधविलोकतखेलतपे
खककछाँहछये ॥ सहितसमाजसराहिदशरथहिवरषतनि
जतरुकुसुमचये ३ एकलैबढ़तएकफेरतसबप्रेमप्रमो
दविनोदनये ॥ एककहतभइहाररामकीएककहतभइया
भरतजये ४ प्रभुबकसतगजवाजिवसनमणिजयध्वनि
गगनविमानहये ॥ पाइसखासेवकयाचकभरिजन्मन
दुसरेद्वारगये ५ नभपुरपरतनिछावरिजहँतहँसुरसिद्धि
नवरदानदये ॥ भूरिभागअनुरागउमगिजेगावतसुनत
चरितनितये ६ हारेहर्षहोतहियभरतहिजीतेसकुचशिर
नयननये ॥ तुलसीसुमिरिस्वभावशीलसुकृतीतेइजेयहि
रङ्गरये ७ ॥

टी०। श्रीराम लषण एकओर भरत शत्रुहन एकओर भये सरयूतीर बराबरिभूमि कंकर कांटा रहित सुखद थल में गोइयां गनिगनि बांटिलिये १ गेंदकेलेखके जे साधे घोड़े तिनपर चढ़िचढ़ि मनको पोढ़करि ठोंकिलिये कि हमहारेंगे नहीं मनमजबूतकरि खये कही ठाढ़ेभये करकमलन में सुन्दर मणि चित्रित चौगान कही खेलिबेको दांवलिहे खेलनलगे जिनको खेलिबेकी रीझहै २ आकाशते देवता विमानन परते देखत तिनपेखककही देखन हारनकी छांह सो खेलनहार छाये हैं ते देवता समाज सहित राजा दशरथको सराहत अरु अपने तरु कल्पवृक्षके फूल चये कही समूह वर्षतहैं ३ एक ओरते गदा के दण्डा मारि मारि लैकै बढ़तकी सींवपर करदेइँ जामें हमारी जीतहोइ तब दूसरी ओर

ते एक दण्डासारिकै फेरत कि हम गदाको सींवपार कै देइँ जामें हमारी जीतहोइ इत्यादि नये नये विनोदकही क्रीड़ाकौतुककरि करि सब प्रेमप्रमोद कही आनन्दवशहैं एक कहत कि श्रीराम जीको हाल अर्थात् जीतभई एक कहत भैया भरतजीते तेहि अवसर में हाथी घोड़ा दुशाला मणि आदि रघुनाथजी वकसत ताते याचकनकी जयध्वनि अरु विमाननपर देवता नगारा बजाये ता अवसरको दानपाय सखा सेवक याचक पूरण काम है जन्म पर्यन्त दूसरे द्वार न यांचे ताते रघुवरदानिशिरोमणि सांचे हनुमन्नाटके ॥ याविभूतिर्दशग्रीवे शिरश्छेदेपिशंकरात् ॥ दर्शना द्रामदेवस्य साविभूतिर्विभीषणे १ ॥ वाल्मीकीये ॥ सत्येनलोकान् जयति दीनान्दानेनराघव ४।५ पुर अयोध्याजीमें निछावरि परत पुरवासिन की आवास में देवतन की निछावरि परत जहँ तहँ देवता इन्द्रादि सिद्धलोमसादि आशीर्वाद देत प्रभुको कि तुम्हारी सदाजयरहे इत्यादि जे चरितहैं तिनको अनुराग ते उमँगिगावत अथवा सुनतहैं सदा तेऊ भूरि कही बड़ेभागीहैं ६ खेलमें हारेपरतौ भरतजी को हर्ष होत अरु जीतेपर सकुचाइकै शिर नेत्र तरे को नवाइलेत ताते प्रभु हारौ खेल भरत को जिताइ देत याते अमानीदासन को प्रभु आपुते अधिक मानराखत ऐसे शीलस्वभाव प्रभुको सुमिरि जे याहे अनुराग रंगमें रँगे हैं गोसाईंजी कहत ते परम सुकृती हैं ७ ॥

मू० । खेलिखेलसुखेलनहारे ॥ उतरिउतरिचुचकारितुरंगनिसादरजाइजोहारे १ बन्धुसखासेवकसराहि सनमानिसनेहसँभारे ॥ दियेबसनगजबाजिसाजिशुभसाजिसुभांतिसँवारे २ मुदितनयनफलपाइगाइगुणसुरसानन्दसिधारे ॥ सहितसमाजराजमन्दिरकहँरामरायपगधारे ३ भूपभवनघरघरघमण्डकल्याणकुलाहलभारे॥ नि

रखिहरषिआरतीनिछावरिकरतशरीरबिसारे ४ नित नयमंगलमोदअवधसबबिधिसबलोगसुखारे ॥ तुलसी तिनसमतेउजिनकेप्रभुतेप्रभुकेचरितपियारे ५ ॥

टी०। खेलिके खेलनहारे उतरि तुरंगनको चुचकारि अपने मालिकनको आदर सहित जोहारे १ बन्धु, वंश, वर्ग, सखा, मित्र, सेवक, दास तिनको सराहि सन्मान करि सनेहको सँभारे अर्थात् सेवकनको सराहे सखनको सन्माने भाइनको सनेह सँभारे खेल में भूले रहेते सँभारे । सेवकन को बसन दिये सखनको घोड़े भाइन को हाथी दिये शुभसाजि मंगलीक सुभांति सुन्दरी तरह पोशाकादि साजिके सँवारिदिये २ देवता नेत्रनको फलपाइ प्रभुके गुणगणगावत आनन्द सहित आपने लोककोगये समाजसहित श्रीरघुनाथजी राजमन्दिरको आवते भये ३ भूपके भवन में औ घरघरसें कल्याणकोकोलाहल शब्दको घमण्ड सो भरिरहाहै प्रभुकोनिरखि कौशल्यादि माता आनन्द सों आरती उतारत प्रेमवशते देहकी सुधिनहीं है ४ यहिप्रकार नितनयेमंगल उत्सवमोद आनन्दअयोध्याजीको दिनप्रतिहोत ताते सबबिधिते सबलोग सुखी हैं गोसाईंजी कहत कि पुरवासिन समानतेऊहैं जिनको प्रभुकेचरित प्रभुतेपियारे हैं इहांतक किशोरलीला चतुर्दशवर्षपांचमहीनाकी अवस्था प्रभुकीहै ५ ॥

इति बालकाण्डपूर्वार्द्धःसमाप्तः ॥

मू०। रागसारंग ॥ चहतमहामुनियागजयो ॥ नीच निशाचरदेतदुसहदुखकृशतनतापतयो १ शापेपापनयेनि दरतखलतबयहमंत्रठयो। बिप्रसाधुसुरधेनुधरनहितहरि अवतारलयो २ सुमिरतश्रीसारंगपानिक्षणमेंसबशोचगयो । चलेमुदितकौशिककोशलपुरसगुननसाथदयो ३

करतमनोरथजातपुलकि प्रकटतआनंदनयो । तुलसीप्र भुअनुरागउमँगिमगमंगलमूलभयो ४ ॥

टी० । क्षत्रीते ब्रह्मऋषिभये ऐसे महामुनि विश्वामित्रजी ते यज्ञ अरु जयदोऊ चाहत दुसहकहे जो सहिनजाइ ऐसादुःख नीच निशाचर देतहैं तेहिताप त्येते शरीरदुर्बलह्वैरहा है १ शापे पापकहे शापदीजिये तौ पापहोत अरु नयेकही नैकैरहिये तौ खल निन्दाकरत कैसे ऋषिहैं जो कछु बनावानहीं बनत इहां संदेहहै कि त्रिशंकुकी यज्ञहेतु वशिष्ठजी के पुत्रनको शापदैऋ- षीश्वरनको भस्म करिदियो तब न पाप विचार्यो वलिदान हेत अपने पुत्रनको शापदै भस्मकरे तब पाप न विचार्यो हरि श्चन्द्र धर्मात्मा के सर्व कर्मकरे तब पाप न विचार्यो अबदुष्ट राक्षसनके शापकोपाप विचार्यो ताते प्रथमअर्थठीकनहीं ताते शापे पापन पूर्वही पापन करि शापेहैं जा पापनकरि शापेगये ताते राक्षसभये ते मरेको कैसे मारिये अरु ये नित अरत अभि- रतहैं खलनित्यही इहां चपा अवे जवा सूत्रकरि अकार झिलि दकारभई ताते नित अरतको निदरतभयो ताते पूर्वपापनकरि शापे राक्षस खलनित अरतसो अभिरतहैं तब यह विचारे कि मही,ब्राह्मण,गऊ,देवता,साधुन हेतुहरिरघुवंश में अवतारलीन्हों है प्रमाणं महारामायणे ॥ सम्यग्वदन्तिनिगमावहुशोवतारा न्सद्ब्रह्मणोभुवितलेनिजभक्तहेतोः ॥ ताते प्रयोजन सब को हेतु भक्तन हेतु भक्तनके २ शारंगपाणि धनुषधारी श्रीरघुवंशनाथ को नाम स्मरण करतही हृदयते सबशोच जाते रहे प्रभुके नामही में ऐसा प्रभाव है कि जाके सुमिरत मात्रही सर्वविघ्न नाश होत प्रमाण नारदीयपुराणे ॥ श्रीरामस्मरणाच्छीघ्रं समस्त क्लेशसंक्षयः । मुक्तिंप्रयातिविप्रेन्द्रतस्यविघ्नोनबाधते ॥ ऐसो नाम स्मरण करत श्री विश्वामित्रजी अयोध्याजी को चले ताते यावत् विघ्न सब नाशभये अरु मंगलीक शकुनन ने साथ

दये शकुन होतही आयो सो काहे न होहि जो नाम स्मरत हैं सो मंगलकी खानि हैं ॥ प्रमाणंरहस्यनाटके ॥ मधुरमधुरमेतन्मंगलंमंगलानां सकलनिगमवल्लीतत्फलंचित्स्वरूपम् ॥ सकृदपिपरिगीतं श्रद्धयाहेलयावा सम्भवतिभवपारंरामनामानुभावात् ३ बहुतप्रकारमनोरथकरत प्रेमते पुलकिगातनवीन आनंदप्रभुके रूपमाधुरीको अवलोकन मधुरवचन श्रवणादिप्राप्तहोवेनवीनमनोरथकेआनन्दप्रकटतविश्वामित्रजी मार्गमें चलेजातहैं गोसाईंजी कहत कि विश्वामित्रजी के उरमें प्रभुकोअनुराग उमँगततातेमग मंगलकोमूलभई यहरीति है जब जीवप्रभु के संमुख होत तबसबमंगल आपुहीहोत ॥ प्रमाणंवाल्मीकीये ॥ सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम ४ ॥

मू०। आजुसकलसुकृतफलपाइहौं। सुखकीसींव अवधिआनँदकीअवधबिलोकिहौंपाइहौं १ सुतहिसहितदशरथहिदेखिहौंप्रेमपुलकिउरलाइहौं। रामचन्द्रसुखचन्द्रसुधाछविनयनचकोरहिप्याइहौं २ सादरसमाचारनृपबुझिहैंहौंसबकथासुनाइहौं। तुलसीह्वैकृतकृत्य आश्रमहिरामलषणलैआइहौं ३ ॥

टी०। अब विश्वामित्रजी को मनोरथ कहत हैं श्रीविश्वामित्रजी अपने मनमें कहत हैं कि आजुमैं सब सुकृतिनको फल श्रीरघुनन्दन को दरशपाइहौं सुखकी सींव कहे सुख द्वैप्रकार एकप्राकृत सर्व सौभाग्य युक्त सुत वित कलत्रादि एक दिव्यसुख प्रेमापराभक्ति आनन्द तीनि प्रकार एक विषयानन्द एक भजनानन्द एक ब्रह्मानन्द अथवा सुखमयी भक्ति आनन्दमयी ज्ञान इत्यादि सुख सौभाग्यके स्थान आनन्दके दाता रघुनाथजी हैं प्रमाणंसदाशिवसंहितायां ॥ सर्वसौभाग्यनिलयंसर्वानंदैकदायकम् ॥ कौशल्यानंदनंरामंकेवलंभवखण्डनम् १ ऐसे जो श्रीरघुनाथजी तिनको

नित्य विहारस्थान है श्रीअयोध्याजी यथा श्रुतिः ॥ यायोध्यापुरी सासर्ववैकुण्ठानामेवमूलाधारा मूलप्रकृतेःपरातत्सद्ब्रह्मरूपाविर स्तारादिव्यरत्नकोशाढ्या तस्यां नित्यमेव सीतारामयोर्विहारस्थल मस्तीतीत्यथर्वणे उत्तरार्द्धे ताते श्रीअयोध्याजी सुख को आनन्द दोऊकी मर्यादाहै श्रीविश्वामित्रजी कहते हैं कि तेहि श्रीअयो-ध्याजी को विलोकिहौं जाइ १ सुतजे श्रीरघुनाथजी तिन सहित श्रीदशरथ महाराज को देखतेही प्रेमते पुलकि उर में लगाइहौं अरु श्रीरामचंद्र को मुख पूर्णचन्द्रमा सम तामें छवि रूपी जो अमृत है ताको अपने नेत्ररूपी चकोरन को प्याइ हौं २ इत्यर्थः सहित आदर समाचार कुशल प्रश्न श्रीमहाराज दशरथजी पूँछ-तहैं तिनते मैं अपने दुःख सुखकी समग्र कथा सुनाइहौं अर्थात् हमको राक्षस सतावते हैं तिनके वधहेतु श्रीराम लषणको देहु या प्रकार धर्मज्ञ दशरथ महाराज सों मांगि कृतार्थ रूप प्रभुको पाय कृतार्थ ह्वै श्रीराम लषण को अपने आश्रम को लाइहौं ३ ॥

मू०। रागनट ॥ देखिमुनिरावरेपदआज।भयोप्रथमगन तीमें अबतहँजहँलौंसाधुसमाज १ चरणबन्दिकरजोरिनि होरतकहियकृपाकरिकाज। मेरेकछुनअदेयरामबिनुदेहगे हसबराज २ भलीकहीभूपतित्रिभुवनमें कोसुकृतीशिरता ज।। तुलसीरामजनमतेजनियतसकलसुकृतिकोसाज ३॥

टी०। श्री महाराज कहते हैं हे मुनि आपुके चरण देखते आजुते मैं प्रथम गनतीमें भयों तहां एकतौ ऐश्वर्य लीलाको प्रारम्भ है ताते दूसरे प्रभु प्रसिद्धहै साधुनकी रक्षा करिहैं ताते जहां २ सा-धुनकी समाज तहां २ हमारी प्रथम गनती वा अवतारको प्रसिद्ध जाने ताते रामकौन दाशरथी इत्यादि १ नमस्कार करि हाथजोरि निहोराकरि कहत कि कार्य कहिये जोकार्यहेतु आपु आयो होय सोकृपाकरिकहिये एक श्रीरघुनाथजी छांड़ि अपर देहघरराज्यादि

सर्वस्व मेरे अदेय नहीं है जो न देसकैं २ विश्वामित्रजी कहत हैं हे महाराज! तुम भलीकही ऐसा को तीनिलोकमें सुकृतिन में शिरताज दूसरोहै एकतुमहींहो सुकृतिनमें शिरताजहो गोसाईं जी कहत कि श्रीरघुनाथजी के जन्मैते जानियतहै कि सुकृतको साजु प्रभुके साथही है ३ ॥

मू०। राजनरामलषणजोदीजै ॥ यशरावरोलाभढोटनको मुनिसनाथसबकीजै १ डरपतहौसांचेसनेहवशसुत प्रभावबिनुजाने ॥ बूझियवामदेवअरुकुलगुरुतुमपुनि परमसयाने २ रिपुरणदलिमखराखिकुशलअतिअलप दिननघरऐहैं ॥ तुलसिदासरघुवंशतिलककीकविकुलकी रतिगैहैं ३ ॥

टी०। विश्वामित्रजी कहतहैं हे राजन्! जो राम लषणको दीजै तो आपुको तौ यश है अरु बालकनको लाभहै विवाहादि अरु मुनिनको सनाथ कीजै राक्षस वधभये निर्विघ्न भजनकरिहैं १ पुत्रको प्रभाव नहीं जानत हौ कि कैसे वीर बलवान् हैं दूसरे रघुनाथजी में हमारो सांचो स्नेह कि इन विना हमारो जीवन नहीं ताते डरपते हौ ताके हेतु वामदेवते अरु वशिष्ठजीते बूझि लीजै आपहू तौ परमसयाने हौ प्रथम आपुही विचार करिये २ विश्वामित्रजी कहते हैं रणविषे शत्रुनको दलि यज्ञकी रक्षाकरि कुशलसहित घरको थोरही दिननमें आइहैं गोसाईंजी कहत कि रघुवंशके तिलक रघुनाथजी की उज्ज्वलि पवित्र कीरति ताको कविनके कुल अर्थात् ब्रह्मा नारद बाल्मीकि भरद्वाज अगस्त्य सुतीक्ष्ण पराशर व्यास शुकदेव गाइहैं ३ ॥

मू०। रहेठगिसेनृपतिसुनिमुनिवरकेबयन ॥ कहिनसकतकछुरामप्रेमवशपुलकिगातभरेनीरनयन १ गुरुवशिष्ठसमुझायकह्योतबहियहरषानेजानेशेषशयन ॥ सौंपे

सुतगहिपाणिपायपरिभूसुरउरचलेउमगिचयन२तुलसी प्रभुजोहतपोहतचितसोहतमोहतकोटिमयन ॥ मधुमाधवमूरतिदोउसंगमानो दिनमनिगवनकीनेउत्तरअयन ३॥

टी० । श्रेष्ठ मुनिके वचन सुनि महाराज ठगे अस रहिगये रघुनाथजी के प्रेम के वश देह पुलकि आई ताते कछु कहि नहीं सकत नेत्रभरेहैं १ वशिष्ठजी समुझाये कि प्रभुको अवतार भूमि भारउतारिबे हेत है यह सुनि हृदय में हर्षाने जाने कि शेषशयन हैं नरते ईश्वरत्वको बोध यह प्रसिद्ध हेतुहै अरु दूसरो अर्थ वशिष्ठजी समुझायो कि विश्वामित्रद्वारा विवाह होनहार यज्ञकी रक्षा इनहीं करि होई अरु इनको मनुष्य न जानिये गो द्विज सुर साधुके रक्षकहैं इतनी बात प्रकटकहे साकेतविहारी परात्पर रूपको प्रसिद्ध नहीं कहे यह शेष कहे बाकी राखे ताको सैन बुझाइ समुझाइ दिये तब जानि रघुनाथजी कि येतौ पररूप हैं ताते हर्षाने हृदयमें तब पायनमें परिकै ऋषिको पुत्रन के हाथ पकरि सौंपिदिये ताते भूसुर विश्वामित्रजी चैन कही आनन्द उरमें उमगिचले २ गोसांईजी कहत कि प्रभु कैसे सोहत जो कोटिन कामको मोहतहैं जोहत देखतही चित्तको पोहत आपुमें लगाइलेत हैं मधु चैत माधव वैशाखये दोऊ महीना मूरतिवंत लय विश्वामित्र मानो सूर्य्यरूप उत्तरायणभये चैत वैशाखमें सूर्य उत्तरायण होत तब प्रताप बहुत होत ताही भांति ऋषि प्रतापवान्हैं उत्तरायणको गमनकरे यथा ॥ रघुवंशे ॥ मातृवर्गचरणस्पृशौ मुनेस्तौप्रपद्यपदवींमहौजसः । रेजतुर्गतिवसात्प्रवर्तिनौ भास्करस्यमधुमाधवाविव ३ ॥

मू० । ऋषिसँगहरषिचलेदोउभाई ॥ पितुपदवंदिशीशलियोआयसुसुनिशिषआशिषपाई १ नीलपीलपाथोजवरणवपुवयकिशोरबनिआई ॥ शरधनुपानिपीतपट कटितटकसेनिषंगबनाई २ कलितकंठमणिमालकलेव

रचन्दनखौरसोहाई ॥ सुन्दरबदनसरोरुहलोचनमुखछ
विवरणिनजाई ३ पल्लवपंखसुमनशिरसोहत क्योंकहौं
वेषलोनाई ॥ मनुमूरतिधरिउभयभागभइत्रिभुवनसुन्दर
ताई ४ पैठतिसरनशिलनचढ़िचितवतखगमृगवनरुचि
राई ॥ सादरसमैसुप्रेमपुलकिमुनिपुनिपुनिलेतबोलाई ५
एकतीरतकिहतीताड़काविद्याविप्रपढ़ाई ॥ राख्योयज्ञ
जीतिरजनीचरभइजगविदितबड़ाई ६ चरणकमलरज
परसिअहल्यानिजपतिलोकपठाई ॥ तुलसिदासप्रभुके
बूझेमुनिसुरसरिकथासुनाई ७ ॥

टी० । पिताको सिखावन सुनि रजाय माथेपरधरि चरणनको नमस्कारकरि आशीर्वादपाइ ऋषिकेसंग दोउभाई लषणलालयुत रघुनन्दन हर्षित ह्वै चलतभये यह यात्रा कारकृष्ण द्वादशी की है १ श्यामपीत कमलवरण तनमें किशोर अवस्था शोभित कर-कमलमें धनुषबाणलिहे कटिमें तरकस सुधारि पीतपट कसे २ सुन्दर कण्ठ में शोभित मणिनको माला तन में चन्दन की खौरि सोहत सुन्दर बदन में कमलसे लोचन मुखकमल की छवि व-रणी नहीं जात इहां बदन चिबुकते केशपर्यंत अरु मुख ओंट अन्तर ताते पुनरुक्ति न होइहै ३ नवीन पल्लवसहित फूल अरु मोरके पंखसहित शिर में बारन के बीच में शोभित अरु वेषकी लावण्यता नहीं कही जात ताकी उत्प्रेक्षा करत मानों त्रिभुवनकी सुन्दरताई दुइ भागह्वै मूर्तिमान् भई ४ लघु अवस्था के प्रभाव करि चंचलसुभाव ताते तड़ागन में पैठत अरु ऊँचे शिलनपर चढ़ि पक्षिनको मृगनको अरु वनको विस्तार देखत तहां मुनि इराइके आदरते प्रेमसों पुलकि बारबार बोलाइलेत ५ ताड़का को देखतेही एक बाणते प्रभुमारे तब विश्वामित्रजी प्रभुको बाण विद्या पढ़ाइ निशाचरनको जीति यज्ञकी रक्षाकरे ताकी बड़ाई

जगमें विदितभई ६ तहां ते मिथिलापुरको चले मार्ग में चरण रज छुवाइ अहल्याको पति के लोकपठाये गोसाईंजी कहत कि प्रभुने गंगाजी की उत्पत्ति पूंछी तब ऋषि सब चरित कहे ७ ॥

मू०। दोउराजकुँवरराजतमुनिकेसंग ॥ नखशिखलोनेलोनेबदनलोनेलोयनदामिनिवारिदवरनअंग १ शिरसिशिखासुहाईउपवीतपीतपट धनुशरकरकसेकटिनिषंग ॥ मानोमखरुजनिशिचरहरिबेकोसुतपावककेसाथपठयेपतंग २ करतछांहघनवरषैंसुमनसुरछविवरनतअतुलितअनंग ॥ तुलसीप्रभुविलोकिमगलोगखगमृगप्रेममगनरंगेरूपरंग ३ ॥

टी०। दामिनिवरण लक्ष्मणजी मेघवरण रघुनाथजी जिनके लावण्यतायुत नेत्रलावण्यतायुत मुख इत्यादि नखशिख लावण्यताकेभरे अंग ऐसे दोऊराजकुमार मुनिके संगमें राजतहैं १ शिरमें शिखा काकपक्ष शोभादेत उरपै यज्ञोपवीत करमें धनुषबाण कटिमें पीतवस्त्रसों तरकसकसे कैसो सोहत मानों मखके निशाचररूपी रोग हरिबेको पतंग सूर्यने अपने पुत्र अश्विनीकुमारको अग्निके साथ पठाये हैं इहां सूर्य चक्रवर्ती महाराज अश्विनीकुमार पुत्र अग्नि विश्वामित्र निशाचर रोग २ मेघ छांहकरत देवता फूल वर्षत प्रभुकी उपमा अनेकनकामकी है ताको कौनवरणै छवि अतुलहै कामतुच्छ है गोसाईंजी कहत कि प्रभुको देखि मगके लोग अरु खगमृगरूपके अनुराग रङ्गमें रहिगयो ताते प्रेममें मगन हैं३ ॥

मू०। रागकल्याण ॥ मुनिकेसंगविराजतवीर ॥ काकपक्षधरकरकोदण्डशरशुभगपीतपटकटितूणीर १ बदनइन्दुअंभोरुहलोचनश्यामगौरशोभासदनशरीर ॥ पुलकतऋषिअवलोकिअमितछवि उरनसमातप्रेमकीभीर २

खेलतचलतकरतमगकौतुकविलसतसरिससरोवरतीर॥
तोरतलतासुमनसरसीरुहपियतसुधासमशीतलनीर ३ बै
ठतविमलशिलनविटपनतरपुनिपुनिवरणतछांहसमीर॥
देखतनटतकेलिकलगावत मधुपमरालकोकिलाकीर ४ नै
ननकोफललेतनिरखिमृगखगसुरभीव्रजवधूअहीर॥तुल
सीप्रभुहिदेतसबआसननिजनिजमनसबकमलकुटीर ५॥

टी० । मुनिकेसंगमें दोऊवीर विराजत हैं काकपक्ष जुलफें शीशपै हैं हाथनमें धनुषबाण धारण सुन्दर पीतपट वस्त्र अरु तरकस कटिमें शोभित १ चन्द्रमासे बदन कमलसे नेत्र श्याम गौर दोऊ शरीर शोभाके मन्दिर ऐसी अमित छवि प्रभुकी देखि मुनि वारबार पुलकांग ह्वै प्रेमसमूह उरमें नहीं समात २ खेलत कौतुक करत मगमें चलेजात नदी तड़ागनके किनारे विलास करत कहीं नवीनलता कहीं रंगरंगके फूल तूरत कहीं तड़ागनमें सुन्दर कमल तूरत कहीं निर्मल अमृतसम शीतल जल पियत ३ विटपनतर विमलशिलनपर बैठत अरु बारबार छाहीं अरु समीर पवन ताकी शीतलता वर्णन करत हैं यथा रघुवंशे ॥ तौसरांसिरसवद्भिरम्बुभिः कूजितैःश्रुतिसुखैः पतत्त्रिणः । वायवः सुरभिपुष्परेणुभिश्छायया च जलदाः सिषेविरे ॥ तहां मोर नाचत भँवर गावत हंस कोकिल शुवा बोलत तिनको देखत ४ मृग व पक्षी गौवैं व्रजवधू वनके रहनेवाली अहीरनकी स्त्री अरु अहीर ते सब नयननको फललेत गोसाईंजी कहत कि सब अहीरनकी कन्या प्रभुको रूप देखि मोहित ह्वै अपने मनरूप कुटीमें प्रेमरूप कोमल कमल को आसनदेत प्रभुको रूप मनमें बसावत यथा सत्योपाख्याने ॥ पिबतो वारुणीं गोष्ठे गोपान्पश्यतिराघवः । चलतो मुद्गरोत्थाय भ्राम्यान्पानेन मोहितान् १ गावश्च दुहतो वत्सान् निहन्ति च ददर्श च । तावन्मृगाश्चखादन्तिव्रीहींस्तत्रपुनर्द्रुताः २ सहसामुनिना भ्रातागोपिका

श्चविलोकयन् । इत्थंविलोकयन्रामोमुनेःपश्चाद्ययौमुदा ३ त्रि यस्ताराघवंदृष्ट्वाकन्दर्पसदृशाकृतिम् । विधायतर्ज्जनीमोष्ठेपृच्छ न्तिस्मस्त्रियोमुदा ४ सत्यम्ब्रूहिमुनेमह्यंकस्यचेमौकुमारकौ ५ ॥

मू० । रागकान्हरा ॥ सोहतमगमुनिसँगदोउभाई ॥ तरुणतमालचारुचम्पकछविकविसुभावकहिजाई १ भूषणवसनअनुहरतअंगनउमगतसुन्दरताई ॥ बदनमनोजसरोजलोचननरहिहैंलोभाइलोनाई २ अंसनिधनुशरकरकमलकटिकसेहैंनिषंगबनाई ॥ सकलभुवनशोभासरबसलघुलागतिनिरखिनिकाई ३ महिम्रदुपथघनछांहसुमनसुरबरषिपवनसुखदाई ॥ जलथलरुहफलफूलसलिलसबकरतप्रेमपहुनाई ४ ॥

टी० । मग बिषे मुनिके संग दोऊ भाई सोहत कैसे नवीन तमाल सम रघुनाथजी चम्पक सम लक्ष्मणजी यह छवि की उपमा कवि सुभावते कहीजात कवि सुभाव जो न कहा जाइ सोभी कहै १ अंग अंगके अनुरूप भूषण वसन हैं यथा ॥ श्याम अंगमें पीतवसन पीत मणिनके भूषण गौर अंगमें श्याम वसन श्याममणिनके भूषण इत्यादि सोहत ताते सुन्दरताई उमगत है मुखपै कामकी शोभा नेत्रन पै कमलनकी शोभा लोभाइ रही है २ अंस कांधनपर धनुष करकमलमें बाणलीन्हे कटिमें तरकस सुधारिकै कसे हैं ऐसे सुन्दररूपकी निकाई देखि सब भुवन की शोभा लघु लागती है ३ पृथ्वी कोमल मार्गदेत मेघ छाहीं करि रहेहैं देवता फूल बरषि रहे हैं पवन शीतल मन्दसुगन्ध सुन्दर सुखदायक बहि रही है जलके वृक्ष कमल आदि फूले कि प्रभु हमको कदाचित् करसे वा गरेमें धारण करिलेइँ पृथ्वीके वृक्ष सुन्दर फूल कमलन सों नैरहे हैं जामें प्रभु हमारे फूलफल ग्रहण

करैं सलिल निर्मल शीतल भरिरहाहै इत्यादि सब अपने कृतार्थ होवेहेत प्रेमसों पहुनाई प्रभुकी करिरहे हैं ४ ॥

मू० । सकुचसभीतविनीतसाथगुरुबोलनिचलनिसुहाई ॥ खगमृगविचित्रविलोकतबिचबिचलसतललितलरिकाई ५ विद्यादईजानिविद्यानिधिविद्यहुलहीबड़ाई ॥ ख्यालदलीताड़कादेखिऋषिदेतअशीषअघाई ६ बूझतप्रभुसुरसरिप्रसंगकहिनिजकुलकथासुनाई ॥ गाधिसुवनसनेहसुखसंपतिउरआश्रमनसमाई ७ वनवासीवटुजतियोगिजनसाधुसिद्धसमुदाई ॥ पूजतपेखिप्रीतिपुलकततननैनलाभलुटिपाई ८ मखराख्योखलदलदलिभुजबलबाजतविबुधबधाई ॥ नितपथगरितसहिततुलसीचितबसतलषणरघुराई ९ ॥

टी० । गुरुके साथमें सकोच डरसहित नम्रता की बोलनि चलनि शोभित हैं मार्ग बिषे जहां विचित्र पक्षी अरु मृगनको देखतहैं तिनको देखि पकरिबेहेतु धावत हैं इत्यादि बीच २ लड़िकाई सुन्दरशोभादेतिहै ५ इहां ताड़कावध अरु विद्यादेबे को क्रम विपरीत है सो गानविद्यामें पूर्वापरक्रमको नेम नहीं है अर्थ क्रम सों लिखतहौं ख्यालही में ताड़काको दले सो देखि प्रसन्न होइ ऋषि अघाइकै आशीर्वाददियो विद्यानिधिजानि विद्यादेत भये अर्थात् विद्याको स्थान एई हैं विद्याभी बड़ाई पाई प्रभु हम को गुणमानिधारणकियो ६ प्रभुके पूछेपर गंगाजीकी उत्पत्ति अयोध्याजी के राजा सगरके अश्वमेध में यज्ञहेत घोड़ाछोड़ाते कपिलदेवके कोपते सगरके पुत्र साठिहजार भस्मभये तिनके तारिबेहेत चौथी पुस्तिपीछे भागीरथ तपस्याकरि गंगाजीकोलाये यह प्रसंग तुलसीकृत क्षेपकमें प्रसिद्धहै गंगाजी की उत्पत्ति कहि अपने कुलकी कथा विश्वामित्रजी कहे, प्रथम ब्रह्माते कुशनामे

धर्मात्मा तेजस्वी भये तिनके चारिपुत्र प्रथम कुशाव तिनको कवीपुरीरचे दूसरे कुशनाम ते महोदयपुरीरचे तीसरे अवूर्त्त चौथे रजस तिन धर्मारण्यपुरीरचे इति ॥ कुशनामके पुत्र गाधिभये तिनके विश्वामित्रजी कहते हैं कि हम भये शोणभद्र नदी अरु मागधदेश राजधानी है इति ॥ वाल्मीकी विस्तारते बीजमात्र हमलिखे इत्यादि कुलकी कथा सुनाई विश्वामित्रजी के स्नेह सुखरूपी सम्पत्ति उररूपी आश्रम में नहीं समात है ७ वनवासी वानप्रस्थ वटु ब्रह्मचारी यती संन्यासी योगी अष्टांगयोगकरने वाले साधु शांतचित्तवाले हरिजन भगवद्भक्त सिद्ध जो साधन करि सिद्धी अणिमादिकन को प्राप्तभये इत्यादि समूहते फलके देनहार प्रभुको देखिकै मानों नेत्रनकी लाभरूपी लूटि अनाश्रित पाई ऐसो हर्षमानि प्रेमसों तन पुलकित ह्वै प्रीतिते सब प्रभुको पूजते हैं ८ भजनके वलसों खलनके दलदलि यज्ञकी रक्षाकरे ताते देवतन के वधाई बाजत है गोसाईंजी कहत कि हमारे चित्तमें पन्थके चरितसहित लक्ष्मणजी रघुनाथजी वसतहैं ९॥

मू० । मंजुलमंगलमयनृपढोटा ॥ मुनिमुनितियमुनिशिशुविलोकिकहैंमधुरमनोहरजोटा १ नामरूपअनुरूपवेषवयरामलषणलाललोने ॥ इनतेलहीहैमानोघनदामिनिद्युतिमनसिजमरकतसोने २ चरणसरोजपीतपटकटितटतूणतीरधनुधारी ॥ केहरिकन्धकामकरिकरवरविपुलबाहुबलभारी ३ दूषणरहितसमयसमभूषणपाइसुअंगनिसोहै ॥ नवराजीवनयनपूरणविधुवदनमदनमनमोहै ४ शिरनिशिखंडसुमनदलमंडनबालसुभायबनाये ॥ केलिअंकतनुरेणुपंकजनुप्रकटतचरितचोराये ५ सखराखिवेलागिदशरथसोमांगिआश्रमहिंआने ॥ प्रेमपूजिपाहुनेप्राणप्रियगाधिसुवननसनमाने ६ साधनफलसाधकसिद्धिनकेलोचन

फलसबहीके ॥ सकलसुकृतफलमातपिताके जीवनधन तुलसीके ७ ॥

टी०। मंजुल यज्ञादि सत्कर्मके मंगलमयी नृपके पुत्र हैं स्त्री पुत्रयुत मुनि यह कहते हैं देखिकै कि यह मधुर जोड़ी मनको हरणहारी है १ रूपके अनुरूप नाम अवस्था के अनुरूपवेष ऐसे लावण्यतायुत श्रीरघुनन्दन अरु लषणलाल हैं मानो घनदामिनि मरकतमणि सोना कामदेव आदि इनहिनते द्युतिपायो है मरकत मेघवर्ण रघुनाथजी दामिनि सोनावर्ण लक्ष्मणजी काम दूनहू रूपमें अथवा मनोसिजके मरकतमणि अरु सोना सो इनते द्युति पाईहै २ कमल सम चरण हैं कटि विषे पीतपट अरु तरकस धारण करकमल में सुन्दर धनुषबाण शोभित है सिंहके ऐसे ऊंचे कांधा कामके हाथी शुण्ड समश्रेष्ठ भुजा जिनमें समूह बल है ३ दूषण यथा ॥ बालअवस्था में पौटा किंकिणी कठुला में शोभा युवाअवस्था में दूषण है कंठा मोहनमालादि युवाअवस्था में शोभा वृद्धअवस्था में दूषण है इत्यादि भूषण रहित समयके अनुहार किशोरअवस्था के शोभादेवे योग्य कड़ा, केयूर, पहुंची, मणिमाला, कंठा, कुण्डल, मुकुट आदि भूषण सुन्दर अंगन को पाइ सोहत नवीन कमल सम नेत्र पूर्णचन्द्रमा सम मुख जाको देखि मदन मोहित होत है ४ शिखण्ड मोरके पंख अरु फूलन के नवीने दलनके भूषण मुकुटादि शिरनपर बनाये हैं बालस्वभायते केलि कहीं खेल ताके अंक चिह्न तनपै रेनु पंककहीं धूरि कीच लगीहै सो मानो चोराइ मुनिकी आंखि बराइ जो चरित करेहैं सो चरित रेनु पंकके चिह्न तनमें देखते मुनिको प्रकट होत कि रेनु वोदा में खेलेहैं ५ यज्ञके रक्षा हेत दशरथमहाराज सों मांगि अपने आश्रम को आने तिन श्रीराम लषणको प्राणनके प्रिय पाहुने जानि विश्वामित्रजी प्रेमसों पूजि सन्मानकरे ६ साधक सिद्धिनके जप तप आदि जो साधन ताके फलहैं सबजग

के नेत्रन को फलहैं माता पिताके सुकृतके फलहैं ऐसे श्रीरघुनाथजी तुलसीके जीवन धन हैं ७॥

मू०। रामपदपदुमपरागपरी॥ ऋषितियत्यागितुरतपाहनतनछविमयदेहधरी १ प्रबलपापपतिशापदुसहदवदारुणजरनिजरी॥ कृपासुधासींचीविबिधबेलिज्यों फिरिसुखफरनिफरी २ निगमअगमसूरतिमहेशमतियुवतिबरायबरी॥ सोइमूरतिभइजानिनयनपथइकटकते नटरी ३ वर्णतहृदयस्वरूपशीलगुणप्रेमप्रमोदभरी॥ तुलसिदासऐसेकेहिआरत कीआरतप्रभुनहरी ४॥

टी०। श्रीरघुनाथजी के पदकमल की धूरि जहीं माथपै परी तहीं गौतमऋषि की त्रिया अहल्या पाषाण तन त्यागि छविमयी देह धारणकरी १ प्रबलकही बड़ोपाप तापै पतिकी शापकी दावा अग्नि दुसह जो सहि न जाइ दारुण कठिन जरनिसों जरी तेहि अहल्या को कृपारूप अमृतसों सींचि सो जैसे कल्पलता समफेरि सुखफरनि सों फरी २ वेदनके वर्णन करिबे में अगमहै जो रघुनाथजी की मूरति जाको महेशकी बुद्धिरूपा स्त्रीने अपर हरि रूपन को बराय यही रूपको बरबस बरी कही विवाही सोइ मूरति नेत्रनको पथ भई यह जानि अहल्या इकटकते न टरी पलक न चलाई ३ सोई रूपको शील गुण वर्णत में प्रेमके आनन्दसों हृदय भरिगयो गोसाईंजी कहत याही प्रकार केहि दुःखितके दुःखको प्रभु नहीं हरोहै ४॥

मू०। परतपदपंकजऋषिरवनी॥ भईहैप्रकटअतिदिव्यदेहधरिमानोत्रिभुवनछविछवनी १ देखिबड़ोआचरजपुलकितनकहतमुदितमुनिभवनी॥ जोचलिहैंरघुनाथपयादेशिलानरहीअवनी २ परसिजोपांयपुनीतसुरस

रीसोहैतीनिपथगवनी ॥ तुलसिदासतेहिचरणरेनुकीम हिमाकहैमतिकवनी ३ ॥

टी० । चरणकमल शिरपै परतमात्रहो ऋषिरवनी अहल्या अत्यन्तदिव्यदेहधरि प्रकटभई मानो त्रिभुवनछविकी पुत्री है १ पाषाणते स्त्रीहोना बड़ाआश्चर्यदेखि पुलकिगात अपरमुनिकी स्त्री कहती हैं जो रघुनाथ पयादेही चलिहैं तो शिला पृथ्वीबिषे न रहिहैं जहां पगु धरिहैं सब स्त्री ह्वैजैहैं २ जाणोंबनको परसि पुनीतगंगाजी स्वर्ग मृत्यु पाताल तीनिपथ ह्वै गमनकीन्हों गोसाईंजी कहत तिन पदरेनुकी महिमा कौनीभांतिसों कोऊ कवि कहै नहीं कहिसकत है ३ ॥

मू० । भूरिभागभाजनभई ॥ रूपराशिअवलोकिबंधु दोउप्रेमसुरंगरई १ कहौकहैकेहिभांतिसराहै नहिंकर तूतिनई ॥ बिनुकारणकरुणाकररघुबरकेहिकेहिगतिन दई २ करिबहुबिनयराखिउरमूरतिमंगलमोदमई ॥ तुलसीह्वैबिशोकपतिलोकहिप्रभुगुनगनतभई ३ ॥

टी० । शापउद्धार प्रभुदर्शन भक्तिलाभ पति प्राप्ति इत्यादि बड़ोभागको भाजनभई रूपके राशि दोऊ भाइनको देखि सुन्दर प्रेमके रंगमें रंगिगई १ कवि काकहै केहि विधि प्रशंसाकरै यह करतूति कछु नई नहीं है सदाते प्रभुकी यही रीतिहै विना कारण करुणाके आकर श्रीरघुनाथजी काको काको गति नहीं दीन्हीं है २ बहुतप्रकार विनतीकरिकै मंगल मोदमयी प्रभुकी मूरति उरमें राखि गोसाईंजी कहतेहैं कि शोकदुःखते रहितह्वै प्रभुके सौसिल्यवात्सल्यादि गुणनके गुणगानकरत पति गौतम ऋषिके लोकगई ३ ॥

मू० । कौशिककेमखकेरखवारे ॥ नामरामअरुलष णललितअतिदशरथराजदुलारे ॥ मेचकपीतकमलको

मलकलकाकपक्षधरवारे १ शोभासकलसकेलिमदनवि धिसुकरसरोजसँवारे २ सहससमूहसुबाहुसरिसखलस मरशूरभटमारे ॥ केलितूनधनुबाणपानिरननिदरिनिशा चरमारे ३ ऋषितियतारिस्वयंवरपेखनजनकनगरपगु धारे ॥ मगनरनारिनिहारतसादर कहिबड़भागहमारे ४ तुलसीसुनतएकएकनसों चलतविलोकनहारे ॥ मूकनव चनलाहुमानोअंधनलहेहैंविलोचनतारे ५ ॥

टी० । प्रभुको देखि मार्ग के वासी स्त्री पुरुष कहते हैं कि विश्वामित्रके यज्ञके रखवारे हैं श्रीराम लषण नाम सुन्दर दश-रथ महाराजके दुलारे हैं १ श्याम कमल सम रघुनाथजी पीत कमलसम लक्ष्मणजी काकपक्ष जुलफैं शीशपै धारण मानो सकल शोभा सकेलि विधाता मदनरूप है अपने करकमलनते सुधारे हैं इहां मानो वाचक नहीं ताते लुप्त उत्प्रेक्षाहै २ समर में भटयोधा भारे बडेभारी सुबाहुके सरिस शूर अनेक हजार योधा खल जे राक्षस तिनको केलिकही खेलवेके तरकस धनुष बाणन सों निरादरकरि रणमें निशाचरनको मारे प्रथम समर में राक्षस शूरकहे तिनको रणमें प्रभुमारे ताते पुनरुक्ति नहीं है अहल्या तारि स्वयंवर देखिवेहेत जनक नगरको पगुधारे हैं ३ तिनको देखि आदरते मार्ग के नर नारी कहत हैं कि हमारे बड़े भाग्यहैं ४ गोसाईंजी कहतहैं एक एकनसों सुनिकै देखनहारे देखिवेहेत चलतहैं प्रभुको देखि मानो मूकनने वचनलाभ पायो अन्धनने नेत्रनकी पुतरीलाभ पायो ५ ॥

मू० । आयेमुनिकौशिकजनकहरषानेहैं ॥ बोलिगुरु भूसुरसमाजसोंमिलनचले जानेबड़ेभागअनुरागअकुला नेहैं १ नाइशीशपगनअशीषपायप्रमुदितपावड़ेअरघदे

तआदरसोंआनेहैं ॥ आसनवसनवासकैसुपाससबविधि पूजिप्रियपाहुनेसुभायसन्मानेहैं २ विनयबड़ाईऋषिरा जऊपरस्परकरतपुलकिप्रेमआनँदअघानेहैं ॥ देखेराम लषणनिमेषैबिथकितभई प्राणहूतेप्यारेलागेबिनपहिँचा नेहैं ३ ब्रह्मानंदहृदयदरशसुखलोचननअनुभवभयसर सरामजानेहैं ॥ तुलसीविदेहकीसनेहकीदशासुमिरि मेरे मनमानेरावनिपटसयानेहैं ४ ॥

टी०। श्रीविश्वामित्रजी को आगमन सुनि श्रीजनक महाराजको अतिहर्ष प्राप्तभयो आपने बड़ेभाग्यजाने ताते अनुराग में अकुलाने कहे मगन है गुरु शतानन्द ब्राह्मण की समाज सहित विश्वामित्रके मिलबे हेत चलतेभये १ चरणकमलन को माथ नवाइ आशीर्वादपाइ आनन्दते अरघजल को सगुन अरु पांवड़े वस्त्र बिछावत तापर चले आवत यहि प्रकार आदर ते लवाइलेइ आसन दियो वसन बिछौनादि वास टिकायो सब विधि सुपास करि पूजि षोड़शोपचार प्रियपाहुन विश्वामित्रजी को सुभाय सहजही में सब सनोमान कियो २ मुनिकी विनय भूप करत भूपकी बड़ाई मुनिकरत परस्पर प्रेमसों पुलकांग आनन्दसों अघाने हैं श्रीरामचन्द्र लषण को देखि पलकें थकिगई बिन पहिंचाने प्राणते प्यारेलगे ३ ब्रह्मानन्दसुख उरमें प्रभुदर्शन सुख नेत्रनमें दूनोंको अनुभवकरि रामदरश सुख अधिक जाने गोसाईंजी कहत कि विदेहके स्नेहकीदशासुमिरि हमारो मनमानिलियो विदेहमहाराज परमचतुरहैं ४ ॥

मू०। कोशलरायकेकुंवरौटा ॥ राजतरुचिरजनक पुरपैठतश्यामगौरनीकेजोटा १ चौतनीशिरनिकनकक लिकाननकटिपटपीतसुहाये ॥ उरमणिमालविशालवि लोचनसीयस्वयंवरआये २ वरणिनजातमनहिंमनभाव

तसुभगअवहिंवयथोरी ॥ मईहैमगनविधुबदनविलोकत वनिताचतुरचकोरी ३ कहशिवचापलरिकवनबूझतवि हँसिचितैतिरछोहै ॥ तुलसीगलिनभीरदर्शनलगिलोग अटनिअवरोहै ४ ॥

टी०। कोशलेश महाराजके कुँवर सुन्दर श्याम गौरजोरी जनकपुर में पैठतमें शोभा देतहे १ कैसी शोभाहै चौतनी चौगोसिया टोपी शिरपरहै कनक कलिकाकार कुण्डल अथवा कनक के कलिकाकार झुमका कानन में शोभा देत कटि में पीतपट सोहत उर में मणिन की माला सुन्दर बड़े बड़े नेत्र सो रघुनाथ जी श्रीजानकीजी को स्वयंवर देखवे हेत आयो है २ मनमें भावत अरु वरणे नहींजात अवहीं सुन्दर थोरी अवस्था तिनको मुखचन्द्र देखे वनिता चतुर चकोरसी मगनहैं ३ श्रीरघुनाथजी विहँसि तिरछी नजरिकरिचितै बालकनते पूछत कि शिवको चाप कहाँहै गोसाईंजी कहत कि प्रभुके दर्शनहेत गलिन में भीरभई ताते लोग स्त्री पुरुष अटारिन पर चढ़े देखत हैं ४ ॥

मू०। एअवधेशकेसुतदोऊ ॥ चढ़िमन्दिरनविलोकत सादरजनकनगरसबकोऊ १ श्यामगौरसुन्दरकिशोर तनतूनबानधनुधारी ॥ कटिपटपीतकण्ठमुक्तामणिभुज विशालबलभारी २ मुखमयंकसरसीरुहलोचनतिलक भालटेढ़ीभौंहैं ॥ कलकुण्डलचौतनीचारुअतिचलतमत्त गजगोहैं ३ विश्वामित्रहेतपठयेनृपइनाहिताड़कामारी । मखराख्योरिपुजीतिजानिजगमगमुनिवधूउधारी ४ प्रियपाहुनेजानिनरनारिननैननएनदये ॥ तुलसिदासप्रभु देखिलोगसबजनकसमानभये ५ ॥

टी०। जनकनगर के सब नर नारिन मन्दिरपर चढ़िकै वि-

लोकत हैं आदर ते अरु कहतहैं कि ये दोऊ अवधेशके पुत्र हैं १ श्याम रघुनाथजी गौर लक्ष्मणजी सुन्दर किशोरअवस्था तरकस धनुषबाण धारणकिहे कटिमें पीतपट कण्ठमें गजमुक्तनकोमाला भुजा सुन्दर लम्बायमान भारीहैं बल जिनमें २ चन्द्रमासे मुख कमल से नेत्र भालमें सुन्दरतिलक टेढ़ी भौंहें काननमें सुन्दर कुण्डल शीशपै चौगोसिया टोपी मत्तगज गौंहैं कही मत्त हाथी की ऐसी चाल मार्गमें चलेजातहैं ३ विश्वामित्रकी यज्ञके रक्षा हेत महाराज दशरथजी पठाये सो इनहीं ने ताड़काको वधकीन्होंहै मारीच सुबाहु आदि रिपुनको जीति यज्ञकी रक्षाकीनी मार्गमें मुनिवधू अहल्याको उद्धारकीन्हीं ताको सब जग जानत हैं ४ ऐसे श्रीरघुनाथजीको प्राणनके प्यारे पाहुनजानि पुरके नर नारिन आपने नेत्रनको मन्दिरकरि तामें वासदये गोसाईंजी कहत कि ब्रह्मानन्द देख एक विदेह रहे अब रघुनन्दनको देखि पुरभरि सब विदेहकी समान विदेहभयो ५ ॥

मू० । बूझतजनकनाथढोटादोउकाकेहैं ॥ तरुणतमालचारुचंपकवरणतन कौनबड़भागीकेसुकृतपरिपाकेहैं १ सुखकेनिधानपायेहियकेपिधानलाये ठगकेसेलाडूखायेप्रेममधुछाकेहैं ॥ स्वारथरहितपरमारथीकहावतहैंभेसनेह विवशविदेहताविवाकेहैं २ शीलसुधाकेआगरसुखमाकेपारावार पावतनपरपारपैरिपैरिथाकेहैं ॥ लोचनललकिलागेमनअतिअनुरागे एकरसरूपचित्तसकलसभाकेहैं ३ जियजियजोरतसगाईरामलखणसों आपनेआपनेभाव जैसेभायजाकेहैं ॥ प्रीतिकोप्रतीतिकोसुमिरिबेकोसेइबेको शरणकोसमरथतुलसिहुताकेहैं ४ ॥

टी० । श्रीजनकमहाराज पूछतहैं हे नाथ ये दोऊ बालक काकेहैं जिनको नवीनतमाल वरण अरु सुन्दर चम्पावरणतनते

कौने बड़े भाग्यवालेके सुकृति परिपाके हैं कही सुकृतके फलहैं १ श्रीविदेहजी सुखके निधान प्रभुको पाय हृदयमें भरि पिधान कही ढकनासों मूंदिदिये देहकी सुधि भूलना ढकना है ठगके सेलाड़ू विष के मिलायेसे खाय बौराय परवश भये तथा इहां प्रेमरूपी मदिरामेंछके देहकीसुधिभूलगई जनकजी स्वार्थरहित परमार्थी कहावतरहे सो प्रभुमें स्नेहके विशेषवशभये ताते विवा-के कही विदेहतारहित भये अरु स्नेहवशभये ताते स्वार्थी भये विदेहता विवाके ताते परमार्थ रहित भये ताते परमार्थ के फल प्रभुहैं २ सामुद्रसुधाके अगारहैं इहां शील सोई सुधा ताके आगार प्रभुहैं सुखमाकही शोभा ताके पारावार प्रभु सामुद्रहैं ताको स-माजसहित जनकजी पार नहीं जाइसकत पैरि २ थकिगये ताते नेत्र ललकिकै लागे प्रभुके रूपमें मन अतिअनुरागके वशभयो सो थकितहै बूड़िजानाहै छवि वर्णन नहीं करि सकत सो पैरि कै थकनाहै ताते सभाभरि प्रभुकेरूप अनुरागकेभरे एकरसचित्त लगाये हैं ३ जेहिके मनमें जैसाभावहै सो ताहीभावके अनु-कूल आपने जीमें सगाईकही सम्बन्ध श्रीरामलषणसों जोरत हैं ॥ जानतप्रीतिरीतिरघुराई । अरु जेहिजनपरममताअरुछोहू । तेहिकरुणाकरिकीननकोहू ॥ इत्यादि प्रीतिनिर्वाहक ताते प्रीति करवेयोग्यहैं प्रभु ॥ भागवतेहनुमद्वाक्ये ॥ नजन्मनूनंमहतो नसौभगंनवाङ्नबुद्धिर्नाकृतिस्तोपहेतुः । तैर्यद्विसृष्टानपिनोवनौ कसश्चकारसख्येबतलक्ष्मणाग्रजः १ जोकछुकहौंसत्यसबसोई । सखावचनममम्रृषानहोई ॥ औ शरणगये नाहिं त्यागिहैं मोहिं रघुबीरभरोस ॥ अरु ॥ रामोमिथ्यानभाषते इत्यादि सत्यसिन्ध हैं प्रभु ताते प्रीति करिबे योग्यहैं ॥ रामरक्षायाम् ॥ राजेन्द्रंसत्य सन्धंदशरथतनयं श्यामलंशान्तमूर्त्तिम् ॥ इति ॥ जासुनामसुमिरत शुभहोई । अरु । जासुनामसुमिरतइकबारा । उतराहिंनरभवसिंधु अपारा ॥ जिनको नाम मंगलको मूल एकबार नामउच्चारते भवसागर पारहोत ताते सुमिरिवे में योग्यप्रभुहैं । वाराहपुराणे

दैवाच्छूकरशावकेननिहतोम्लेच्छोजराजर्जरो हारामेतिहतोस्मि भूमिपतितोजल्पंस्तनुंत्यक्तवान् ॥ तीर्णोगोष्पदवद्भवार्णवमहो नाम्नःप्रभावात्पुनः किंचित्रंयदिरामनामरसिकास्तेयांतिरामास्पदम् ॥ इति ॥ कौशलपालकृपालकल्पतरु द्रवतसुकृतशिर नाये । ऐसे सुलभप्रभुहैं तातें सेवा करिबेयोग्यहैं ॥ भगवद्गुणदर्पणे ॥ आत्मानंमानुषंमन्ये रामंदशरथात्मजम् । योहंयस्ययतश्चाहंतंमांब्रूतमहेश्वराः ॥ इति ॥ कोटिविप्रअघलागैजेही । शरण आयत्यागउँतहिंतेही ॥ ऐसे शरणपाल प्रभुहैं ॥ सनत्कुमारसंहितायाम् ॥ सत्यसन्धंजितक्रोधं शरणागतवत्सलम् । सर्वक्लेशापहरणंविभीषणवरप्रदम् ॥ ऐसे प्रभुकी शरण तुलसी ताके हैं ४ ॥

मू० । येकौनकहांतेआये ॥ नीलपीतपाथोजवरणमनहरणसुभायसुहाये १ मुनिसुतकिधौंभूपबालककिधौं ब्रह्मजीवजगजाये ॥ रूपजलधिकेरतनसुछवितियलोचनललितलजाये २ किधौंरविसुवनमदनरतिपतिकिधौंहरिहरवेषबनाये ॥ किधौंआपनेसुकृतिसुरतरुकेसुफलरावरेहिपाये ३ भयेविदेहविदेहनेहवशदेहदशाबिसराये ॥ पुलकगातनसमातहरषहियसलिलसलोचनछाये ४ जनकवचनमृदुमंजुमधुरभरेभक्तिकौशिकहिभाये ॥ तुलसीअतिआनन्दउमँगिउररामलषणगुणगाये ५ ॥

टी० । श्रीविदेहमहाराज पूंछते हैं कि श्याम पीत कमल वरण तन मनके हरणहार सहज में सुन्दर ये को आहिं अरु कहांते आयेहैं १ मुनिके सुतहैं किधौं भूपके बालक हैं कि जो ब्रह्म जगत् जीवनको जाये कही उत्पन्नकरो है सोई ब्रह्म तौ नहीं हैं कि ब्रह्म जीव दोऊ स्वरूपवान् तौ नहीं हैं अथवा रूप जो शोभाका सारांश सोई जलधि ताके रतन तो नहीं हैं कि ये लला छविरूप स्त्री ताके दोऊ नेत्र तो नहीं हैं मुनि के संगते मुनिको संदेह वेषते क्षत्रिय

को सन्देह शुद्धमन तेजस्वी आपने मनके सुखदायक देखि ब्रह्म को सन्देह द्वैरूपते ब्रह्म जीवको सन्देह २ किधौं रविसुवन अश्वि- नीकुमार हैं किधौं मदन अरु वसन्तहैं कि हरिहर नरवेषधारण किहे तो नहीं हैं इत्यादि रूपकी सुन्दरता अत्यन्त देखि ताते अने- कसंदेहकरतहैं हे विश्वामित्रजी आपु परमसुकृती हैं ताते आपने सुकृतरूप कल्पवृक्षके फल तौ नहीं आपु पायेहैं ३ प्रभुके नेहके वश विदेह विशेषविदेहभये ताते देहदशा बिसराइदिये अबतक ब्रह्मा- नन्द ते जगसों विदेहरहे अब प्रभुदर्शनते ब्रह्मानन्द ते विदेहभये ज्ञानफलको भक्तिरसहै ताते स्वरूपानन्दकी बड़ाई जानिये तन में पुलकावली है ताते हर्ष हृदयमें नहीं आवतहै ताको उफानहै जल नेत्रनसें छायो है ४ श्रीजनकजीके वचनसुनि मीठेकोमल भक्तिके भरे सुनि विश्वामित्रजी को भाये गोसाईंजी कहते हैं अत्यन्त उरमें अनुरागसों उमँगि श्रीरामलषणलालके गुण विश्वामित्रजी गाये श्रीविदेह महाराजसों वर्णनकरे ५ ॥

मू० । कौशिककृपालहूकोपुलकिततनुभो ॥ उमँगत अनुरागसभाकेसराहेभाग देखिदशाजनककीकहिबेको मनुभो १ प्रीतिकेपालकीदियेहूशापपापबड़ो मखमिष मेरोतबअवधगमनभो ॥ प्राणहूतेप्यारेसुतमांगेदियेदशर थसत्यसंधशोचसहेसूनोसोभवनभो २ काकशिखाशि रकरकेलितूणधनुशरबालकबिनोद यातुधाननसोंरन भो ॥ बूझताविदेहअनुरागआश्चर्य्यवशऋषिराजयागभ योमहाराजअनुभो ३ भूमिदेवनरदेवसचिवपरसपरकह तहमकोसुरतरुशिवधनुभो ॥ सुनतराजाकीरीतिउपजी प्रतीतिप्रीतिभागतुलसीकेभलेसाहबकोजनुभो ४ ॥

टी० । कौशिककृपालहूको पुलकिततनु कही रोमांच ठाढ़ेभये

वचनगद्गदभये अनुरागसों उमँगि सभाकेभाग्यकी प्रशंसाकरैं अरु जनकजीकी दशाकोदेख हाल कहिबेको मनभयो १ पापके पात्र राक्षस प्रीति करे ते आपने नहीं हैं अरु शाप दियेते बड़ो पापहै का-हेते शापवशते राक्षसभये ताते परवश हैं अब इनको ज्ञान नहीं है ताते शापदिये पापहै तेहिहेतु अरु आपनी यज्ञकी रक्षाहेतु मेरो श्री अयोध्याजीको गमनभयो तहां सत्यसन्ध दशरथ महाराज प्राण-हूँते प्यारे पुत्र श्रीरघुनाथजी को मोको मांगे दियो ताते भवन सूनाभयो ताको शोचसहे अरु प्रतिज्ञा न छांड़े २ काकशिखा जुलफैं शिर बिषे अर्थात् कूड़ी आदि नहीं किशोर भूषण हैं ब-ख्तरआदि वीरताके भूषण नहीं हैं केलिकही खेलबे के तरकस धनुषबाण युद्धलायक नहीं हैं वालक विनोद बालक सुभायतेरहैं युद्ध देखाभी नहीं तापर निशाचरनते युद्धभयो सुबाहु आदि वीरन में अग्रणीय योधनते ताकोसुनि विदेह महाराज आश्च-र्यवश अनुरागसों पूछत हैं हे ऋषिराज यज्ञपूर्णभयो तब ऋषि बोले हे महाराज अनुभोकहे अनाश्रित पूर्णभयो वा आप अ-नुभवते विचारिये ३ ऐसे जब चरित सुनि तब राजाकीरीति जौन है सनातन यथा प्रियव्रत पृथुआदि अथवा देवनयुत प्रभुकी शक्ति राजामें रहत ॥ प्रमाणं राजनीतौ ॥ इन्द्रात्प्रभूतिंज्वलनात्प्रतापं क्रोधंयमाद्वैश्रवणाच्चवित्तम् । शक्तिस्थितीरामजनार्दनाभ्यामादा यराज्ञःक्रियतेशरीरम् ॥ ऐसी राजाकी रीतिसों प्रभुमें निश्चयभई कि येऊ प्रतापी हैं राजकुमार ताते धनुष तोरिबे की प्रतीति भई तब प्रभुमें प्रीति उपजी ताते ब्राह्मण अरु सचिवनसहित महा-राज जनकजी परस्पर कहतहैं कि शिवधनुष हमको कल्पवृक्ष भयो जो धनुष न हो तो तो इनके दर्शन काहेको होत अब गो-साईंजीकी उक्तिहै कि राजा जनकजीकी रीति सुनि हमारे मन में प्रीति औ प्रतीति उपजी कि तुलसी बड़ो भागीहै जो ऐसे साहेबको जनभयो याते कि ब्रह्मज्ञानी विदेहते प्रभुके दर्शनपाइ आपुको धन्यमाने ताते ४ ॥

मू०। चारोभलेबेटादेवदशरथरायके॥ जैसेरामलषणभरतरिपुदमनतैसेशीलशोभासागरप्रभाकरप्रभायके १ ताड़कासंहारिमखराखिनीकेपालेब्रत कोटिकोटिभटकियेएकएकघायके॥ एकबाणबेगहीउड़ानेयातुधानजात सूखिगयेगातहैंपतौवाभयेवायके २ शिलाछोरछुवतअहल्याभईदिव्यदेहगुणल्खेपारसकेपंकरुहपायके॥ रामकेप्रसादगुरुगौतमखसमभये रावरेहूशतानन्दपूतभयेमायके ३ प्रेमपरिहासपोषवचनपरसपर कहतसुनतसुखसबहिसुभायके॥ तुलसीसराहैभागकौशिकजनकजीके विधिकेसुठरहोतसुठरसदायके ४॥

टी०। हे देव महाराज विदेहजी राजा दशरथ महाराजके चारो पुत्र भले हैं जैसे ये रामलषण हैं तैसे भरत शत्रुहनहैं शील शोभाके समुद्र प्रभावके सूर्य १ ताड़का संहारे नीकी भांति यज्ञ की रक्षाकरे आपनी प्रतिज्ञापाले अरु कोटिन भट एक एक घावके कियो जो घाव एकके सोई सबके देखिये कोई एकराक्षस बाण के वेगते कैसे उड़ानेजात जैसे बयार बौंड़रके उड़े पत्ता भूमि में नहीं आवत तैसे देह सूखिगई आकाशही में रहे २ शिलाके छोरकहे कोर छुवतही अहल्या दिव्यदेहभई ताते चरणकमलके गुण परस के देखे जो लोहा छुये सोना भयो रामके प्रसाद ते तुम्हारे गुरु गौतम खसमभयो रंडुवापन छूटा रावरेहू शतानन्द वेमाताके रहे ते माताके पूतभये ३ प्रेमपरिहासते पोषे सुन्दर भावके वचन कहत अरु सुनत परस्पर सबहीको सुखभयो गोसाईंजी कहत हैं कि विश्वामित्रजी श्रीजनकजी की भाग्यको सराहना करतहैं कि विधि जाको सुठर होत ताको दांव सुन्दर सुठर परतहै इहां दांवको सुठर परिबो रघुनाथजीको आगमन है जानकीजी पुत्रीहैं ताते विधि सुठर है ४॥

मू०। येदोऊदशरथकेबारे ॥ नामरामघनश्यामलषणलघुनखशिखअँगउजियारे १ निजहितलागिमांगिआनेमैंधरमसेतुरखवारे ॥ धीरवीरविरदैतबांकुरेमहाबाहुबलभारे २ एकतीरतकिहतीताड़काबियेसुरसाधुसुखारे ॥ यज्ञराखिजगसाखितोषिऋषिनिदरिनिशाचरमारे३ मुनितियतारिस्वयंवरपेखनआये सुनिवचनतिहारे ॥ येउदेखिहैंपिनाकनेकजेहिनृपतिलाजज्वरजारे ४ सुनिसानन्दसराहिसपरिजनबारहिबारनिहारे ॥ पूजिसप्रेमप्रशंसिकौशिकहि भूपतिसदनसिधारे ५ शोचतसत्यसनेहविवशनिशिनृपहिगनतगयेतारे ॥ पठयेबोलिभोरगुरुकेसँगरंगभूमिपगधारे ६ ॥

टी०। घनसम श्याम तिनको रामनाम जे लघु हैं तिनको लक्ष्मणनाम ये नखशिखलौं उजियारे अंगसुन्दर ते दोऊ दशरथके बारेहैं १ वीरतामें धैर्यवान् विरदैतकही वीरताको बानाधारण किये बांकेवीरहैं आजानुभुज तिनमें भारीहै बल तिनको धर्मसेतु के रखवारे जानि मैं अपनी यज्ञरक्षा हेतु मांगिआने हैं २ ताड़का तकि एकही बानते मारें अरु देवता साधुन को सुखी किये अरु यज्ञकी रक्षा किये ताको सब जगत् साखी है याते निशाचरन को निरादर करि मारे तेहिते ऋषिन को तोषे ३ पगरजलगे अहल्या तरी जो धनुषतोरै सो श्रीजानकी जीको विवाहै यह प्रतिज्ञाके तुम्हारे वचनसुनि स्वयंवर देखनेको आये हैं जो धनुषने राजन को लाजरूपी ज्वरसों जारो है हे राजन् ताही पिनाक धनुष को श्रीरघुनन्दन नेकु देखैंगे ४ मुनि के वचन सुनि परिवार सहित आनन्द ते प्रभुको बारबारनिहारत अरु प्रेमसमेत पूजिकै मुनि की प्रशंसा करत विदेह महाराज घरको गये ५ सत्यधनुतोरिवे की प्रतिज्ञा को रूपदेखि सनेह ताते न प्रतिज्ञा छांड़त बनत न

सनेहछूटत ताके शोचवश महाराज को तारे नक्षत्र गनेते रात्रि बीते नींद न परी यह लोकोक्ति अलंकारहै भोर होतही बोलाइ पठाये तब विश्वामित्रजी के साथ श्रीलषणलाल सहित श्रीरघुनाथजी रंगभूमि जहां धनुष तहांको आवतेभये ६ ॥

मू० । नगरलोगसुधिपाइमुदितसबहीसबकाजबिसारे ॥ मनहुँमघाजलउमड़िउदधिरुखचलेनदीनदनारे ७ येकिशोरधनुजोरबहुतबिलखात बिलोकनहारे ॥ टर्योनचापतिनतेनिजसुभटनकौतुककुधरउखारे ८ येजानेबिनजनकजानियतकरिप्रणभूपहँकारे ॥ नतरुसुधासागरपरिहरिकतकूपखनावतखारे ९ सुषमाशीलसनेहसानिमानोंरूपबिरंचिसँवारे ॥ रोमरोमपरसोमकामशतकोटिवारिफिरिडारे १० कोउकहैतेजप्रतापपुंजवितयेनहिंजातभियारे ॥ छुवतशरासनशलभजरैगोयेदिनकरवंशदियारे ११ एककहैकछुहोउसुफलभयेजीवनजन्महमारे ॥ अवलोकेभरिनैनआजुतुलसीकेप्राणपियारे १२ ॥

टी० । प्रभुको रंगभूमि आइबेकी सुधिपाइ नगरके लोग सब अपने काज बिसारि आनन्दते प्रभु दर्शनहेतु रंगभूमि को चले मानों मघानक्षत्र में नदनारेनको जल उमँगि सिन्धुसम्मुखचले इहां शोभासिन्धु प्रभुको रूपहै ७ पुरवासी कहत कि ये किशोर अबहीं कोमलहैं धनुषकठोरहै यह कहि देखनहार बिलखातहैं जे भट कौतुकही तमाशामात्रमें कुधर पर्वतउखारे रावणादि तिन सों धनुषटारो नहीं टरो ताको रघुनाथजी कैसे उठावहिंगे याते बिलखातहैं ८ पुरवासी कहतहैं कि इनको बिनाजाने राजाने प्रण करिकै भूपनको बोलाये हैं यह जानि परत है नाहीं तो रघुनाथ सुधासागर को छोड़ि खारे कूप क्यों खनावते सब राजा खारेकूप हैं ९ शोभा अरु शील सनेह सों सानि ब्रह्माने प्रभुको रूप सँवारे

तिनके रोम रोमपर सैकरन कोटि काम अरु चंद्रमा को निछा-
वरि करिडारे १० कोऊ कहत भैया ये तेज अरु प्रकाशके पुंजकहे
समूह हैं याते चितये नहीं जाते ये दिनकर सूर्यवंशके दीपक हैं
इनके छुवतमात्रही धनुप शलभ कहे पांखीसम भस्म होइगो११
तिनमेंते एक कोऊ ऐसा कहत है कि चहै सो होय हमारे जीवन
जन्म सुफलभये काहेते तुलसीके प्राणहूते प्यारे श्रीरघुनन्दन को
आजु नेत्रनभरि देखे ताते हम धन्य हैं १२ ॥

मू० । जनकविलोकिबारबाररघुवरको ॥ मुनिपदशी
शनाइआयसुअशीशपाइ ये बातैंकरतगमननकियेघर
को १ नींदनपरतरातिप्रेमपन एकभांतिशोचतसंकोच
विरंचिहरिहरको ॥ तुमसेसुगमसवदेवदेखिबेकोअबज
सहंसकीनेजोगवतयुगपरको २ लायेसँगकौशिकसुनाये
कहि गुनगनआयेदेखिदिनकरकुलदिनकरको ॥ तुलसी
तेऊसनेहकोसुभाउबाउमानो चलदलकैसोपातकरौचित
चरको ३ ॥

टी० । श्रीजनकजी बारबार रघुनाथजी को देखि मुनिके पद
कमलनमें शीशनाय आयसु अशीशपाइ श्रीरघुनाथजी की शोभा
की बातैंकरत घरकोगये १ प्रभुमें प्रेमधनुष तोरिबेको प्रण दोऊ
त्यागिवे योग्य नहीं ताते एकभांति है ताको शोचत हैं अरु ब्रह्मा
विष्णु महेशको संकोचत हैं कि तुमते सब सुगम है सो हमको
सुगमकरो हे देव अब तुम्हारी करतूति देखा चाहिये कवि कहत
कि जनकजी अपने यशको हंस किहे प्रेम औ पन दोऊपर समान
जोगवत हैं २ द्वितीय ब्रह्मसमहोनी करणहारे महामुनि विश्वा-
मित्रजी प्रभुको संगमें लाये अरु ताड़कासुबाहुवध यज्ञरक्षा अह-
ल्यातारबइत्यादि गुणके गण कहि सुनाय अरु सूर्यकुलप्रकाशक
सूर्य श्रीरघुनाथजी को आपहू विदेहमहाराज देखिआयेरहे जिन

को देखि ब्रह्मानन्दभूलि प्रेमवशभये गोसाईंजी कहत कि ताहूपर विदेहमहाराजको मनस्नेहके सुभावरूपी वायुकेवशते मन चल दलकेह पीपरकैसो पाता मन चलायमान होतहै ३॥

मू०। रंगभूमिभोरहीजाइकै॥ रामलषणलखिलो गलूटिहैंलोचनलाभअघाइकै १ भूपभवनघरघरपुरबाहर यहैचरचारहिछाइकै॥ मगनमनोरथमोदनारिनरप्रेम विवशउठैंगाइकै २ शोचतविधिगतिसमुझिपरस्परकहत वचनविलखाइकै॥ कुँवरकिशोरकठोरशरासनअसमंजस भयोआइकै ३ सुकृतसँभारिमनाइपितरसुरशीशईशपद नाइकै॥ रघुवरकरधनुभंगचहतसबअपनोसोहितुचितला इकै ४ लेतफिरतकनसुईसगुनशुभपूछतगनकवुलाइकै॥ सुनिअनुकूलमुदितमनमानहुँधरतधीरजेहिधाइकै ५॥

टी०। भोरही रंगभूमिमें जाइकै श्रीरघुनन्दन लक्ष्मणजी को देखि पुरकेलोग नेत्रनको फललाभ अघाइकै लूटिहैं १ भूपके भवन में घरघर पुर में बाहर यही चरचा छाइरही है आनंद के मनोरथमें मगन नारिनर विशेष प्रेमवश ताते गाइउठे २ विधिकी गति टेढ़ी जानि शोचवश पुरवासी विलखाइकै वचन कहतहैं कि कुँवर अवहीं किशोरअवस्था अरु धनुषकठोर है ताको असमंजस आइपरो ३ अपने अपने सुकृतिन को संभारि पितृ देवतनको मनाइ ईश शिवके पदको माथनाइकै अपने हितके समान चितु लाइकै चाहत हैं सब कि श्रीरघुवर के हाथ धनुषटूटै ४ कनसुई कही गोवर की गौरिबनाइ चलनी में धरि पृथ्वी में डारत हैं स्त्री जन जो सीधीपरत तो शुभमानत हैं जो टेढ़िपरै तौ अशुभ मानत हैं सो कनसुई स्त्रीजन लेतफिरत अरु पुरुष शुभ सगुन अरु पण्डितन ते पूछत तब सब अनुकूल सुनिकै आनन्दमनते मानों धीरज को धाइकै धरत हैं ५॥

मू० । कौशिककथाएकएकनसोंकहतप्रभाउजनाइ
कै ॥ सीयरामसंयोगजानियतरच्योविरञ्चिबनाइकै ६
एकसराहिसुबाहुमथनवरबाहुउछाहबढ़ाइकै ॥ सानुज
राजसमाजविराजिहैंरामपिनाकचढ़ाइकै ७ बड़ीसभा
बड़ोलाभबड़ोयश बड़ीबड़ाईपाइकै ॥ कोसोहिंहै औरको
लायकरघुनायकहिंबिहाइकै ८ गवनिहैंगवहिंगँवाइ
गरबगृहन्नृपकुलबलहिंलजाइकै ॥ भलीभांतिसाहबतुल
सीके चलिहैंब्याहबजाइकै ९ ॥

टी० । विश्वामित्रजीकी कथा क्षत्रियतनु याही देह तपबल
ते ब्राह्मणभये यज्ञभागयते विप्रबालक बचाय यज्ञ पूर्ण करे त्रिशंकु
सदेह स्वर्गपठाये तेहिहेतु ब्रह्माते विवादभयो ताते दूसरी सृष्टि
रचे इत्यादि कौशिकके प्रभावकी कथा जनाइकै प्रभाव एक
एकन सों कहत कि तेई विश्वामित्र संगमें प्रभुको लाये तासों
यह जानिपरत कि श्रीजनकनन्दनी रघुनन्दनको विवाह संयोग
ब्रह्मा बनाइकै रचिराख्योहै ६ एक कोउ उछाह बढ़ाइकै सुबाहु
के मथनहार रघुनाथके श्रीभुजनको सराहिकै कहत कि लक्ष्मण
जी सहित राजसमाजमें श्रीरघुनाथजी धनुष चढ़ाइकै विराज-
मान होइँगे ७ काहेते बड़ी समाज बिषे बड़ो लाभ जानकीमि-
लन अरु धनुष तूरिबो बड़ोयश इत्यादि बड़ी बड़ाई श्रीरघुनंदन
छांड़ि दूसरो कौन या लायक को है जाको यह बड़ाई सोहिहै ८
नृपकुलके समूह राजा हैं ते बलगर्व गँवाइ गवही कहीं बहाने
लजाइकै घरनको जाइँगे तुलसी के साहब रघुनाथजी भली
भांतिते ब्याहिकै डंका बजाइकै अपने धामको चलिहैं ९ ॥

मू० । भोरफूलबीनिबेकोगयेफुलवाई हैं ॥ शीशनटेपा
रेउपवीतपीतपटकटि दोना बामकरनसलोनेसवाई हैं १

रूपकेअगारभूपकेकुमारसुकुमार गुरुकेप्राणअधारसंग सेवकाई हैं ॥ नीचज्योंटहलकरैरुखराखेअनुसरैकौशिकसे कोहीवशकीन्हेदुहुभाई हैं २ सखिनसहिततेहिंअवसर विधिसंयोग गिरिजाजूपूजिबेकोजानकीजुआईहैं ॥ निर खेलषणरामजानेऋतुपातकाम मोहिमानोंमदनमोहनी मुड़नाईहै ३ राखोजूश्रीजानकीलोचनमिलिवेकोमोदक हिवेकेयोगनमें बातैंसीबनाईहै ॥ स्वामीसियासखिनलप णतुलसीकोतैसो तैसोमनभयोजाकीजैसीऐसगाईहै ४ ॥

टी० । भोरही फूलवीनिवेहेतु फुलवारीकोगये तहांकी छवि कहत शीशनपर टेपारे कही टोपी धारणकिहे उपवीत अरु पीत पट कटिमें इहां पीत दीपदेहरीन्याय है वामहाथ में फूलन को दोनालिहेते सवाईछवि होतभई रंगरंगके फूलनते दीति वढ़ी अथवा मदनकी प्रवलताते श्रीजानकीजी सो छवि अवलोकत द्वंद्वयुद्ध होनहारहै अरु मदनके फूलनको धनुषहै सो वामहाथ में रहत ताते प्रभु प्रथमही धारण किहे तहां वीरको अस्त्रधारणते छवि अधिकवढ़त सोईप्रभुके वामहाथ में फूलदोना सो सवाई छविवाढ़ी १ रूपके आगारकही रूप इनहींमें रहत ताहूपर भूपके कुमारहैं कोऊ सामान्यके नहीं ताहूपर सुकुमारहैं थोरी उमिरि में गुणकी शोभा अधिकहोत ताहूपर तपोधनी विश्वामित्रके प्राण अधार ताहूपर सङ्गमें सेवकाईमें हैं जैसे नीच टहल करत अरु रुख लैकै आपरहत ऐसे क्रोधी विश्वामित्र तिनहूँको दूनों भाई वश किहेहैं जैसे कोऊ युद्धको चढ़त तब कोऊ देवताको इष्टकरि सिद्ध करिलेत तब रणमें जयपावत ताहीभांति विश्वामित्रको सिद्ध किहेहैं २ ताहीसमय विधि संयोगते श्रीजानकीजी सखिनसहित श्रीपार्वती जीके पूजिवेहेतु फुलवारी को आवतीभई तहां श्रीर- घनन्दन अरु लषणलालको कैसे देखतीभईं मानों कामदेव अरु

वसन्तहैं तिनको देखि मोहिगई मानों कामने मोहनी माथे पर डारिदई तस मोहिगई ३ श्रीरघुनन्दन जनकनन्दनीके नेत्रनकी नजरिमिलिबेको आनन्द जैसो होत भयो सो कहिबे योग्य नहीं है हम बनाइ ऐसी बातैं कहेहैं इहां शृङ्गाररसको आलम्बन पूर्णरूप वर्णनहै फुलवारीकी शोभाविभाव मोहनीमुड़नाई अनुभाव आवहित्थसंचारी है लाभते हर्ष शोक छिपे दृष्टिसंभोग रति स्थायी ताते पूर्ण आलंबन शृंगाररसहै ललितहावहै विश्रब्धनवोढ़ा नायिकाहै इहां नायकमें अनुकूल अरु दक्ष दोऊको संधि है प्रभु तो अनुकूलैहैं नायकहैं परन्तु किशोरीजीकी प्रसन्नतायुक्त प्रभु कल्पवृक्षहैं जो जैसो भावकरै ताको तैसही फलदेत परन्तु किशोरीजीकी प्रसन्नतातैं ॥ प्रमाणं अमररामायणे श्रीमुखवाक्यम् ॥ एताःसमस्तानरराजपुत्र्यस्तवाभिभूतामयिरन्तुकामाः ॥ नता सुहृश्योऽव्यभिचारदोषोयोगायक्षेमायचसोस्तियासाम् १ त्वयोपदिष्टासुनिवेशितंमनोनचेतरासुस्वयमात्ममोहनैः ॥ हावैःप्रियाणांललितादिलक्षणैरनन्यभावेनत्वयिप्रतिष्ठितम् २ यह बात प्रसिद्धमें कहिबेयोग्य नहीं ताते गोसाईंजी गुप्तमें कहे हैं ताको भेद इहां जानकीजी स्वकीया विश्रब्धनवोढ़ा नायिका रघुनन्दन अनुकूल नायक सखिन में नायिका यथा ॥ प्रेमविवशसीता पहँआई ॥ इति लक्षिता ॥ अवशिदेखियेदेखनयोगू ॥ इति उत्कंठिता ॥ फिरिआउवयहिबेरियाकाल्ही ॥ इति वचनविश्रब्धा ॥ लक्ष्मणजीको सख्यरसते सखिनप्रति हास्यरसको अधिकार गोसाईंजीको दासभाव में वासना शृंगारभावकी है ताते गुप्तकहत कि जाकी जैसी सगाई कहे संबंधहै ताको तैसो स्वभाव भयो इहां सखिनप्रति प्रभुको दक्षनायकत्वहै ४ ॥

मू०। पूजिपार्वतीभलेभायपायँपरिकै॥ सजलसुलोचनाशिथिलतनु पुलकितआवैनवचनमनहरयो प्रेमभरिकै १ अन्तरयामिनिभवभामिनिस्वामिनिसोहौकहाकहौं

बातमातुअंततौहौंलरिकै ॥ मूरतिकृपालुमंजुमालदैबो लतभईपूजेमनकामनाभावतोबरुबरिकै २ रामकामतरु पाइबेलिज्योंबोड़ीवनाइ मांगकोषितोषिपोषिफैलिफूलि फरिकै ॥ रहौगीकहौगी तबसांचीकही अंबासिया गहे पाइकैउठायमाथेहाथधरिकै ३ मुदितअशीशसुनिशीश नायपुनिपुनिबिदाभई देवीसोंजननिडरडरिकै ॥ हरषि सहेलीभयोभावतो गावतगीत गवनी भवन तुलसीसहि योहरिकै ४ ॥

टी० । श्रीजनकनन्दनी भलीभांति षोड़शोपचारादिते पूजनकरि पायँन में परिकै प्रेमसों मनभारिहरो है तनुपुलकित है तासों शिथिलहै नेत्रजलसोंभरे तासों वचन नहीं आवत है १ भव शिव तिनकी भामिनी वामांगी पार्वती स्वामिनी अंतर्यामिनीहैं ताते अंतर्यामिनीसों नहीं कहिवेको चाहिये काहेते वह तौ सबजानतहैं तिन मातु पार्वती अंतर्यामिनीसों मैं अपनेमनोरथकी बातकहा चाहतहौं ताको समाधानकरत कि अन्त में लरिकै तौ हौं बालकको कहिबो कोऊ अनुचित नहीं मानत तब कृपामूर्ति पार्वतीजीसो सुन्दरमाला प्रसाददैकै बोलतीभईं हे जनकनंदनीजी जो तुम्हारे मनमें भावतो बरहै ताको बरिकही विवाहि मनकामना पूजो कहे पूर्णहोइ २ श्रीरघुनन्दन कल्पवृक्षपाइकै वेलिसमबनाइ बौड़ीनाम फैलिकै मांगसोंतोषिकही सुहागसेंभरि कोषिसोंपोषि कहे बालकजन्मादिते फैलि फूलि फरिकैपुष्टह्वैरहौगी तबकहौगी अंबापार्वती सांचुकही है सो सुनि जानकीजीने चरणगहे तब पार्वतीजीकहे यह क्याकरतीहौ यह कहि माथेहाथधरि उठाइलियो ३ अशीशसुनि आनन्दते बार बार माथनवाय जननी के डरसों डरिकै देवीजीसों बिदाभई मनको भावतोभयो जानि सहेली हर्षी ताते गीतगावत तुलसी

के ईश रघुनाथजी को हृदय हरि लैके भवन को गई ४ ॥

मू० । रंगभूमिआयेदशरथकेकिशोरहैं ॥ पेखनसोंपेखनचलेहैंपुरनरनारिबारेबूढ़े अंधपंगुकरतनिहोरहैं १ नीलपीतनीरजकनकमरकतघन दामिनिवरणतनुरूपकेनिचोरहैं ॥ सहजसलोनेरामलषणललितनामजैसेसुनेतैसेहीकुँवरशिरमौरहैं २ चरणसरोजचारुजंघाजानुऊरुकटिकन्धरविशालबाहुबड़ेबरजोरहैं ॥ नीकेजैनिषंगकसेकरकमलनलसेबाणविशिखासनमनोहरकठोरहैं ३ काननकनकफूलउपवीतअनुकूल पियरेदुकूलविलसतआछेछोरहैं ॥ राजिवनयनविधुवदनटेपारेशिर नखशिखअंगनठगौरीठौरठौरहैं ४ सभासरवरलोककोकनदकोकगण प्रमुदितमनदेखिदिनमानिभोरहैं ॥ अबुधअशैलेमनमैलेमहिपालभये कछुकउलूककछुकुमुदचकोरहैं ५ भाईसोंकहतबातकौशिकहिसकुचातबालघनघोरसेबोलतथोरथोरहैं ॥ सनमुखसबहिंविलोकतसबहिनीकेकृपासोंहेरतहँसितुलसीकीओरहैं ६ ॥

टी० । श्रीदशरथकेकिशोर रंगभूमिको आयेहैं यह सुनिके पुरके नारिनर पेखनकही तमाशा देखिबे हेतु चले तहां बारे बूढ़े पांगुरे आंधरे निहोरा करतहैं कि हमहूँको लेचलो आंधरे वचन सुनिबे हेतु १ नीलकमल मरकतमणि मेघवर्ण रघुनाथजी पीतकमल कनक दामिनी वर्णवर्ण लक्ष्मणजीते रूपके निचोर कही सारांशहैं सहजहीमें लावण्यतायुत कुछ रचनासों नहीं अरु रामलषण ऐसा नामहुँ ललितहै जैसा सुनाहै तैसाही कुँवरनमें शिरमौर हैं २ चरण कमलसम सुन्दरजंघा पिंडुरी जानु टिहुनी ऊरू मोटी जांघैं कटि कन्धा विशाल कहे लम्बायमान भुजा बड़े बरजोरहैं या-

ते राक्षसवधसुने कटिमें तरकस नीकेकसे हाथमें धनुप बाणलसे सो देखिबे में मनोहर करतूतिमें कठोर ३ काननमें कनकके पुष्पाकार कुण्डल वा झुमका अरु जैसा क्षत्रियनको चाही ताही अनुकूल यज्ञोपवीत अरु पीतपट तामें आछेछोर जरी के विराजतहैं कमलसमनेत्र चन्द्रमासमवदन शिरनमें टोपी नखते शिख पर्यन्त अंगनमें ठौरठौर ठगौरी हैं जहां देखिये तहांही मन ठगिरहे ४ सभा सोई वरकहे श्रेष्ट तड़ागहै लोककेजन सोई कोकनद कही कमल हैं कोकगण चकई चकवा हैं ते सब भोरकेसे दिनमणि सूर्यरूपी रघुनाथजीको देखि प्रमुदितभये श्रीरामरूप रवि देखि सभा सब प्रफुल्लितभई अबुध जे मूढ़ राजाहैं ते श्रैसे कही जो धनुषतोरिवेकी आशालगाये रहे हैं ते मनमैले भयेहैं तामें अबुध ते उलूकसे लुकिरहे आशावाले ते कुमुदसे सम्पुट भये मनमैले ते चकोरसम नेत्रमूंदिलिये ५ पुरजन कहत कि रघुनाथजीको वचन तौ घनसम गंभीर है परन्तु विश्वामित्रजीके संकोचसों भाइते धीराधीरा बातकहत सम्मुख सब सोहैं काहूसों वेलते नहीं हैं यहिते प्रतापीहैं अरु सबको नीके देखतहैं यामें सरलताहै तेई प्रभु कृपासों हँसि तुलसीकी ओर हेरत हैं ६ ॥

मू० । येईरामलषणजेमुनिसँगआयेहैं ॥ चौतनीचोलनाकाछेसखासोहैं आगेपाछे आछेहूतेआछेआछेआछेभाय भाये हैं १ सांवरेगोरेशरीरमहाबाहुमहावीरकटितूणतीर धरेधनुषसोहाये हैं ॥देखतकोमलकलअतुलविपुलबलकौशिककेदण्डकलाकलितसिखाये हैं २ इनहींताड़कामारी गौतमकीतियातारी मारीमारीभूरिभटरणविचलाये हैं ॥ ऋषिमखरखवारेदशरथकेदुलारे रंगभूमिपगधारे जनकबुलाये हैं ३ इनकेविमलगुणगनतपुलकितनु शतानन्दकौशिकनरेशहीसुनाये हैं ॥ प्रभुपदमनदियेसो

समाजचितकिये हुलसिहुलसिहियेतुलसिहुगायेहैं ४ ॥

टी० । जे मुनिके संगमें आये हैं ते श्रीराम लषण येई हैं चौकोशिया टोपी अरु चोलना को काछे पहिरे हैं हे सखी आगे रघुनाथजी पीछे लक्ष्मणजी सोहतहैं आछेहूते आछेकही देवता आदि जे आछे आछे तिनहूँते आछे कामदेवादि तिनको भी आंछेभावतेभायेहैं भलेभावते मनलाइ देखतेहैं १ सांवर रघुनाथजी गौरशरीर लक्ष्मणजी आजानुभुज बलकेभरे अरु रण में महावीरहैं कटिमें तरकस धारण करमें सुन्दर धनुष सोहत देखिबेमें कोमल अरु सुन्दर बल जिनमें अतुल है अर्थात् बड़े बलवान् हैं तिनको विश्वामित्रने कोदंडकलाकहे धनुषविद्या सुन्दर सिखाईहै २ इनहींने ताड़काकोमारी औ गौतमकी तिया तारी सुबाहुआदि भारी भारी योद्धा रण में बिचलाइभागेहैं ते विश्वामित्रकी यज्ञके रक्षाके करनहार श्रीदशरथ महाराजके कुमार मिथिलेशजीके बोलायेते रंगभूमि में श्रीरघुनाथजी आये हैं ३ इनके विमल दिव्य गुणनके गण शतानन्द अरु विश्वामित्र प्रेमसों पुलकित तनुह्वै विदेहजीको सुनायेहैं प्रभु के चरण कमलनमें मनदिये सो जनकपुरकी समाज चित्तमें किये हुलसि हुलसि हृदयते तुलसीदास गावत हैं ४ ॥

मू० । रागकान्हरो ॥ सियास्वयंवरमाई दोउभाईआयेदेखन ॥ सुनतचलींप्रमदाप्रमुदितमनप्रेमपुलकितनु मनहुँमदनमंजुलपेखन १ निरखिमनोहरताईसुखपायकहैंएकएकसोंभूरिभाग्यहमधन्यआलीएदिनएखन ॥ तुलसीसहजसुरंगसोसमाजचित्तचित्रसारलागींदेखन २ ॥

टी० । हे माई रामलषणदोऊभाई श्रीजानकीजीको स्वयंवर देखिबे हेतु आये हैं यह सुनि प्रमदागण प्रेमते पुलकिततनु आनंद मनते मानों सुन्दरमदन देखिबे हेतु चलीं १ प्रभुकी मनोहरताई

सुन्दरतादेखे एक एकनसों कहत सुखपायके हे आली आजुइहिं क्षण हम बड़े भागीहैं यहधन्यहै गोसाईंजी कहत कि सहज स-नेह जो प्रीति ताको अंगप्रणयप्रेम आशक्ति लगनलागि अनुराग नेहआदि सोई सुंदर रंगते द्युतिलावण्यतारूप कांतिसुकुमारता कोमलता माधुरीआदि प्रभुकी शोभा सो समाजसहितबुद्धिले-खनीसों स्त्रीजन अपने चित्तरूप चित्रसारी में लिखनलागीं २ ॥

मू० । रागगौरी ॥ रामलषणजबदृष्टिपरोरी ॥ अवलोकतसबलोगजनकपुरमानों विधिविविधविदेहकरोरी १ धनुषयज्ञकमनीयअवनितल कौतुकही भयआयखरोरी । छविसुरसभामनहुँमनसिजके कलितकल्पतरुरूपफरोरी २ सकलकामबरखतमुखनिरखत करखतचितहितहरषभरोरी ॥ तुलसी सबहिंसराहतभूपहि भलेपैतपाँसेसुठरठरोरी ३ ॥

टी० । हे सखी श्रीरामलषण जबते दृष्टि में परे तिनके देखत में प्रेमानन्द में मग्नह्वै नरनारि एकटक रहे देहाध्यास भूलिगये ताते जनकपुरके लोगनको मानों विधाताने अनेक विदेह बनाये १ धनुष यज्ञकी कमनीयनाम सुन्दर अवनितल पृथ्वीविषे कौतु-कही आयखरेभये सो यज्ञभूमि सोई छविमयी सुरसभाहै तामें श्रीरामलषण मानों मनसिज कामदेवके सुन्दर कल्पवृक्षहैं शोभित जो विनाभूषण भूषित सोई जो रूप सोई कल्पवृक्षके फूलफल हैं २ उहां कल्पवृक्षकी छायामेंगये मनोरथफलदेत इहां श्रीरा-मलषणको मुखनिरखतमें सकलमनकामना वर्षत चित्तको क-र्षतकहे खैंचिलेत अरु चित्तकोहित जो हर्ष ताको हियमेंभरिदेत गोसाईंजी कहत कि भूपको सबराहत हैं कि पैतकही भले दांवके पांसे सुधरिके परे हैं जो पणकरैं सो भले फलपाये हैं ३ ॥

मू० । नेकुसुमुखिचितलाइचितौरी ॥ राजकुँवरसूरति

रचिबेकोरुचिशुचिविरंचिश्रमकियोहैकितोरी १ नख
शिखसुन्दरताअवलोकत कहिनपरतसुखहोतजितोरी ॥
सांवररूपसुधाभरिबेको नयनकमलकलकलशरितोरी २
मेरेजानइनाहिंबोलिबेकारण चतुरजनकठयौठाटइतोरी ॥
तुलसीप्रभुभंजिहैंशंभुधनुभूरिभाग्यसियमातुपितोरी ३॥

टी० । हेरीसुमुखि नेकुचित्तलगाइकै देखु तो राजकुंवर श्रीरामकी मूर्त्तिरचिबेको ब्रह्माने शुचिकही पवित्रमनते रुचिपूर्वक कितनो परिश्रम कियोहै १ नखते शिखापर्यंत सुन्दरताअवलोकतकही देखतमें तितनो सुखहोत जितनो कहत नहीं बनत ताते सांवलरूप जोहै रघुनाथजीको शोभारूप अमृतभरिबेहेतु नेत्ररूप कमलके कलशरितोरी कहे खालीकरो और कछू नेत्रनमें न भरो २ सखीकहत कि हमारीजान इन श्रीरघुनन्दनके बोलाइबे कारण चतुरजनकजीने यतनो धनुतोरिबेको पणादिठाटठाटो है गोसाईंजी कहत सखी कहतीहैं कि प्रभु शम्भुधनुष तूरिहैं काहे ते श्रीजानकीजी के माता पिताके बड़ेभाग्यहैं ३ ॥

मू० । रागसारंग ॥ जबतेरामलषणचितयेरी ॥ रहेय
कटकनरनारिजनकपुर लागतपलककलपबितयेरी १
प्रेमविवशमांगतमहेशसों देखतहीरहियेनितयेरी ॥ कैये
सदाबसैंइननैनन कीयेनैनजाहिंजितयेरी २ कोउसमुझा
इकहैकिनभूपहि बड़ेभाग्यआयेइतयेरी ॥ कुलिशकठोर
कहांशंकरधनु मृदुमूरतिकिशोरकितयेरी ३ बिरचिनइन
हिंविरंचिभुवनसब सुन्दरताखोजतरितयेरी ॥ तुलसिदा
सतेधन्यजन्मजन मनवचक्रमजिनकेहितयेरी ४ ॥

टी० । हेरीसखी जबते श्रीराम लषणको चितये तबते जनकपुरके नर नारि एकटकरहे पलकलागिबेको अंतरपरनो मानों

कृपवीते १ प्रेमके विशेषवशहैं ताते सब महेशते मांगत कि इन को नितहि देखत रहियो कितौ हमारे नेत्रनमेंवसैं कितौ जहां ये जाहिं तहां हमारे नेत्रहु जाहिं २ हेरीसखी कोऊ विदेह म- हाराजको समुझाइकै कहै नहीं कहतहै कि इत जनकपुरको ये वड़ी तुम्हारी भाग्यते आये हैं ताते प्रणछांड़ि इनको विवाहकरो नाहींतौ कहां शिवकाधनुष वज्रहूते कठोरहै कहां ये राजकिशोर की मूर्त्ति परमकोमलहैं ३ इनको रचत में ब्रह्माने सुन्दरताई ढूंढ़वे में सब भवनरितये कहीं खालीकरे दूसरे ठौर न ठहरी गो- साईंजी कहत कि जिनको मन वचन कर्मकरि रघुनाथैजी हित हैं तिन जननके जन्म धन्यहैं ४ ॥

मू० । सुनुसखिभूपतिभलोइकियोरी ॥ जेहिप्रसादअव धेशकुंवरदोउनगरलोगअवलोकिजियोरी १ मानिप्रती तिकहेमेरतेकतसँदेहवशकरतहियोरी ॥ तौलौंहैयहशम्भु शरासन श्रीरघुवरजबलौंनलियोरी २ जेहिविरंचिरचि सीयसँवारी अरुरामहिंऐसोरूपदियोरी ॥ तुलसिदासते चतुरविधाता निजकरयहसंयोगसियोरी ३ ॥

टी० । सखीको सखी उत्तरदेतहै हे सखी सुनु भूपतिने भलो कियोहै जो धनुषतूरिबेको प्रण सुनि राजकुमारआयेहैं तिनको निरखि नगरकेलोग जियतहैं १ मेरेकहेते प्रतीतिकरु संदेहवश हियेको न करु यह शंभुको शरासन तबहींलौं है जबलौं श्रीरघु- वर करसें नहीं लेतेहैं २ जेहि ब्रह्मानेरचि श्रीजानकीजीको सँवारे अरु श्रीरघुनन्दनको ऐसो रूपदियो गोसाईंजी कहतहैं कि सोई चतुरब्रह्माने अपने हाथसों यहसंयोगसियो कहे मिलायोहै ३ ॥

मू० । अनुकूलनृपहिशूलपाणिहैं ॥ नीलकंठलावण्य सिंधुहरदीनबन्धुदिनदानिहैं १ जोपहिलेही पिनाकजन कको गयोसौंपिजियजानिहैं ॥ बहुरि त्रिलोचनलोचन

कोफलसबहिसुलभकियोआनिहैं २ सुनियतभवभावते रामहैंसियाभावतीभवानिहैं ॥ परखतप्रीतिप्रतीतिपैज प्रण रहेकाजुठटुठानिहैं ३ भयेविलोकिविदेहनेहवश बालकविनपहिचानिहैं ॥ होतहरेहोनेबिरवनदलसुमति कहतअनुमानिहैं ४ देखियतभूपभोरकेसेउडुगणगरतग रीबगलानिहैं ॥ तेजप्रतापबढ़तकुँवरनकोयदपिसकोची बानिहैं ५ वयकिशोरबरजोरबाहुबलमेरुमेलिगुणतानि हैं ॥ अवशिरामराजीवविलोचनशम्भुशरासनभानिहैं ६ देखिहैंब्याहउछाहनारिनर सकलसुमंगलखानिहैं ॥ भू रिभाग्यतुलसीतेऊजेसुनिहैंगाइहैंबखानिहैं ७ ॥

टी०। सकलशूलको नाशकरनहारो त्रिशूल जाके पाणिमें है सो शूलपाणि नृप विदेहपर अनुकूलहै नीलकण्ठ करुणाकेस-मुद्र हर दीनबन्धु दीननके दानिहैं सुरासुर जरत देखि हलाहल पानकियो ताते करुणासिन्धु हमको भी करुणाकरि प्रणरूपी तापसों जरत देखि धनुपकठोरताविषको नाश करहिंगे हर हैं सबदुःख हरतहैं हमकोभी दुःखितजानि दुःखहरहिंगे दीनबंधुहैं हम धनुप टंकोर जानि दीन हैं जो हमारी भी सहाय करहिंगे दीनकेदानि हमकोभी सियारामसंयोग दानदेहिंगे १ जो शिव-जी पहिलेही जियसों जानि पिनाक जनकजी को सौंपिगये तेई त्रिलोचन शिवजी नेत्रनको फल सबको सुलभकिये प्रभुके दर्शन अनाश्रितपाये २ सुनियतहै कि शिवको श्रीरामसोहाते हैं भवानीको श्रीजानकीजी सोहातीहैं ते शिवजी श्रीरामजान-की प्रीति परखते हैं पार्वतीजी आपने आशीर्वादकी प्रतीति श्री-जानकीजी सों परखती हैं अरु राजनको धनुष तोरिबेकी पैज परखत विदेह महाराजको प्रणपरखतहैं ताते कार्य के ठाट ठा-टिबेमें विलम्बठानिरहे शिवपार्वती ३ जिन बालकनको विलो-

कि विनापहिचानि विदेहजी नेहवशभये ताते संयोग होनहारहै काहेते होनहारविरवनके हरेपातहोतहैं हम अपनीमतिसों अनुमान कहतहैं ४ अपरभूपनको देखिये तो भोरके ऐसे नक्षत्र प्रकाश हीन गरीब ग्लानिमें गरेजातहैं अरु कुँवरनको तेज प्रताप बढ़त जात यद्यपि बानिकही रीतिरहस्य बोलचाल सब सङ्कोचपूर्वक करत ताते अभिमानरहितहैं ५ अवस्था किशोरहै परन्तु बाहुबल सों बरजोरहैं मेरुकही सुमेरुगिरिमें गुणी जो रोदाको मेलिकही लगाइके तानिहै कही खैंचिबे योग्यहै सो सुमेरुगिरि में रोदा लगाइ खैंचिबे योग्यहै अवश्य श्रीरघुनन्दन कमलनयन शिवको धनुष तोरैंगे ६ सकल सुमंगलकी खानिहैं ताते नारि नर श्रीराम जानकी के ब्याहको उछाह देखिहैं गोसाईंजी कहतहैं कि तेऊ भूरिकहे बड़भागी हैं जे कीर्त्तिको गाइहैं सुयशको बखानिहैं जे कीर्त्ति यशको सुनिहैं ७॥

मू०। रागकेदार॥ रामहिंनीकेनिरखिसुनैनी ॥ मन सहुअगमसमुझियहअवसरकतसकुचतपिकबैनी १ बड़े भाग्यमखभूमिप्रकटभइसीयसुमंगलमैनी॥ जाकारणलो चनगोचरभइ मूरतिसबसुखदैनी २ कुलगुरुतियकेवचन मधुरसुनि जनकयुवतिमतिपैनी ॥ तुलसीशिथिलदेहसु धिबुधिकरिसहजसनेहविषैनी ३ ॥

टी०। शतानन्दकी स्त्री श्रीजानकीजीकी मातासों कहती है हे सुनयनी श्रीरामको नीकेनिरखु हे पिकबैनी मनसों अगम श्री रघुनाथजी या अवसर नेत्रनकोप्राप्तहैं ताते काहेको सकुचतहौ १ सिया सुमंगलकोस्थान सुमंगलदेनहारीहै ॥ प्रमाणं मार्कण्डेय संहितायांब्रह्मवाक्यं॥ सीतामातरमाश्रयामिभजतांमांगल्यसंपत्प्रदाम्॥ गोसाईंजीकहतेहैं॥सर्वश्रेयस्करींसीतांनतोहंरामवल्लभाम्॥ से मंगलको गृह श्रीजानकी बड़भाग्यते तुम्हारे यज्ञभूमि में प्रकट

भई हैं जाको कारण सबसुख देनहारी रघुनन्दनकी मूर्त्ति नेत्रन को विषय भई यज्ञार्थ भूमि शोधते हलमेंलागि घटते पुत्री प्रकट भई ताते सीतानामभयो ॥ प्रमाणंवाल्मीकीयेविदेहवाक्यं ॥ अथ मेकृष्यताक्षेत्रं लांगलादुत्थितातत: । क्षेत्रंशोधयतालब्धानाम्ना सीतेतिविश्रुता २ श्रीजनकजीकीयुवती श्रीसुनयनाजी ते मतिकी पैनी महीनिहै बुद्धि जिनकी ते कुलगुरु शतानन्दकीतियाके मधुर वचन सुनिकै गोसाईंजी कहत कि जो प्रेममें विह्वलरहै सो शीत-लताछांड़ि देहकीसुधिकरि बुद्धिसों समुझि सहजसनेहसों विषय-नीकहे नेत्रनकीविषमानि प्रसिद्धमें रघुनाथजीको देखनलागी३ ॥

मू० । मिलैबरु सुन्दरसुन्दरीसीतहिलायकसांवरोसुभगशोभाहूकोपरमशृंगारु ॥ मनहूकोमनमोहैउपमाकोआनकोहैसुखमासागरअनुजसँगराजकुमारु १ ललितसकलअंगतनुधरेकीअनंग नयननकीफलकिधौंसियकोसुकृतसारु ॥ शरदसुधासदनछविहीनींदतवदन अरुणआयतनवनलिनलोचनचारु २ जनकमनकीरीतिजानिविरहितप्रीतिऐसी औमूरतिदेखेरह्योपहिलोविचारु ॥ तुलसीनृपहिऐसीकहिनबुझावेकोऊ प्रणऔकुँवरदोऊप्रेमकीतुलाधौंतारु ३ ॥

टी० । सखी कहती हैं कि शोभा जोहै ताहूको परमशृंगार शोभाहूको शोभा करनहारे सुभग सांवरो वरु सीतै के लायक हैं सुन्दरी सीताको मिलै जो मनहूंको मनमोहै ताकी उपमा देवेकी और को है जा राजकुमार के संगमें अनुजहै सोभी शोभासागर है १ सब अंग सो सुन्दर कि कामदेव तनुको धारण किये हैं कि नेत्रनको फलहै कि श्रीजानकीजी के सुकृतको सारांश है शरद ऋतुको सुधासदन चन्द्रमाकी छविको मुखनिन्दा करतहै अरुण रतनारे बड़े बड़े नवीन कमल सम नेत्र जिनके हैं २ जान जो

चतुर तिनकी प्रीतिते विशेष रहित जनकजी के मनकी रीति है काहेते जो ऐसेहूं प्रभुकी मूर्ति देखेपर पहिले विचारु धनुतोरिवे को प्रण वनारहा ताते कोऊ महाराज को समुझाइकै नहीं कहत कि प्रण अरु राजकुमारन को प्रेमके तराजूपर धरि तारु तो यामें कौन गरू है ३ ॥

मू० । देखुदेखुरीदोउराजसुवन ॥ गौरश्यामसलोनेलोनेलोयनजिनकीशोभातेसोहैसकलभुवन १ इनहींताड़कामारीमगमुनितियतारी मुनिमखराख्योरणदलेहैंदुवन ॥ तुलसीप्रभुकोअबजनकनगरनभसुयशविमलविधुचहतउवन २ ॥

टी० । हे सखी देखु देखु तौ दोऊ राजकुमारन को गौर लक्ष्मणजी श्याम रघुनाथजी लावण्यता के भरे अंग लावण्यतायुत लोयन कही नेत्र जिनकी शोभाते सकलभुवन शोभितहोत अर्थात् नेत्रनते प्रकट है सूर्य तिनते सबभुवन प्रकाशित ॥ प्रमाणं पुरुषसूक्ते ॥ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षुस्सूर्योअजायत १ इन्हों ने ताड़काको मारे मार्गमें मुनितिया अहल्यातारे विश्वामित्र की यज्ञकी रक्षाकरे संग्राम में सुबाहुआदि दुष्टनको मारे गोसाईंजी कहत कि जहां यह सबभयो तहां जनकपुर सोई नभकहे आकाशहै तामें धनुष तोरिबे को निर्मल प्रभुको यशरूपी चन्द्रमा उदय होन चाहत है २ ॥

मू० । राजारंगभूमिआजुबैठेजायजाइकै ॥ आपनेआपनेथलआपनेआपनेसाज आपनीआपनीबरबानिकबनाइकै १ कौशिकसहितरामलषणललितनाम लरिकाललामलोनेपठयेबुलाइकै ॥ दरशलालसावशलोगचलेभाखमलेविगासितमुखनिकसतधायधाइकै २ सानुजसानन्द

हियेआगेह्वैजनकलिये रचनारुचिरसबसादरदिखाइकै ॥ दियेदिव्यआसनसुपाससावकाशअतिआछेआछेबीछेबिछौनाबिछाइकै ३ भूपतिकिशोरदुहुँओरबीचमुनिराव देखिबेकोदांवदेखौदेखिबोविहाइकै ॥ उदयशैलसोहै सुन्दरकुँवरजोहै मानोंभानुभोरभूरिकिरणछिपाइकै ४ कौतुककोलाहलनिशानगानपुरनभ वर्षतसुमनसुविमान रहेउछाइकै ॥ हितअनहितरतविरतविलोकिबालप्रेममोदमगनजनमफलपाइकै ५ ॥

टी०। आजु रंगभूमिमें सब राजा जाइजाइकै आपनेसाज कहे चँवर छत्र भूषण पोशाकादि बानिक वेषबनाइकै थलकहे अपने दर्जेपर बैठे १ ताहि अवसरविषे कौशलेश महाराज के बालक ललामकहे जगके भूषण लोने लावण्यताकेभरे श्रीराम लषण ऐसा ललितनाम जिनको तिनको विश्वामित्रसहित विदेहजी बुलाइपठयेहैं तिनके दर्शनके लालसावश लोग पुरवासी भले भायते चले विगसत कही प्रसन्नमुख घरसों धाइ धाइ निकसतहैं २ सानुजकहे कुशध्वजसहित श्रीजनकजी आनन्दते विश्वामित्रजीके आगेकिये प्रथम यज्ञभूमिकी सुन्दररचना दिखाये सब आदरते पश्चात् दिव्य आसनदिये जापै चुनें चुने सुन्दर बिछौना बिछेहैं जहां सबतनाको सुपास अरु सावकाश है ३ भूपतिकिशोर श्रीरघुनन्दन लक्ष्मणजी दाहिने बायें बीचमें विश्वामित्रजी ताते देखबे को दांवहै सो सबकोदेखिबो विहाय इनको देखो ऐसा पुरवासी कहतहैं मंचान मानों उदयगिरिहै तापर राजकुमार मानों प्रभातकाल के सूर्य हैं ते आपनी किरण भूरिकहे समूह तिनको छिपाइकै बैठे हैं ४ निशानबजा स्त्रीन को गान ब्राह्मणनकी वेदध्वनिइत्यादि कोलाहलशब्दआदि कौतुक पुरमें ह्वैरहा है आकाशमें देवतनके विमान सुन्दर छायरहे हैं तिनते फूल वर्षिरहेहैं हितू अनहितू अरु रत अनुरागी विरत

वैराग्यवान् ते सब बाल जो रघुनन्दन तिनको नेत्रनभरि देखि जन्मभरेको फलपाइकै प्रेमानन्दमें मग्नहैं ५॥

मू०। राजाकीरजाइपाइसचिवसहेलीधाइ शतानन्द लायेसियशिविकाचढ़ाइकै॥ रूपदीपिकानिहारिमृगमृगीनरनारि बिथकेविलोचननिमेषविसराइकै ६ हानि लाहुअनखउछाहबाहुबलकहि वन्दीबोलेविरदअकशउपजाइकै॥ द्वीपद्वीपकेमहीपआयेसुनिपैंजपनु कीजैपुरुषारथकोऔसरभोआइकै ७ आनाज्ञानीकंठहँसीमुहांचाही होनलागी देखिदशाकहतेविदेहबिलखाइकै॥ घरनिसि धारियेसँवारियेआगिलोकाज पूजिधनुकीजैजायविजय बजाइकै ८ जनकवचनसुनिवीरबालजारुकैसेवीररहेसकलसकुचिशिरनाइकै॥ तुलसीलषणमाखेरीषराखेराम रुखभाखेमृदुपरुषसुभायनरिसाइकै ९॥

टी०। विदेह महाराजकी आज्ञा पाइकै सचिव धावतेभये सखिनसहित श्रीजानकीजी को शिविका पालकीपर चढ़ाय शतानन्दजी ल्यावतेभये तहां दीपकसम श्रीजानकीजीकोरूप देखि नर नारी मृगा मृगी सम देखि पलकरहित नेत्रनको थकित भये ६ न टूटवेधनुष केवल प्रताप वीरता बड़ाई की हानि अरु टूटवेते त्रिभुवन जयसहित विदेहीलाभ जो पिनाक विनानाक राजनको कियो यह अनख धनुतोरै सो वैदेही विवाहै यहां उत्साह राजनकी समाजविषे जो चपरिकैतूरै यह बाहुबल जो धनुषको देखि रावण बाणासुर बहाने से चलेगये यह आकाश उपजाइकै वन्दीजन विरदावली उच्चारणकरि कहतेभये कि द्वीपद्वीपके महीपपैंजपनुकहे अत्यन्तपुष्ट प्रतिज्ञासुनिकै सब आये हैं ताको अब

अवसरभयोतातेपुरुषारथकीजिये ७ आनाकानीधनुषओरसन-कारतहैं कंठहंसी धीरासों मुसक्यायकै मुंहाचाही तुमउठौ तुम उठौ एक एकनसों कहनेलगे ते भूपनकी दशा देखि विदेहजी विलखाइकै कहनेलगे हे राजौ आपने घरनकोसिधारिये यहका-जकरिचुके अबघरको आगिलकाज सुधारिये ताकीविजयधनुष को पूजिपूजि बजाइकै कीजै यह बानकहै ८ जैसे लजारुके बिरवाछुये ते कुंभिलाइ गिरिपरतहै तैसे विदेहजीके वचनसुने वीरसकुचाय शिरनाइ रहिगये गोसाईंजी कहते कि लक्ष्मणजी रोषे परन्तु श्रीरघुनाथको रुखराखे सहजही में कोमल अरु कठोर वचन भाषे कछु रिसाइकै नहीं ९ ॥

मू०। भूपतिविदेहकहीनीकीपैजुभईहै ॥ बड़ेहीसमाज आजुराजनकीलाजपति हांकिआँकएकहीपिनाकछीनिल ईहै १ मेरोअनुचितनकहतलरिकाईवश बहुपरमितआ नभांतिसुनिगईहै ॥ नतरुप्रभुप्रतापउतरुचढ़ाईचाप देतौपैदिखाइबलफलपापमईहै २ भूमिकेहरैयाउखरै याभूमिधरनके विधिविरचोप्रभावजाकीजगजईहै ॥ विहँ सिहियेहरषिहटकेलषणरामसोहतसकोचशील नेहनारि नईहै ३ सहसीसभासकलजनकभये विकलरामलखिकौ शिकअशीषआज्ञादईहै ॥ तुलसीसुभायगुरुपांयलागि रघुराजऋषिराजकीरजायमाथेमानलईहै ४ ॥

टी०। लक्ष्मणजी कहतेहैं कि भूपति विदेहने जो कही सो भईहै ताते नीकी कही सांची है काहेते बड़ी समाज विषे राजन की लाजपतिको पिनाकने हांकिकही ललकारिकै आँकएकही कही निश्चयकरिकैछीनिलियोहै १ प्रभुकेसामनेमेरोकहिबोअ-नुचितहै परन्तु लरिकाईवशते कहतहौं ताते अनुचित नहीं है अरु पनकी परामिति अन्तफल और भांति सुनगाई है जो धनुष

तोरै सो श्रीजानकीजीकोविवाहै याको अभिप्राय जानकीजीमाताकी जगहपरहैं तातै अनुचित है जो यहपन न होतो तौ प्रभुके प्रतापते धनुष चढ़ाइकै मैं उतरु जनकजीकोदेतो परन्तु वलको देखाइवेतै फल ताको पापमयीहै जगज्जननी जानकी विवाह हमको पापमयीहै २ भूमिकेहरैया दैत्य बाणासुरआदि भूधरनके उखरैया राक्षस रावणादि तिनसहित जगजई कहे जीतनहार प्रभाव विधाताने विरचोहै इससमयमें धनुषको सो धनुष पुरानो चापुरेकी क्या हकीकति है यह शेषहै सो वचन सुनि हृदयहर्षि हँसिकै श्रीरघुनाथजी लक्ष्मणजी को हटके तब शील सकोच नेह वशते लक्ष्मणजीकी नारिकहे ग्रीवा नई सोई शोभित शिर झुकाइ लिये ३ सभा जो लज्जितरहै सो सहमी कहे बलिष्ठभई कि सभाकेवीचमें अवहीं वीरहैं जनकजी विकलभये कि हमसों वचन कहते नहीं वन्यो रघुनाथजीकोदेखि विश्वामित्रजी आज्ञा अरु अशीष देतेभये गोसाईंजी कहत कि रघुनाथजी विश्वामित्र के चरणनमें माथनाइ सहजही में ऋषिराजकी आज्ञा माथे पर धरिलियो ४ ॥

मू०। शोचतजनकपोचपेंचपरिगईहै ॥ जोरिकरकमलनिहोरकहेकौशिकसों आयसुभोरामकोसोमेरेदुचितईहै १ बाणयातुधानपति भूपद्वीपसातहूके लोकपविलोकतपिनाकभूमिलईहै ॥ ज्योतिलिंगकथासुनिताकोअन्तपाये बिन आयेविधिहरिहारसोईहालभईहै २ आपुहीविचारि येनिहारियेसभाकीगति वेदमर्य्यादमानोंहेतुवादिहईहै ॥ इनकेजेतोहैमनशोभाअधिकानीतनसुखनकी सुखमासुखदसरसईहै ३ रावरोभरोसोबलकैहैकोऊकियेछलकैधौंकुलकोप्रभावकैधौंलरिकईहै ॥ कन्याकलकीरतिविजयविश्वकीबटोरिकिधौंकरतारइनहींकोनिरमईहै ४ प्रनको

न मोह न विशेषचिन्तासीतहूकी लूनिहैपैसोईसोईजोई जोईबईहै ॥ रहैरघुनाथकीनिकाईनीकीनीकीनाथहाथसो तिहारेकरतूतिजाकीनईहै ५ कहिसाधुरगाधिसुवनसराहे रावमहाराजजानिजियेठीकभलीदईहै ॥ हरषेलषणहरषा नेविलखानेलोग तुलसीमुदितजाकोराजारामजईहै ६ ॥

टी० । श्रीविदेहजी शोचकरत कि कठिनपैंचपरिगईहै जो हम प्रण किया सो अच्छा नहीं किया जनकमहाराज कमलसमहाथ जोरि निहोराकरि विश्वामित्रजीसों कहतहैं कि जो आपुरघुनाथ- जी को आज्ञादियो तामें मेरेदुचिताई है ताको हेतु कहतहौं १ बाणासुर यातुधानपति रावण अरु सातहूद्वीपकेराजा अरु लोक- पाल तिनकोदेखि पिनाकने भूमिलई भूमिको पकरेहै जैसे ज्यो- तिलिंगकी कथा सुनि ताके अंतलेबेको ब्रह्माजी ऊपरको गये वि- ष्णुजी पातालकोगये सो अंतनहींपाये हारिकै लौटिआये सोई हाल यहां धनुषकीभईहै काहूको अंतनाहींमिला केतना गरू है २ आपुनिहारिकै सभाकी गति विचारिये कैसीहोरही है मानो वेद की मर्य्यादाको हेतुवादिकही नास्तिकवादीने नाशकरी है तैसे सभाकी श्री को धनुषने नाशकरी है अबरघुनाथजीको वर्णनकरत कि इनको जेतनोप्रसन्नहैमन अरु तनमें शोभाअधिकानी जितनी दोऊ भाइनके मुखनकीसुखमा जो कांति सो सुखद सुखदेनहा- री सरसईकेहे बढ़तजातहै ३ इनकोमन प्रसन्नहै सो किधौं आपु के भरोसाको बलहै किधौं छल किहे कोई देवताहै कि सूर्यवंशी है सो कुलके प्रभावते तेजवान्है कि लरिकाईवशते हर्ष शोक रहितहै कि कन्या अरु सुन्दर कीरति अरु विश्वभरेकी विजय बटोरिबेको कर्तार ब्रह्माने इनहींको निर्माणकियोहै ४ हमको प्रणको मोह नहींहै अरु विशेष सीताहूकी चिन्ता नहीं है काहेते सोई २ लूनिहै जोईजोई जिनबोवाहै यामें कर्मप्रधानते जो जैसा

करे सो तैसा पाई परन्त जो रघुनाथकी नीकी निकाईहै सो नीकीनीकी वनीरहै अभिप्राय कि कन्याभी नीकिहै ताते संयोगनीकहै याकी चिन्ता हमको है सो हे नाथ आपुके हाथहै जाकी करतूतिनई है नईसृष्टिके करनहारेहौ ५ साधुहौ साधुहौ यहकहिके विश्वामित्रजी महाराज जनकजीकी प्रशंसा करतभये अरु विश्वामित्रजी कहे कि हे जनकजी महाराज आप जीसों जानि भली वार्ता ठीक करि ठहराइ राखीहै यामें यह अभिप्रायहै कि श्रीरघुनन्दन जनकनन्दनी दोऊकी निकाई देखि सबको यही बातकी चाहहै जीवते कि श्रीरघुनन्दनकेयोग्य जनकनन्दनी हैं श्रीजनकनन्दनीकेयोग्य रघुनन्दनहैं ताते यह संयोग होय सो जो सब को मनोरथ सोई विदेहजीके वचननमें अभिप्रायहै ऐसासंवाद सुनि लषणलालहरषाने कि निश्चय होनहार प्रभुको विवाह सोई निश्चय समुझि जे विलखाने लोग पुरवासीते हरषाने गोसाईंजी कहत कि जाके जयदायक राजा श्रीराम हैं सो सदा मुदितहै ६ ॥

मू० । सुजनसराहीजोजनकबातकहीहै ॥ रामहीसुहानीजानिमुनिमनमानीसुनिनीचमहिपावलीदहनबिनदहीहै १ कहैंगाधिनन्दनमुदितरघुनन्दनसोंनृपगतिअगहगिरा न जातगहीहै ॥ देखेसुनेभूपतिअनेकझूठेझूठेनामसांचेतिरहुतिनाथसाखिदेतिमहीहै २ रागऊविरागभोगयोगयोगवतमनयोगीयाज्ञवलिकप्रसादसिद्धिलहीहै ॥ तातेनतरनितेनसीरेसुधाकरहूते सहजसमाधिनिरुपाधिनिरवहीहै ३ ऐसेऊअगाधबोधरावरेसनेहवशविकलविलोकि अतिदुचिताईसहीहै ॥ कामधेनुकृपाहुलसानीतुलसीशउरपनासिगुहेरिमरयादबांधिरहीहै ४ ॥

टी० । जो वार्ता श्रीविदेहजी कहे ताकीप्रशंसा सुजननने करी

अरु मुनिके मनमानी जानि श्रीरघुनन्दन को सोहानी यह सुनि नीच राजनकी अवली जे पंक्ति पंक्ति बैठे हैं ते विना अग्नि के जरिगये १ रघुनन्दनजी सों आनन्दते विश्वामित्रजी कहते हैं कि विदेहकी गति अगहहै ताते जो बानी कहीहै सोऊ नहीं गही जाती है अनेक भूपनको देखे सुने नाममात्रही के ते झूठेभूपति हैं अरु साँचे भूपति तिरहुति नाथहैं जिनकी साखी पृथ्वी देत है जेहि पृथ्वीते कन्या उत्पन्नकरे २ राग, स्नेह, विराग, वैराग्य, भोग अकंटकराज्य, इच्छा, पूर्वधन, सदा सुखदायक मन्दिर, पतिव्रतास्त्री, बुद्धिमान् पुत्र, सेवक आज्ञाकारेति, योग, यम, नियम, आसन, प्रत्याहार, प्राणायाम, ध्यान, धारणा, समाधि इत्यादि सब विदेहजीके मनको योगवतहैं काहेते योगी याज्ञवल्क्यके प्रसादते सिद्धिदशा को प्राप्तहैं ताते सूर्यनते ततनहीं चन्द्रमाते सीरेनहीं होतहैं सहज हीमें समाधि उपाधिरहित निबहत हैं लय, कषाय, विक्षेप, रसास्वाद उपाधि रहित हैं ३ हे रघुनन्दनजी ऐसे अगाध बोध, ज्ञानसिंधु विदेहजी ते आपके सनेह वशते विकलसे देखिपरतहैं ताते असजानि परत कि इनके मनमें निश्चय दुचिताई है गोसाईंजी कहत कि यह बात सुनि पनरूप बछराको देखि रघुनाथजी के उरमें कृपाकामधेनु हुलसी परन्तु ऋषिकी आज्ञारूप मर्य्यादा में बाँधीहै ताते रहिगई बे आज्ञा धनुष न तूरिसके ४ ॥

मू० । ऋषिराजराजाआजु जनकसमानको॥ आपुयहिभांतिप्रीतिसहितसराहियत रागीऔविरागीबड़भागीऐसोआनको १ भूमिभोगकरतअनुभवतयोगसुखमुनिमनअगमअलखगतिजानको॥ गुरुहरपदनेहगेहबसिभोविदेहअगुणसगुणप्रभुभजनसयानको २ कहनिरहनिएकविरतिविवेकनीतिवेदबुधसम्मतपथीननिरबानको ॥ त्रिनगुणकीकठिनगांठिजड़चेतनकी छोरोअनायाससा

घुशोधकअपानको ३ सुनिरघुवीरकेवचनरचनाकीरी तिभयेमिथिलेशमानोंदीपकविहानको ॥ मिटोमहा मोहजीकोछूटोपोचशोचसीको जानोंअवतारभयोपुरुष पुरानको ४ समान्नपगुरुनरनारिपुरनभसुरसवचितवत सुखकरुणानिधानको ॥ एकहिएककहतप्रकटएक प्रेम वशतुलसीशतूरियेशरासनइशानको ५ ॥

टी०। श्रीरघुनाथजी कहत हैं कि हे ऋषिराज आजु जनकजी की समान राजा कौन है जिनको आपु यही भांतिसे प्रीति सहित सराहियतहो ते राशिनमें औविरागिन में ऐसे बड़ो भागी आनको हैं १ भूमिभोग राज्यसुख ताकोकरत ताही सें योग सुखको अनुभवतहै जे मुनि मननशील हैं तिनहूँनको इनकी गति जानिबे में अगमहै तिनको और को जानिसकै इनकी अलखगति है गुरुके पदनसें अरु हरि शिवके पदनसें जिनको नेहकहे प्रीति है घरमें रहत अरु विदेह दशाको प्राप्तहैं निर्गुण रूप प्रभुको ज्ञानमार्ग सगुणरूप प्रभुकोभक्ति मार्ग तें दोऊ मार्गके भजन करिबेमें विदेह सम सयान दूसरो कौनहै ज्ञान भक्ति दोऊके अधिकारी हैं २ जो कहत सोई करत ताते सत्य प्रतिज्ञा ताते कहनिरहनि एकभांति कीहै विरतिकहे वैराग्य सो चारिभांति विषे विषकरिजानै सो हेतु वैराग्य १ कर्मफलकी वासना त्याग ताको फल वैराग्य कही २ कर्मकोस्वरूप त्याग ताको स्वरूपवैराग्यकही ३ स्वर्गादि सुखफल त्याग ताको अवधि वैराग्यकही ४ विवेकयथाक्षीरसेंघृत तथादेहमें आत्मासारासारको विचार ज्ञान द्वैभांति अनुभव १ शास्त्रजन्य २ नीति साम दाम दण्ड विभेद इत्यादि सबके अधिकारी वेद अरु बुद्धिमानन के सम्मत अनुकूलहै निर्वाणमोक्ष ताके पथी इनसमान कौनहै बिनगुण कुछकठिन गांठि जड़माया चैतन्य जीवकी सो चिनाश्रम छोरिडारी अपान अपनो स्वरूप ताको शोधिबे में प्रवीण साधु कहे साधकहै ३ ऐसेवचन श्रीरघुनाथजी के सुन तिन

वचननके रचनाकी युक्तिकी अभिप्रायविचारि विदेहजीप्रभात केरे दीपकसमभये काहेते मोहरात्रीमें ज्ञानदीपककीप्रकाश तहां भानुसम प्रभुको प्रभावजानि प्रसिद्धमें अपनी प्रशंसासुनि सकोचवशभये महामोह जो प्रभुकेरूपमें संदेह सो मिटिगयो जीवसों अरु जो जानकीजीको विवाहको शोचरहे सो मनसों छूटिगयो यह निश्चयजाने कि प्रभु पूर्णपरब्रह्मको अवतारहैं ४ सभासमेत महाराजजनकजी गुरुविश्वामित्र पुरकेनरनारि आकाशमें देवता ते सब करुणानिधान श्रीरघुनाथजीको मुखदेखि रहे हैं एकनसों एक प्रकटमेंकहत एक एकसों प्रेम वशते कहत कि कहिये हे प्रभु ईशान शिवको धनुष तूरिये ५ ॥

मू० । सुनोभैयाभूपसकलदैकान ॥ वज्ररेखगजदशन जनकप्रणवेदविदितजगजान १ घोरकठोरपुरारिशरासननामप्रसिद्धपिनाकु ॥ जोदशकंठदियोबावोंजेहिहरगिरिकियो मनाकु २ भमिभालभ्राजतनचलतसोज्योंविरंचिकोआकु ॥ धनुतूरैसोइबरैजानकीरावहोइकीराकु ३ सुनिआमर्षिउठेअवनीपतिलगेवचनजनुतीर ॥ टरौनचापकरोअपनोसो महामहाबलवीर ४ नमितशीशशोचहिं सलज्जवशश्रीहतभयेशरीर ॥ बोलेजनकविलोकिसियातनदुखितसरोषअधीर ५ सप्तद्वीपनवखण्डभूमिकेभूपतिवृन्दजुरे ॥ बड़ीलाभकन्याकीरतिकीजहँतहँमहिपमुरे ६ ॥

टी० । वंदीजन कहतहैं कि हे भैया भूपो सब कानदैदै सुनो जैसे वज्रपर रेखाहोइ सो नहीं मिटत जैसे हाथीकोदांत फेरि मुखको नहीं जात तैसे जनकजीकोपनहै वेदमेंविदित प्रथमही वेदद्वारा मुनिवरन कहिराखेहैं ताते सबजगत् जानतहैं १ पुरारि शिवको धनुष अत्यन्तकठोरहै जाको प्रसिद्ध नाम पिनाकहै जा

पिनाकको देखि रावणबाणेंदेगयो जा रावणनेहरगिरिकैलासको मनकहे हलकाकरि जाने गेंदसम उठाइलियो जैसे विरंचिको आकु जीवनकेभालपर राजत अचल तैसे भूमिके भालपर धनुष भ्राजत अचल काहूको उठावा नहीं उठत ता पिनाकको जो तोरे सो श्रीजानकी को वरै चाहै राजराजा होइ चाहै एक गरीब होइ २।३ ऐसे वचन वन्दीजननके सुनि राजन के तीरऐसेलागे ताते सब राजा आमर्षिउठे महामहा जे बलीवीरहैं सो अनेक प्रकार बल कियो परन्तु धनुष टारे नहीं टरो सबवीरनको अपनी समधनुष करिलियो जड़सरीखे ४ शीशनवाइ लज्जितहैं सब राजा शोचतहैं ताते श्री जो शोभाहै ताते रहितभयो राजनको देखि श्रीजनकजी जानकीजीको निरखि दुःखितह्वै सरोष सहित क्रोधअधीर शैथिल्यता युक्त बोलतभये राजनमें वीररहितजानि सरोष भये अरु धनुष नहिंटूटो जानि अधीरह्वै जनकजी वचन कहे ५ श्रीजनकजी कहत कि सातो द्वीपनके अरु जंबूद्वीपमें नव-खण्ड हैं ते सबभूमिकेराजा इहां आइ जुरे सो लोकविजयीकी कीरति त्रिभुवनमें अनूपकन्या यह बड़ोलाभ सो काहूको न प्राप्ति भई जहां तहां राजा जुरे धनुषके सामने मुख न भयो काहूको ६॥

मू०। डग्योनधनुजनुवीरविगतमहिकिधौंकहुंसुभटदुरे ॥ रोषेलषणविकटभ्रुकुटीकरिभुजअरुअधरफुरे ७ सुनहुभानुकुलकमलभानुजोअबअनुशासनपावों ॥ कोबापुरोपिनाकमेलिगुनमन्दरमेरुनवावों ८ देखौनिजकिंकरकोकौतुकहौंकोदण्डचढ़ावों ॥ लैधावोंभंजोंमृणालज्यों तौप्रभुअनुगकहावों ९ हरषेपुरनरनारिसचिवनृप कुँवरकहेकलवैन ॥ मृदुमुसक्याइरामवरज्योप्रियबंधुनैनकीसैन १० कौशिककह्योउठहुरघुनन्दनजगवन्दनबलऐन। तुलसिदासप्रभुचलेमृगपतिज्योंनिजभक्तनसुखदैन ११॥

टी० । डग्यो न डोलि न सक्यो धनुष ताते मानों भूमि बीर रहितहै कि योधा कहूं चोराइरहे सो वचनसुनि लक्ष्मणजीरोषे ताते भृकुटी टेढ़ीह्वैगई भुजा ओष्ठ फरकि उठे हे भानुकुल कमलके प्रकाश भानु सरीखे रघुनाथजी ! जो आपकी आज्ञापावों तो बापुरो धनुषकीका हकीकतिहै मंदरमेरु सुमेरुगिरिमें गुनमेलि कही रोदालगायनवाइदेउँ ८ ताते आपने सेवकको कौतुकतमाशा देखो तौ कैसे धनुषको चढ़ावों अरु लैकैधावों अरु तोरि डारों जैसे कमलकी नाल तौ प्रभुको अनुगकहे सेवक कहावों नहीं आपनो नाम न राखों इतिशेष ९ कुंवर लक्ष्मणजी श्रेष्ठ वचनकहे ताको सुनि पुरके नारिनर सचिव सहित राजा जनकजी प्रसन्नभये धीरालों सुसक्याय श्रीरघुनाथजी नयननकी सैनदैकै प्रियबन्धु लक्ष्मणजी को बरज्यो १० विश्वामित्रजी कहतेभये हैं हे रघुनन्दन ! बलके मन्दिर जगत्के पूज्य उठो गोसाईंजी कहतहैं कि प्रभु कैसेचले यथा गजदेखि सिंह चलै तैसे धनुषदेखि प्रभु चले अपने भक्तनके सुख देनहार ११ ॥

मू० । जबहिंसबनृपतिनिराशभये ॥ गुरुपदपदुमवन्दि रघुपतितब चापसमीपगये १ श्यामतामरस दामबरण वपुउरभुजनैनविशाल ॥ पीतवसनकटिकलितकंठसुंदर सिन्धुरमणिमाल २ कलकुण्डलपल्लवप्रसूनशिरचारु चौतनीलाल॥कोटिमदनछविसदनवदनविधु तिलकमनोहरभाल ३ रूपअनूपविलोकतसादरपुरजनराजसमाज ॥ लषणकहेउथिरहोहुधरनिधरुधरनिधरनिधरआज ४ कमठकोलदिगदन्तिसकलअँगसजगकरहुप्रभुआजु ॥ चहतचपरिशिवचापचढ़ावनदशरथकोयुवराजु ५ गहिकरतलमुनिपुलकसहितकौतुकहिउठायलियो ॥ नृपगणमुखनसमेतनमितकरिसजिसुखसबहिंदियो ६ ॥

टी० । जब सबराजा निराशभये तब विश्वामित्रजी के चरण कमलन में बन्दना करि रघुनाथ जी धनुष के समीप को गये १ श्यामकमल के भांतसम देहको वरण उरभुजा नेत्रबड़े पीताम्बर कटि में कलित कहे शोभित सुन्दर कंठ तामें गजमुक्तन को मालापहिरे २ कल सुन्दर कानन में कुण्डल पल्लवसहित फूल वारनकेबीच किहे सुन्दर चौगोसिया टोपी लालरंगकी शीशपरधारण कोटिन कामकी छविको सदनकहे स्थानहैं पूर्णचन्द्रमा सम वदनहै सुन्दर विशाल भालपर मनको हरणहारो तिलकहै शोभा युत शोभित ३ राजसमाज सहित जनकपुरके नरनारि आदरते श्रीरघुनाथजीको अनूपरूप सब बिलोकि रहेहैं ताही समय लक्ष्मणजी कहतेभये हे धरणीधर शेष ! थिरह्वैके धरणि पृथ्वी धरणीधर पर्व्वत तिनको धारणकरो ४ हे कच्छप वाराह ! हे दिग्गजहु ! सकल अंगते सजगह्वैकै प्रभुको कार्य करहु धरणी को पोढ़ेथांभहु काहेते श्रीदशरथ को युवराज चपरिकहे सहसा समाजसों निसरितुरत शिवको चाप चढ़ाया चाहतहैं जो कोई अंग ढील रहैगो तो पृथ्वी संभारि न सकहुगे ५ करतलहाथनसों धनुषगहि मुनिके अंगमें पुलक सहित कौतुकही में उठाइ खलनृपगणन के मुखन सहित धनुष को नवाइ सजि रोदाको चढ़ाय सबको सुख देतेभये ६ ॥

मू० । आकरष्योसियमनसमेतहरिहरष्योजनकहियो ॥ भंज्योभृगुपतिगर्वसहित तिहुँलोकविमोहकियो ७
भयोकठिन कोदण्डकोलाहल प्रलयपयोधिसमान ॥
चौंके शिवविरंचि दिशिनायक रहेमूंदिकरिकान ८
सावधानह्वैचढ़ेविमाननचलैनिशानबजाय ॥ उमँगिच
लोआनंदनगरनभजैधुनिमंगलगाय ९ विप्रबचनसुनि
सखीसुवासिनिचलीं जानकील्याय ॥ कुंवरिनिरखि

जैमालमेलिउरकुंवरि रहीसकुचाय १० वरषहिंसुमन अशीषहिंसुरमुनि प्रेमनहृदयसमाय ॥ रामसियाकीसु न्दरतापरतुलसिदासबलिजाय ११ ॥

टी० । श्रीजानकीजी को मनसहित आकर्ष्यों धनुषको खैंचि लियो हरि श्रीरघुनाथजी अरु जनकजी को हृदय हरण्यो परशुरामके गर्वसहित भंज्यो कही तोरिडारयो इहां अनेक रसहैं प्रथम विश्वामित्रजी को वात्सल्यरस यथा कमलकरसों छुकिं धनुष उठाइबो आलम्बन विभावहै अनुराग सों देखिबो अनुभाव है हर्षसंचारीहै पुलकस्वाति कहे वत्सलता स्थायीहै इतिवात्सल्य खलराजन को भयानक रसहै प्रतापवान् वीररूप प्रभुको विभाव है शिर झुकाइ लेबो अनुभाव है दीनता संचारी है भयस्थायी है इति भयानक ॥ जनकजी को करुणारसहै धनुष न टूटिवो विभाव अधीरता अनुभाव ग्लानि संचारी शोकस्थायी इति करुणा रस प्रभुको वीररसते करुणा नाशभई ताते जनकजी को हृदय हरण्यो श्रीजानकीजी को शृंगाररस धनुष चढ़ाइबो विभाव मन लगाइ देखिबो अनुभाव निर्वेद संचारी हृष्टि भोगस्थायी इति शृंगार ॥ परशुरामजीपै प्रभुवीररसहै ॥ यह उक्ति हनुमान्नाटकमें ॥ उत्क्षिप्तंसहकौशिकस्यपुलकैः सार्द्धंमुखैर्नामितं भूपानां जनकस्यसंशयधियासाकंसमास्फालितम् ॥ वैदेहीमनसासमंच सहसाकृष्टंततोभार्गवप्रौढाहंकृतिदुर्मदेनसहितंतद्भग्नमैशंधनुः ७ यथा प्रलयके मेघगरजे तथा कोदण्ड धनुष टूटिवे को कोलाहल शब्द भयो कठिन शिव ब्रह्मा दिक्पाल सब चौंकि उठे कानहाथनसों मूंदिलियो ८ सावधानह्वै विमानन पर चढ़ि २ निशान नगारा बजायदेखिबे को चले नगरते आकाशतक आनन्द उमँगिचल्यौ ताते जय जयकार शब्द मंगलीक गान ह्वै रहाहै ९ विप्रशतानंद के वचन सुनि सखी सौभागिनी श्रीजनकनन्दिनीजी को ल्याइ लैकैचली कुँवर श्रीरघुनन्दन को निरखि जयमालपहिराय कुँवरि

लोकके सकोचते सकुचाय रहिगई दृगनभरि अवलोकि नहीं सकती है १० फूलनको वरषि देवता मुनि अशीष देत अरु प्रेम हृदयमें नहीं समातहै तेहि अवसर श्रीराम जानकी की सुन्दरता पर तुलसीदास बलिहारीहै ११ ॥

मू० । जबदोऊदशरथकुंवरविलोके ॥ जनकनगरनरनारिमुदितमननिरखिनयनजलरोंके १ बयकिशोरघनतड़ितवरणनखशिखअँगलोभारे ॥ दैचितुकैहितुलैसबछविवितुविधिनिजहाथसँवारे २ संकटनृपहिशोचअतिसीतहिभूपसकुचिशिरनाये ॥ उठेरामरघुकुलकलकेहरिगुरुअनुशासनपाये ३ कौतुकहीकोदण्डखण्डिप्रभुजैअरुजानकिपाई ॥ तुलसिदासकीरतिरघुपतिकी मुनिनतिहूँपुरगाई ४ ॥

टी० । जब श्रीदशरथ महाराजके कुमारनको देखे तबते जनकपुरके नरनारि निरखतमें नेत्रनकी पलकैं रोंकि यकटक रहे आनन्दते १ कैसे कुमार जिनकी किशोर अवस्था है मेघवरण तन रघुनाथजी तड़ित वरणतन लक्ष्मणजी ते नखशिखतक अङ्ग सबको लोभावन हारे हैं कैहित प्रीति लगाय सब जग की छवि रूपवित्त दरवि लैकै ब्रह्माने चितु लगाइ निजुहाथसों सँवारे हैं २ कठोर धनुष कोमल रघुनाथजी में प्रेम ताते विदेहजी को असमंजस कि प्रण नाहक करे कोमल प्रभुको कठोर धनुष तूरिबो शोचु जानकीजीको प्रतापी देखि बिचारे कि जो प्रभु धनुष तोरि डारिहैं तो हमारे मुँहमें स्याही लगी याते लजाइ सब राजा शीशनवाइलियो तासमय गुरुकी आज्ञापाइ रघुकुलमें सुंदर सिंहरूप रघुनाथजी उठे ३ कौतुक तमाशामात्रही में धनुष तोरिकै प्रभु जय जयकार सहित जानकीजी को पायो सो कीरति रघुपतिकी मुनि चरणत तीनिहूं लोकमें गायोहै ४ ॥

मू० । मुनिपदरेणुरघुनाथमाथेधरीहै ॥ रामरुखनिर खिलषणकीरजायपायधराधरधरणि सुसाधनकरी है १ सुमिरिगणेशगुरुगौरिहरभूमिसुरशोचत संकोचतसको चीबानिखरी है ॥ दीनबन्धुकृपासिन्धुसाहसीकशीलसि न्धु सभाकोसकोचकुलहूंकीलाजपरीहै २ पेखिपुरुषारथ परखिप्रणप्रेमनेमसियाहियाकी विशेषिबड़ीखरभरीहै ॥ दाहिनोदियोपिनाकु सहमिभयोमनाकुमहाव्यालविकल विलोकिजनुजरीहै ३ सुरहरषतवरषतफूलबारबारसि द्धमुनिकहतशगुनशुभघरीहै ॥ रामबाहुविटपविशाल बौंड़ीदेखियतजनकमनोरथकलपबेलिफरीहै ४ लख्यो नचढ़ावतनतानतनतोरतहूंघोरधुनि सुनिशिवकीसमाधि टरीहै ॥ प्रभुकेचरितचारुतुलसीसुनतसुख एकहीसुला भसबहीकीहानिहरीहै ५ ॥

टी० । विश्वामित्रजीकेचरणकीरजरघुनाथजीमाथपरधारण करे श्रीरघुनाथजीको रूपदेखि लक्ष्मणजी आज्ञादियो सोआज्ञा पाइ धराधर शेष कच्छपादिधरणीको थिरह्वै धारणकरे कदाचित् उलटि न जाइ १ गणेश अरु गुरु शतानन्द औ गौरी महादेव औ ब्राह्मण तिनकोसुमिरि जानकीजी शोचकरिकैसकोचदेती हैं हे देवतो ! तुम्हारी खरीकहे शुद्धसकोची बानिकहे स्वभावहै जो तुमकोआराधै ताको अनहोनी करि देतेहौ दीनबन्धुहौ कृपाअरु शीलके समुद्रहौ ताते साहसीक कही जल्दी कार्य करिदेते हौ सिद्ध हे देवतहु ! हमकोसभाकोसकोच अरु कुलकीलाजपरीहै हमारे कुलमें किसी कन्याने कुलके प्रतिकूल नहीं करीहै ताते हम सभामें सकोच करिकै जयमाल श्रीरघुनन्दनको नहीं पहि-

रावतीहैं सो तुम कृपाकरिकै सबसुलभकरि देउ २ तासमय रा-
जनके पुरुषारथ देखि जनकजीको प्रण परखि पक्का श्रीजनक-
नन्दिनीके हृदयमें बड़ीखरभरी समझि अरु प्रेमसों नेमकिहैहै
कि हमारोविवाह प्रभुके संगहोइ यहविचारि रघुनाथजी पिनाक
को दाहिने दियो तोरिवेको इरादा कियो तब धनुष सहमिकै
मनाकुकहैहलुकाह्वैगयो जैसेजरीओषधीकोदेखि सर्पमहाव्याकु-
लह्वै सिकुरिजाइ तैसे प्रभुकोदेखि धनुषव्याकुलह्वैहलुकाभयो ३
देवतनको महाहरष ताते वारवार फूल वर्षते अरु सिद्धजन
कहत कि शुभशकुनहै यासमय सिद्धीप्रारम्भको मुनिजनकहत
कि शुभघरी है सुकृत धर्म प्रारम्भको सिद्धमुनि कहत कि श्री-
रामबाहुरूपी सुन्दर वृक्षपर जनकजीको मनोरथरूपी कल्पलता
जो फैलीरहै सो फल देखिपरतहै ४ धनुषको उठावत चढ़ावत
तानत तूरिडारत काहूने देखा नहीं केवल शब्दसुनो ऐसीघोर
धुनिभई जामें शिवजीकी अखण्ड समाधि टरिगई गोसाईंजी
कहतहैं कि प्रभुके सुन्दर चरित सुनतमें ऐसो सुखभयो जामें
सबकी हानिहरिगईहै सबके मनोरथ पूरणभयो धनुभंगसुनत
ही देवतनको रावणसों सुखहानि ऋषिनकी यज्ञादिहानि पुर-
वासिनको विवाहसुख हानि सो सब मिटिगई ५ ॥

मू० । राग ॥ रामकामरिपुचापचढ़ायो ॥ मुनिहिं
पुलकिआनन्दनगरनभनिरखिनिशानबजायो १ जेहिं
पिनाकबिनुनाककियोनृपसबहिंविषादबढ़ायो ॥ सोइप्र
भुकरपरसतटूटोजनहुतोपुरारिपढ़ायो २ पहिराईजय
मालजानकीयुवतिनमंगलगायो ॥ तुलसीसुमनबरषिह
रषेसुरसुयशतिहूंपुरछायो ३ ॥

टी० । कामरिपु शिवजी को धनुष श्रीरघुनाथजी चढ़ायो
ताको देखि विश्वामित्रजी प्रेमते पुलकांगभये जनकपुरवासी
आनन्दभये आकाश में देवता नगारा बजाये १ जेहिं पिनाकने

सब राजनको बिनानाक लज्जितकरि दुःखको बढ़ायो सोई पिनाकप्रभु के करकमलछुवतही कैसेटूटो मानौं शिवजीने पढ़ाइ राख्योरहै कि प्रभुकेछुवतही टूटिजायो २ श्रीजानकीजीरघुनन्दन को जयमाला पहिरायो सो छविदेखि युवतीजन मंगलकोगान करती हैं गोसाईंजी कहत कि देवता हरषितह्वै फूलवरषत प्रभु को सुयश तिहूंलोकमें छावा है ३ ॥

मू० । जनकमुदितमनटूटतपिनाकके ॥ बाजेहैंबधावने सुहावनेमंगलगानभयोसुखएकरसरानीराजारायके १ दुंदुभीबजाइगाइवरषिफूल सुरगणनाचैनायकहूनाक के ॥ तुलसीमहीशदेखिदिनरजनीशजैसे सूनेपरेशून्यसे मानोमिटायेआंकके २ ॥

टी० । पिनाकके टूटतही महाराज विदेहजी आनन्दमनभये ताते सोहावने बधावने बाजे अरु मंगल गानभयो ताको सुख राजारानी अरु गरीब सबको एकरस भये १ देवतनके गण दुन्दुभी बजाइ गाइ गाइ हरषि हरषि फूल बरषि नाक इंद्रपुरी के नायकइन्द्रसहित सबदेवता नाचत गोसाईंजी कहत कि अपर राजा कैसे हैं मानों दिनमें चन्द्रमा प्रकाशरहित अरु जैसे अंक बिना शून्यबिनगनती है २ ॥

मू० । लाजतेनसाजिसाज राजाराउरोषेहैं ॥ कहा भोचढ़ायेचापब्याहह्वैहै बड़ेखायेबोलैखोलैसेलअसिचम कतचोखेहैं १ जानिपुरजनत्रसेधीरदैलषणसेबलइनको पिनाकनीकेनापेजोखेहैं ॥ कुलहिलजावैबालबालिशबजावैंगालकैधौंकूरकालबश तमकित्रिदोखेहैं २ कुंवर चढ़ाईभौंहैं अबकोविलोकैसोहैं जहँतहँभेअचेतखेतकैसे धोखेहैं ॥ देखेनरनारिकहैंसागखाइजायेमाइबाहुपीनपा

वारनपीनाखाइपोखेहैं ३ प्रमुदितमनलोककोकनदको
कगनरामकेप्रतापरविशोचसरशोखेहैं ॥ तबकेदेखैयातो
षेतबकेलोगनिभलेअबकेसुनैयासाधुतुलसीहुतोखेहैं ४ ॥

टी० । यथा रांड युवती लाज छांड़ि शृंगारकरै तैसे राजासव वीरता रहित छांड़िकै रांड़ शृंगारयुद्धको साजसजिकहो झिलम वख्तर कूंड़ी दस्ताना पहिरि धनुष बाणलैके रोषेलाजतौ नहीं है परन्तु रोषसहित कहत कि चापचढ़ाये काभयो विवाह बड़े खाये होई अस बोलिकै असि जो तरवारि खोलि कहें मियान ते निकारि सांग आदिलैके चोखेकही तेज है चमकावतहैं १ पुरवासिनको डेराने जानि धीरजदै लक्ष्मणजी हँसे कि इनको बल तौ पिनाकने नीकी तरह नापि जोखि लियेहै इनको भय कोई नकरौ बालकीसी बुद्धि करि कुलको लजावत बालीशकहे अज्ञानते झूठागाल बजावतेहो तातेचुपाइरहैंगेनाहींतौ त्रिदोष कही कफ पित्त वात तीनिके दोषते सन्निपातहोतहै तव आपुही उछरि उछरि मरिजाति है तैसे येभी त्रिदोषहैं यहां कन्या देखि कामवश सो वात है ताके पाइवेके लोभ सो कफ है प्रभुसों क्रोध सो पित्तहै यह त्रिदोषसन्निपातवशहैं तातेतमकतहैं तौ काल वशहैं २ इतना कहि कुँवर लक्ष्मणजी क्रोधकरि भौंहैं चढ़ाये तिनके सामने अबकोई राजा नहीं देखिसकत जहांतहां सब अचेत ह्वैरहे ठाढ़े ह्वै जैसे खेतके ऐसे धोखे विना जानकी तिय की दशा देखिकै पुरकेनरनारि कहतहैं कि राजनकी मातासाग खाइकै जांयो है कहे उत्पन्न करेहै पीनाकहे तिलकी खरी खाइ खाइ पावरनकी बाहु ईपुष्टभई हैं इति व्यंग है ३ लोक में जे सज्जनते शोचरूपी जल में बूड़ेरहे सामान्यजीव तैसे शोच रात्री में चकवाचकसे दुःखितरहे जब श्रीरघुनाथजीको प्रतापरूप रविउदयभयो तव शोचसरको जल सोकिगयोसज्जनकमलप्रफुल्लितभये शोचरात्रीनाशभई चक्रवाकसे सब प्रसन्नभये तव के

भलेलोग देखैया तोषे अबके सुनैया साधुन अरु तुलसी भी तोषे ४ ॥

मू० । जैमालजानकीजलजकरलईहै ॥ सुमनसुमंगलसगुणकीवनाईमंजु मानहुँमदनमालीआपुनिरमईहै १ राजरुखलखिगुरुभूसुरसुवासिनन्ह समयसमाजकीठवनिभलीठईहै ॥ चलीगानकरतनिशानबाजेगहगहेलहलहेलोचनसनेहसरसईहै २ हनीदेवदुंदुभीहरषिबरषतफूलसुफलमनोरथभोसुखसुचितईहै ॥ पुरजनपरजनरानीरावप्रमुदितमनसाअनूपरामरूपरंगरईहै ३ शतानन्दशिषसुनिपाईपरिपाहिराय मालसियापियाहियासोहतशुभईहै ॥ मानसतेनिकसिविशालसुतमालपरमानहुँमरालपाँतिबैठीबनिगईहै ४ हितनकोलाहुकीउछाहकीविनोदमोद शोभाकीअवधिनाहिंअबअधिकईहै ॥ यातेविपरीतअनुहितनकोजानिलीनीगतिकहैप्रकटखुनसयासीखईहै ५ निजनिजवेदकीसप्रेमयोगक्षेममई मुदितअशीषविप्रविदुषनिरदईहै ॥ छवितेहिकालकीकृपालसीतादुल्लहुकीहुलसतहियातुलसीकेनितनईहै ६ ॥

टी० । सुमन महुवाके सुमंगल लालपाटके डोरा सगुण दूबताकी सुन्दरमाला मानों मदन माली है आपुही निरमाण कीन्हीं है ऐसी सुन्दरजयमाला श्रीजानकीजी करकमलनमें लिहे हैं महुवाकेफल दूबके मालाको प्रमाणरघुवंशसे ॥ एवंतयोक्तमवेक्ष्य किंचिद्विस्रंसिदूर्वाकमधूकमाला । ऋजुप्रणामक्रियतैवतन्वीप्रत्यादिदेशैनमभाषमाणाइतीदुमतीस्वयंवर १ गुरुशतानन्दताहितेअपरब्राह्मण सुवासिनी सोभागिनी स्त्री ते सब राजा विदेहजीको रुख जानि तेहिसमैको जो समाज ताको भलीभांति ते ठई कहे

बनाइके आगे श्रीजानकीजी जयमाल लिहें पीछे सखी गानकरत चलीं तासमय में निशान जो है बाजा गहगहेकही उत्साहके भरे बाजत भये अरु श्रीजानकी श्रीरघुनन्दनके परस्पर नेहकीसरसई कहे अधिकाई ते लोयनकही नेत्रनकी अवलोकनि लहलहे कही ललितदृष्टिदेखबेकी प्यास है २ सो समाज देखि देवता आनन्दह्वै दुन्दुभी बजाइ फूल वर्षनलगे अरु सबको मनोरथ सुफल भये ताते सुख सुचिताई कही थिरताई हृदयमें भई ताते पुरवासी प्रजालोगन परिवारसहित रानी राजा श्रीजानकीजी आनन्दमन समेत अनूप जो श्रीरघुनाथजीको रूप ताही रंगमें रँग गये ३ शतानन्दजीकी आज्ञा सुनि श्रीमिथिलेशनन्दनीजी प्रथम पांयलागि आनन्दते जयमालपहिरायदियो सो पिया जो श्रीरघुनन्दन तिनके ऊपर कैसो शोभितहोत मानों मानसरसों निकसि हंसनकी पांति सुन्दर तमाल वृक्षपर बैठीसी बनिगई ४ हितू जे हैं तिनके लाभ अरु उत्साह अरु विनोदके विलासको आनन्द अरु शोभाकी अवधिकहे मर्यादा अवअधिकी नहीं ह्वैसकत काहेते अवधमिथिला सो धाम श्रीदशरथ महाराज जनकसे समधी कौशल्या सुनैनासी समधिनी श्रीरघुनन्दन से दुल्लह श्रीजनकनन्दनीसी दुलहिनि ताहू में प्रणस्वयंवर जगविजयी कीरति ऐसी सुखकी समाज न भई है न है न होइगी ताते याते अधिक नहीं है अरु जे या आनन्दते विपरीत ते अनहितहैं तिनकी गति जो कहिबेकी सो जानिलीजै खुनस खारीखाव कहे क्रोधरूपी क्षयीवाली खांसी है जामें शीघ्र मृत्युहोइहै ५ ब्राह्मण पण्डित ते अपने अपने वेदनके आशीर्वाद प्रेमसहित क्षेमयोगमयी सब देते भये कृपाल सीता दुल्लहकी छवि त्यहि समयकी तो नितनई तुलसीके हृदय में हुलसत है ६॥

मू०। लेहुरीलोचनकोलाहु॥ कुँवरसुन्दरसाँवरोसखि सुमुखिसादरचाहु १ खैंचिहरकोदण्डठाढ़ेजानुलम्बित

बाहु ॥ रुचिरउरजयमालराजतदेतसुखसबकाहु २ चितै चितहितसहितनखशिखअंगअंगनिबाहु ॥ सुकृतनिज सियरामरूपविरंचिमतिन्हसराहु ३ मुदितमनपरबदनशोभाउदितअधिकउछाहु ॥ मनहुँदूरिकलंककरिशशिसमरसूधोराहु ४ नैनसुषमाऐनहरतसरोजसुन्दरताहु ॥ बसततुलसीदासउरपुरजानकीकोनाहु ५ ॥

टी०। हे सुमुखी सखी सांवर कुँवर सुन्दरको आदरते चाहु कही देखु अरु हे सखिउ सबमिलि नेत्रनको लाहुलेहु भरि भरि नेत्रनदेखहु १ हरकोदंड जो पिनाक ताको खण्डिकै ठाढ़ेहैं जानु टिहुनिनतक लम्बित भुजाहैं अरु सुन्दर उरमें जयमाल विराजत सो सबको सुखदेनहार भाव याकी प्यास प्रथमहीते रही ताते २ चित्तसों हित सहित देखु तौ अंग अंगमें निबाहु कही जहांजस चाही तहां तस नखते शिखातक शोभित है ताते श्रीजनकनंदनी रघुनन्दनकी शोभा अरु आपनो सुकृत जाते यह शोभादेखिबे को मिली जिन यह शोभारची ब्रह्माकी बुद्धि इन तीनिहूंकी प्रशंसाकरू ३ प्रसन्नहै मन ताते श्रेष्ठबदन की शोभा अधिकउत्साह उत्सवसहित प्रकाशमान है सो मानों मलिनतारूप कलंक दूरि करि पिनाकरूप राहुके सम्मुख ज्योति प्रसन्नमनते चन्द्रमा विराजमान है ४ शोभाके मन्दिर नेत्र ते कमलकी शोभाहरेलेत सोई जानकीको नाहु तुलसीके उररूपी पुरमें वासकरत ५ ॥

मू०। भूपकेभागकीअधिकाई ॥ टूटोधनुषमनोरथपूजोविधिसबबातबनाई १ तबतेदिनदिनउदयजनककोजबतेजानकीजाई ॥ अबयहभागसुफलभयोजीवनत्रिभुवनविदितबड़ाई २ बारबारऐहैंपहुनाई रामलषणदोउभाई ॥ यहिआनन्दमगनपुरवासिनदेहदशाबिसराई ३

सादरसकलविलोकतरामहिंकामकोटिछविछाई ॥ यहसु खसमयसमाजएकमुखक्योंतुलसीकहैगाई ४ ॥

टी० । हे सखी विदेह महाराजकी भाग्य अत्यन्त अधिक हैं ताते धनुषटूटो अरु मनोरथ पूर्णभयो विधाताने बात बनाइदियो १ काहेते भूपकी भाग्य अधिकहैं जादिनते श्रीजानकीजी जन्म लियो तादिनते विदेहजीको उदयकहे बढ़ती दिनप्रति होतगई अब यह श्रीराम जानकीको व्याहभये सबको जीवनजन्म सुफल भयो ताकी बड़ाई तीनिहूं लोकमें विदित है २ श्रीरघुनन्दन लक्ष्मणलाल दोऊभैया पहुनाई में वारवार इहांको आवहिंगे तबते नेत्रनभरि देखब यही आनन्दमें मगन पुरवासी सब देहकी सुधि बिसराये हैं ३ जहां कोटिन कामकी छविछई है ऐसो रूपरघुनन्दनको सब प्रेमसहित आदरते देखतहैं तेहि समयकी समाज को सुख तुलसी एकमुखसों कैसे गाइकै कहै ४ ॥

मू० । मेरेबालककैसेधौंमगनिबहैंगे॥ भूखपियासशीत श्रमसकुचनिक्योंकौशिकहिंकहैंगे १ कोभोरहीउबटिअ न्हवैहैकाढ़कलेऊदैहै ॥ कोभूषणपहिराइनिछावरिकरि लोचनसुखलैहै २ नयननिमेषनज्योंजोगवतनितपितुप रिजनमहतारी ॥ तेपठयेऋषिसाथनिशाचरमारनमख रखवारी ३ सुन्दरसुठिसुकुमारसुकोमलकाकपक्षधरदो ऊ ॥ तुलसीनिरखिहरषिउरलैहौंविधिकैहैदिनसोऊ ४ ॥

टी० । श्रीकौशल्याजी कहती हैं कि मेरेबालक कौन विधिते मार्गमें निर्वाह करिहैं भूख पियास शीतकहे जाड़े को श्रम सो संकोचवश विश्वामित्रजी सों कैसे कहिहैं १ प्रभातकाल उबटनलगाइ को स्नानकराइ रुचिपूर्वक कलेऊको खवाइ अरु भूषणपहिराइ निछावरि करि नेत्रनको लाभ को लेहै २ जिनको मातापिता परिजन कहे परिवार सब कैसे जोगवत जैसे पलकें नेत्रनको जो-

गवत तैसे संवरघुनन्दनको जोगवत रहैं तिन बालकनको ऋषि के साथ निशाचरनके मारिबेको अरु यज्ञकी रक्षा करिबेहेत पठाये हैं ३ सुठि सुन्दरकहे अत्यन्तसुन्दर सुकुमार कोमल थोरी अवस्था शीशपर काकपक्ष कहे जुलफैं धारण ऐसे दोऊभाइनको निरखिकहे नेत्रनसों देखि आनन्दह्वै हृदयमें लगाइलेहौं श्रीकौशल्याजी कहती हैं हे विधाता ऐसो जो दिन सो कब ह्वैहै ४ ॥

मू० । ऋषिनृपशीशठगौरीडारी ॥ कुलगुरुसचिवनिपुननेत्रनऔरेबनसमुझिसुधारी १ सिरससुमनसुकुमारकुंवरदोउसूरसरोषसुरारी ॥ पठयेबिनहिंसहायपयादेहिकेलिबानधनुधारी २ अतिसनेहकातरमाताकहै सुनिसखिवचनदुखारी ॥ बादवीरजननीजीवनजगक्षत्रिजातिगति भारी ३ जोकहिहैफिरेरामलषणघर करिमुनिमखरखवारी ॥ सोतुलसीप्रियमोहिंलागिहैज्योंसुभायसुतचारी ४ ॥

टी० । ऋषिविश्वामित्रजीने श्रीदशरथ महाराज के शिरपर धर्मरूपी ठगौरीडारी श्रीरामरत्न ठगिलैगये कुलगुरु वशिष्ठ अरु सुमंत्रादि मंत्री सब विचार में विपन्नकहे चतुरहैं परन्तु ऐसी औरेबको काहे न सुधारा समुझिकै कि राक्षसनते युद्ध बालक कैसे कराहिंगे कोईतरह मुनिको समुझाइदेते १ सिरसाके फूल सम कोमलबालक औ सुरारि राक्षस महारोषी जे जन्मपर्यंत क्रोध नहीं छांड़त महाशूर मरेपरभी मारुमारु बोलतेहैं तिनसे युद्धकरिबेको विनासहाय विनासेना विना रथ पयादे खेलिबेके धनुष वाण लिहे बालकनको पठाइ दिये २ इत्यर्थः ॥ अत्यन्त सनेहते कातर कहे आरतह्वै माता कहती हैं तिनके वचन सुनि सखी सब दुःखितह्वै कहती हैं कि हे सखी बड़ीऔरेबहै तब माता कहतीं कि हे सखी वीरकी माताको जीवन जगमें बादिहै काहेते क्षत्रियजातिकी गति बड़ीभारी कठिन है संग्राममें सन्मुख

जूझिवो धर्म है याते ३ मुनिविश्वामित्रकी यज्ञकी रक्षाकरि श्रीरघुनन्दन लषणलाल घरको फिरे कुशलपूर्वक आवतहैं ऐसे वचन जो आइकही कौशल्याजी कहती हैं कि मोको सहज में कैसो प्रियलागी जैसे मेरेवालक चारिउभाई प्रियलागतहैं इहां कौशल्याजी के वचननमें यह अभिप्रायहै कि संग्राम जीतिकै वीरतासहित कुशलआवैं यह क्षत्रिय को धर्महै ४ ॥

मू० । जबतेलैमुनिसंगसिधाये ॥ रामलषनकोसमाचारसखितबतेकछूनपाये १ बिनपानहींगमनफलभोजन भूमिशयनतरुछाहीं ॥ सरसरिताजलपानशिशुनकेसंगसुसेवकनाहीं २ कौशिकपरमकृपालुपरमहितसमरथसुखदसुचाली ॥ बालकसुठिसुकुमारसकोचीसमुझिशोचमोहिं आली ३ वचनसप्रेमसुमित्राकेसुनिसबसनेहवशरानी ॥ तुलसीआइभरततेहिअवसरकहीसुमंगलबानी ४ ॥

टी । सुमित्राजीकी उक्तिहै कि हे सखी जबते मुनिसाथ लैकै गये तबते श्रीरामलषणके समाचार कछू नहीं पाये १ विनापनहीं गमन फल भोजन भूमि में शयन वृक्षकी छाहीं में रहिवो तड़ागादिनको जलपीबो अरु बालकन के साथ में कोऊ सुन्दर सेवकभी नहीं है २ विश्वामित्रजी तो परमकृपालु परमहितकारी अरु समरथ परमसुचाली हैं सुखके देनहार हैं परन्तु बालक अत्यन्तसुकुमार अरु सकोची हैं ताते हे आली मोको शोच यहहै कि सकोचते कछु कहैंगे नहीं ३ ऐसे प्रेमसहित वचन सुमित्राजीके सुनि सबरानी सनेहवशहोतीभई गोसाईंजी कहत कि ताहीसमय सुमंगल श्रीरघुनाथजी के ब्याह के समाचारकी बानी भरतजी कहते भये ४ ॥

मू० । सानुजभरतभवनउठिधाये ॥ पितुसमीपसबसमाचारसुनिमुदितमातुपहँआये १ सजलनयनतनपुलक

अधरफरकतलखिप्रीतिसुहाई ॥ कौशल्यालियेलायहृदय
बलिकहौकछुहैसुधिपाई २ शतानन्दउपरोहितअपनेति
रहुतिनाथपठाये ॥ क्षेमकुशलरघुवीरलषनकीललितप
त्रिकालाये ३ दलिताड़कामारिनिशिचरमखराखिविप्र
तियतारी ॥ दैविद्यालैगयेजनकपुरहैंगुरुसंगसुखारी ४
करिपिनाकपनसुतास्वयंवरसजिनृपकटकबटोरयो ॥ राज
सभारघुवरमृनालज्योंशम्भुशरासनतोरयो ५ योंकहि
शिथिलसनेहबंधुदोउ अम्बअंकभरिलीन्हें ॥ बारबारमु
खचूमिचारुमणिवसननिछावरिकीन्हें ६ सुनतसुहावनि
चारुअवधघरघरआनन्दबधाई ॥ तुलसिदासरनिवासर
हसवशसखीसुमंगलगाई ७ ॥

टी० । सहित शत्रुहन भरतजी भवनको शीघ्रधाये पिता के पास सब समाचारकी बानी सुनिकै आनन्दह्वैके माताके पासको आये १ नेत्रनमें जलभरो देह प्रेमसों पुलकित खुशीसों ओठ फरकत देखि प्रीतिते मन में भावते भये ताते श्रीकौशल्याजी हृदयमें लगाय पूछती हैं कि बलिजाउँ कहौ कछु सुधि रघुनन्दन की पाईहै २ भरतजी बोले कि तिरहुतिनाथ जनकजी अपने उपरोहित शतानन्द को पठाये ते श्रीराम लषणकी क्षेमकुशल की सुन्दर पत्रिका लाये हैं ३ ताको हाल कहते हैं मार्गमें ताड़का को दले निशाचरन को मारि यज्ञकी रक्षाकरे ऋषितिया तारि अहल्यातारे श्रीविश्वामित्रजी बाणविद्या पढ़ाय जनकपुर लैगये तहां गुरु विश्वामित्रकेसाथ सुखीहैं ४ तहां जनकजी पिनाकको पनकरे कि जो धनुषतोरै सो जानकी विवाहै याहीहेतते सुताको स्वयंवर रचि राजनकी सेन बहुत बटोरे तेहि राजसभा बिषे श्रीरघुनन्दनजीने कमलनालसम शिवकोधनुष तोरे ५ ऐसा कहि सनेह में शिथिल प्रेमसों भरिगये दोऊभाई तब अम्बा मात कौ-

शल्याने हृदयमें लगायलिहे वारबार मुख चूमि चूमि सुन्दरीमणी अरु वसनन को निछावरि करती भई एसे हालसुनि चाह जो रही खुशी सुनिवेकी सो सुहावनी सुनि अवधमें घरघरमें आनन्दवधावन बाजनलगे गोसाईजी कहत कि रनिवास रहसकहे आनन्द के वशते मगनजानि सखी सुमंगल को गान करतभई ६ । ७ ॥

मू० । रामलषणसुधिआईबाजैअवधबधाई ॥ ललितलगनलिखिपत्रिकाउपरोहितकरजनकनरेशपठाई १ कन्याभूपविदेहकीरूपकीअधिकाई ॥ तासुस्वयंवरसुनिसबैआयेदेशदेशकेनृपचतुरंगबनाई २ पनपिनाकपविमेरुतेगरुताकठिनाई ॥ लोकपालमहिपालबानइतदशमुखसकेनचापचढ़ाई ३ तेहिसमाजरघुराजकेमृगराजजगाई ॥ भंजिशरासनशंभुकोजगजयकलकीरतितियतियमनिसियपाई ४ पुरघरघरआनन्दमहामुनिचाहसुहाई ॥ मातमुदितमंगलसजैं कहैंमुनिप्रसादभयेसकलसुमंगलमाई ५ गुरुआयसुमंडपरचेसबसाजसजाई ॥ तुलसिदासदशरथबरातसाजिपूजिगणेशहिचलेनिशानबजाई ६ ॥

टी० । अवधपुरवासी परस्पर वार्त्ता करत हैं आजु श्रीरघुनन्दन लषण की खबरि सुन्दर आई ताते अयोध्याजी में बधाई बाजत है कौन खबरि शुभलगन की पत्रिकालिखी ज्ञानेश राजा जनकजी अपने उपरोहितके हाथ पठायोहै१ राजाजनककीकन्या परमरूपवन्त ताके हेत स्वयंवर रचे सो सुनि देश देश के राजा चतुरंगिनिसेना हाथी घोड़ा पैदल रथ साजिसाजि सब आये २ धनुष तोरिबेको पनकरे सो सुमेरुते गरू अरु वज्रते कठोर ताके तोरिबेमें लोकपाल सब देशके राजा अरु बानइत बाणासुर अरु रावणादि सब हारिगये हैं कोऊनधनुषको उठायसक्यो ताते लज्जाइरहे ताहीं समाज में अनुचितवचनकहि जनकजी रघुराजके मृगराज

सिंहरूप श्रीरघुनाथजी तिनको जगावतेभये तेही समय रघुनाथ जी शम्भुकोधनुष तोरि जगमें जयजयकार अरु सुन्दरकीरति अरु त्रिनमें शिरोमणि श्रीजानकीजी को पाये ४ चाहकहे जो मनोकामनारहे सो पूर्ण भयो ताते घरघरमें बधाई बाजतहै अरु माता आनन्दते मंगलके कार्य सजत अरु कहत कि जो सुमंगल भयो सो मुनिके प्रसादते सब भयो ५ वशिष्ठजी की आज्ञापाइ सुन्दरदिव्य माड़वकी रचनारचतेभये अरु हाथी घोड़े रथ पालकी बाजा नाच रंगादि सब साजसजि गोसाईंजी कहत कि श्रीदशरथ महाराज गौरी गणेशको पूजि निशान डंका बजाइ बरात सजि आनन्द ते जनकपुरको चलते भये बीच वासकरि जनकपुर में पहुंचे ६ ॥

मू० । मणिमयमंजुमनोरथहोरी ॥ सोहरगौरिप्रसादएकतोकौशिककृपाचौगुनोभोरी १ पनपरितापचापचिन्तानिशिशोचसँकोचहितननहिंथोरी ॥ रविकुलरविअवलोकिसभाहितक्षितवारिजवनविकसोरी २ कुँवरिकुँवरसबमंगलमूरति नृपदोउधरमधुरंधरधोरी ॥ राजसमाजभूरिभागीजिन लोचनलाभलह्योयकठोरी ३ ब्याहउछाहरामसीताको सुकृतसकेलिविरञ्चिरचोरी ॥ तुलसीदासजानैसोइयहसुखजेहिउरबसैमनोहरजोरी ४ ॥

टी० । जब जनकपुर में बरात आई ताको देखि सखी परस्पर वार्त्ता करती हैं हे सखी जो मन में मनोरथरहे एक श्रीरघुनन्दन जानकी के विवाहको सो शिवपार्वती के प्रसादते एक ॥ बृहद्विष्णुपुराणे ॥ महादेवप्रभावाञ्चस्वशक्त्यागौरवेनच ॥ कौशिकेन सहायातोरामोदशरथात्मजः ॥ अरु श्रीविश्वामित्रजी की कृपाते चौगुनो भयो अर्थात् चारिउ कन्यनके योग्य चारिसुंदर राजकुमार प्राप्तभये ताते चारिहुब्याह सुखपूर्वक अबहोहिंगे जबतेबरातआई तबते अरु विवाह भये तककी बातनको बीजहै यह पद १ प्रग

करिबेको परिताप अरु चापकी गरुवाई कठोरताकी चिन्ता सोई रात्री है तामें धनुष न टूटेको शोच प्रण छोड़िबे कहवेको संकोच ताही अंधकारी में हितनकोचित संपुटितरहे तेई रविकुल कमल प्रकाशक रविरूप श्रीरघुनन्दनकोदेखि सभारूपी तड़ागमें हितन के चित्त कमलवनसम प्रफुल्लितभये २ कुंवरिसब श्रीजानकी आदिते मंगलमूर्त्ति मंगलदात्री हैं॥ प्रमाणं मार्कंडेयसंहितायां ब्रह्मावाक्यं ॥ सीतामातरमाश्रयाभिभजतां मांगल्यसंपत्प्रदाम् ॥ कुंवरकेहेरघुनन्दनआदि जिनकोनाम रूप लीलाधामचरित्र मंगलके मूलहैं ॥ लीला भागवते ॥ रामस्यकोशलेंद्रस्यचरितंकिल्बिषापहम्॥ रूप कौशलखण्डे॥ कदायंसुभद्रगुणमंगलरम्य मूर्त्तिः ॥ नाम हनूमन्नाटके ॥ कल्याणानांनिधानंकलिमलमथनं पावनंपावनानाम् ॥ धाम सत्योपाख्याने ॥ स्वर्गद्वारसमंतीर्थं नास्तिब्रह्मांडगोलके ॥ इति श्रुतिकीर्त्ति उर्मिला मांडवी श्रीजानकी आदि कुमारी मंगलकी मूर्त्ति हैं अरु शत्रुहन लक्ष्मण भरत श्रीराम आदि सब कुंवर मंगल के मूर्त्ति हैं नृपकहे दोऊ राजा धर्म्मकी धुरी धारण करिबेमें धुरीणकहे वली हैं प्रथम श्रीदशरथ धर्मधुरीण॥प्रमाणरघुवंशे ॥ पितुरनन्तरमुत्तरकोसलां समधिगम्य समाधिजितेन्द्रियः ॥ दशरथःप्रशशासमहारथो यमवतामवतांच धुरिस्थितः १ विदेहधर्मात्माप्रमाणंबाल्मीकीये ॥ सोभिवाद्यशतानन्दंजनकंचातिधार्मिकम् ॥ राजसमाज अवधपुरवासी औ जनकपुर वासी ते भूरिभागी कहे कृतार्थरूप नित्यपार्षद प्रभुके हैं॥ प्रमाणंवृहद्विष्णुपुराणे ॥ अयोध्याकायथानित्याःसर्वमंगलरूपिणः॥ तथैवमिथिलाश्चैव सर्वमंगलविग्रहाः१ नित्यानन्दरसस्वाद रूपिणोरामपार्षदाः॥ श्रीरामाराधिकानांच निवासार्थेविशेषतः२॥ तातें राजसमाज वड़े भागी हैं जे नेत्रन को लाभ इकट्ठा श्री राम जानकी के दरशपाये ३ श्रीरामजानकी के व्याहको उत्साह सबकी सुकृति बटोरि ब्रह्माने रचो है प्रथम सुकृति श्रीदशरथ कौशल्या॥ प्रमाणं वशिष्ठसंहितायां॥ रामादीनांकुमाराणांवात्स-

ल्यानन्दउत्तमः ॥ यादृशोभुज्यतेराज्ञाश्रीमद्दशरथेनच १ कौशल्या प्रमुखाभिश्च तथायोध्यानिवासिभिः ॥ कुत्रचित्ताद्दशोनास्ति नभूतोनभविष्यति २ मिथिलेशजीकीसुकृति ॥ प्रमाणंवृहद्विष्णु पुराणे ॥ विशेषतोराजरत्नंजनकोनामनामतः ॥ जानकीयत्रचोत्पन्ना निमिवंशप्रकाशिनी १ यस्यभक्तिप्रभावेणरामोदाशरथिः प्रभुः ॥ जामातृत्वंसमापन्नो लोकोत्तरफलप्रदः २ इत्यादिसबकी सुकृति गोसाईजी कहत कि श्रीरामजानकी मनके हरणहारी जोड़ी जाके उरमें सदाबसतहै सो यहिसुखको हालजानतहै ४ ॥

मू० । राजतरामजानकीजोरी ॥ श्यामसरोजजलद सुन्दरवर दुलहिनितड़ितवरणतनगोरी १ ॥

टी० । लग्नशोधि पाणिग्रहण दिनको अवसरजानि श्रीविदेह जी श्रीदशरथ महाराजको पुत्रनसहित बोलावतेभये तेहिअवसरमें रघुनाथजीकेपायँन में महाउरलगाइ जरीकोजामापहिराय करमें कंकण कण्ठमें विविधप्रकार के माला पहिराय कानन में कुण्डल नेत्रनमें अञ्जन नासिका में बुलाका भालपै तिलक शीशपै जरकसीपाग तापै कञ्चनमणिजटित और कांधेमें दिव्य उरमाल कटि में पटुका भुजमें अंगद इत्यादि दुल्लहरूप साजि अपर राजकुमारन सहित सुन्दरवेगवान् भूषित वाजिपरसवार ह्वै सहित बरातसजि बाजा गान रंगसहित अथवा देखि पुरवासी आगे मिलि द्वारपर सबआये श्रीसुनैनाजी आरती साजि सखी संगमें गानकरत द्वारपर प्रेमसों दूलहरूपदेखि परछनिकरि मंगल अर्घदेत भीतरको लावती भई सुन्दर सिंहासनपर बैठाइ वेद विधानसहित विवाहको प्रारम्भ शतानन्द वशिष्ठजी करनेलगे समय जानि सखिन श्रीजानकीजी को अंग अंगमें भूषण पहिराय सेंदुर जावक वस्त्रादि पहिराइ अर्घदेत लावतीभई तेहि समय श्यामकमल जलज मेघवर्ण दुल्लहरूप श्रीरघुनाथजी तड़ित

वरणगौररूप दुलहिन श्रीजानकीजी ऐसीजोड़ी श्रीरामजानकी की राजत है १ ॥

मू० । व्याहसमयसोहतवितानतरउपमाकहुंनलहत मतिमोरी १ मनहुंमदनमंजुलमण्डपमहँछबिशृंगारशोभासोइथोरी २ मंगलमयदोउअंगमनोहरग्रन्थितचूनरिपीतपिछौरी ॥ कनककलशकहँदेतभावँरीनिरखिरूपशारदभईभोरी ३ मुदितजनकरनिवासरहसवशचतुरनारिचितवहिंतृणतोरी ॥ गाननिशानवेदधुनिसुनिसुरवरषतसुमनहरषकहैकोरी ४ नैननकोफलपाइप्रेमवशसकलअशीशतईशनिहोरी॥तुलसीजेहिआनन्दमगनमनक्योंरसनावरणैसुखसोरी ५ ॥

टी० । विवाह समय स्वस्त्ययन भूमिपूजा गणेशगौरि पुजाय विष्टरदै मधुपर्क आदि सबवेदविधान शतानन्द अरु वशिष्ठजी करवावते भये समय जानि श्रीसुनैनाजी को बोलाये श्रीविदेहजी गांठिजोरि कञ्चनथार में जललै श्रीरघुनाथजी के चरण कमल प्रेम सहित पखारे तासमय में वशिष्ठजी अरु शतानन्द ते दोऊ दिशिकी वंशावली उच्चारकरें जाको साखोच्चार कही इत्यादि ॥ विधिपूर्वक महाराज श्रीविदेहजी कन्यादान अनेक प्रकार मणि अरु भूषण देतेभये तासमय विधिपूर्वक पाणिग्रहण दयो वेद विधान सहित चौरासी आहुतिकरि होमकरि अग्नि आदि देवता पूजनपाइ आपुको कृतार्थमानि आशीर्वाददेत प्रेम में मगन हैं महाराज विदेहजी को तेहि समय को सुख कहिवे योग्य नहीं है अपर सब प्रेमकेवश विदेह सम ह्वैगये तेहि व्याह समय में श्रीरघुनन्दन अरु श्रीजनकनन्दिनी दिव्यमाँड़व तर सोहत तिनकी समतालायक उपमा कविकीमति कहूंनहींपावत सबढूंढ़ि हारि कविके सुभावते कछुकहत हैं ॥

श्री महाराज दशरथ और जनकजीकी वंशावली ॥

१ ब्रह्मा
२ मरीचि
३ कश्यप
४ विवस्वान
५ वैवस्वत
६ इक्ष्वाकु

७ निमि ८ सिथिल ९ जनक १०उदावसु११ नन्दीवर्द्धन १२ सुकेत १३ देवरात्र १४ बृहद्रथ १५ महावीर १६ सुधृत१७ धृष्टकेतु १८ हर्यश्व १९ मरु २० प्रतिन्धक २१ कीर्तिरथ २२ देवमीढ़ २३ महीधृक२४ कीर्त्तिरात २५ महारोम २६ स्वर्णरोम २७ ह्रस्वरोम २८ सीरध्वज २९ कुशध्वज ॥

७ कुक्षि ८ विकुक्षि ९ बान १० अनरण्य ११ पृथु १२ त्रिशंकु १३ धुंधमार १४ युवनाश्व १५ मान्धाता १६ सुसंध्या १७ ध्रुवसंधि १८ भरत १९ असित २० सगर २१ असमंजस २२ अंशुमान २३ दिलीप २४ भागीरथ २५ काकुत्स्थ २६ रघु २७ कल्माषपाद २८ संषन २९ सुदर्शन ३० अग्निवर्ण ३१ शीघ्रगम ३२ प्रसुक ३३ अम्बरीष ३४ नहुष ३५ ययाति ३६ नाभाग ३७ अज ३८ दशरथ ३९ श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न ॥

मानों कामरूप सुन्दर मण्डपतरे छवि यथा सांग द्युति लावण्य रूप पुनि सुन्दरता रमणीय कांति मधुर मृदुता बहुरि सुकुमारता गनीय शरद्चन्द्रकी झलक ताको द्युति कही मोती कैसो पानी ताको लावण्यता कही जो विना भूषणे भूषित सो रूप सब अंग सुठौर ताको सुन्दरता कही देखेपर देखबेकी चाह ताकोरमणीकता कही स्वर्ण कैसी ज्योति ताको कांतिकही जाको देखे नेत्रतृप्तहोयँ ताको माधुरीकही अत्यन्त कोमलताको मृदुलता कही कमलहूके फूल जाके गड़ैं ताको सुकुमारता कही इत्यादि

सर्वाङ्ग सो छवि दो० । श्रृंगार यथा भलिजाइ दुख द्वंद जहां पढ़त सुमनसुख होइ ॥ विभावादिपोषेजु तेहि रसकहियतहै सोइ १ रस उपजतहै भावते भाव पांच विधिधारि ॥ भनिविभाव अनुभावपुनि थिरस्वातिक संचारि २ शुद्धचित्तमें विरतिजो प्रथमउठै सोभाव ॥ सोई रस अनुकूल है लक्षण किये कविराव ३ रसको जो कारण कहत सो विभाव द्वै भाइ॥आलम्बन इक कहतहैं उद्दीपन इकगाइ ४ लखैजु नायक नायका मनमें रस सरसाइ ॥ आलंबन कवि कहत हैं ग्रंथनके मतपाइ ५ पट् ऋतुराग सोहाग अरु चित्त आनिरस भासु ॥ वासवास जलवास पुनि उद्दीपन कहितासु ६ विनाकहे आकार लखि हिये हेतु दरशाइ ॥ ताहीसों अनुभाव कहि वर्णतहैं कविराइ ७ स्तंभस्वेद रोमांच अरु स्वरभँगकंपगनाव । विवरण आसूया प्रलय आठो स्वातिक भाव ८ बीजरूप सब रसनमें थिर अस्थाई सोइ ॥ जाकोलैरस संचरै सोसंचारीहोइ ९ बुधि बिलास युतरहै रति कोपूरणता अंग ॥ ताहि कहत श्रृंगाररस केवल मदन प्रसंग १० ॥ तेहि श्रृंगार रसको षोडश संस्कार ॥ उबटन १ मंजन २ वसन ३ जावक ४ केशसवाँरव ५ सिंदूर ६ चन्दन ७ मेंहदी ८ अरगजा ९ बेसरि आदि भूषण १० फूलहार ११ सुगन्ध १२ मीसी १३ ताम्बूल १४ अंजन १५ चातुर्य्यता १६ ॥ सो श्रृंगार रस द्वैभांति एकवियोग एकसंयोग वियोग यथा ॥ सियमुख सरिस देखि सुखपावा । संयोगयथा । सियराम अवलोकनि परस्पर । इत्यादि श्रृंगाररस दुलह अरु पूर्वकहि आये हैं छविरूप दुलहिनि मदनरूप माड़वतर शोभित तिनहूं की थोड़ी शोभा है श्रीराम जानकी के समता योग्य नहीं हैं २ मंगलमय कहे प्रग जावकसों करकंकणसों नेत्र अंजनसों भाल तिलक सिंदूर सों शिर मौर मौरी सों सर्वांग जामा पटुका चुनरीसों इत्यादि सबअंग मनको हरण हारहैं अरु चुनरीसों पीताम्बर सों सुन्दरिगांठि दीनहै कनककलशकी भांवरी देत तासमयको रूपदेखिशारदासी बुद्धिवन्ततेऊ भोरीभईं ३ सम्पूर्ण श्रृंगारदेखि देहकी सुधि न रहे ताको रसकही सोई

देखि जनकजी रनिवास बसते जे चतुरनारी हैं ते तृणतोरिकै चितौती हैं जामें नजरि न लगिजाइ स्त्रीनकी मंगलगानकी ध्वनिद्वारपर बाजाकी ध्वनि मुनिनकी वेदध्वनि सुनिकै देवता कल्पवृक्ष के फूलवरषत हैं तासमयकी हर्षको कोऊ कहि नहीं सकत सब आनन्दवश हैं ४ नेत्रनको फल श्रीराम जानकी के दरश अघाइकै पाइकै प्रेमवश सबईशको निहोरि हे महादेव यह जोड़ी चिरंजीवरहै ऐसे आशिर्वाद सबदेत गोसाईंजी कहतहैं री सखी जाहि आनन्दमें मगनकहे डूबिगयो मन तासुखको रसना कैसेवरणै ताते शृंगारको सुख जानबे योग्यहै कहबेयोग्यनहीं है ५॥

मू० । दूलहरामसियादुलहीरी ॥ घनदामिनिवरवरणहरणतन सुन्दरतानखशिखनिबहीरी १ ब्याहविभूषणवसनविभूषितसखिअवलीलखिठगिसीरहीरी ॥ जीवनजन्मलाहुलोचनफल हैइतनोइलहीआजुमहीरी २ सुखमासुरभिशृङ्गारक्षीरदुहिमैनअमीमयकियोदहीरो ॥ मथिमाखनसियरामसवाँरे सकलभुवनछविमनहुंमहीरी ३ तुलसिदासजोरीदेखतसुख शोभाअतुलनजातकहीरी ॥ रूपराशिविरचीविरंचिमानोशिलालवनिरतिकामलहीरी ४॥

टी० । दुल्हरूप श्रीरघुनाथजी दुलहिनिरूप श्रीजानकीजी तिनकीउपमाकहतहैं घनकहेमेघकोश्रेष्ठवर्णकोमनहरणहारो रूप श्रीरघुनाथजी दामिनिकी वरवरण मनहरणहारी छवि श्रीजानकीजी तिनकीसुन्दरता जसचाही तस नखते शिखातकनिबाहि कहीयथार्थपूरीहै १ नखशिखछविकोएकपद हमआपनी उक्तिसों लिखतेहैं ॥ नखशिखछविअवलोकिअलीरी । दुल्हरामजानकी दुलहिनघनदामिनिनिजएकथलीरी १ जावकपगनूपुरमँजीरयुतसज्जनमनकिधौंमधुपवलीरी । जामारुचिरपीतजरकसकटिप

टपरिधानज्योतिअमलीरी २ जरकसिकलितअरुणचूनरिसोंपीत वसनकृतगांठिभलीरी । चन्द्रहारमणिमालजवाकृतपंचदामगर चंपकलीरी ३ बैजंतीवनमालपदिकमणिकंठागरछविकंचुछलीरी। वलयचूरिसंघटितविभूषणअंगुलीयकरकंजकलीरी ४ कंकणकड़ामुद्रिकाभुजबलवरअंगदभुजदंडबलीरी । श्रवणफूलताटंकपादिका युगप्रकाशमिलिकेसहलीरी ५ कुण्डलमकरकपोलकेशावलीकरेखजसकामगलीरी । नासानथलटकनबेंदायुतअर्द्धचंद्र धृतक्रीटललीरी ६ कंचनरचितसमूहमणिनमयमुकुटप्रभालखजगउजलीरी । पूरणचंद्रप्रकाशवदनलखिवैजनाथमनकुमुदकलीरी ७॥ व्याह के विभूषणकहे कंकण,कड़ा,झुमका, मणिमाल,पहुंची, महाउर, काजर, मौर, वसन कहे जरकसकोजामा, पटुका, उपन्ना, पाग, स्त्रीनकेभूषण विछिया, नूपुर, जेहरि, महाउर, सरना, चन्द्रहार, पदिकहार, नागफनी, हारमणि, मोतिन के हार, पचलरी, चंपमणी, चंपकली, कंठी, बाजू, बांक, अंगद, भुजवलय, चूरी, कंकण, पहुंची, पछलवा, बलय, मधिवलय, आरसी, अंगुस्ताना, पोटिया,बांक,मुद्रिका,श्रवणफूल,ताटंक,पटिका,बेंदा, वन्दी, मांग, फलचूणामणि, मांग, मोती, सेंदूर,अर्द्धचन्द्र,वसन, सारी आदि इत्यादि विभूषितरूप देखि सखिनकी अवली कहे समूह ते तारुमयकी छविरूप ठगौरीके वश ठगी ऐसी रहिगई अरु कहती हैं कि जीवनजन्मको लाभ अरु नेत्रनको फल इतनो हीहै सो निश्चय करि आजु पावा २ इहां शोभा कौनि है यथा।

जेतिरहुति तेहि समय निहारी । तेहिलघुलाग भुवनदशचारी ॥
देखि जनकपुर सुरअनुरागे । निज २ लोकसबहिं लघुलागे ॥
कोशलपतिकर देखिसमाजू । अतिलघुलाग तिनहिं सुरराजू ॥
जेहि मण्डप दुलहिनिवैदेही । सो वरणै असिमति कविकेही ॥
दूलह रामरूप गुणसागर । सो वितान तिहुंलोक उजागर ॥

इत्यादि सुखमा कहे शोभा तेई सुरभी कहे गऊ हैं शृंगाररस ग्राहक अनुरागी वात्सल्य है तिनके हेतु सुखमा धेनु पन्हानी

कहे शोभासमूह है चारिकुमार चारि सुकुमारिन को विवाह होना सुमंव चारि स्थानहैं चारि बरात चारिहूं तरफ अगवानिनको मिलना चारि शृंगाररस दूधकीधारा हैं मिथिलापुर दोहनीहै तामें दुहि द्वारको चारादि ओटवहै मथन सोई अहीरहै सो शृंगारमयी आनन्दमयी आनन्द दूधको भूपभुवन महेड़ा में नाइ भरो तहां थिर शृंगार जो है संयोग ब्याहमें आनन्द सो अमीमय माधुर्य रसमयी उत्सव सो दहीहै तामें माड़वके मणिमय खम्भ सोई मथानी हैं तहां गांठि जोरि भांवरी देत सो खम्भनमें परछाहीं परत मानों प्रभुकी भांवरी घूमिबो नहीं है खम्भ मथानीसे घूमि रही है तहां थिर शृंगार संयोग माधुर्यरसमयी दहीमथि चारिहूं जोड़ी में श्रेष्ठ छवि सिय राम दूलह दुलहिनि रूप एक आसन पर वैठि वा समयकी शोभा शृंगारहू को सारांश माखन सम श्रीजनकनन्दनी रघुनन्दन को सँवारो है अरु सब भुवनकी छवि मही कहे माठासम निरस अरु सखी ह्वै गई यामें श्रीराम जानकी सब भुवनके सारांश बीज उत्पत्ति स्थिति लय कारण सब के पूजनीय हैं यथा प्रमाणंश्रुतिः ॥ सीतारामौतन्मयावत्रपूज्यौजातान्याभ्यांभुवनानिद्विसप्त स्थितानिचाप्रहृतान्येवतेषुततोरामोमानवोमायथाधात् ॥ कवितावली ॥ कह्यो रमारमण सुजान हनुमान कही सियासम तियन पुरुष राम सारिखे ३ गोसाईंजी कहत कि जो श्रीराम जानकीकी जोड़ी देखिबेको सुख सो देखतै वनत कहत नहीं बनत मानों विधाता किसानने जगत्रूपी खेत में शोभारूपी अनाज बोइकै कामरतिलौं निहार करि इकट्ठा करवाई मिथिलामें माड़वरूपी आफरमें रूपराशि श्रीरामजानकी को रचे ताकी मंजूरी सो लौनी खेतकी गिरी बालीसों शिला सोई शीला लौनीसम शोभा रतिकामलौं निहारने पायो ४ ॥ पद ॥ सखि सियरामकोहवर कहँलाई । करि लहकौरि सिखाव गौरि प्रभु सिय सादर बहुभांति सिखाई १ कोउ कह लालजीति यहि अवसर कोउ कह सिया जयति यहिदाई । बढ़त अधिक

आनन्द परस्पर हास विलास वरणि नहिंजाई २ कोउ पदत्राण मूंदि पट अंतर कहत लाल लागहु पग आई । कपट विचारि लाल विहँसत मन सखि सब हास करन मनभाई ३ दीपवाति बिलसाइ मिलावत विविध वचन दुहुँ दिशि चतुराई । बैजनाथ रस विवश सकल अति सखि समाज सुख लहत अघाई ४ ॥ मन भावत सखि प्रभुछवि लूटी । निरखि निहाल पलक नहिं अन्तर कुलकी कानि लाज तबछूटी १ कोउ करकमल लगाइ लालउर ताप मिटावत चतुर वधूटी । कोउ पग परसि निहारि हृदय महँ स्त्रकर छोड़ाय माल उरजूटी २ कोउ कुण्डल कर परसि केशविच भानु प्रभास श्यामघन फूटी । कोउ जामा कोउ पीतवसन महि ग्रन्थित सुमन माल कोउ टूटी ३ विरह व्याधि इक कहरमिटनहित चाखत परमरूप छविबूटी । बैजनाथ सुख चन्द्रप्यास यक नयनन बाल अमीरस घूटी ४ ॥ अद्भुत गति रघुनन्दन केरीरी । सखि समाज तजि लाज अवशह्वै अवलोकत नहिं पलक परीरी १ मृदु मुसुकानि कृपाणम्यान सुख द्विज प्रकाश खरसानधरीरी । घायल गात दिखात घाव नहिं काटिहियो दुइ टूक कियेरी २ नेहनवाइ कुटिल भृकुटी धनु सजि कटाक्ष विषप्रेम भरीरी । नयनबाण उरलाग सखी जेहिं तरफरात विनहोश परीरी ३ शील रसील प्रकाश निशित अति तारि सहित गहि चाह करीरी । लागत वचन कटार सखीउर विरहपीर वधि ज्ञान हरीरी ४ विन अपराध व्याध कौशलसुत सखि समाज कुलि कतल करीरी । बैजनाथपरि क्यों उबरै तिय प्रेमगाँठि गरफाँसि परीरी ५ ॥

मू० । जैसेललितलषणलाललोने ॥ तैसेललितउर मिलापरस्पर लखतसुलोचनकोने १ सुषमासारुशृँगारु सारुकरिकनकरच्योहैतेहिसोने ॥ रूपप्रेमपरिमितिनप रतकहि विथकिरहीहैमतिमौने २ शोभाशीलसनेहसु

हावनोसमौकोलिगृहगौने ॥ देखितियनकेनयनसफलभ येतुलसिदासहुकेहोने ३ ॥

टी० । इति सत्योपाख्यानके मतते हम कहेहैं निजमत अनु- कूल जैसे लावण्यताके भरे श्रीलषणलाल तैसे उर्मिलाजी सुन्दरी ते दोऊजन प्रेमसों भरे नेत्रनकी कोरन से देखतहैं १ सुषमा कहे शोभा को सारांश अरु श्रृंगारको सारांश निकारि ताको कनक करि तेहि सोनेसे दोऊ मूरतिरची हैं श्रृंगार श्याम ताते उर्मिला- जी तेऊ श्याम हैं शोभाको साराश लक्ष्मणजी तिनको रूप प्रेम को अवधिहै ताते कहि नहीं परत विशेषमति थकिके चुपाय रही २ केलिगृह कोहवरको गमने तासमयकी शोभा शील सनेह देखि तियनके नेत्र तो सफल भये अब तुलसीदासहू के होनहार हैं यामें श्रृंगाररसकी वाञ्छा जनाये उर्मिलादि रंग प्रमाणं नारदपञ्च- रात्रे ॥ हिरण्यवर्णांसीताञ्चमांडवींपाटलप्रभाम् ॥ उर्मिलांश्याम वर्णाभांश्रुतिकीर्तिंसितप्रभाम् ३ ॥

मू० । जानकीवरसुन्दरमाई ॥ इन्द्रनीलमणिश्याम सुभगतनु अंगमनोजनबहुछविछाई १ अरुणचरणअंगु लीमनोहरनखद्युतिवन्तकछुकअरुणाई ॥ कंजदलनपर मनहुंभौमदश बैठेअचलसुसदसिबनाई २ पीनजानुउर चारुजड़ितमणि नूपुरपदकलमुखरसुहाई ॥ पीतपरागभ रेअलिगणजनुयुगलजलजलखिरहेलोभाई ३ किंकिणि कंजकनकअवलीमृदु मरकतशिखरमध्यजनुजाई ॥ गई नउपरसभीतनमितमुख विकसिचहूंदिशिरहीलोनाई ४ नाभिगँभीरउदररेखावर उरभृगुचरनचिह्नसुठिआई ॥ भुजप्रलम्बभूषणअनेकयुतवसनपीतशोभाअधिकाई ५॥

टी० । सखिन सों सखी कहती हैं अरी माई जानकी को बरु

परमसुंदर है इन्द्र नीलमणिसम श्यामरंग तनुमें सब अंग सुंदर ते अंग अंग प्रति अनेक न कामकी छवि छाइरही है १ लाले चरणन में मनको हरणहारी अँगुरी हैं तामें नख अरुणाई लिहे प्रकाशवान् हैं ताकी उत्प्रेक्षा मानों कमलदलन पर अचल सभा बनाइ सुन्दर दश मंगलके नक्षत्र बैठे हैं २ पीनकही पुष्ट जानु हैं सुन्दर उरहै चरणमें सुवर्ण मणिन सों जड़ित नूपुर ते कल कही सुन्दर शब्द करिरहेहैं सो मानों कमलकी पीतधूरिकेभरे अलिगण कहे भँवरनकी पांति हैं तेऊ पदकमल को देखि लोभाइकै रहि गये हैं ३ कटिमें सोनेकी किंकिणी सो मानों कञ्ज कमल की पांतिहै श्याम शरीर मरकतमणिको शिखरहै तामें कटि सोई मध्यदेश तामें कंजकली उत्पन्न भई सो मुखचन्द्रकी भयसों डेराइ ऊपर न जाइसकीं ताते नमित कही नीचे मुखकरि विकसीं तिन की सुन्दरताई चारों दिशा फैलरही है ४ गम्भीर नाभी उदर की रेखा शोभित श्रेष्ठ हृदयमें भृगुलता को चिह्न सुखदेनहार है अनेकन भूषण धारणसहित आजानु भुजासुन्दरशोभित कटिमें पीताम्बर वसन धारण सो श्यामगातमें ताकी शोभा अत्यंतअधिकहै ५।

मू० । यज्ञोपवीतविचित्रहेममय मुक्तामालउरशि सोहिंभाई ॥ कंदताड़ितविचजनुसुरपतिधनुरुचिरबलाक पांतिचलिआई ६ कंबुकण्ठचिबुकाधरसुंदरक्योंकहौं दशननकीरुचिराई ॥ पदुमकोशमहँबसेवज्रमानो निज सँगतड़ितअरुणरुचिलाई ७ नासिकाचारुललितलोचन भ्रूकुटिलकचनअनुपमछविछाई ॥ रहेघेरिराजीवउभय मानोंचंचरीककछुहृदयडेराई ८ भालतिलककंचनकि रीटशिरकुण्डललोलकपोलनझांई ॥ निरखहिंनारिनिकर विदेहपुर निमिकुलकीमर्यादामिटाई ९ शारदशेष शम्भुनिशिवासर चिंततरूपनहृदयसमाई ॥ तुलसिदास

शठक्योंकरिवरणैं यहछविनिगमनेतिकरिगाई १० ॥

टी० । हेममय पीत जनेऊ अरु मोतिन के माला उरपर शोभित सो विशेष हमको भावत हैं तहां श्यामतनु कन्द कहे मेघहै पीतपट बिजुली है ताके बीच जनेऊ मानों इंद्रधनुषहै तहां मोती माल मानों बगुलन की पांति चली आवति है ६ शंखसम कण्ठ ठोढ़ी अरु ओठ सुन्दर दांतनकी रुचिराई कैसे कहौं कहिवे योग्य नहीं है कैसे हैं ओठ कमलको कोशहैं तामें दांत हीरागणहैं पानकी ललाई लिहे सोई तड़ितहै ताको अरुण रुचिकही भानुकी किरणों सहित कमल कोशन बसेहैं वा बिजलीन लालरूप है ७ सुन्दर नासिका सुन्दर नेत्र कमल द्वै बार सोई भँवरनकी अवली हैं तहां पलक चलत सो पंखा हैं ताको डेराइकै बैठत नहीं घेरिकै मड़रात हैं ८ माथेपै शोभायमान तिलक शीशपै अनेक रंग मणिन जड़ित कंचन किरीट काननमें कुण्डल लोल कहे चञ्चल हैं ताकी परछाहीं कपोलनपर परत ऐसी सर्वांग की शोभा जनकपुरकी स्त्रीसमूह ते निमिकुल की मर्य्याद कही पलक चलना छांड़ि यकटकह्वै प्रभुकी माधुरीमूर्त्ति अवलोकती हैं ९ शारदा शेष महादेवजी निशिदिन प्रभुके रूपकी चिंतवन करत परन्तु हृदयमें रूप नहीं समात हृदयमें नहीं आवतहै गोसाईंजी कहत कि रूपको मैं लघुमति कैसे वरणि सकौं यह जो प्रभुकी छवि है ताको वेद नेतिनेतिकरि वर्णन करेहैं अन्त नहीं पायेहैं १० ॥

मू० । भुजनपरजननीवारिफेरिडारी ॥ क्योंतोर्यो कोमलकरकमलन शम्भुशरासनभारी १ क्योंमारीचसुबाहुमहाखल प्रबलताड़कामारी ॥ मुनिप्रसादमेरेरामलपणकी विधिबड़िकरिवरटारी २ चरणरेणुलैनैननलावत क्योंमुनिवधूउधारी ॥ कहौधौंतातकिमिजीतिसकलनृपवरीविदेहकुमारी ३ दुसहरोषमूरतिभृगुपतिअतिनृप

तिनिकरखैकारी ॥ क्योंसौंप्योशारंगहारिहियकरिहै वहुतमनहारी ४ उमँगिउमँगिआनन्दविलोकतवधुनस हितसुतचारी ॥ तुलसिदासआरतीउतारत प्रेममगनम हतारी ५ ॥

टी० । जननी कौशल्याजी रघुनाथजी के भुजन पर वारन निछावरि चारिहूं ओर फेरिकै करतीहैं अरु पूँछतीहैं हे तात शंभु को धनुष महाकठोर भारी ताको कोमल करकमलन सों कैसे तोस्यो १ महाप्रवल वलवान् ताड़का महावली सुबाहु मारीच तिन खलनको कैसे मास्यो जव संकोच वशते रघुनाथजी न वोले तव आपुही समाधान करती हैं कि विश्वामित्र के प्रसादते मेरे राम लषण की विधाताने अनेकन करिवरें कही अल्पायु टारीं २ पुत्र वियोग करि सन्तप्त नेत्र जुड़ाइवे अर्थ प्रभुके चरणनकी रज नेत्रनमें लगाइ पूँछत कि मुनिवधू अहल्या को कैसे तास्यो है हे तात कहौ कैसे सब राजनको जीति विदेहकुमारी को कैसे विवाह्यो ३ दुःसह जो सही न जाइ ऐसी क्रोधमयी मूर्ति भृगुपति जो परशुराम समूह राजन के क्षयकारी कहें नाशकरणहारे ते परशुरामजी हिये हारि शारंग धनुष सौंपि बहुत भांतिते मनुहारी ते तुम्हारी विनती करि अपराध क्षमा कराये ४ पतोहुन सहित चारों पुत्रनको कोमल बदन प्रेमानन्दको उमँगि विलोकती हैं गोसाईंजी कहत कि प्रेममें मग्न मातु कौशल्या आरती उतारती हैं ५ ॥

मू० । मुदितमनआरतिकरैमाता ॥ कनकवसनमणि वारिवारिकरिपुलकिप्रफुल्लितगाता १ पालागनदुलहि यनसिखावतसरिससासुशतसाता ॥ देहिंअशीशतेवरष कोटिलगिअचलहोउअहिवाता २ रामसियाछविदेखि युवतिजनकरहिंपरस्परवाता ॥ अबजान्योसांचेहुसुना

सखिकोविदबड़ोविधाता ३ मंगलगाननिशाननगरनभ आनँदकह्योनजाता ॥ चिरजीवहुअवधेशसुवनसबतुलसिदाससुखदाता ४ ॥

टी० । सोना अरु वसन मणि श्रेष्ठ तिनको वारनकरि प्रेमसों गातपुलकि प्रफुल्लित मनमें महाआनन्दभरी माता आरती करती हैं १ श्रीकौशल्याजी अपने समान सातसै जो रानी हैं तिनके पग लागिबेको दुलहिननते सिखावत तें पांइलागे पर सब आशीष देत कि करोर वर्षतक तुम्हारा अहिवात अचल रहै २ श्रीजानकी रघुनन्दन की छवि देखि युवतीजन आपुस में वार्त्ता करती हैं हे सखी हम सांचकरि जाने कि विधाता बड़ो पण्डित है काहे ते कैसी जोड़ी मिलाय दियो है ३ नगरमें अरु आकाश में मंगलगान अरु बाजा शब्द ऐसोहै जो दोऊ ठौर को आनन्द कहा नहीं जाय है अरु सब आशीष देत कि अवधेश महाराज के सब पुत्र पतोहैं चिरंजीव रहैं तुलसीदास के सुखके देनहारे हैं ४ ॥

कवित्त ॥

वनजावकस्तोम प्रभास्यश्रुती मकराकृत भामकुटांगदसोरी ।
शृगमुक्त सिरोधउरश्चिवली तनुश्याम सिताड़ित अभ्रलजोरी ॥
उतरी कृत ग्रंथि पटाद्भुत भ्राम्य घटावतही रतिनाथ सकोरी ।
करि वैजसुनाथ उरस्थल वास नृपात्मज श्रीमिथिलेन्द्रकिशोरी १
बनरी लखिदीप दुहूंकुलकी समितारति गौरिरमानसरेख्यो ।
सतसर्वप्रभूति भरी गृह में मनचाहत सिद्धि खड़ी ढिगपेख्यो ॥
सुखदेखननेगसियासमिता मनढूंढ़िसकी सबलोकअशेख्यो ।
दै श्रीरघुनन्दन रत्नसियाकर सासुसँकोचितहूं मुखदेख्यो २ ॥

इति रसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियावल्लभशरण बैजनाथकृतगीतावलीमणिदीपिकाटीका सहितबालकाण्डसमाप्तः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

गीतावली सटीक

अयोध्याकाण्ड ॥

श्लोक ॥ मरकतकनकाभौश्यामगौरौ किशोरौयनतडिदतिकान्तौपीतनीलाभवासौ ॥ अमलकमलनेत्रौ साधनक्लेशदौनौ नमितविधिहरीशौजानकीजानकीशौ १ भवाब्जयोनिवन्दितौस्वभक्तसर्वकामदौ । पदाम्बुजौभजाम्यहं सदाविदेहजापतेः २ ॥

सू० । रागसोरठ ॥ नृपकरजोरिकह्योगुरुपाहीं ॥ तुम्हरीकृपाअशीषनाथमेरीसवैमहेशनिबाहीं १ रामहोहिंयुवराजजियतमेरेयहतृष्णामनमाहीं ॥ वहुरिमोहिंजियवेमरिवेकीचितचिन्ताकछुनाहीं २ महाराजभलोकाजविचारेउ वेगिविलम्बनकीजै ॥ विधिदाहिनोहोइतौसबमिलि जन्मलाहुलुटिलीजै ३ सुनतनगरआनन्दवधावन कैकेयीत्रिलखानी ॥ तुलसीदासदेवमायावश कठिनकुटिलताठानी ४ ॥

टी० । श्रीमहाराज दशरथ हाथ जोरि वशिष्ठजी से कहे हे नाथ आपकी कृपारूपी आशीर्वाद ते मेरेमनकोमनोरथ सब श्रीशिवजी निवाहे १ अब रघुनन्दनको युवराज हमारे जियत होइजाइ यह लालसा हमारे मनमें है सो होजाय पीछे फिर हमको जियवे मरिवेकी चिन्ता चित्त में कुछ नहीं है २ वशिष्ठजी बोले कि हे महाराज आपने भलो काज विचारोहै ताते अब विलम्ब

न करो जो विधाता दाहिने होइ कार्य निर्विघ्न निबहै तौ सब समाजभरि यहि आनन्दको देखि जन्मभरेको लाभ लूटिलेहहिं विधाता दाहिने होवे में मनोरथ में सन्देह जनाये ३ प्रभुके युवराजपद होबेको आनन्द नगर में है रहाहै यह बात मन्थरा के मुख सों सुनिकै कैकेयी बिलखानीकहे दुःखित भई गोसाईं जी कहत कि देवतनकी मायाके वशह्वैकरि कठिन कुटिल प्रण भरत को राज्य रघुनाथजीको वन चौदह वर्ष यह प्रण ठान्यो ४ ॥

कैकेयी के वरदान द्वारा पिताके वचन प्रमाण करि प्रभु वनगमनमें तत्पर हैं यह सुनि श्रीकौशल्याजी कहती हैं हे मेरे प्राणन के प्यारे श्रीरघुनन्दन सुनहु इहां श्रीकौशल्याजी के वचनमें रघुनाथजीकी प्राप्ति धर्मको परात्पर करिकै सत्यादि कर्मकांडको निषिद्धकरि वर्णन कियो यथा सिद्धांततत्त्वदीपिकायाम् ॥

चौपाई ॥

हैं प्रभु को सब मातु समान । वह सब जननी जीवन प्रान ॥
अरु केकयि पति धर्महिं धरै । पति की क्यों सु अवज्ञा करै ॥
हरिहित क्योंसु असुरबुधि होइ । सहजहिं प्रकृति है व जो सोइ ॥
तौ व भरत परमेश्वर तास । जन्मे क्योंकरि उदरनिवास ॥
नृप अस धर्म पास क्यों पस्यो । जिहिंहरिसोंअसअन्तरकस्यो ॥
अरु असिप्रीति होइ क्यों ऐसे । बिछुरत प्राण तजे तिहिं जैसे ॥
हरिनेकजु नृपवचनसुमान्यो । सुनिवनगमनउमँगउरआन्यो ॥
बिछुरत विपति सबनमें परी । क्यों नहिं नेक दया हिय धरी ॥
हरिनृपसोंअनुकूलहि भाख्यो । लषणधर्मतजिक्योंमनमाख्यो ॥
लषण न फिरे हरिहु के कहे । भरत क्यों आइ अवधढिगरहे ॥
हरिसेवन रिपुदमन न कीन्हों । क्योंभरतहि सेवनमनदीन्हों ॥
जाको नाम भरत जेहिं आवै । वह नर परम मोक्ष पद पावै ॥
नृप सुवचन मनकरि हरि गहे । क्यों सो इन्द्र पदहिं में रहे ॥
अरु सुत उपरि होय यह रीति । जनकअधिकजननीकी प्रीति ॥
नहिंननृपति सुतबिछुरनसह्यो । जननी प्राण कहो क्यों रह्यो ॥

कृपावत्युवाच ॥

नृपति वेद अवतार सुभनिये । ताकी शक्ति तीनि ये गनिये ॥
कर्म उपासन ज्ञान सुनाम । कर्म सु द्विधा सकाम अकाम ॥
काम्य सु अन्य देवफल साधन । अपरसु हरि सुरफल आराधन ॥
कर्म अकाम केकयी जानौ । सरस्वतिमिले सकामबखानौ ॥
उपासनासुविधिव्रतहरिसेवहिं । अकिःभक्ततिचितवै जे सेवहिं ॥
सो वह शक्ति सुमित्रा कहिये । लषणशत्रुहन सुत जहँ लहिये ॥
ज्ञान सु हरितनुरूप प्रकासै । सतत स्वभाव कर्मगुण भासै ॥
ज्ञान अपरपर जाइ सुभक्ती । केवल हरि पद सों अनुरक्ती ॥
बैठत उठत न तिहिं बिसरावै । नहिं तेहि हियकछुऔर सुहावै ॥
वहै शक्ति कौशल्या अहै । जिहिं समीप रघुवर सुत रहै ॥
केकयि सोइ आइ हितुकस्यो । जो वधि कर्मपाश नृप पस्यो ॥
पुरा संग उनका होमज्यो । रही प्रीति बिछुरत तनु तज्यो ॥
रामलषण भरत रिपुनाशन । निजचरितनाकियोधर्मप्रकाशन॥
गुरुसेवन हरि नरन सिखायो । हरिसेवन लक्ष्मण मनभायो ॥
भरत कह्यो हरि वैभव रक्षण । भक्त सेव रिपुदमन विचक्षण ॥
अरु जो विमुख सत्य नृपभज्यो । हरि विरोध जानिहू न तज्यो ॥
अन्य श्रेय साधन है गह्यो । याते इन्द्रलोक महि रह्यो ॥
अकिहरि जानिअवधपुरमाहीं । हितवशमुक्ति चही नृप नाहीं ॥
सुतहिं स्वर्गवसि तबतक रह्यो । मोक्षते कोटिगुणितसुखलह्यो ॥
पुनिप्रभुजबनिजलोक सिधारे । संग लागिगये रहे न न्यारे ॥
जननी विपिनगवन जवजान्यो । नृपते द्विगुणदुःखहियआन्यो ॥
तेहि दुख प्राण न धीरज गहै । तनु तजि चलिबेको जब चहै ॥
तब सियराम प्रकट है आवैं । लपण सहित गृहमें दरशावैं ॥
बोलत फिरत तिनहिं जव देखे । तव वनगवन स्वप्नकरिलेखे ॥
पुनि जव कबहुँ तहां नहिं लहे । भयो सुँदर ऐ स्वप्नमें कहे ॥
योंही सियशशि जननीपाहीं । रहे सुदेखहिं मन्दिर माहीं ॥
जो बहुवार प्राण उठि धायो । निकटनिरखिनिजगैरहिआयो॥

सुमुखिकह्योनृपहिनक्योंदरस्यो । कौनचूकहियआनिजुअरस्यो ॥

कृपावत्युवाच ॥

जन जु अनन्य आश्रय बल गहै । तिनपर दया न करि हरिचहै ॥
सत्या श्रयसु युधिष्ठिर करयो । हरिहूं कह्यो तहूं नहिं टरयो ॥
कोउमिषलैतिहिं नरकदिखायो । भाइनको वह दोष न लायो ॥
देन सुवन वसुदेव सुभाख्यो । हरिविरोधसत्यसूनहिंराख्यो ॥
कन्या दै कंसहि तिहिं ठग्यो । ताहि तहां कछु दोष न लग्यो ॥
वय आश्रित सनकादिकभयो । क्रोध अभय पुरमें है भयो ॥
हरि आश्रय शुक यौवनमाहीं । कामक्रोधनहिंतिहिढिगजाहीं ॥
हरि विरोध वर धर्म जो होई । अधरमसमगनितजियेसोई ॥

शिवसंहितायाम् ॥

श्लोक ॥ आयुर्वेदोधनुर्वेदो गान्धर्वंचार्थदर्शनम् ॥ इतीमा
न्निदशांगानि रथनामानियस्यसः १ ज्ञेयोदशरथोवेदः साध्यसा
धनदर्शनः ॥ यज्ञेशोयज्वनांवंशइक्ष्वाकूणांमहात्मनाम् २ मर्या
दापालनायैव लोकानांधर्मवृद्धये ॥ राजात्मनावरीवर्त्ति शक्तित्र
यसमन्वितः ३ त्रिकांडोखण्डरूपार्थे ब्रह्माण्डेशउपासकः ॥ श
ब्दरूपेणविप्राणामास्येपुनिवसत्यसौ ४ क्रियाज्ञानन्तथाजाप्य
मितिशक्तित्रयीशितुः ॥ एकैकबाहुविस्तारात्फलस्फालात्प्रमा
त्मिका ५ तासांक्रियातुकैकेयी सुमित्रोपासनात्मिका ॥ ज्ञानश
क्तिश्चकौशल्या वेदोदशरथोनृपः ६ क्रियायांकलहोदृष्टोदृष्टाप्री
तिरुपासने ॥ ज्ञानेनात्मसुखंनित्यं दृष्टंनिर्हेतुनिर्मलम् ७ सर्वोध
र्मःक्रियाजन्मास्त्वर्गादिस्मृतिकारणम् ॥ कैकेय्याख्यक्रियायांतु
जातोऽयंभरतात्मना ८ सर्वेषांजगतांनित्यं धारणाधेरणाञ्चसः ॥
भव्यवस्तुरतत्त्वाच्चख्यातोसौभरताख्यया ९ क्रियाकाण्डस्य
शास्तासावैश्वर्यस्यापिशक्तिभृत् ॥ पक्षपातीचधर्माणामधिष्ठा
ताप्रतिष्ठितः १० सुमित्रारूपशक्त्यातु जनितोलक्ष्मणोर्भकः ॥
भक्तःपरिजनोदासःसखासेवादिदेशिकः ११ भगवद्रामदेवस्यक
ल्याणगुणशालिनः ॥ अर्चनीयांघ्रिपद्मस्य दातुश्चानन्दसम्पदः

मू० १२ सर्वेषांलोककामानां व्यवस्थायकृताश्रितः ॥ सर्वेषांराम कामानांनित्यानामपिसाधकः १३ कामाख्यपुरुषार्थस्य नेताल क्ष्मणउच्यते ॥ भक्तानांपक्षपातीच रामादेशेधृतव्रतः १४ शत्रुघ्नो नित्यशत्रुघ्नो रामरामजपावलेः ॥ तथैवजनितोदेव्यामममप्राण तमोनुजः १५ अर्थाख्यः पुरुषार्थस्याध्यक्षः शिक्षःसुदक्षिणः ॥ श्रीरामभक्तभक्तानां पक्षपातोविचक्षणः १६ ॥

मू० । रागगौरी ॥ सुनहुरामभेरेप्राणपियारे ॥ वारोंस त्यवचनश्रुतिसम्मतजातेहौंबिछुरतचरणतिहारे १ बिन प्रयाससबसाधनकोफलप्रभुपायेसोतोनाहिंसँभारे ॥ हरि तजिधर्मशीलभयोचाहतनृपतिनारिवशसवसंहारे २ रुचि रकाँचमणिदेखिमूढ़ज्योंकरतलतेचिंतामणिडारे ॥ मुनि लोचनचकोरशशिराघवशिवजीवनधनसोनविचारे ३ य द्यपिनाथतातमायावशसुखनिधानसुततुमहिंबिसारे ॥ त दपिहमहिंत्यागहुजनिरघुपतिदीनबंधुदयालुमेरेवारे ४ अ तिशयप्रीतिविनीतवचनसुनिप्रभुकोमलचितचलननपा रे ॥ तुलसिदासजोरहौंमातुहितकोसुरभूमिविप्रभयटारे ५

टी० । श्रुति सम्मत कहे वेद अनुकूल सत्यवचन तिनको वारों कहे त्यागिदेउँ काहेते जा वचनते मैं तुम्हारे चरण कमलन सों बिछुरतहौं तहां यह बात पुराणन में प्रसिद्ध है कि जेहि धर्मते रघुनाथजीते विमुखताआवै सोधर्मनहीं है वाको अधर्म करिजानी ॥ प्रमाणंरुद्रयामले ॥ येनराधर्मलोकेषु रामभक्तिपरा ङ्मुखाः ॥ जपस्तपोदयाशौचःशास्त्राणामवगाहनम् ॥ सर्ववृथावि नावेन शृणुत्वंपार्वतिप्रिये ॥ पुनर्गीतायाम् ॥ सर्वधर्मान्परित्य ज्यमामेकंशरणंव्रज ॥ अहंत्वांसर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशु चः १ ॥ पुनःपद्मपुराणे ॥ नतत्पुराणंनहियत्ररामोयस्यांनरामो

नत्रसंहितासा ॥ सनेतिहासोनहियत्ररामः काव्यंनतत्स्यान्नहिय त्ररामः १शास्त्रंनतत्स्यान्नहियत्ररामस्तीर्थन्नतद्यत्रनरामचन्द्रः ॥ यागःसयागोनहियत्ररामो योगःसयोगोनहियत्ररामः २ स्थानंभ यस्थानमरामकीर्त्तिं रामेतिनामामृतशून्यमास्यम् ॥ सर्पालयंप्रेत गृहंगृहंतद्यत्रार्च्यतेनैवमहेन्द्रपूज्यः ३ सर्वेषांवेदसाराणां रहस्यंते प्रकाशितम् ॥ एकोदेवोरामचंद्रोव्रतमन्यन्नसत्तमम् ४ सबसाधन जप,तप,यज्ञादि,भजन,ध्यान,योग,वैराग्य,ज्ञान,भक्तिताकोफल तुमकोपाय बिनप्रयाससो नहीं संभारेहरिजोहौतुमतिनको तजि धर्मशील भयो चाहतहैं नृपति नारिके वशह्वै सर्वस हारिगयो २ सो जैसो कोऊमूढ़ कांचकी मणि सुन्दर देखि उठाइलेइ हाथ ते चिन्तामणि डारिदेइ तैसे राजाभये चकोररूप मुनिनके पूर्ण चन्द्ररायवहौ अरु शिवजीके जीवनधनहौ ताको भूपति विचार न करै शिवको सर्वसाधन श्रीरामनाम ॥ प्रमाणंकूर्मपुराणेशिव वाक्यम् ॥ गोप्याद्गोप्यतमंभद्रे सर्वस्वंजीवनंमम ॥ रामनामपर ब्रह्मकारणस्यापिकारणम् ३ हे नाथ यद्यपि तात जो पितातुम्हारे मायावशते सुखनिधान पुत्र जो तुम तिनको बिसारि दिये त- द्यपि हमको न त्यागहु हे दीनबंधु दयालु मेरे पुत्र रघुपति ४ अ- त्यंत प्रीति भई नम्रवचन सुनि कोमलचित्त रघुनन्दन चलिबे को इरादा न करे वनको गोसाईंजी कहत प्रभु आपने मन में विचारकरे कि जो मैं माता कौशल्याके हितलागि रहिजाउँ तो देवतनकी साधुकी भूमि ब्राह्मणनकी भय जो खल रावण ताको कौनमारैगो यहां दीनबंधुदयालु गुणसुनि रहबेकोमननभयो ५ ॥

मू० । रहिचलियेसुन्दररघुनायक ॥ जोसुततातवचनपा लनरतजननिउतातमानिबेलायक १ वेदविदितयहबानि तुम्हारीरघुपतिसदासन्तसुखदायक ॥ राखहुनिजमर्य्याद निगमकी हौंबलिजाउँधरहुधनुशायक २ शोककूपपुर परिहिमरिहिनृपसुनिसंदेशरघुनाथसिधायक ॥ यहदूष

णविधितोहिंहोतअबरामचरणवियोगउपजायक ३ मातु वचनसुनिस्रवतनैनजलकछुसुभावजनुनरतनपायक॥ तुलसिदाससुरकाजनसाध्योतौतोदोषहोइमहिआयक ४॥

टी० । कौशल्याजीकहती हैं हे सुन्दररघुनायक रहिजाइये हे सुत जो पिताके वचन पालिबे में रतहौ तौ मातहू मानिबेकी लायकहै १ यहतुम्हारी बानि वेदमें विदित है कि रघुपति सदा संतनके सुखदेनेहार हैं॥ प्रमाणं वेदपादाभिस्तोत्रे॥ स्वच्छन्दचारिणंदीनंरामरामेतिवादिनम्॥ तावन्मामनुनिस्थेनयथावारिविभावति १ ऐसीवेदकीमर्यादा तुम्हारीहै ताकोराखहु अयोध्यावासी सब सन्तहैं तिनको वियोग दुःखजानि मैं बलिजाउं धनुबवाण धरहु अर्थात् वनजाबे को साजउतारिधरहु २ शोककही दुःखकूप में पुरवासी परिहैं धायकके वनको रघुनाथजी गये यह संदेह सुनतही नृप शरीर त्यागिदेहैं श्रीकौशल्याजी आरतवश कहती हैं हे विधाता यह दूषण तुमकोहोत जो श्रीरामचरणको वियोग उपजावतहौ ईश्वरते विमुख करावनहारो अधर्मी है॥ प्रमाणं भागवते॥ गुरुर्नसस्यात्स्वजनोनसस्यात् पितानसस्याज्जननी नसास्यात्॥ दैवंनतत्स्यान्नपतिश्चसस्यान्नमोचयेद्यःसमुपेतमृत्युम् ३ माताके वचनसुनि नेत्रनतेजलचुवत नरतनपायेको मोहित सुभाव देखाये मानौ गोसाईंजी कहत कि प्रभुविचारेदेवतनको काज न करौं तौ भूमिपर आइबेको दोष मोको होइ ४॥

मू० । रामहौंकौनयतनघररहिहौं॥ बारबारभरिअंकगोदलैललनकौनसोंकहिहौं १ यहिआंगनविहरतमेरेबारे तुमजोसंगशिशुलीन्हे॥ कैसेप्राणरहतसुमिरतसुतबहुविनोदतुमकीन्हे २ जिनश्रवणनकलबचनतिहारेसुनिसुनिहौंअनुरागी॥ तिनश्रवणनबनगवनसुनतहौंमोतेकौन

अभागी ३ युगसमनिरखिजाहिंरघुनंदनवदनकमलबिनुदेखे ॥ जोतनरहैवरषबीतेबलिकहाप्रीतियहिलेखे ४ तुलसीदासप्रेमवशश्रीहरिदेखिविकलमहतारी॥ गद्गदकंठनैनजलफिरि फिरिआवनकहेउमुरारी ५ ॥

टी० । श्रीकौशल्याजी कहती हैं कि हे रघुनन्दन मैं कौन यत्न ते घरमें रहौंगी भरिअंग गोदमें बैठाइ बारबार ललन काको कहिहौं १ हे मेरे प्यारे तुम जो संगविषे बालकनको संगलिये याहि आंगनमेंविहरतरहे अरु अनेक विनोद तुम करतरहे सो तुम्हारी सुरति किहे हे पुत्र आंगन खाली देखि कैसे प्राणरहिहैं २ जिन काननसों सुन्दर तुम्हारे वचन सुने ते अनुरागवशभईं तिनकाननसों अब वनगमन सुनतहौं ताते मेरी समान और कौन अभागी है ३ हे रघुनन्दन बिनातुम्हारेदेखे हमको एकनिमेषकल्प समजातरही जो अब चौदह वर्षतक बिना तुम्हारेदेखे प्राणरहैं हमारे तौ बलिजाउँ इहिलेखे प्रीति हमारी झूठी है ४ गोसाईंजी कहत कि माताको विकल देखि प्रभु प्रेमके वशह्वै नेत्रनमें जल भरे गद्गदकंठ बारबार कहत कि हम शीघ्रही आउब ५ ॥

मू० । रागबिलावल ॥ रहहुभवनहमरेकहेकामिनि ॥ सादरसासुचरणसेवहुनित जोतुम्हरेअतिहितगृहस्वामिनि १ राजकुमारिकठिनकंटकमगक्योंचलिहौमृदुपगगजगामिनि ॥ दुसहगातवरषाहिमआतपकैसेसहिहौअगनितदिनयामिनि २ हौंपुनिपितुआज्ञाप्रमाणकरिऐहौंवेगिसुनहुद्युतिदामिनि॥ तुलसिदासप्रभुविरहवचनसुनिसहिनसकीमुरछितभइभामिनि ३ ॥

टी० । प्रभुकोचलतजानि जानकीजी तय्यारभईं तिनसोंरघुनाथजीकहत हे कामिनि हमारेकहेते भवनमें रहहु तुम्हारी स्वा-

मिनिघरहीमें हैं तुम्हारेअत्यन्तहितकारी हैं तुमकोअन्यत्रजाइबो उचितनहीं है ताते आदरते सासुकेचरणकी सेवाकरौ १ हेराजकुमारि कांटा कंकरसों मार्गकठिनहै तामें तुमगजगामिनिकोमल चरणनसों कैसे चलैपैहो वर्षा जाड़ घाम तामें बयारि ऐसीबहुत जो सहीनहींजात ताको कैसे सहिहौ अनेकन दिनरात वनमेंबसिबोपरैगो २ हे दामिनिद्युति मैं पितुकी आज्ञाप्रमाण करिकै जल्दी ऐहौं गोसाईंजी कहत कि प्रभुके बिछोहरूह विरहकेवचन सुनिकै सहि न सकीं ताते भामिनीश्रीजानकीजीमूर्च्छितह्वैगई३॥

मू०। कृपानिधानसुजानप्राणपतिसंगविपिनह्वैआवोंगी।गृहतेकोटिगुणितसुखमारगचलतसाथसचुपावोंगी१ थाकेचरणकमलचापोंगी श्रमभयेवायुडुलावोंगी ॥ नयनचकोरनमुखमयंकछविसादरपानकरावोंगी २ जो हठिनाथराखिहौमोकहँ तौसँगप्राणपठावोंगी॥ तुलसिदासप्रभुबिनजीवतरहिफिरक्योंवदनदिखावोंगी ३ ॥

टी०। श्रीजानकीजी कहतीहैं हे कृपाके निधान सुजानप्राणपति मैं आपके साथ वनमें सहजही ह्वैआइहौं अरु घरते कोटिनगुण सुख मार्गमें पाइहौं १ जो आप थकितह्वैजैहैं तौ चरण चापिहौं गरमीकी श्रमभये बयारि डुलाइहौं अपने नेत्रचकोरन को आपके मुखचन्द्रकी छविरूप किरणनको आदरते पानकराइहौं २ जो मोको हठिकरि घरमें राखि जैहौ तौ आपके साथै प्राणनको पठाइदेहौं गोसाईं जी कहत कि जानकीजी कहतीहैं कि विना आपके मैं गृहको सुख करिहौं आप वनको क्लेश सहैं तिनकी वामांगी ह्वै मैं घरमें राज्यसुखको करौं यह विपरीत धर्म करि जीवत सुख कैसे दिखाइहौं ३ ॥

मू०। कहौतुमबिनगृहमेरोकौनकाजु॥ विपिनकोटिसुरपुरसमानमोकोजोपैपियपरिहरयोराजु १ वल्कलविमल

दुकूलमनोहरकन्दमूलफलअमीनाजु ॥ प्रभुपदकमलवि लोकिहौंछिनछिन यहितेअधिक कहँसुरसमाजु २ हौंरहौं भवनभोगलोलुपह्वै पतिकाननकियोमुनिकोसाजु ॥ तुल सिदासऐसेविरहवचनसुनिकठिनहियोविहरेउनआजु ३॥

टी०। हे प्राणनाथ! तुमविना मेरोघरमें कहौ कौनकाजुहै जोपै आपराज परिहरेकही छांड़िदिह्यो तौ हमको देवलोक की समाज कोटि वनकी समानहै १ आपकेसाथ वल्कल वसन हमको दिव्य वसन के तुल्यहैं मनोहर कंद, मूल, फल अमृतमयी अनाजके समहैं छिनछिनमें आपके पदकमल देखते अधिक सुखको समाज हमको और कौनहै आपके संगसम २ आप मुनिकी साजकरि वन को जाउ औ मैं भोगकी लोलुपता करि घरमेंरहौं गोसाईंजीकहत कि जो प्रभु कहैं कि तुम वनयोग्य नहींहौ ताको सुनि जानकीजी कहती हैं कि ऐसेहूवचन विरहकेसुनि हमारो हृदय विहरोनहीं ३॥

मू०। पियनिठुरवचनकहेकारणकवन ॥ जानतहौ सबकेमनकीगतिमृदुचितपरमकृपालुरवन १ प्राणनाथ सुन्दरसुजानमणिदीनबन्धुजनआरतिदवन ॥ तुलसि दासप्रभुपदसरोजतजिरहिहौंकहाकरौंगीभवन २ ॥

टी०। हे प्राणनाथ! आप निठुरवचन काहेतेकहे सबके मनकी गतिको जानतेहौ तुम्हारोचित्त कोमलहै अरु रवनकहे हे स्वामी! आप कृपाके स्थानहौ १ हे प्राणनाथ! सुन्दर सुजान में श्रेष्ठ दीनबन्धु हौ अपने जनके आरति दुःख ताके दलनहारहौ श्री- जानकीजी कहती हैं कि प्रभुके चरणकमल छांड़ि घरमें रहि मैं कहाकरिहौं २ ॥

मू०। मैंतुमसोंसत्यभायकहीहै ॥ बूझतआनभांतिक तकामिनिकाननकठिनकलेशसहीहै १ जोचलतिहौतौ

चलौचलियेवनसुनि सियमनअवलम्बलहीहै ॥ बूड़त विरहवारिनिधिमानहुंवचनताहमिसबांहगही है २ प्राण नाथकेसाथचलीउठिअवधशोकसरिउमँगिबहीहै ॥ तुल सीसुनीनकबहुंकाहूकहुंतरुपरिहरिपरिछांहरहीहै ३ ॥

टी०। श्रीरघुनाथजी कहत कि हम तुमसों सतिभायसों कहते हैं हे भामिनि ! तुम और भांतिते काहेको समुझतीहौ वनमें सही कहे निश्चय करिके कठिन कलेश हैं १ जो तुम्हारे चलवे की इच्छाहै तौ चलो चली यहसुनि जानकीजी को मन अवलम्ब कहे सहारा परो मानों विरहसमुद्रबूड़त में नाहने वचन बहाने मानों हाथ गहि निकारिलियो २ प्राणनाथ के साथ जानकीजी उठि चलीं नहीं मानों अयोध्याजीमें शोकरूपीनदी उमँगिकै बही तासें पुरवासी बूड़िगये गोसाईंजी कहत कि वृक्षको छांड़ि पर-छाहीं काहूने सुनाहै कि रहिगई तौ जानकीजी कैसेरहैं ३ ॥

मू०। जबहिंरघुपतिसंगसीयचली ॥ विकलवियो गिलोगपुरतियकहेंअतिअन्यायअली १ कोउकहैंमणि गणतजतकांचलगिकरतनभूपभली ॥ कोउकहैंकुबेलि कैकयीदुखविषफलनिफली २ तुलसीकुलिशहुंकीकठोर ता तेहिदिनदलकिदली ३ ॥

टी०। जब श्रीरघुनाथजीके साथ जानकीजी चलीं तब वि-योगके दुःखकरि पुरवासी विकल स्त्रीकहती हैं हे आली ! अत्यन्त अनीतिहै १ कोऊ कहत कि मणिनकी सम श्रीरामजानकी को छांड़देत अरु कांच सम सत्य वचन ग्रहणकरत यह भूपति भली बात नहीं करत कोऊ कहत यहि कुलविषे कुवेलिरूप कैकेयी दुःखरूप विष फलनको फलीहै २ एककहत कि देखिये जानकी

जी वनके योग्यहैं नहीं हैं ताते विधाता बड़ाबली है गोसाईं जी कहत कि यासमय वज्रहूकी कठोरता दलिकैदलीफाटिगई ३ ॥

मू० । ठाढ़ेहैंलषणकमलकरजोरे ॥ उरधकधकीनक हतकछुसकुचतप्रभुपरिहरतसबनतृणतोरे १ कृपासिंधु अवलोकिबंधुतनप्राणकृपाणवीरसमसोरे ॥ तातबिदामाँ गियेमातुसोंवनिहैबातउपाइनऔरे २ जायचरणगहिआ यसुयाच्योजननिकहतबहुभांतिनिहोरे ॥ सियरघुवरसेवा शुचिह्वैहौतौजानिहौंसहीसुतमोरे ३ कीजहुयहैविचारनि रंतररामसमीपसुकृतनाहिंथोरे ॥ तुलसीसुनिसिखचलेच कितचितमानौविहँगबधिकभयभोरे ४ ॥

टी० । श्रीलक्ष्मणजी करकमलजोरे ठाढ़े हैं संकोच ते कछु कहतनहीं हैं अरु हृदयमें धकधकी उठी कि यासमय में प्रभुसब को तृणसमान तोरे कही छांड़ेहैं हमको साथलेहिंगे कि नहीं १ कृपासिन्धु रघुनाथजी बन्धु लक्ष्मणजी की ओर देखे कि प्राण वारण किहे ठाढ़ेहैं जैसे कोऊ वीर समरसन्मुख कृपाणखोलिं ठाढ़े होइ तैसे ठाढ़े देखि प्रभुबोले कि हे तात! माता सों बिदा मांगि आवहु और उपायते बात न बनी विना माताकी आज्ञा हम साथ न लैजाब २ चरण गहि श्रीसुमित्राजीसों आज्ञामां- ग्यो तब माता बहुत भांति निहोराकरिकै कहत कि हे पुत्र! जो श्रीरामजानकी कीसेवानिश्छलह्वै करिहौ तौ जानिहौं कि हमारे पुत्र सांचेहौ ३ हे पुत्र! बारबार यहै विचार हृदयमेंकरहु कि रघु- नाथके समीपको रहिबो थोरे सुकृतसों नहीं होत है रामभक्ति बड़ेसुकृतसों होतहै प्रमाणंमहारामायणे ॥ येकल्पकोटिषुशतैर्जप होमयोगैर्ध्यानैस्समाधिभिरहोगरबोधनिष्ठाः ॥ तेदेविधन्यमनुजा हृदिवाह्यशुद्धाभक्तिस्तदाभवतितेषुचरामपादे १ ऐसासिखानन दै सुमित्राजी आज्ञा अरु आशीष देतीभई सो सुनि लक्ष्मणजी

कैसे चित वकित चले जैसे वधिक के गाफिल परेते ताकीभय ते पक्षी उड़ि भागे ४ ॥

मू० । रागसोरठा ॥ मोकोविधुवदनविलोकनदीजै ॥ रामलषणमेरीयहीभेटबलिजाउँमोहिंमिलिलीजै १ सुनि पितुवचनचरणगहिरघुपतिभूपअंकभरिलीन्हे ॥ अजहुं अवनिविहरतदरारमिससोअवसरसुधिकीन्हे २ पुनिशि रनायगवनकियोप्रभुमुरछितभयोभूपनजाग्यो । कर्मचोर नृपपथिकमारिमानोरामरतनलैभाग्यौ ३ तुलसीरविकु लरविरथचढ़िचलेताकिदिशिदक्षिणसुहाई ॥ लोगनलि नभयमलिनअवधसरविरहविषमहिमआई ४ ॥

टी० । श्रीमहाराज चक्रवर्तीजी रघुनाथजीसों कहत कि हम को चन्द्रवदनदेखन दीजै हे रघुनन्दन लषणलाल ! मेरी यहीभेंट है तातेमैं बलिजाउँ मोकोमिलिलीजै१ पिताकेवचनसुनिरघुनंदन ने चरणगहे तब चक्रवर्तीजी प्रभुको अङ्कोरामें भरिलिहेसोअवस रकीसुधिकिहे अजहूँभूमि दरारके बहाने फाटत यामें प्राणप्रिया के बिछोह दुःखकी प्रबलता देखावत २ ॥ इत्यर्थः ॥ पाँयन में माथनवाइ रघुवरजीचले अरु महाराज मूर्च्छितभये फिरि न जागे मानौ कर्म सोईचोरहै वह भूप साहूकारको मारि रघुनन्दनरूप रत्न को लैभग्यो ३ गोसाईंजी कहत कि सूर्यवंश कमलप्रकाशकसूर्य रघुनाथजीरथपरचढ़ि दक्षिणदिशिको गमनकरे जैसे दाक्षिणायन सूर्यभये हिमऋतुआवत तैसे इहांकठिन विरहरूप हिमऋतुआई ताते अयोध्यासरविषे लोगकमलसम मलिनभये ४ ॥

मू० । रागबिलावल ॥ कहौसोविपिनहैधौंकेतिकिदू रि ॥ जहांगमनकियोकुंवरकोशलपतिबूझतसियप्रियपा हिंविसूरि १ प्राणनाथपरदेशपयादेहिंचलेसुखसकलत

जेतृणतूरि ॥ करौंबयारिविलम्बियेविटपतरझारिहौंचर णसरोरुहधूरि २ तुलसिदासप्रभुप्रियावचनसुनिनीरज नयननीरआयेपूरि ॥ काननकहां अबहिंसुनुसुन्दरिरघु वरफिरिचितयेहितभूरि ३ ॥

टी०। प्रिय प्रति जो रघुनाथजी तिनकी कोमलताबिसूरिवि- सूरि श्रीजानकीजी पूंछतीहैं हे कोशलपतिकुमार! जहांकोगमन कीन्हेउहै सो विपिन केतिक दूरिधौं है सो हमसों कहो १ हे प्राणनाथ! जहांको पयादेचलेहौ अरु सबसुख तृणसम तूरि पर- देशको आये अब आपश्रमितभयोहो ताते विटपतरविलम्बि जाइये मैं बयारिकरिदेउं अरु चरणकमलन की धूरि झारिदेउँ जामें श्रम उतरिजाइ २ गोसाईंजीकहत कि प्रिया जो जानकीजी के वचन सुनि प्रभुके नेत्रकमलनमें जलभरिआयो अरु कहतहैं हे सुन्दरि! अबहीं कानन कहां है अस कहिकै श्रीरघुनाथजी बहुत हितपूर्वक जानकीजीकी ओर देखतेभये ३ ॥

मू०। फिरिफिरिरामसियातनहेरत ॥ तृषितजानि जललेनलषणगयेभुजउठायऊंचेचढ़िटेरत १ अवनिकु रंगविहँगद्रुमडारनरूपनिहारिपलकनहिंप्रेरत ॥ मगनन डरतनिरखतकरकमलनसुभगशरासनशायकफेरत २ अ वलोकतमगलोगचहूंदिशि मनहुंचकोरचन्द्रमहिंघेरत ॥ तेजनभूरिभागभूतलपरतुलसीरामपथिकपदजेरत ३ ॥

टी०। श्रीरघुनाथजी फिरि फिरि बारबार श्रीजानकीजीकी ओर देखतहैं तृषितकहे पियासेजानिकै लक्ष्मणजीजललेबेहेतु गये तिनको रघुनाथजी ऊंचेपरचढ़ि भुजाउठायकै गोहरावते हैं अरु जानकीजीकी ओर घूमि २ देखत हैं १ भूमिपर मृगा वृक्ष डारनपर पक्षी रघुनाथजीको रूप यकटक निहारत पलक नहीं

चलावत ऐसे प्रेममेंमग्नहैं कि यद्यपि करकमलनमें श्रीरघुनाथजी सुन्दरधनुषबाण फेरतहैं परंतु ताको डेरातनहीं हैं२ जैसे चन्द्रमा को चकोर निहारत ताहीभांति मार्ग के लोग चारिहूंदिशिते प्रभु की माधुरी छविको अवलोकिरहे हैं गोसांईजी कहत कि ते जन बड़भागी हैं भूमितलपर जे पथिकरूप श्रीरघुनाथजी के चरणन में रतकहे प्रीतिकिहेहैं ३ ॥

मू० । नृपतिकुँवरराजतमगजात ॥ सुन्दरवदनसरोरुहलोचन मरकतकनकवरणमृदुगात १ अंसनिचापतूणकटिमुनिपट जटामुकुटबिचनूतनपात ॥ फेरतपाणिसरोजनिशायक चोरतचितहिसहजमुसकात २ संगनारिसुकुमारिसुभटसुठि राजतबिनुभूषणनवसात ॥ सुखमानिरखिग्रामबनितनके नलिननयनबिगसतमानोंप्रात ३ अंगअंगअगणितअनंगछवि उपमाकहतसुकविसकुचात ॥ सियसमेतनिजतुलसिदासचितबसतकिशोरपथिकदोउभ्रात ४ ॥

टी० । मगवासी कहतेहैं राजकुमार मार्गमेंजात विराजमानहैं सुन्दर वदन कमलसम नेत्र मरकत वरण श्यामरघुनाथजी कनक वरण गौर लक्ष्मणजी तिनको कोमलगातहै १ अंस कांधेपर धनुषधरे कटिबिषे तरकस अरु मुनिन के बस्त्रधारण शीशनपै जटाके मुकुटबनाये तिनमें नवीन पल्लव फूल धारण करेहैं करकमलनसों धनुष फेरत अरु सहजही में मंद मुसकात तौ देखनहारको चित्त चोराइलेत २ नवसात सोरहशृंगार बारह आभूषण विना संगमें अत्यन्त सुन्दरि सुकुमारि नारि विराजमानहैं तिनकी शोभा देखत ग्रामतियनकेनेत्र प्रभात के नीलकमलसम बिगसत प्रफुल्लितहोत । इहां शोभा सूर्यदरशहोबो प्रात नेत्र नीलकमल ३ एकएक अंगपर अनेकन कामकी छवि

को उपसादेत में सुकवि संकोच को प्राप्त होत हैं गोसाईंजी कहत कि श्रीजानकी सहित किशोर श्रीरघुनाथजी लक्ष्मणजी ते दोऊ भ्राता पथिकरूप हमारे चित्तमें नित्य बसत हैं ४ ॥

मू० । तूदेखुदेखुरीपथिकपरमसुन्दरदोऊ ॥ मरकतकलधौतवरणकामकोटिकांतिहरण चरणकमलकोमल अतिराजकुंवरकोऊ १ करधनुशरकटिनिषंगमुनिपटसोहै सुभगअंगसंगचन्द्रवदनिवधूसुन्दरिसुठिसोऊ ॥ तापसवरवेषकिये शोभासवलूटिलिये चितकेचोरवयकिशोर लोचनभरिजोऊ २ दिनकरकुलमणिनिहारिप्रेममगन ग्रामनारिपरस्परकहैंसखिअनुरागतागपोऊ ॥ तुलसीयह ध्यानसुधन जानिमानिलाभसघनकपिनज्योंसनेहसोंहियसुगेहगोऊ ३ ॥

टी० । ग्रामवधू कहती हैं कि हे सखी ! तू देखुदेखुरी दोऊपथिक परमसुन्दर हैं एक मरकत वर्णश्याम एक कलधौत सुवर्णवर्ण गौर ते दोऊ कोटिन कामदेवकी कांति हरणहारहैं अत्यन्त कोमल कमल सम चरण ते कोऊ राजकुमार हैं १ काहेते राजकुमारहैं कि करमें धनुषबाण लिहे कटिमें तरकस बांधे सुन्दर मुनिनके वसन अंगमें धारणकिहे साथमें चन्द्रवदनी वधूलिहे सोऊ परमसुन्दरि है तापसको वेषकिहे सव जगकी शोभा लूटि कै आपु लिहे हैं किशोर अवस्था चित्तके चोर तिनको नेत्रनभरि देखतौ २ दिनकर सूर्यकुल के शिरोमणि रघुनाथजी को देखि ग्रामकी वधू प्रेममें मग्न आपस में कहत कि अनुरागरूपी ताग में इन मणिन को पोहिलेव गोसाईंजी कहत कि यह वनकी साजसहित श्रीरघुनाथजी को ध्यान ताको सुन्दर धनजानि घनकहे समूह लाभमानि हृदयरूप गृहमें गोऊकही छपाइराखु जैसे कृपण धन को स्नेहसों राखत तैसे तुम इनको राखहु ३ ॥

मू० । कुँवरसाँवरोरीसजनीसुन्दरसबअंग ॥ रोमरो मछविनिहारिआलिवारिफेरिडारि कोटिभानुसुवनशरद सोमकोटिअनंग १ वामअंगलसतचापमौलिमंजुजट कलापशुचिशरकरमुनिपटकटितटकसेनिषंग ॥ आयत उरबाहुनैनमुखसुषमाकोलहैन उपमाअवलोकिलोकगि रामतिगतिभंग २ योंकहिभइमगनबालविथकीसुनियु वतिजालचितवतचलेजातसंगमधुपमृगविहंग ॥ वरणौं किमितिनकिदशाहिनिगमअगमप्रेमरसहितुलसीमनबस नरँगेरुचिररूपरंग ३ ॥

टी० । हे सजनी ! सांवरो कुंवर सब अंगते सुन्दर है इनके अंगमें रोमरोमकी छवि निहारि भानुसुवन कहे अश्विनीकुमार शरद पूर्ण चन्द्रमा कामदेव इत्यादि कोटिन को फेरिफेरि वारन कहे निछावरि करि डारिये १ वाम कांधेपर धनुष है मौलिकहीं शीशपर मंजु सुन्दर पवित्र कलाप कहे समूह जटा हैं हाथन में बाणलिहे मुनिनके पट धारण किहे कटिमें तरकस है छातीचौड़ी भुजा लम्बे पुष्ट बड़ेबड़े नेत्र मुखकी शोभाको अन्त कोऊ नहीं पावत लोकमें उपमा ढूंढ़त शारदाकी मतिकी गति भंग कहे नष्टसी ह्वै गई २ असकहिकै सो बालकहे स्त्री मग्नह्वैगई अरु सुन-नेवाली जालकहे समूह युवतीजन प्रभुकी छवि निहारि थ-कितह्वै एकटक रहीं तहां मनुष्यको कौनकहै पशुजीव मृगा अरु पक्षी भृंग आदि चितवत साथमें चलेजात हैं प्रेमकेवश तिनकी दशा कैसे वर्णन कीन्ही जाय प्रेमको रस वेदकोभी अगमहै गो-साईंजी कहत कि प्रभुके सुन्दर रूपके रंगमें तिनके मन वसन सम रँगेहैं ३ ॥

मू० । रागकल्याण ॥ देखुकोऊपरमसुन्दरसखिबटो ही ॥ चलतमहिमृदुचरण अरुणवारिजनयनभूपसुत

रूपनिधिनिरखिहौंमोही १ अमलमरकतश्यामशीलसुख
धाम गौरतनसुभगशोभासुमुखिजोही ॥ युगलबिचना
रिसुकुमारिसुठिसुन्दरी इन्दिराइन्दुहरिमध्यजनुसोही २
करनवरधनुतीररुचिरकटितूणीर धीरसुरसुखदमर्दनअव
निद्रोही ॥ अनुजायतनैनबदनछविबहुमयनचारुचितवन
चतुरलेतचितपोही ३ वचनप्रियासुनिश्रवणरामकरुणा
भवन चितैसबअधिकहितसहितकछुओही ॥ दासतुलसी
नेहविवशविसरीदेह जाननहिंआपुतेहिकालधौंकोही ४ ॥

टी० । हे सखी देखु कोऊ परमसुन्दर बटोही जातहैं कमल सम कोमल ललित चरणनते महिपर पैदर चलत कमल सम नेत्र रूपके निधि भूपके कुमारन को देखि मैं मोहिगई १ एकनिर्मल मरकतवरण श्याम शील शोभाके सदन दूसरे गौरतन सुंदर शोभामयी दूनहूं कुमारन को हे सुमुखि देखु ते दोऊ कुमारन के बीच एकस्त्री सुन्दरि सुकुमारि अत्यन्त मनोहरि कैसी राजत मानो भगवान् अरु चन्द्रमा के बीच लक्ष्मी शोभितहैं २ हाथन में सुन्दर धनुष बाणलिहे कटिमें तरकस धारणकिहे रणमें धीरजवान् देवतन के सुख देनहार पृथ्वी के द्रोही राक्षसनके नाशकरनहार तिनके कमलसम बड़ेबड़े नेत्र अरु मुखकी शोभापर अनेकन काम वारि देइ ऐसे चतुर हैं कि सुन्दर चितवनि ते चित्त अपने में सबके चित्तन को पोहेलेत ३ तिन स्त्रिनके प्रिय वचन कानन सों सुनि रघुनाथजी करुणा के धाम सबके ओर देखे परन्तु वह जो कहनहारी रही ताकी ओर अधिक हितसहित हेरे गोसाईंजी कहतहैं स्त्री नेहके वश देहकी सुधि भूलिगई तेहि काल में आपु को नहीं जानत कि मैं कौनहौं ४ ॥

सू० । रागकेदार ॥ सखिनीकेकैनिरखिकोऊसुठि

सुन्दरबटोही ॥ मधुरमूरतिमनमोहनजोहनयोगबदन शोभासदनदेखिहौंमोही १ सांवरेगोरेकिशोरसुरमुनि चितचोरउभयअन्तरएकललनासोही ॥ मनहुंवारिदवि धुबीचललितअतिराजततड़ितनिजसहजाबिछोही २ उरधीरजधरिजन्मसफलकरि सुनहिंसुमुखिजनिविकलहोही ॥ कोजानैकवनेसुकृतिलह्योहै लोयनलाहुताहितेवारहिबारकहतिहौंतोही ३ सखिहिसशिषदईप्रेममगनभई सुरतिबिसरिगईअपनीओही ॥ तुलसीरहीठाढ़िपाहन ऐसीगाढ़ि कोटिनजानेकहांतेआईकौनकीकोही ४ ॥

टी० । हे सखी नीकी प्रकारते देखु तौ कोऊ परमसुन्दर बटोही हैं मधुरमूरति मनको मोहनहार जोहनकही देखबे योग्यहैं जिनकी शोभा सुन्दर बदन देखि मैं मोहिगई १ देवता मुनिनके चित्त चोर श्याम गौर किशोर दोउनके बीच एक परमसुन्दरि नारि शोभितहै मानों मेघ अरु चन्द्रमाके बीच सहज चंचलता त्यागि सुन्दर दामिनी शोभितहै २ हृदय में धीरज धरिकै इनको देखि जन्म सफल करु मैं जो कहत सो सुनु विकल न होहिं हे सुमुखि को जानै कौने सुकृतते नेत्रनको लाभ पायोहै ताहीते मैं बार बार कहतिहौं ३ सखिनको सिखावन देकै प्रेममें मग्नह्वैकै अपनी देहकी सुधि बिसरि गई गोसाईंजी कहत कि वह ठाढ़ी रहगई मानों पाथरकीसी पुतरी गढ़िकै ठाढ़िहै आपुको नहीं जानत कि कहां ते आई अरु कौनकी हैं ४ ॥

मू० । माईमनकेमोहनजोहनयोगजोही ॥ थोरिही वयसगोरेसांवरेसलोनेलोने लोयनललितविधुबदनबटोही १ शिरन्जटामुकुटमंजुलसुमनयुततैसियेलसतनवपल्लवखोही ॥ कियेमुनिवेषवीरधरेधनुतूणतीर सोहैमन

कोहैलखिपरैनमोही २ शोभाकोसांचोसँवारिरूपजात रूपटारिनारिविरचीविरंचिसंगसोसोही ॥ राजतरुचिरत नसुंदरश्रमकेकन चाहेचकचौंधीलागैकाकहौंतोही ३ सनेहशिथिलसुनिवचनसकल सियाचितईअधिकहितस हितओही ॥ तुलसीमानहुँप्रभुकृपाकीमूरतिफिरिहेरिकै हरषिहियलीयोहैपोही ४ ॥

टी०। हे माई मनके मोहन देखवे योग्य हैं तिनको मैं देखो है थोड़ी जिनकी उमिर एक गोरगात एक श्यामगात लावण्यताके भरे सुन्दर नेत्र सुन्दरमुख १ शिरपर जटाके मुकुट सुन्दर फूलन सहित शोभितहैं तैसे सुन्दर नवीन पत्रनकी खोहीकहे छत्राकार घाम निवार्णार्थ शिरपर लगायेहैं हैंतो कोऊ वीर परन्तु मुनिन कैसो वेष धारण धनुष वाण तरकस शोभित मोहिं पहिचानि नहीं परत कि कौनहै अरु मनको सोहाते हैं २ ब्रह्माने मानों शोभाको सांचा वनाय रूपको सोनाकरि तासों ढारि नारि वनाई सो साथ में शोभित सुन्दर तनविषे श्रमकहे पसीनाकीकणैं शोभित तिनको चाहे कही देखेते नेत्रनमें चकचौंधी लागत तिनकी गति अद्भुतहै ताको मैं तोहिंसों कैसे वर्णन करि कहौं नहीं कहत वनत है ३ यह जो सनेह सो शिथिलता की वातैं सव जानकीजी सुनिकै ताकी ओर अधिक हित सहित देखतीभई गोसाईंजी कहत कि मानों प्रभुकी कृपा मूर्तिमान् है हर्षि घूमि चितै ताको चित्त आपना में गुहि लियो अब अनत न जाई ४ ॥

मू०। सखिशरदविमलविधुबदनवधूटी ॥ ऐसीलल नासलोनीभईनहैनहोनी रचैरचीविधिजोछोलतछविछू टी १ सांवरेगोरेपथिकनवीचमोहतिअधिकतिहुँनात्रिभुवन

शोभामानहुँलूटी ॥ तुलसीनिरखिसियप्रेमबशकहैंतिय लोचनशिशुनदेहुअमियघूटी २ ॥

टी०। हे सखी निर्मल शरदके चन्द्रमासम यह वधूको मुखहै ऐसी सलोनी ललना भई है न कहूं है न होनहार है ब्रह्माने जब याको सुधारयो तासमय जो छवि छूटपरी तासों रति को रची १ सांवर गौर पथिकन के बीच ललना अधिक शोभित होत तिनहुँन मानों त्रैलोक्यकी शोभा लूटिलै आपु धारण करे हैं गोसाईंजी कहत कि जानकीजीको देखि ग्रामकी वधू आपुस में कहती हैं कि हे सखी आपने नेत्र बालकन को पथिकन की शोभारूप औ-षध अमृतमयी ताकी घूटी देहु छवि नेत्रनसों पान करहु २ ॥

मू०। मोहैंसाँवरेपथिकपीछेललनालोनी ॥ दामिनि वरणगोरीलखिसखितृणतोरी वीतीहैवयकिशोरीयौवन होनी १ नीकेकैनिकाईदेखिजनमसफललेखि हमसीभूरि भागिनीनभनछोनी ॥ तुलसीस्वामीस्वामिनिजोहेमोही हैंभामिनिशोभासुधापियेकरिअँखियांदोनी २ ॥

टी०। सांवरे पथिकके पीछे ललना अत्यन्त सुन्दरी है दामि-नि वरण गौरतनको देखि संगकी सखी तृणतोरती हैं जामें नजरि न लागै अरु कहतीहैं कि किशोरी अवस्था वीतिगई अब यौवन वय होनहारहै १ नीकी प्रकारते निकाई देखिकै आपनो जन्म सफल करि मानती भईं कि हमते बड़ी भाग्यवाली स्त्री न स्वर्गमें हैं न भूमिपर हैं गोसाईंजी कहत स्वामी श्रीरघुनन्दन स्वामिनी श्रीजनकनन्दनी तिनको जोहे कहीं देखे ते मोहिगईं शोभारूप अमृत जो नेत्रनको दोना बनाइ तासें भरिभरि पानकरतीहैं २ ॥

मू०। पथिकगोरेसाँवरेसुठिलोने ॥ संगसुतियजाकेतनतेलहीहैद्युतिस्वर्णसरोरुहसोने १ वयकिशोरसरिपार

मनोहरवैसशिरोमणिहोने ॥ शोभासुधाआलिअचवहु करिनैनमंजुमृदुदोने २ हेरतहृदयहरतनहिंफेरतचारुवि लोचनकोने ॥ तुलसीप्रभुकिधौंप्रभुकोप्रेमपढ़ेप्रगटकपट विनटोने ३ ॥

टी० । सांवरे गोरे पथिक अत्यन्त सुन्दरहैं तिनके साथ जो युवतीहै सो परमसुन्दरि जाके तनते द्युतिपाई है सुवर्ण अरु कनक को कमल १ किशोरअवस्था रूप नदीते पारहै अब बैसशिरोम- णि कहे यौवनअवस्था होनहार हे आली नेत्रनको सुन्दर कोमल दोना बनाइ इनकी छविरूप अमृतको पानकरहु २ सुन्दर नेत्रन की कोरसों हेरि मनको हरिलेत फिर फेरतनहीं जाको अपन्या- वत ताको त्यागत नहीं गोसाईंजी कहत कि प्रभु कैधौं प्रभुको प्रेम सोई विना कपटको प्रगटोना पढ़े है टोना छिपाइ छलते होत प्रभु सन्मुख मनहरत ताते प्रगटटोना कहे ३ ॥

मू० । मनोहरताकेमानोऐन ॥ श्यामलगौरकिशोर पथिकदोउ सुमुखिनिरखुभरिनैन १ वीचवधूविधुवदन विराजत उपमाकहँकोउहैन ॥ मानहुँरतिऋतुनाथसहि तमुनिवेषवनायोहैमैन २ किधौंशिंगारसुषमासुप्रेम मिलिचलेजगचितवितलैन ॥ अद्भुतत्रयीकिधौंपठईवि धिमगलोगनसुखदैन ३ सुनिशुचिसरलसनेहसुहावनेश्रा मवधुनकेवैन ॥ तुलसीप्रभुतरुतरविलंबकियेप्रेमकनौं ड़ेकैन ४ ॥

टी० । श्याम गौर किशोर पथिक मानों मनोरहताके मंदिरहैं हे सखी तिनको नैनन भरि देखो १ तिनके वीचमें चन्द्रवदनी वधू विराजमानहै ताकी उपमा योग्य कोउ कहूं नहीं है मानों रति अरु वसंत सहित मदनने मुनिको वेष बनायो है रति जानकीजू

वसंत लक्ष्मणजी मदन रघुनाथजी २ अथवा जगत्के चित्तरूपी वित्त द्रव्यलेवेहेतु श्रृंगार अरु शोभा अरु प्रेम मिलिकै चलेहैं श्रृंगार रघुनाथ शोभा जानकी प्रेम लक्ष्मण अथवा जगत् मगलोगनके सुखदेवे हेतु अद्भुत त्रयी कहे वशीकरण आकर्षण मोहनी मूर्तिमान् एकत्रकरि विधाताने पठायो है अथवा वेदत्रयी मूर्तिमान् है पवित्र सरल सुन्दर सनेहमयी वचन ग्रामवधुन के सुनि प्रभु वृक्षतरे विलंबिरहे गोसाईंजी कहत कि प्रभु प्रेमकरिकै केहि के कनौड़े नहींहैं ग्रामवधुनको प्रेमदेखि थँभिगये ३ । ४ ॥

मू० । वयकिशोरगोरेसांवरेधनुबाणधरेहैं ॥ सबअंगसहजसुहावनेराजिवजीतेनैननबदननविधुनिदरेहैं १ तूणसुमुनिपटकटिकसेजटामुकुटकरेहैं ॥ मंजुमधुरमृदुमूरतिपनाहिंउनहिंपांयनकैकैसेधौंमगविचरेहैं २ उभयबीचवनिताबनीलखिमोहिंपरेहैं ॥ मदनसप्रियसप्रियासखामुनिवेषबनायलियेमनजातहरेहैं ३ सुनिजहँतहँदेखनचलेअनुरागभरेहैं ॥ रामपथिकछविनिरखिकैतुलसीमगलोगनधामकामविसरेहैं ४ ॥

टी० । सांवरे गोरे कुमार किशोर अवस्था धनुष बाण धारण किहे हैं सबते सुहावने हैं नेत्रनकी छविते कमलन को जीते मुखनकी छवि सों चन्द्रमा को निरादर करतहैं १ मुनिन के वसन करिके कटिमें तरकसकसे शिरविषे जटाके मुकुट बनाये सुन्दर मनोहर कोमलमूर्त्ति तापर पांयनमें पनहीं नहीं पांयनसों कठोर मगमें कौन भांतिते विचरत हैं २ दोऊ कुमारनके बीच वनिता अत्यन्तसुंदरि बनी सो मोहिं अस लखिपरत कि प्रिया जोरति प्रिया सखा वसन्त समेत मदन मुनिको वेष बनाये जग के चित्त हरेलेतहै ३ यह बात सुनि मगवासी अनुराग ते भरे जहां तहां ते प्रभुके देखबेको चले गोसाईंजी कहत कि पथिकरूप रघु-

नन्दनकी छवि देखि मगवासी धामको काम बिसरिगये ४ ॥

मू० । कैसेपितुमातुकैसेतेप्रियापरिजनहैं ॥ जगजलधिललामलोनेलोनेगोरेश्याम जिनपठयेऐसेबालकनवनहैं १ रूपकेनपारवारभूपकेकुमार मुनिवेषदेखतलोनाईलघुलागतिमदनहैं ॥ सुषमाकीमूरतिसीसाथनिशिनाथमुखी नखशिखसबअंगशोभाकेसदनहैं २ पंकजकरनिचापतीरतरकसकटि शरदसरोरुहतेसुन्दरचरनहैं ॥ सीतारामलषणनिहारिग्रामनारिकहैं हेरिहेरिहेरिहेलीहियकेहरनहैं ३ प्राणहूंकेप्राणसेसोजीवनकेजीवनसे प्रेमहूंकेप्रेमरंककृपणकेधनहैं ॥ तुलसीकेलोचनचकोरनकेचन्द्रमासे आछेमनमोरचित्तचातककेघनहैं ४ ॥

टी० । हे सखी माता पिता परिवार प्रियलोग इनके कैसे हैं जे जगत्रूपी समुद्र के सुन्दर रत्न श्याम गौर ऐसे कुमारन को वनमें पठये १ भूपकुमारन के रूपकी पारावार कहे सीमा नहीं है कि केतरी शोभाहै जिन मुनिनको वेष कहते ऐसी शोभा देखि परत जिनके आगे मदन लघु लागत शोभासी मूर्त्तिमान् साथमें चन्द्रमुखी युवती है ताके अंग नखते शिखातक सब मानों शोभा के मन्दिरहैं २ करकमलन में धनुष बाण लिहे हैं कटिमें तरकस बांधे शरदृऋतु के नवीन कमल सम सुन्दर चरण हैं श्रीजानकी लक्ष्मणसहित रघुनाथजी को देखि ग्रामवधू कहती हैं हे सहेली हृदयके हरणहार हैं तिनको देखु देखु तीनिरूपहैं ताते तीनिबार कहे वा प्रेम वशते ३ कैसे हैं प्राणनके प्राणसे सुन्दर जीवनके जीवनसे प्रेमहू के प्रेमसे कैसे प्यारे हैं जैसे दरिद्रसहित कृपण स्वभाववाले को धनसे गोसांईजी कहत हमारे नेत्रचकोरन को चन्द्रमासे मनरूप मोर चित्तरूप चातकके आछेकहे सजल नवीन सुन्दर मेघसे हैं ४ ॥

मू०। रागभैरव॥ सखिद्वैपथिकगोरेसांवरेसुभगहैं॥ सुतियसलोनीसंगसोहतसुमगहैं १ शोभासिन्धुसंभवसे नीकेनीकेनगहैं॥ मातुपितुभागवशगयेपरिफंगहैं २ पांयनपनहेउनमृदुपंकजसेपगहैं॥ रूपकीमोहनीमेलिमोहे अगजगहैं ३ मुनिवेषधरेधनुशायकसुलगहैं॥ तुलसी हियेलसतलोनेलोनेडगहैं ४॥

टी०। गोरे सांवरे द्वौ पथिक सुन्दर हैं हे सखी तिनको देखु सुन्दरि शिरोमणि युवती साथमें लिहे मार्गमें शोभित हैं १ शोभा रूप समुद्र के उत्पन्न भयेसे नगकहे रत्न ते माता पिताके भाग्य वशते फंदमें परिगये राज्यछांड़ि वनवासपरे २ कोमल कमल सम पांयन ते विनापनहीं चलत अपने रूपकी मोहनी डारि स्थावर जंगमको मोहत ऐसे रूपवान्हैं ३ मुनिन को वेष किहे सुलगहैं कहे सुन्दर लागतहैं लोने कही सुन्दर डग सुन्दचाल सों भूमि में पांव धरत सो गोसाईंजी कहत कि हमारे हृदय में शोभित हैं ४॥

मू०। पथिकपयादेजातपंकजसेपायहैं॥ मारगकठिन कुशकंटकनिकायहैं १ सखीभूखेप्यासेद्वैचलतचित चायहैं॥ इनकेसुकृतसुरशंकरसहायहैं २ रूपशोभाप्रेम केसेकमनीयकायहैं॥ मुनिवेषकियेकीधौंब्रह्मजीवमायहैं३ वीरबरियारधीरधनुधरसायहैं॥ दशचारिपुरपालआलिउर गायहैं ४ मगलोगदेखतकरतहायहायहैं॥ वनइनकोतोवा मविधिकेबनायहैं ५ धन्यतेजेमीनसेअवधिअम्बुआयहैं॥ तुलसीप्रभुसोजिनहूंकेभलेभायहैं ६॥

टी०। कुशकी डाभ अरु कांटा निकाय कही समूह तेहित्ते

मारगकठिनहै तामें कोमल कमलसम चरणनसों पथिक पयादे जात हैं १ हे सखी भूख प्यासकरि तृतनहीं परंतु चित चाय कही आनन्दते चलेजातहैं काहेते इनके सुकृतकरिके देवनयुत महादेवजी सदा सहाय हैं २ रूप देहधारीरघुनाथजी शोभा देह धारी जानकी जी प्रेम देहधारी लक्ष्मणजी कमनीयकहे सुन्दर हैं किधौं मुनिवेष धारणकिहे पारब्रह्मनित्य मुक्तिजीव आह्लादिनी मायाहै ३ बरियार बलिष्ठ धनुष धारणकिहे धीरवान् वीरकोऊ राजाहै हे आली चौदहौं भुवनके रक्षाकरनहारे उरगाय कही ईश्वरहैं ४ मारगके लोग इनको देखि हाय हाय कहत कि जो इनको वनवासभया तोविधाता वनायके इनके बाम कहेटेढ़ेहैं ५ इनकेरूप सोई अम्बु कही जलहै तेहिविषे जे अवधिकहीनिश्चय करि मीनसे आयेहैं जे मनको मीनसम प्रभुकेरूप जलमें मग्न कियेहैं तेधन्य हैं गोसाईंजी कहत जे प्रभुमें भलेभावकरे हैं तेऊ धन्य हैं ६ ॥

मू० । रागआसावरी ॥ सजनीहैंकोउराजकुमार । पंथचलतमृदुपदकमलनदोउशीलरूपआगार १ आगेराजिवनयनश्यामतन शोभाअमितअपार । डारौंवारिअंगअंगनपरकोटिकोटिशतमार २ पाछेगौरकिशोरमनोहरलोचनबदनउदार । कटितूणीरकसे करशरधनुचलेहरनक्षितिभार ३ युगलबीचसुकुमारिनारिइकराजतविनहिंशिंगार । इन्द्रनीलहाटकमुक्तामणिजनुपहिरेमहिहार ४ अवलोकहुभरिनयनविकलजनिहोहुकरहुसुविचार । पुनिकहँयहशोभाकहँलोचनदेहगेहसंसार ५ सुनिप्रियबचनचितैहितकैरघुनाथकृपासुखसार । तुलसिदासप्रभुहरेसबकेमनतनकीरहिनसँभार ६ ॥

टी० । हे सजनी येकोउ सुन्दर राजकुमारहैं कमल समको-

मलचरणरूप शील आदि गुणकेधाम दोऊ पंथमें चले जात १ कमलसम नेत्र श्यामगातमें अपार शोभाते आगेचलत तिनके एकएक अंगपर सौसौ करोरि कामदेव वारिडारिये २ अरु जो गौर किशोरहैं मनको हरणहार पीछेहैं तिनके सुन्दरहैं नेत्र उदार कहे प्रसन्नहैं मुख अरु कटिमें तरकस कसे हाथनमें धनुष बाण लिये ते दोऊ भूमिको भार उतारिबेको चलेहैं ३ दोऊ राजकुमारनके बीच एकसुकुमारि नारि बिराजमान है शृंगार रहित सो तीनहूं स्वरूप कैसे शोभित होत श्याम भूप इंद्र नीलमणि है गौररूप मुक्तामणि है बीचमें नारि हाटक कहे सोनासम है सो मगरूपतागामें गुहे मानो पृथ्वी हार पहिरे है यथामोहनमाला तथा यह जगत् मोहनहार है ४ हे सखी नेत्रनभरिभरि इनराजकुमारनकी अपूर्वशोभा देखहु अरु विकल न होहु मनमें असविचारकरहु कि कहां हम लघुभागी तुच्छजीवनके नेत्रनको यह शोभाको अवलोकन फिरिकहां ऐसीभाग्यहै जो मिली अरु देह धरतो सबसंसारैमें है ५ तेहिसखीके प्रियवचन सुनि कृपा अरु सुखको सारांशस्थान रघुनाथजी हितसहित ताकी ओर चितये गोसाईंजी कहत कि ता समय रघुनाथजी सबकेमन हरिलिये ताते ग्रामबधुनको अपने तनकी सँभार नरही ६ ॥

मू०। देखुरीसखिपथिकनखशिखनीकेहैं । नीलेपीलेकमलसेकोमलकलेवरनतापसहूंवेषकियेकामकोटि फीकेहैं १ सुकृतसनेहशीलसुखमा सुखसकेलिबिरचेबिरंचिकीधौंअमीअमीकेहैं । रूपकीसीदामिनीसीभामिनी सोहतीसंगउमहुरमातेआछेअंगअंगतीकेहैं २ बनपटकसेकटितूणतीरधनुधरेबीरपालकक्रपालसबहीकेहैं । पानाहिउँनचरणसरोजनचलतमगकाननपठयेपितुमातु कैसेहीकेहैं ३ आलीअवलोकिलहुनैननकोफलयेहुला

भकेसुलाभसुखजीवनसेजीकेहैं॥ धन्यनरनारिजेनिहारि बिनगाहककहूआपनेआपनेमनमोलबिनुबिकेहैं ४ बिबुधबरषिफूलहरषिहियेकहतग्रामलोग मगनसनेहसियपीकेहैं ॥ योगीजनअगमदरशपायोपाँवरनमुदितवचन सुनिसुरपशचीकेहैं ५ प्रीतिकेसुबालकसेलालतसुजन मुनिमगचारुचरितलषणरामसीकेहैं ॥ योगनबिरागजागतपनतीरथत्यागयेहीअनुरागभागखुलेतुलसीकेहैं ६॥

टी०। हे सखीरी देखुतो पथिक नखते शिखातक नीकेहैं नील-कमलसम श्यामतन पीतकमलसम गौरतन कोमल तापसहूको वेषकिहे ताहूपर तिनके आगे कोटिनकाम फीके लागतहैं १ सुकृत औ सनेह शोभा औ सुख इन सबको समेटिकै विधाता ने इन राजकुमारनको रच्योहै अथवा अमृतहूके अमृतहैं दामिनिकै शोभारूप भामिनि साथमें शोभितहै ता तियाके अंगअंगमें ऐसी शोभाहै जो उमाते रमाते आछे जाके अंगहैं २ बनपटबल्कलादि पहिरे कटिमें तरकसकसे करमें धनुषबाणलिहे धीर्य्य पलककहे धीरधर वीरते सबहीके ऊपर कृपालुस्वभावहैं पांयन में बिन पनहीं कमलसम कोमल पदनसों कठोर मगमें चलत इनके माता पिता कैसे कठोर हृदयकेहैं जो इनको बनको पठाये हैं ३ हे आली इनको देखि नेत्रनको लाभरूपी फललेहु कैसे वे हैं लाभहूकेलाभहैं सुंदर औ जीवनके सुंदर सुखरूप जीवन हैं ते नरनारि धन्यहैं जे इनको नेत्रनभरिदेखे अरु बिना गाहक कहिये राजकुमार कछु छलकरि काहूको मनलेबेकी इच्छा नहीं किहेहैं तापर अपने२मनते बिनामोलही अनिच्छित इनके हाथ बिकायगये आपनोमन इनमें लगायदिये ४ सिया पियाके सनेह में ग्रामके लोग मगन हैं प्रेममें बूडे हैं तिनको देखि हर्षितह्वैफूल वर्षि आकाशतें देवता कहत कि जे रघुनाथजीके योगीजननको

दर्शनअगमहैतेई रघुनन्दनभक्तनकेबशहैपांवरनकहे नीचनको दर्शनदिये यह वचन सुनि सुरपइंद्र शची इंद्रानी मुदितभये कि प्रभु हमारे कार्यहेतु जातहैं ५ श्रीरघुनन्दन लषण जानकीजी के सुन्दर चरित मार्गके ते प्रीतिरूप माताके बालकसेहैं तिन को सुजन मुनिजन पिताकीसमान लालतकहे दुलराइकेगावत सुनत देखतहैं गोसाईंजी कहत कि योग वैराग तप त्याग यज्ञ तीरथादि सुकृतबिना केवल प्रभुके चरितनमें अनुरागहोबो इ-सारेभी भागखुले ६ ॥

मू०। रीतिचलिबेकीचाहिप्रीतिपहिंचानिकै ॥ आपनीआपनीकहैंप्रेमपरबशअहैं मंजुमृदुवचनसनेहसुधासानिकै १ सांवरेकुँवरकेवरायकेचरणचिह्न बधूपग धरतकहाधौंजियजानिकै ॥ युगलकमलपदअंकजोगवत जातगोरेगातकुँवरमहिमामहामानिकै २ उनकीकहनिनीकीरहनिलषणसीकी तिनकीगहनिसैपथिकउरआनिकै ॥ लोचनसजलतनपुलकमगनमनहोतभूरिभागी यशतुलसीबखानिकै ३ ॥

टी०। श्रीरामजानकी लक्ष्मणजीकी चलिबेकीरीति ताको चाहिकही देखिकै अरु प्रीतिते पहिंचानिकै जे ग्रामके नरनारि प्रभुके प्रेमकरि बरबस हैं ते स्नेहरूपी अमृत में सानि सुन्दर कोमलबचन आपनी आपनी डाकिसों कहतहैं १ ताजानिकाह जानिकै सांवरे कुंवरके पगको चिह्नबराय बधू भूमिमें पगधरत है सांवरोकुंवर औराजकुमारोसे दोऊपदकमलकीरेखानकीमहा महिमा मानिकै गोरेगात जे कुंवरते जोगवतकही बरायकै पांव धरतजात २ मगकेलोगनकीकहनि प्रेमभरी ताते नीकी नम्रता अनुकूलतारुखलिये प्रभुकेसाथ रहनि श्रीजानकीलक्ष्मणजीकी नीकी जे पथिकरूप श्रीराम जानकी लक्ष्मणजी को हृदय में

धारण करिलियो तिनकी गहनि नीकी नेत्रन में जलसहित तन पुलकित प्रेम में मन मगन है प्रभुको यश वर्णन करि तुलसीहू भूरिभागी कहे नीकेभये ३ ॥

मू० । रागकेदार ॥ जेहिजेहिमगसियरामलषणगयेतहांतहांनरनारिविनाछरनिछरिगे ॥ निरखिनिकाई अधिकाईविथकितभई वचनवपुनैनसरशोभासुधाभरिगे १ जोतेबिनबयेबिनबिनफलनिरायेविनसुकृतसुखेतसुखशालिफूलफरिगे ॥ मुनिहुंमनोरथकोअगमअलभ्यलाभसुगमसोरामसबलोगनकोकरिगे २ लालचीकौड़ीकेकूरपारसपरेहैंपाले जानतनकोहैकहाकीबोसोबिसरिगे॥ बुद्धिनविचारनबिगारनसुधारन सुधिदेहगेहनेहनातेमनतेनिसरिगे ३ वरषिसुमनसुरहरषिहरषिकहैंअनायासभवनिधिनीचनीकेतरिगे ॥ सोसनेहसमवसुमिरितुलसीहूकेभलीभांतिभलेपैयभलेपांसेपरिगे ४ ॥

टी० । लक्ष्मण जानकीजीसहित श्रीरघुनाथजी जौनी राहमें गये तहां तहांके नर नारि सब विना छरनिछरिगये छरनि कही पुराने चाउरको मैदामें मिलाय काढ़त जब सफ़ेदभये तब कनकी कन निकारि बीनि सफाकरत ताको छरे चाउर इस्तेमाल कहत इहां मगके लोग विनाकर्म ज्ञानादि परिश्रमकिहे केवल प्रभु दर्शनमात्र ते सर्व विकार रहितहै श्रीरामअनुरागी जीवन्मुक्त भये सोई इस्तेमाल चाउर सम लोग विना छरनि गये जीवशुद्धहै प्रभुमें लागिगये अब ज्ञाते चाउर होत सो धाननकी उत्पत्तिको रूप कहतहैं घनसरीखे रघुनाथजीकी छवि सोई जल सोई निकाईकी अधिकाई कहे छविसमूहको अवलोकन सोई छविरूप जलको वर्षव ताते मगलोगन के तनरूप भूमि में

वचनरूप पथिक थकितभये अरु नेत्ररूप तड़ागन में छविअ-
मृतमयी जल सों भरिगये १ जोतेबिन कही जपतपादि विना
किहे बयेबिन कही भजन ध्यान विना किहे निराये बिन कही
विषयकी वासनाविनात्यागे निफलभयोकही प्रेमकोआनन्दबढ़ि
आयो सोई सुकृतरूप सुन्दर खेतनमें सुखरूपी शालि जो धान
सो फूलिकै फरि गयो प्रभुके देखिबेकी चाह सोई फूल प्रभुकी
माधुरीमूर्त्ति अवलोकि सुख होबो सोई फलहै यह दृष्टांतहै अब
दार्ष्टांत कहत जो प्रभुकोरूप प्रसिद्धदर्शन सो मुनिनको मनोरथ
करिबो अगमहै अलभ्यलाभकही यहलाभकाहूको नहीं हैसकत
सोई लाभ निज रूपके दर्शन श्रीरघुनाथजी लघुलोगनको सु-
गम राहराह सबको दरशदेतगये ताते सब रामानुरागी है गये
२ कौड़िके कही कोऊ तुच्छदेवता के लालची कही चाहतरहे
तिनहूंके दर्शन अगम तिन कूरनके पारससम रघुनाथजी पाले
परेहैं तिनको जानतनहीं हैं कि ये कौनहैं और इनको क्याकरना
चाहिये सो सब बिसारिगये न बुद्धिहै जासों जानिलेइँ न विचा-
रहे जासों विचारिके कार्यकरैं कि ये कोहैं हम कौनहैं न बिगार
कही विरोधभाव यथा प्रभुशर प्राणतजौं भवतऊन सुधार कही
शरणागत जानतेहैं यथा शरणसुखद रघुवीरइत्यादि सुधिएकहू
नहीं है विना कर्मज्ञानभक्तिआदि परिश्रम किहे प्रभुके दर्शनमात्र
ते देह घरको स्नेह अरु नाता सब मनते निसारिगयो अरु प्रेम
प्रभुमें लागिगयो इत्यादि विनाछरनिछरि कनमलरहित सफा
तैसे लोगनके जीव शुद्ध हैगये ३ हर्षि हर्षि फूल वर्षि देवता
कहत कि नीचहूप्राणी भवसागरको अनायासही नीकी प्रकार
तरिगये सोई समयको स्नेह स्मरणकरि तुलसीहूके भलेप्रकार
भलेदांवपर भलेपांसे परिगये ४ ॥

मू० । बोलेराजदेनकोरजायसुभोकाननको आनन
प्रसन्नमनमोदबड़ोकाजुभो ॥ मातुपितुबंधुहितआपनोप

रमहितमोकोबीसहूकेईशअनुकूलआजुभो १ अशनअ जीरनकोसमुझितिलकतज्यो विपिनगमनभलेभूखेकैसो नाजुभो ॥ धरमधुरीणधीरवीररघुवीरजूको कोटिराज सरिसभरतजीकोराजुभो २ ऐसीबातैंकहतसुनतमगलो गनकी चलेजातबन्धुदोऊमुनिकैसोसाजुभो ॥ ध्याइबे कोगाइबेकोसेइबेसुमिरिबेको तुलसीकोसबभांतिसुखस समाजुभो ३ ॥

टी०। मगवासी कहत कि रघुनाथजीको राजाने राज्यदेबेहेतु बुलाये अरु वनजाबेकी आज्ञादिये तापर रघुनाथजीको मुख प्रसन्नै बनारहा मनमें ऐसे आनन्दभये कि वनजाइबो बड़ा काजु भयो काहेते माता कैकेयी अरु पिता अरु भाई भरतको हितहै अरु आपनो तौ परमहित है मोको बीसहू बिस्वा कैकेयी द्वारा ईश्वर अनुकूल है एकतो माता पिताकी आज्ञापालन दूसरे मुनि तीर्थ दरश तीसरे भूमिभार उतारिबो काज सिद्धिहोइगो १ अजीर्ण पर कैसो भोजन तैसो राजतिलक जानि त्यागिदियो अरु अत्यन्त भूखे कैसो अनाज सुन्दर भोजन मिले पर आनंद होइ तैसो आनन्द प्रभुको वनजाबेमें भयो धर्मको बोझा ताको धरनहार धीरवीर जो रघुवीर तिनको कोटिन राज्य मिलबेकी खुशी भरतजीके राज्य मिलबे को होतभयो २ मुनिनको ऐसो साज जो प्रभुको होतभयो है ते दोऊबन्धु मार्गमें जे लोग ऐसी बातैं करत ताको सुनत चलेजात हैं गोसाईंजी कहत कि वन जाबे की समाजको जो साज है सो ध्यायबेको ध्यानआदि करिबेको मार्गमें प्रसिद्धरूप गाइबेको लीला प्रसिद्ध मार्ग के चरित्र सेइबेको कहीं समीप रहिबे को धाम जैसे पत्रशाला आदि निवास सुमिरिबेको नाम इत्यादि हमको सबसुलभह्वैगयो अयोध्या जी में महलन में सबको अधिकार नहींहै इहां सबको अधिकार

है जैसे श्रृंगाररसकी बात अयोध्याजी में नहीं गोसाईंजी वर्णन करे अरु वन में कहेहैं ॥ यथा ॥ निजकर राजीवनयन पल्लवदल रचतशयनप्यासपरस्परपियूषप्रेमपानकी । माधुरीविलासहास गावतयशतुलसिदास बसतहृदयजोडीप्रियप्रेमप्रानकी ३ ॥

मू० । सिरससुमनसुकुमारिसुषमाकीसीव सियारा मबड़ेहीसकोचसंगलईहै ॥ भाईकेप्राणसमानप्रियाके प्राणकेप्राण जानिबानिप्रीतिरीतिकृपाशीलमईहै १ आलबाल अवध सुकामतरु कामबेलि दूरिकरि केकयी विपत्तिबेलिबईहै ॥ आपुपतिपूतगुरुजनप्रिया परिजन प्रजाहूकोकुटिलदुसहदशादईहै २ पंकजसेपगनपनहिउ नपरुषपन्थ कैसेनिबहेहैंनिबहैंगेगतिनईहै ॥ यहीशोच संकटमगननरनारि सबकीसुमतिरामरागरंगरईहै ३ ए कहैवामविधि दाहिनो हमकोभयो उतकीन्हीपीठिह तकोसुदीठिभईहै ॥ तुलसीसहितवनवासीमुनिहमारियो अनायासअधिकअघाइबानिगईहै ४ ॥

टी० । भाई जो श्रीलक्ष्मणजी तिनके प्राणनके समान प्रिया जो श्रीजानकीजी हैं तिनके प्राणहू के प्राण कृपाशीलमयी जो रघुनाथजी हैं ते सिरसा के फूलसम सुकुमारि अरु शोभाकी म- र्यादा श्रीजानकीजी तिनकी बानि कहे स्वभाव हमसों पलकअ- न्तर नहीं राखती बिछोह होतही प्राणत्यागिहैं ऐसी प्रीति की रीति जानि श्रीरघुनाथजी बड़ेही सकोचसों श्रीजानकीजी को साथ में लईहै १ अयोध्याजो आलबाल कहे थाल्हा ते कल्पवृक्ष कल्पलतासम श्रीराम जानकीको दूरिकरि कहे उखारिडारे तेहि थाल्हाविषे केकयी ने विपत्तिरूप बेलिबोई सो ऐसे फैली झुमड़ी जो सबको दबाइडारी ताते दुसह जो सही न जाइ ऐसी दशा कुटिलने करिदई प्रथम आपुको लाभरहित कलंक पीछे पति

को रामवियोग प्राणत्याग फिरि पूतको बे अपराध रामवियोग सहसति सहिबो तेहि करिकै गुरुजन जे बड़े प्रिय जे मित्र अरु प्रजनको दुसहदु:खभयो २ कमलसमकोमल चरण ताहूमें पनहीं रहित कठोरराह में कैसे निबहे होइँगे अरु कैसे निवहैंगे यह नई रीतिहै ऐसा कबहूंभयो नहीं है यही शोचमें अरु संकटमें मार्ग के लोग बूड़ेहैं तिन नरनारिनकी मति श्रीरामके अनुराग रंगमें रँगीहै ३ कोऊ कहति कि अयोध्याजीमें विधातावामहैं अरु हम को दाहिन हैं सो उतको पीठि किये हैं इहांको दृष्टिकिये हैं ऐसा मगवासी कहत कि वनवासीमुनिनसहित हमारी भी अनायास अधिक अघाइकै बनिगई है ४ ॥

मू० । रागगौरी ॥ नीकेकैमैंनविलोकनपायेसखिय
हिमगयुगपथिकमनोहरविधुविधुवदनिसमेतसिधाये १
नयनसरोजकिशोरवयसवरशीशजटारचिमुकुटबनाये ॥
कटिमुनिवसनतूणधनुशरकर श्यामलगौरसुभावसुहाये२
सुन्दरवदनविशालबाहुउर तनुछविकोटिमनोजलजाये॥
चितवतमोहिंलगीचौंधीसी जानोंनकौनकहांतेधौंआये ३
मनगयोसंगशोचवशलोचनमोचतवारिकितोसमुझाये॥
तुलसिदासलालसादरशकीसोइपुरवजेहिआनिदेखाये ४

टी० । मार्ग में कोऊ वधूकहति है कि हे सखी दुइ पथिक एक चन्द्रवदनी वधूसाथलिहे याहि मारग में गये तिनको मैं अच्छी तरह देखन नहीं पायों १ कमलसमनयन किशोरअवस्था शीशन परजटाके रचिकै मुकुट बनाये कटिमें मुनिनके ऐसे वसन अरु तरकस धारण हाथनमें धनुषबाणलिहें श्याम गौर दोऊजने स्व- हजही में सुन्दर लागतहैं २ सुन्दर मुखारविंद विशालकहे लम्बे पुष्ट भुजा चौड़ी छाती तनकीछवि देखि कोटिनकाम लजात हैं

जब मैं देखे तब मेरे नेत्रन में चौंधीसी लागिगई अरु मैं नहीं जाना कि कोहैं कहांते आये कहांधौं जाइँगे ३ हमारे मन तो उनके साथगयो नेत्र दर्शनके प्यासे ताते शोचवशहैं केतरौसमझाइ थकिगई पर आंसूकी धार बन्द नहीं होत काहेते दर्शनकी लालसा है सो तो वही पूरी करै जिन विधाताने उसको दरश करायो ४ ॥

मू०। पुनिनफिरेदोउवीरबटाऊ॥ श्यामलगौरसहजसुन्दरसखिबारकबहुरिविलोकिबेकाऊ १ करकमलनशरसुभगशरासनकटिमुनिवसननिषंगसोहाये ॥ भुजप्रलम्बसबअंगमनोहर धन्यसोजनकजननिजेहिजाये २ शरदविमलविधुवदनजटाशिर मंजुलअरुणसरोरुहलोचन ॥ तुलसिदासमारगमेंराजतकोटिमदनमदमोचन ३ ॥

टी०। दोऊ वीर बटोही पुनि यहिमार्ग में नहीं लौटे हे सखी श्याम गौर सहजमें सुन्दर तिनको फिरि कबहूं एकबार देखब १ जे करकमलमें सुन्दर धनुष बाणलिये कटिमें मुनिनके पट और तरकस धारणकिये आजानभुज सब अंगते सुन्दर धन्य इनके माता पिताहैं जो इनको उत्पन्नकरे हैं २ शरद्के निर्मल चन्द्रमासमसुख है शीशनपर सुन्दर जटा अरुण कमलसम सुन्दरनेत्र हैं गोसाईंजी कहत ऐसे रूपते प्रभुमार्ग में विराजमानहैं जो कोटिन मदन की शोभाको मदनाशकरत हैं ३ ॥

मू०। रागकेदार ॥ आलीकाहूतौबूझोनपथिककहांधौंसिधइहैं ॥ कहांतेआयेहैंकोहैंकहानामश्यामगोरे काजकैकुशलफिरियहिमगऐहैं १ उठतवयसमसभीजत सलोनेसुठिशोभादेखवैयाबिनवितहिबिकैहैं ॥ हियेहेरिहरिलेतलोनीललनासमेतलोगननलाहुलेत जहांजहां

जैहैं २ रामलषणसियपथिककीकथापृथुलप्रेमविथकी कहतसुमुखिसबैहैं ॥ तुलसीतिनसरिसतेऊभूरिभागजे ऊसुनिकै सुचिततेहिसमय समैहैं ३ ॥

टी० । हे आली काहूतो बूझो नहीं को पथिक कहां को जैहैं कहांतेआये अरु कौनहैं का नामहै गोरे सांवरे कुंवर जहांको जात सो कार्य्य करि कुशलसमेत याही मार्ग फिरि ऐहैं १ उठतकही उमगत किशोरअवस्था में मसभीजत अत्यन्तसुन्दर तिनकी शोभाके देखनहार विनादरबिनदिये बिकाइजैहैं उनके हाथ लोनी लावण्यताकी भरी ललना जो वधू सुन्दरि सहित मार्ग में लोगन की ओर हेरिकहे विलोकिकै हृदयको हरिलेत ते जहांजहां जैहैं तहां तहां लोगनके नेत्रनकोलाभ देतजैहैं २ श्रीजानकी लक्ष्मण सहित रघुनाथजीकी पंथकी कथा पृथुलकही समूह ताको प्रेममें थकित सब सुमुखी कहती हैं गोसाईंजी कहत कि तिनसरिस तेऊहैं बड़ेभागी जे चरित प्रभुके तिनको सुचित्तते सुनिकै याहि समय के चरितन में समै हैं कही मनलगैहैं ३ ॥

मू० । बहुतदिनबीतेसुधिकछुनलही ॥ गयेजेपथिकगोरेसांवरेसलोनेसखीसंगनारिसुकुमारिरही १ बहुरिविलोकिबेकबहुंकहततनुपुलकिनैनजलधारबही ॥ तुलसीप्रभुसुमिरिग्रामयुवतीशिथिलबिनुप्रयासपरीप्रेमसही २ ॥

टी० । जिनकेसाथमें सुन्दरि सुकुमारि नारिरहे ते सांवरे गोरे सलोने पथिक यहिमार्गगये बहुतदिन बीतिगये तिनकीसुधि कछु नहीं पाई कि कहांहैं कैसे १ आपुतेकहे आपनीदेहते आपनेहूते आपनेप्यारेते आपने प्राणनहूंते प्यारे प्रीतम उपही कहे परदेशी विनाजान पहिचान ते सबको प्रियलागतहैं कैसेहैं सुधा को सारांश अरु सनेहको सारांश लैकै विधाताने इनको सँवारे हैं ते जैसे मनमें भावत तैसे कहे नहीं जात हैं तिन पथिकन को

बहुरि कबहूं देखब यहकहि तन प्रेमसों पुलकि कै नेत्रनते जल धार बहती भई गोसाईंजी कहत कि प्रभुको सुमिरि कै ग्रामकी युवती प्रेम में सही सांची परती भई २ ॥

मू० । रागगौरी ॥ आलीरीपथिकजेयहिपथपरौं सिधाये॥तेतौरामलषणअवधतेआये १ सँगसियसबअंगसहजसोहाये॥ रतिकामऋतुपतिकोटिकलजाये २ राजादशरथरानीकौशल्याजाये॥ कैकेयीकुमतिकरिकानन पठाये ३ वचनकुभामिनिकेभूपहिक्योंभाये ॥ हायहाय रायवामविधिभरमाये ४ कुलगुरुसचिवकाहुनसमुझाये॥ कांचमणिलैअमोलमाणिकगवाँये ५ भागमगलोगनकेदेखनजिनपाये॥ तुलसीसहितजिनगुणगणगाये६॥

टी० । हे आली जे पथिक परों यहि मार्गमें गये तिनको श्रीराम लक्ष्मण नाम अयोध्याजी ते आये हैं १ साथ में जानकीजी सब अंग सहजही में सुन्दर हैं तिनको देखि कोटिन रति काम बसन्त लजाइ जात २ राजा दशरथकी रानी कौशल्याजी के जाये कही पुत्र हैं रघुनाथजी तिनको कैकेयी कुचाल करि वनको पठाये ३ कुभामिनि कैकेयी के वचन राजाको कैसे भाये कोऊ सखी कहत हाय हाय राजाको विधाता वामहै सोई भरमायो है ४ कुलगुरु वशिष्ठ मंत्री सुमन्त्र आदि काहूने समुझायो नहीं जो राजा ने कांचकी मणिसम सत्यवचन ग्रहण करि अमोल माणिक लालमणि सम रघुनाथजी को गवांइ दियो ५ कोऊ कहते कि यह भाग्य मगलोगन केहैं जिन इनको देखनपाये तुलसी सहित तिनहूंके बड़भाग्य हैं जे इनके गुणानुवाद गावत हैं ६ ॥

मू० । सखीजबतेसीतासमेतदेखेदोउभाई ॥ तबतेपरैनकलकछुनसुहाई १ नखशिखनीकेनीकेनिरखिनिकाई ॥ तनसुधिगईमनअनतनजाई २ हेरनित्रिहँसनिहिय

लियोहैचोराई ॥ पावनप्रेमविवशभईहौंपराई ३ कैसे पितुमातुप्रियपरिजनभाई ॥ जीवतजीवकेजीवनवनाहिं पठाई ४ समयसुचितकरिहितअधिकाई ॥ प्रीतिग्राम वधुनकीतुलसीहूगाई ५ ॥

टी० । हे सखी सीतासमेत दोऊभाइनको जबते देखे तबते कल नहींपरत अरु कछू सोहातनहीं १ नखते शिखातक सब अंग नीकेहैं तिनकी निकाई नीकीभांति निरखि मनइनके रूप ते अनत नहीं जात ताते तनकी सुधि जातरही २ मुसक्याइकै चितवनि तिनकी हमारे हृदयको चोराइ लियो ताते पावन कहेप-वित्र प्रेमके वशतेमैं परारी भईहौं ३ इनके माता पिता प्रिया परि-वार भाई कैसेहैं जो आपु जीवतरहे अरु जीवके जीवन रघुनाथ को वनको पठाये ४ चितको सुचितकरि अधिक प्रीतिपूर्वक ता-समयकी प्रीति ग्रामवधुनकी तुलसीदास गाईहै ५ ॥

मू० । जबतेसिधायेयहिमारग लषणरामजानकीस हिततबतेनसुधिलहीहै ॥ अवधगयेधौंफिरिकैधौंचढ़ेवि न्ध्यगिरिकैधौंकबहुंरहेसोकछुककाहूनकहीहै १ एककहैं चित्रकूटनिकटनदीकेतीर परनकुटीरकरिबसेबातसहीहै ॥ सुनियतभरतमनाइबेकोआवतहैं होइगोपैसोई जोविधा ताचितचहीहै २ सत्यसन्धधरमधुरीणरघुनाथजीको आपनीनिबाहिबेन्टपकीनिरबहीहै ॥ दशचारिबरसवि हारवनपदचारकरिबेपुनीतशैलसरसरिमहीहै ३ मुनि सुरसुजनसमाजकेसुधारिकाज बिगरिबिगरिजहांजहां जाकीरहीहै ॥ पुरपाउँधारिहैंउधारिहैंतुलसीहूसेजनजा निकेगरीबीगाढ़ेगहीहै ४ ॥

टी० । श्रीजानकी लक्ष्मणसहित रघुनाथजी जबते यहिमार्ग मेंगये तबते कछुसुधि नहीं पाई कि फिरि अयोध्याजीको गये कीधौं विन्ध्याचलपर्बतपर चढ़े कीधौं कहौं टिकेहैं सो हाल काहू ने कहा नहीं कछु १ कोऊ कहत कि चित्रकूट के निकट नदी के तीर पत्रनकी कुटी बनाइ बसेहैं यह बात सांची है अरु सुनाहै कि भरतजी मनाइबे हेत आवतहैं परन्तु जो विधाताके मनमें होई सोई बात होई २ महाराज दशरथजीकी तौ निबहिगई अबसत्य-सन्ध धर्मधुरीण रघुनाथको आपनी निबाहिबे कोहै दशचारि चौदह वर्ष वनको विहार पैदरकरिकै भूमि नदी पर्वत तड़ाग पवित्र करिहैं ३ मुनि देवता सज्जननके समाजको काज जहां जाको बिगराहै ताको सुधारिहैं तापीछे पुर जोहै अयोध्याजी ताको आइहैं अरु जेजन जानिकै हठकरि गरीबी गहे हैं तुलसी ऐसे तिनको उद्धार करि हैं ४ ॥

मू० । रागसारङ्ग ॥ येउपहीकोउकुँवरअहेरी ॥ श्यामगौरधनुबाणतूणधरिचित्रकूटअबआयरहेरी १ इनहिंबहुतआदरतमहामुनिसमाचारमेरेनाहकहेरी ॥ बनिताबंधुसमेतबसतवन पितुहितकठिनकलेशसहेरी २ वचनपरस्परकहतकिरातिनिप्रेमविवशजलनयनबहेरी ॥ तुलसीप्रभुहिविलोकतयकटकलोचनजनुबिनुपलकरहेरी ३ ॥

टी० । किरातिनिनके वचनहैं कि ये उपही परदेशी कोऊकुंवर राजकुमार अहेरी कहीं शिकार खेलिबेहेत चित्रकूटको आये हैं श्यामशरीर श्रीरघुनाथजी गौरलक्ष्मणजी ते धनुषबाण तरकस धारण किये चित्रकूट में अब आइकै रहे हैं १ महामुनि अत्रिवाल्मीकादि इनको बहुत आदर करतहैं यह सब हाल हमारे स्वामी ने कह्यो स्त्री अरु भाई सहित वनमें बसत पिताकेहेत पानी जाड़ घामादि कठिन कलेशसहत २ ऐसे वचन परस्पर किरातिनिनी

कहत प्रेमवशते नेत्रनतेजलधार बहत गोसाईंजी कहत कि यकटक प्रभुको विलोकत नेत्र मानहुं विनापलककेहैं ३ ॥

मू० । रागचंचरी ॥ चित्रकूटअतिविचित्रसुन्दरवन महिपवित्रपायनमयसरितसकलमलनिकन्दिनी ॥ सानुजजहँबसतरामलोकलोचनाभिराम वामअंगवामावरविश्ववन्दिनी १ ऋषिवरतहँछंदवासगावतकलकोकिलहासकीर्त्तनउनमायकायक्रोधकन्दिनी ॥ वरविधानकरतगानवारतधनमानप्रानझरनाझरतझिगझिगजलतरंगिनी २ वरविहारचरणचारुपाउरचंपकचनारकरणहारवारपारपुरपुरंगिनी ॥ योवननवढरतढारदुत्तमत्तमृगमरालमन्दमन्दगुंजतहैंआलिअलंगिनी ३ चितवतमुनिगणचकोरबैठेनिजठौरठौरआछेअकलंकशरदशरदवन्दिनी ॥ उदितसदावनअकाशमुदितबदततुलसिदासजयजयरघुनन्दनजयजनकनन्दिनी ४ ॥

टी० । अब चित्रकूटको नित्यविहार गुप्तरासविलास दुइपदन करिकै वर्णनकरत बृहद्रामायणकेचित्रकूटमाहात्म्यकी अनुकूल याकी अभिप्रायहै ताहीकीप्रमाणलिखब प्रथमशोभाकहतकैसा है चित्रकूट हेममणिनकरिकै खचित भूमि अरु पर्वत ताके तरे दिव्यमन्दिरसप्तावरणसों विचित्रहैं॥ प्रमाणंबृहद्रामायणे ॥ श्लोक ॥ चित्रकूटःपर्वतःश्रेष्ठोमणिकांचनचित्रितः ॥ विराजतेमहाराज ब्रह्मरुद्रादिपूजितः १ सप्तावरणसंयुक्तेमन्दिरेरत्नभूषिते ॥ पर्वतस्यांतरालायेविहारंकुरुतेसदा २ अरु सुंदर वनहै ॥ प्रमाणंयथा ॥ मध्येपर्वतराजस्य बहुयोजनविस्तृते ॥ वनानिनंदनादीनिभावयेद्भक्तितत्परः १ ॥ महीकही तहांकीभूमि पवित्रहै ॥ प्रमाणंयथा ॥ गिरिःश्रीचित्रकूटाख्योयत्रमन्दाकिनीनदी ॥ तयोर्मध्यंसुविस्ती

णैस्त्रिंशद्धनुषमायता १ धनुषाकारसंयुक्ताधनुषोपरिसंस्थिता ॥ एत
त्क्षेत्रंप्रियतमंनकस्मैचित्प्रकाशितम् २ पावनिकहे पवित्र पयस्व-
नीनदी सो मलजो पाप ताको निकन्दिनी कहे नाश करनहारी मु-
क्तिदाताहै ॥ प्रमाणंयथाश्रीमुखवाक्ये ॥ पयस्विनीब्रह्मकुण्डाद्भवि
ष्यतिनदीपुरा ॥ ममरूपामहाभागापरंनिर्वाणदायनी॥ सानुजकहे
लक्ष्मणजीसहित श्रीरघुनन्दन जहां चित्रकूटमें वासकरत लोकके
नेत्रनके आनन्ददाता॥ प्रमाणंयथा॥ सेव्यमानोलक्ष्मणेनच्छत्रचा
मरशोभितः ॥ सिंहासनेसमासीनोध्यायेन्निर्मलचेतसा ॥ यावन्ती
सुषमालोकेविद्यतेसचराचरे ॥ तहां वामअंगविषे वामाकहे वि-
मलादि सखिसमूह तिनमें वरकहे श्रेष्ठ विश्वकेवन्दनाकरिवेयोग्य
श्रीजानकीजीहैं ॥ प्रमाणंयथा ॥ विमलासुप्रभाचैवकांताकांतिम
तीयथा ॥ एवमादिसखीवृन्दःप्रथमावरणेस्थितः ॥ तत्र श्रीरामच
न्द्रोऽसौसीतयासहितःसुधीः ॥ विमलादिसखीयुक्तोह्यणिमादिवि
भूतिभिः १ ॥ ऋषिवर जे वशिष्ठादि समूह तहां कहे त्यहि चित्रकूट
बिषे स्वच्छन्दवासकहे स्वेच्छित प्रभुके प्रेम में भर पंचमावरणमें
वासकरत अरु प्रेमसों भर प्रभुके हास कीर्त्तनको सुन्दर कोकिल
वत् स्वरते गावतहैं काया जो देह ताको उन्मायकहे उत्पन्न किहे हैं
किशोर अवस्था प्रसन्नमुखहै ताते क्रोधको नाशकरि अनुरागभरी
देहहै ताते क्रोधकन्दिनी कहे क्रोधादि शेषरहित शुद्धहैं ॥ प्रमाणं
यथावृहद्रामायणे ॥ पुलस्त्यःपुलहोदेवःविश्वामित्रोऽथवामनः ॥
शक्तिःपराशरोव्यासोबोधायनस्तथैवच १ पंचमावरणेसर्वेवसिष्ठा
दिऋषीश्वराः॥ दिव्यदेहधरानित्यंध्यायंतिरघुनन्दनम् २ ब्रह्मचर्य्य
रतास्सर्वेविरजांवरधारिणः ॥ दिव्यगन्धानुलिप्तांगाःकृतांजलिक
राभृशम् ३ संहिताभिस्स्वकीयाभिःसन्मुखादत्तदृष्टयः ॥ स्तुवंतोनी
लकंजाभंकैशोरंरघुनन्दनम् ४ ते ऋषीश्वर वर कहे श्रेष्ठ निधान
ताल स्वरते गानकरत अरु धनमान कहे मनप्राणादि तीनिहूं प्रभु
पर वारन करत जलतरंगिणी जो गंगादिनदी ते षष्ठमावरणमें वास
करत तिनके झरनाझिंगझिंग झरिरहे हैं ॥ तत्रप्रमाणं बृहद्रामा-

यणे ॥ षष्ठावरणकेसर्वागंगाद्यास्सरितस्थिताः । दिव्यरूपधराः सर्वादिव्याभरणभूषिताः १ जाह्नवीयमुनाचैवनर्मदाश्रीसरस्वती । कावेरीसरितापुण्या भीमाभीमरथी तथा २ इहि पद विषे खण्डान्वय करिकै अर्थहै पाउर चंपा कचनारआदि वृक्षनकी कुंज के मध्य में वरकही श्रेष्ठ विहारके करनहार श्रीरघुनन्दन जनकनन्दनी हैं पुर जो है चित्रकूट ताकी पुरंगिनी कही पुरकी अंगना सखी ते वारपार कहे चारिहु दिशिमें नृत्य गानआदि करत यौवन नव कहे नवीन युवावस्था ताको सखीजन ढारत ढारकहे प्रभु पर वारिडारत अपनी देह प्रभुपर निछावर करत तिनके चरण सुंदरन में नूपुरआदि के शब्द गानके शब्द ताको सुनिकै दुत्तकहे युग्म मराल मरालिनी मृगा मृगी ते परस्पर प्रेमानन्दमें मत्तकहे माते हैं वृक्षनके पुष्पनपर अलि अलिंगिनी भौंरा भौंरी ते मन्द मन्द गुंजत हैं इत्यादि ॥ प्रमाणंबृहद्रामायणे पाउरादि यथा ॥ कदंबकिंशुकाकोललवंगमधुपाटलैः । पाटलाशोकबकुलैःकुंदैः कुरबकैरपि १ ताके मध्य यथा ॥ मध्याह्नेजानकीजानिः सखीसंगेनशोभितः । विहारंकुरुतेसम्यग् ज्ञानिनांज्ञानदायकः ॥ सायाह्नेजानकीनाथस्तस्मिन्क्रीडावनेशुभे । रमतेरमयायुक्तोयोगिनांयोगसिद्धिदः ॥ सखीवृन्दनकोनृत्यगान यथा ॥ एवमादिसखीवृन्दःप्रथमावरणेस्थितः । काचिद्वादयतेवीणां मृदंगंचतथापरा ॥ काचित्तालंपूरयतिकाचिद्गानंकरोतिच । काचिन्नृत्यतिनृत्यंतींहासयन्तितथापराः २ मृगकरालभृंग यथा ॥ मन्दारपादपपरागविषक्तमत्तभृंगावलीविरुतजाततनुप्रमोदैः । संसेवितंप्रबलदंसुमरालमालंमंजीरनिःस्वनचयैःपरिवृद्धगीतं १ नृत्यन्तिदिव्यवनिताःपरितोविबद्धरत्नावलीललितभास्वरवेदिकासु । संमुग्धहासपरिपेशलवक्त्रचंद्रपीयूषपानपरिहूतकुरंगशावाः २ ॥ पुरांगना यथा ॥ आबद्धमौक्तिकमनोहरलोलमालासंशोभिजालवदनेषुपुरांगनानाम् । वराणिगातुश्चकलानिभानिकल्लोलराजिषुसुखानिसकुंकुमानि ॥ अच्छे सदा एकरस कलंकरहित शरच्चंद्र श्रीरघुनन्दन अरु चांदनी श्रीजानकी

जी ते वनरूपी आकाशमें सदा उदयहैं तिनको जे वशिष्ठादि ऋषीश्वरहैं ते किशोरअवस्था धारण किहे अपने आसननते प्रभुकी रासलीला में कोटिचन्द्रसों प्रकाशमान श्रीराम जानकीको चकोर सम निमेषरहित नेत्रनसों देखिरहे हैं गोसाईंजी कहत कि ते मुनि अरु सखूहसखी प्रभुकी रासलीलाको देखि प्रेमावेश ते जय जय रघुनंदन जय जनकनंदनी ऐसा शब्द उच्चारण करतहैं इत्यादि को प्रमाणंवृहद्रामायणे ॥ मुनिनकी प्रमाण यथा ॥ सद्धामरस्य फललाभगतेंगितानांबद्धासनांसिविलसन्तिमुनीश्वराणाम् । प्रत्युत्प्रसादसमवासमानभावा भास्वत्किशोरवयसोमदनंक्षिपंतः १ वंदी यथा ॥ नृत्यत्कपोलतटकुण्डलकांतिभाजो भक्ताभजन्तिभगवच्चरणारविन्दम् । कोटीन्दुसुंदरलघुस्मितवीक्षणेषुविक्षेपकक्षणरसाक्षयचित्तवृत्त्याम् ॥ जयशब्दप्रमाणं वृहद्रामायणे ॥ श्रीकांतिकीर्तिगुणकीर्तनजालमोदाउच्चस्वरेणजयशब्दमुदीरयन्ति । वाचामगोचरमनंतविभूतिपूर्णसानन्दधामभगवत्पदमद्वितीयम् ॥ इत्यादि वृहद्रामायण ते बीजमन्त्र लिखदीन विस्तार बहुतहै ४ ॥

मू० । रागचंचरी ॥ फटिकशिलामृदुविशालसंकुलसुरतरुतमाललितलताजालहरतछविवितानकी ॥ मन्दाकिनितटनितीरमंजुलमृगविहँगभीर धीरमुनिगिरागंभीरसामगानकी १ मधुकरपिकबरहिमुखरसुन्दरगिरिनिरझरझरजलकणघनछाँहछनप्रभानभानकी ॥ सबऋतुऋतुपतिप्रभावसंततबहैत्रिविधवाव जनुविहारवाटिकानृपपंचबानकी २ विरचिततहँपर्णशालअतिविचित्रलषणलालनिवसतजहँनितकृपालरामजानकी ॥ निजकरराजीवनयनपल्लवदलरचितशयन प्यासपरस्परपियूषप्रेमपनकी ३ सियअंगलिखैधातुरागसुमननभूषणविभागतिल

कणिकाकहौंकलानिधानकी ॥ माधुरीविलासहासगावतयशतुलसिदास बसतहृदयजोरीप्रियपरमप्रानकी ४ ॥

टी० । अब फटिकशिलाके ऊपरको विहार वर्णन करतहैं प्रभुके सुख देवे हेतु फटिकशिला मृदु कहे कोमल है रहीहै विशाल कहे ऊंच अरु सुन्दर है तहां समूह कल्पवृक्ष अरु तमालादि वृक्ष चारों दिशि शोभितहैं तिनपर ललित शोभायमान लता फैलिरही हैं जाल कहे सघन सो शोभा वितान कहे चँदवाकी शोभाहरत तहां मन्दाकिनी नदी है ताके तट मंजुल कहे सुन्दर रामानुरागी शुद्ध मन ऐसे मृग अरु पक्षिनकी भीर अरु धीरवान् कहे जिनके मन काम क्रोधादि जीते शुद्धहैं ऐसे जे मुनिवासकिहे तिनकी गम्भीर वाणीसों सामवेदकी गान ताल स्वरसों ह्वैरहीहै १ मधुकर जे भ्रमर पिक कोयल बर्ही मयूर ते मुखरकहे शब्द करि रहे हैं अरु पर्वतन ते सुन्दर झरना झरिरहेहैं ताजलकीकणें उड़त शोभादेत घन कहे सघन छाँह वृक्षनकी तामें क्षणमात्र भानु जो सूर्य तिनकीप्रभाघाम कबहूं नहीं आवत अथवा वर्षाऋतु करिके शोभा कहत वृक्षनकी छाँह सोई घनकहे मेघहै झरना झरत सो बूंदहैं जलकी कणन पर भानुकी प्रभापरेते चमकत सोई क्षणाप्रभाकहे बिजुलीहै जहां सब ऋतुनमें ऋतुपति जो वसंत ताको प्रभाव छाइरहाहै त्रिविधकहे शीतल मंद सुगन्ध बयारि संततकहे हमेशा बहिरही कैसा वन शोभित होत मानों पंचबाण कहे कामदेव राजाकी विहार वाटिकाहै पांचबाण कामके कौनहैं करवीर मारण केवड़ा उच्चाटन केतकी आकर्षण गुलाब मोहन आंबबौर वशीकरण इति २ तेहि वनके मध्यमें अत्यन्त चित्रविचित्र पत्रनकी शालकहे निवासस्थान ताको लषणलालजीने निजकहे अपने करकमलन सों विरचितकहे विशेष रचिकै बनायो है जामें कृपालुकहे कृपास्थान श्रीरघुनन्दन जनकनन्दनी नितही निवसतकहे वास करत हैं राजीवकहे कमल ऐसे नयन जिनके ऐसे जो श्रीरघुनन्दन ते निज

कहे अपने करकमलनसों सुन्दर फूल अरु वृक्षनके नवीन कोम-
ल पल्लवदलनसों शय्या रचतहै ताको हेतु आनंदकन्द श्रीजन-
कनंदनी रघुनंदनको परस्पर प्रेम अमृतरस पानकरवेकी पिया-
सहै ३ धातुराग सिंगरफ हरताल मैनसिल सपेदा मुरदासंख
आदि सों सियाके अंग लिखे अर्थात् श्रीजानकीजी के ललाट
कपोलादि में विचित्रपत्र पत्रभृंग कपोलपत्र मयूराकृत हंसाश्रित
गुल्मलताकृत वृत्तकृत नवग्रहकृत मकराकृतादि चित्रितकरे अरु
सुमनके भूषणबनाय तापर अभ्रक जटित करि दीप्तिमान्करे
विभाग कही अंगप्रति यथा शीशपर अर्द्धचन्द्र किरीट फूलमा-
लतीकलीसों मांगगुहि भालवेंदी वेंदा श्रवणफूल कंठमें नागफणी
पदिकचन्द्रहार भुजवाजू करमूलमें कंगन पहुंची मुद्रिका अर-
सी पग में जेहरि नूपुर विछियाइत्यादि अंगअंगप्रति पहिराइ
शोभितकरे अरु केसरि मृगमदआदिसों भाल लिखे तिलककी
करनकी प्रवीणता कैसे वर्णनकरों कला जो चौंसठि हैं तिनके
निधानकही प्रवीणहैं रघुनाथजी ताते अनूप हैं माधुरी कही जा-
को देखि तृप्ति न होइ ऐसी शोभा यथा नवयौवन अवस्थामें
भूपणसहित प्रसन्नबदन परस्पर प्रेमवशभरे ॥ इति माधुरीमूर्त्ति
ताको विलास मदनानंदको सुख कहिबे योग्य नहीं है काहेते कि
हासकी वार्ताहै ताके कहिवेको अनुचितहै परन्तु तुलसीदासजी
कहतहैं कि हमारे प्राणनकी प्यारी जोरी श्रीजनकनन्दनी रघुनं-
दन हमारे हृदय में बसति ताते हम दासरूपी प्रभुको यश ताको
गानकरतहैं तहां गान में सब अधिकारहै इहां वृक्षनकी अरु जल
की अरु पक्षिनकी शोभा सो विभावहै निजकर शय्यारचव पुष्पन
के भूषण पहिराउब कपोलपत्रआदि तिलककरब अनुभाव है
उद्दीपन हर्ष संचारी है प्यास परस्पर पियूष यह स्थायी है ताते
आलम्बन पूर्ण शृंगाररस वर्णन करे हैं आगे गोसाईंजी जनकपुर
फूलवारीमें कछु शृंगारकहे अरु महलनमें नहीं कहे इहां वनमें कहे
तहां देखिबो सुनिवो कहिबो सब सुलभ है सो तेंतिसके पदमें कहि

आये हैं । ध्याइबेको गाइबे को सुमिरिबेको सेइबेको तुलसी को सब भांति सुलभ समाजभो अरु विवाह एकसै सातके पदमें श्रृंगार की वासना कहि आये हैं देखि तियनके नयन सुफल भये तुलसी-दासहू के होने सों इहां पर्णकरे ४ ॥

मू० । रागकेदार ॥ लोनेलाललषणसलोनेरासलोनी सियचारुचित्रकूटबैठेसुरतरुतरहैं ॥ गोरेसांवरेशरीरपीतनीलनीरजसे प्रेमरूपसुषमाकैमनसिजशरहैं १ लोने नखशिखनिरूपमणिरखिबेयोग बड़ेउरकन्धरविशालभुजत्ररहैं ॥ लोनेलोनेलोचनजटनकेमुकुटलोने लोनेबदनन जीतेकोटिसुधाकरहैं २ लोनेलोनेधनुषविशिखकरकमलन लोनेमुनिपटकटिलोनेशरधरहैं ॥ प्रियाप्रियबन्धुको देखावतविटपबेलि मंजुकुंजशिलातलदलफूलफरहैं ३ ऋषिनकेआश्रमसराहैंमृगनामकहैं लागीमधुसरितझरतनिरझरहैं ॥ नाचतबरहिनीकेगावतमधुपपिक बोलत विहंगनभजलथलचरहैं ४ प्रभुहिंविलोकिमुनिगण पुलकेकहत भूरिभागभयेसबनीचनारिनरहैं ॥ तुलसी सोसुखलाहुलूटतकिरातकोल जाकोसिसिकतसुरविधि हरिहरहैं ५ ॥

टी० । श्रीलक्ष्मणजी जानकीजी रघुनन्दन लावण्यताके भरे चित्रकूट में कल्पवृक्ष के तरे सुन्दर बैठे हैं गोरेगात लक्ष्मण जानकीजी श्याम श्रीरघुनंदन सो गौर श्याम शरीर ताकी उपमा कहत मानों प्रेम और रूप औ सुषमा ताके कमलहैं सो कामदेव के तड़ागमें प्रफुल्लित हैं चित्रकूट शोभायमान कामदेव को तड़ाग है तामें प्रेमरूपी पीतकमल लक्ष्मण शोभा पीतकमल जानकी

रूप नीलकमल रघुनंदन हैं १ नखते शिखातक जो लोनाई है सो अनूप है ताते निरखिबे योग्यहैं सो कैसी शोभा है जिनकी चौड़ी छाती है कन्धे ऊंचे हैं लम्बी भुजा हैं श्रेष्ठसुन्दर नेत्र हैं अरु जटन के मुकुट बांधे सुंदर मुखनकी शोभाते कोटिन सुधाकर जो चन्द्रमा हैं तिनकी द्युति जीते हैं यहिचरण बिषे दुइन रूप वर्णन हैं २ अब केवल प्रभुकी छवि कहत सुंदर धनुष अरु करकमलन में सुंदर बाण लिहे हैं कटिबिषे सुंदर मुनिन कर वसन धारण किहे हैं शरधर जो तरकस सुंदर धारण किहे प्रिया जानकीजी प्रियबंधु लक्ष्मणजी तिनको वृक्ष, बेली, सुंदर कुञ्ज शिला तल वृक्षन के नवीन दल, सुंदर फलादि प्रभु श्रीजानकी लक्ष्मणजी को देखावत हैं ३ ऋषिनके आश्रमन की प्रशंसा करत औ मृगन के नाम वतावत यथा हन्ना, पाड़ा, झाषा, चीमला, श्याम, श्वेत, द्वादश शृंगारादि तहां मधुमाखी लागीहैं सो देखावत सरिताकी शोभा झरननकी शोभा कहत पुनः कहतहैं हे भैया हे प्रिया देखो मयूर नाचत हैं भ्रमर गान करत कोयल बोलत हैं और नभचर सुवादि पक्षी थलचर गजादि जलचर जलकुक्कुटादि बोलत शोभित हैं ४ तहां प्रभुको विलोकि मुनि मन प्रेम के भरे कहत चित्रकूटके अरु मगके सब नीच नारि नर प्रभुके दर्शन कीन्हेते अहो भाग्यभये गोसाईंजी कहत काहेते कि जो सुखको ब्रह्मा विष्णु शिवआदि देवता ललचात ता सुखको किरात कोल लूटत बिना जप तप आदि साधन सिद्धदशा को प्राप्तभये ५ ॥

मू० । रागसारंग ॥ आइरहेजबतेदोउभाई ॥ तबतेचित्रकूटकाननछवि दिनदिनअधिकअधिकअधिकाई १ सीतारामलषणपदअंकित अवनिसोहावनिवरणिनजाई ॥ मंदाकिनिसज्जनअवलोकतत्रिविधपापत्रयतापनशाई २ उकठेउहरितभयेजलथलरुह नितनूतनराजीवसोहाई ॥

फूलतफलतपल्लवतपलुहत विटपबेलिअभिमतसुखदाई ३ सरितसरनिसरसीरुहसंकुल सदनसँवारिरमाजनुछाई ॥ कूंजतविहँगमंजुगुंजतअलिजातपथिकजनुलेतबोलाई ४ त्रिविधसमीरनीरझरिझरनन जहँतहँरहेऋषिकुटीबनाई ॥ शीतलसुभगशिलनपरतापसकरतयोगजपतपमनलाई ५ भयेसबसाधुकिरातकिरातिनि रामदरशमिटिगइकलुषाई ॥ खगमृगमुदितएकसँगविहरतसहजविषमबड़बयरबिहाई ६ कामकेलिवाटिकाविबुधवनलघुउपमाकविकहतलजाई ॥ सकलभुवनशोभासकेलिमनुरामविपिनविधिआनिबसाई ७ वनमिसुमुनिमुनितियमुनिबालक वरणतरघुवरविमलबड़ाई ॥ पुलकिशिथिलतनुसजलविलोचन प्रमुदितमनजीवनफलपाई ८ क्योंकहौं चित्रकूटगिरिसम्पतिमहिमामोदमनोहरताई ॥ तुलसीजहँबसिलषणरामसिय आनँदअवधिअवधबिसराई ९ ॥

टी० । कविकी उक्ति है जबते चित्रकूटविषे दोऊ भाई लषणलालसहित श्रीरघुनन्दनजी वासकरे तबते वनकी छवि दिनप्रति अधिक २ अधिकाति है १ लक्ष्मण जानकी श्रीरघुनाथजी के चरणनसों अंकितहै भूमि ऐसी सुहावनी भई है जो वखान करिबे में कविको अगम है अरु मन्दाकिनी के मज्जनकीन्हेते अरु वन पर्वत भूमिकेदर्शनते त्रिविधताप मन वचन कर्मकरिके त्रयताप दैहिक दैविक भौतिक सो नाश होत हैं ॥ प्रमाणंबृहद्रामायणे ॥ श्लोक ॥ चित्रकूटगिरिःश्रेष्ठःश्रीरामपदभूषितः ॥ मन्दाकिनीनदीयत्रसर्वपापप्रणाशिनी २ जलकेवृक्ष थल भूमिके जे उकठे तेऊ वृक्ष हरित भये राजीव कमल ते नितप्रति नवीन शोभितहोत फूलत फलत

अरु पल्लवलेत उकठेवृक्ष ते पलुहतकहे हरितहोत ते वृक्ष बेली कल्पवृक्ष सम अभिमत मनोरथको सुख देनहार भये ३ नादिन में तड़ागन में जे कमल प्रफुल्लित हैं सो मानों श्रीलक्ष्मीजी मन्दिर सँवारि वास करती हैं सुन्दर पक्षीबोलत भँवर गुंजारत सो मानों चलेजात पथिकको बोलाइलेत यामें अतिप्रियत्व सूचितकरत ४ शीतल, मन्द, सुगन्धते पवनबहत झरनन ते जलगिरत औ जहां तहां ऋषिलोग कुटीबनाय वासकरत तहां सुन्दर शीतल शिलनपर तापसजन जप तप योग मन लगायकै करतहैं ५ श्रीरघुनन्दनके दर्शनते हिंसकी बुद्धिकी मलिनता मिटिगई ताते किरात किरातिनी सब शांतमनते साधुह्वैगये पक्षिनको मृगनको जो वैरहै यथा मृग व्याघ्रादि ते सब एकसाथ में प्रीतिसहित विचरतहैं आनन्द ते जो परस्पर वैरहै सो बिसराये हैं ६ कामके केलिकी जो वाटिका है औ देववन नन्दन चैत्ररथादि की उपमा देत कविकी बुद्धि लज्जा को प्राप्त होत काहेते कि वे लघुहैं अरु प्रभुको वन कैसा है मानों समग्र भुवनकी शोभा खैंचि विधाताने श्रीरघुनन्दनको वन बसायो है इहां सब शोभाकी खानि प्रभु वास करै हैं ताते वन में शोभामयी है ७ स्त्रीपुत्रसहित मुनिजन वनकी शोभाके बहाने ते प्रभु की शोभाको वर्णन करतहैं कैसे प्रेम पुलकित प्रेमसों भरे हैं ताते तन शिथिल नेत्रनमें जलभरे ऐसे आनन्द हैं मनमें कि जीवनजन्म को फल श्रीजानकी लक्ष्मण श्रीरघुनाथजी हमको प्राप्तभये ताते हमारी अहो भाग्य है इहां प्रभुके वास करेते वन आनन्ददायक भयो ताते वनकी बड़ाई करिबे में प्रभुकी बड़ाई सूचित होत है ८ गोसाईंजी कहत तेहि चित्रकूटकी सम्पत्ति औ महिमा तहांको आनंद अरु शोभा हम कैसे वर्णनकरें काहेते कि जहां श्रीजानकी लक्ष्मणसहित श्रीरघुनाथजी आनंदकी अवधि कहे मर्यादा श्रीअयोध्याजीको बिसराय चित्रकूटमें वासकरें ताकी महिमा अपार है ९॥

मू० । रागगौरी ॥ देखतचित्रकूटवनमनअतिहोतहु

लास। सीतारामलषणप्रियतापसवृन्दनिवास १ सरित सोहायनिपावनिपापहरणिपयनाम॥ सिद्धसाधुसुरसेवित देतिसकलमनकाम २ विटपबेलिनवकिशलयकुसमित सघनसुजाति॥ कंदमूलजलथलरुहअगणितअनवनभांति ३ अंजुलमंजुबकुलकुलसुरतरुतालतमाल॥ कदलिकदम्बसुचम्पकपाटलपनसरसाल ४ भूरुहभूरिभरेजनु छबिअनुरागसुभाग॥ बलविलोकिलघुलागहिंविपुलविबुधवनबाग ५ जाइनवरणिराबवनचितवतचितहरिलेत॥ ललितलताद्रुमसंकुल मनहुंमनोजनिकेत ६ सरितसरन सरसीरुहफूलेनानारंग॥ गुंजतमंजुमधुपगणकूंजतविविधविहंग ७ लषणकहेउरघुनन्दनदेखियविपिनिसमाज॥ मानहुंचैनमैनपुरआयोप्रियऋतुराज ८ चित्रकूटपरराउरजानिअधिकअनुराग॥ सखासहितजनुरतिपतिआयो खेलनफाग ९ झिल्लिझांझझरनाडफपणवमृदंगनिशान॥ भेरिउपंगभृङ्गरवतालकीरकलगान १० हंसकपोतकबूतरीबोलतचक्कचकोर॥ गावतमनहुंनारिनरमुदितनगरचहुंओर ११॥

टी०। श्रीचित्रकूट वनकी शोभा देखतसंते मनमें अत्यन्त हुलास होतहै काहेते जहां श्रीजानकी लक्ष्मण अरु जे प्रभुकेप्यारे तापसहैं तिनसहित रघुनाथजी निवासकरतहैं १ पयस्विनीनाम नदी जहां सुहावनीकही सुन्दरि जाके दर्शन मज्जन करेते पाप को नाशहोतहै साधनकरि जे सिद्धभये अरु शीलमनवाले साधु अरु देवता सेवाकरत ते मनकी कामनापावत २ सुन्दरीजाति के सघन वृक्ष वेली ते नवीन पल्लवलिहे प्रफुल्लितहैं कन्द औ गोलाकार मूल लम्बायमानजल थलरुहकहे जलके कसेरू क-

मलगट्टा कोकाबेली थलके खाझाकन्द शकरकंद अमीकन्द।दिजे भूमिमें होती हैं ते वनमें अनकहे अनेक भांति अगणितकहे समूह हैं ३ वंजुलकहे बेत मंजु शोभायमान वकुल मौलशिरी कुलकहे समूह सुरतरु कल्पवृक्ष तार तमाल केला कदम्ब चंपा पाउर कटहर आदि ४ भूरुह जे भोजपत्र वृक्ष ते शोभा अरु अनुराग सुंदरीभाग्यते समूहभरेहैं ता वनकी शोभा देखेते देवतनकेअनेक वनबाग ते लघुलागतहैं ५ श्रीरघुनाथजीके वनकी शोभा वरणीनहीं जातहै जो चितवतमें चित्तहरिलेतहै नवीन सुन्दर तनकरि अरु संकुलकहे समूह वृक्षनकरि ऐसीशोभाहै मानों मदनको निवास मन्दिरहै ६ नदी और तड़ागनमें अनेकरंगके कमल फूलेहैं तिन पर सुन्दर भँवर गुञ्जारत अनेकप्रकार पक्षी बोलिरहेहैं ७ श्री लषणलालजी कहतेहैं कि हे श्रीरघुनन्दनजी वनकीशोभादेखिये मानों कामदेवके पुरमें आनन्दपूर्वक ऋतुराज आयोहै ८ चित्रकूटपर आपुकोअनुराग अधिकजान्यो ताते सखावसंत सहित कामदेव इहां फागुखेलबेहेतु आयो है ९ झिल्ली पतंगइव कीट वसंत में वृक्षनपर बोलत झींगुरको शब्द सोई झांझ है पर्वतन के झरना सोई डफ ढोल मृदंगनगारा दुन्दुभीहैं भृंगनकीगुञ्जार सो उपंग जो गरेमें लगाइ बजावत ताको नसतरंगभी कहत सुवाआदि बोलत सो तालसहित गानहै १० हंस हंसनी कपोत कबूतरीचक्रवाक चक्रवाकी चकोरचकोरी इत्यादि अनेक पक्षी बोलत सो मानों नरनारी आनन्द सहित नगरके चारिहु ओर गान करतहैं ११ ॥

मू०। चित्रविचित्राविविधमृगडोलतडोंगरडाग॥ जनु पुरवीथिनविहरतछैलसँवारेस्वांग १२ नचहिंमोरपिक गावहिंसुरवररागबँधान॥ निलजतरुणतरुणीजनुखेलहिं समयसमान १३ भरिभरिशुण्डकरिणिकरिजहँतहँडारहिं

वारि ॥ भरतपररूपरपिचकनमनहुँमुदितनरनारि १४
पीठिचढ़ाइशिशुनकपिकूदतीडारहिडार॥ जनुमुंहलाइगे
रुमसिभयेखरनअसवार १५ लियेपरागसुमनरसडोलत
मलयसमीर ॥ मनहुँअरगजाछिरकतभरतगुलालअबी
र १६ कामकौतुकीयहिविधिप्रभुहितकौतुककीन ॥ री
झिरामरतिनाथहिजगविजयीवरदीन १७ दुखबहुदास
मोरजनिमानहुमोरिरजाय ॥ भलेहिनाथमाथेधरिआय
सुचलेउबजाय १८ मुदितकिरातकिरातनिरघुवररूपनि
हारि ॥ प्रभुगुणगावतनाचत चले जोहारि जोहारि १९
देहिंअशीषप्रशंसहिंसुनिसुरवर्षहिंफूल ॥ गवनेभवन
राखिउरमूरतिमंगलमूल २० चित्रकूटकाननछविको
कविवरणैपार ॥ जहंसियरामलषणसहरघुपतिकरत
विहार २१ तुलसिदासचांचरिमिसिकहेरामगुणग्राम ॥
गावहिंसुनहिंनारिनरपावहिंसबअभिराम २२ ॥

टी०। डोंगर डाग कहे पहार वनकीगलीनमें रंगरंगके मृगन के झुण्ड घूमत सो मानों पुरके छैल स्वांग सँवारे पुरकीगलीन में घूमतहैं १२ तहां मोर नाचतहैं पिककहे कोयलबोलतहैं सो मानों लयसहित सुन्दरस्वरभेरे गानकरतहैं सो सबसमाज कैसी शोभादेत मानों तरुण पुरुष तरुणस्त्री निर्लज्ज है समय जो फागुन ताकी समान फागु खेलत हैं १३ हथिनी हाथी शुण्डन में जलभरिभरि जहांतहां डारतहैं सो मानों नरनारी आनन्दते परस्पर पिचकारी भरिभरिमारतहैं १४ बच्चनको पृष्ठिनपरचढ़ाय वानर वानरी डारडार कूदते हैं सो मानों गेरू अरु मसि स्याही मुखन में लगाइ खरनपर चढ़ाय स्वांग रचेहैं तहां लालमुखवाले गेरू अरु स्याहमुखवाले मसिकहे १५ पुष्पनकी पराग अरु सुगन्ध लिहे अरु मलयकही सुगन्धित पवनचलत सो मानों केसरि

चन्दन कर्पूरघोरि जल जाको अरगज़ाकहत सो छिरकतहैं तापै पुष्पनकीपराग सो मानों अबीर गुलाल मुखनमें लगावतहैं १६ प्रभुके प्रसन्न होवे हेतु कामकौतुकी यहिप्रकारको कौतुककरत भयो ताको देखि प्रसन्नहोइ प्रभु रतिनाथको वरदान देते भये कि जगविजयी होहु १७ तहां प्रभुकहो कि हमारे दासन को मत दुःखदीजिये इतनी हमारी रजायमानियो याते दास अजित हैं तब कामदेवने कहो कि हे नाथ भली यह आपुकी आज्ञाहमारे माथपरहै हम भक्तनके दास सेवकहैं यह रजाय मानि चलतभयो १८ किरात किरातनी वसन्तऋतुमें प्रभुकी शोभा देखि आनन्दते प्रभुको जोहारिजोहारि गुणानुवाद गावतनाचत मगनमन प्रेम में बूड़े अपने घरको चलेजातेभये १९ कोल किरात आशीर्वाद देत अरु प्रभुकी प्रशंसाकरत सो सुनि देवता फूल वर्षत मंगल की मूल प्रभुकीमूर्त्ति उरमें राखि अपने मन्दिरको गये २० जहां श्रीजानकी लक्ष्मणजी सहित रघुनाथजी नित्य विहार करत ता चित्रकूट गिरि औ वनकी शोभा को कवि वर्णनकरि पारपावै नित्य विहारको ॥ प्रमाणं बृहद्रामायणे ॥ चित्रकूटगिरिश्रेष्ठःश्रीरामपद भूषितः ॥ यस्मिन्श्रीजानकीनाथो रमतेसर्वदैवहि १ ॥ याते अपार महिमाहै २१ गोसाईंजी कहत कि चांचरिके वहाने हमकछु श्री रघुनाथजी के गुणगानकरे ताको जे नरनारि सुनहिं वा गावहिं ते आनन्द जो प्रभुपद में प्रीति भक्ति सो पावहिं २२ ॥

मू० । रागवसन्त ॥ आजबनोहैविपिनदेखोरामधी र ॥ मानोंखेलतफागमुदमदनवीर १ बटवकुलकदम्बप नसरसाल ॥ कुसमिततरुनिकरकुरबकतमाल २ मानों विविधवेषधरेछैलयूथ । बिचबीचलताललनाबरूथ ३ प णवानकनिरझीरअलिउपंग ॥ बोलतपारावतडफमृदंग४ गायकशुककोकिलझिल्लिताल ॥ नाचतबहुभांतिवहीं

मराल ५ मलयानिलशीतलसुरभिमन्द ॥ बहसहितसुम नरसरेणुवृन्द ६ मानोंछिरकतफिरतसबनसुरंग ॥ भ्राजतउदारलीलाअनंग ७ क्रीड़तजीतेसुरनरअसुरनाग ॥ हठिसिद्धमुनिनकेपंथलाग ८ कहतुलसिदासतेहिछांड़िमयन ॥ जेहिराखिरामराजीवनयन ९ ॥

टी० । श्रीलक्ष्मणजी कहत हैं धीरमान् श्रीरघुनाथजी आजु वन कैसो बनो है मानों मदनवीर आनन्दते फागुखेलत हैं १ बरगद बकुल जे मौलशिरी कदम्ब पनस जे कटहर रसाल जे आम कुरबक जे कुरैया तमालादिते समूह कुसुमित कहे फूलिरहे हैं २ काहूमें श्वेत काहूमें पीत अरुण फूलते मानों अनेक वेष धारण किहे छैलन के यूथ समूह हैं तिनके बीचनमें लताफैलीं सो मानों वरूथ समूह स्त्री हैं ३ झरना झरत ताको शब्द पणवकही ढोल है आनक कहे नगारा है भँवर गुंजार सो उपंगकहे मुरचंग बीन सतरंग जो गरमें लगाइ बजावत पारावत जो कबूतर बोलत सो मानों डफ अरु सुन्दर मृदंग बाजतहैं ४ जुवा कोकिलादि गायक हैं ते स्वर सहित गावत हैं तामें झिल्लीकी झनकार मिली सो मानों तालहै पतंग इव कीट वृक्षनपर झींगुरको शब्द बोलत सोई झिल्ली है बर्हीमोर हंस नाचत ते अनेक प्रकार नृत्यकार हैं ५ मलयगिरि को परस करि अनिल जो पवन सो शीतल सुरभी कहे सुगन्धित मन्द कहे धीरा बहकहे बहत है फूलनको रस अरु पराग वृन्द कहे समूह लिहे पवन कैसी शोभित होत ६ मानों सबनपर सुरंग कहे सुंदर रंग छिरकत फिरतहै इत्यादि कामदेव की उदार लीला भ्राजत कही विराजमान है ७ क्रीड़त कही खेलत में देवता नर नाग असुरादिकन को जीति लियो अरु सिद्ध मुनिनकों पंथ जो सन्मार्ग तासें हठकरिके लाग सुमार्ग ते छँड़ाइ कुमार्ग में लगाइ दियो ८ गोसाईंजी कहत कि जाको श्रीराम राजीवनयन प्रणराखे ताको कामने छांड़ो अपर सब कामवेग में परे ९ ॥

मू०। ऋतुपतिआयोभलोवन्योवनसमाजु ॥ मानोंभ
येहैंमदनमहराजआजु १ मनोंप्रथमफागमिसकरिअनी
ति ॥ होरीमिसअरिपुरजारिजीति २ मारुतमिसपत्रप्र
जाउजारि ॥ नयनगरबसायेविपिनझारि ३ सिंहासनशै
लशिलासुरंग ॥ काननछविरतिपरिजनकुरंग ४ शिरछत्र
सुमनवल्लीवितान ॥ चामरसमीरनिर्झरनिशान५मानों
मधुमाधवदोउअनिपधीर ॥ वरविपुलविटपवानैतवीर ६
मधुकरशुककोकिलवन्दिवृन्द ॥ गावहिंविशुद्धयशवि
विधछन्द ७ महिपरततुसनरसफलपराग ॥ जनुदेतइतर
नृपकरविभाग ८ कलिसचिवसहितेनयनिपुणमार ॥ कि
योविश्वविवशचारिहुप्रकार ९ विरहिनिपरनितनइपरत
मार ॥ डांटिआहिसिद्धसाधकप्रचार १० तिनकीनकाम
सकैचापिछांह ॥ तुलसीजेबसहिंरघुवीरवांह ११ ॥

टी० वसंतऋतु आयो तातें वनको समाज अतिभलो वनो मानों मदन महाराज आजु राजसिंहासनपर विराजे १ तिनके प्रताप को वर्णन करत हैं मानों फागुके बहानेते अनीति बेमर्यादा करि प्रजनको मान तोरे होरीके बहानेते अरिपुरको जारि जीति लियो २ पवनके बहाने पत्ररूपी प्रजनको उजारि दिये पीछे नवीन पत्र हरितभये सो मानों समग्रवनमें नवीन नगरबसाये ३ राजधानी वही सो सुंदर पर्वतनकी शिला सोई सुंदर सिंहासन है वनकी छवि सोई रति कामकी पत्नी है मृगा आदि समीपी प्रजा हैं ४ श्वेतफूल सोई छत्रहै लता सोई चँदवाहै पवन वहत सोई चँवर है झरना सोई नगाराहै ५ मधु चैत माधव वैशाख ते दोऊ अनिपकहे सेनापति हैं धीर्यमान् अनेकन वृक्ष तेई श्रेष्ठबानैत कहे बाने वाजवीर हैं ६ भ्रमर सुवा कोकिलादिते वन्दीजन के

वृन्द हैं ते अनेकन छंदनमें विशेष शुद्धयश ताको वर्णन करतहैं ७ पुष्पनको रसपराग फूलफल पृथ्वीपर गिरत सो मानों अपरराजा कर कहे दण्ड विभाग कहे अलग अलग देतहैं कामदेव महाराजको ८ कलि जो कलियुग सोई है सचिव मंत्री तेहि सहित नय जो राजनीति तामें निपुण कामदेव सो साम, दाम, दण्ड, विभेद चारिउ प्रकारकरि विश्व जो संसार ताको वशकियो है ९ विरहीजन विरहमें दुःखित सोई मानों नितनई मारुपरत है अरु सिद्धसाधकनको प्रचारि हांकदैकै डांटतभयो तपोधन छीनिलियो १० गोसाईंजी कहत कि जे जन रघुपतिकी बांहवलते वसत तिनकी कामदेव छाहीं नहीं छुइसकत अपर सबको जीतिलियो ११ ॥

मू०। सबदिनचित्रकूटनीकोलागत॥ वर्षाऋतुप्रवेशविशेषगिरिदेखतमनअनुरागत १ चहुंदिशिवनसम्पन्नविहँगमृगबोलतशोभापावत॥ जनुसुनरेशदेशपुरप्रमुदितप्रजासकलसुखछावत २ सोहतश्यामजलदमृदुघोरतधातुरँगमगेशृंगन॥ मनहुंआदिअम्भोजविराजतसेवितसुरमुनिभृंगन ३ शिखरपरसिघनघटहिमिलतबगपांतिसोछविकविवरणी॥ आदिवराहविहरिवारिधमानोंउठ्येहैदशनधरिधरणी ४ जलयुतविमलसलिलझलकतनभवनप्रतिबिम्बतरंग॥ मानहुँजगरचनाविचित्रविलसतविराटअँगअंग ५ मन्दाकिनिहिमिलतझरनाझरिभरिभरिजलआछे॥ तुलसीसकलसुकृतसुखलागेमानोंरामभक्तिकेपाछे ६॥

टी०। चित्रकूट सब दिननमें नीकलागत परन्तु वर्षाऋतुमें प्रवेश भयेते गिरिको देखत संते मन अत्यन्त अनुरागको प्राप्त होत १ चारिहू दिशामें वन फल फूल करि सम्पन्न कहीं फूल पूरिरहे हैं

तिनमें पक्षी मृगादि बोलत सो कैसी शोभा देखाते मानों सुनरेश कहे नीतिमान् राजाकी राज्यविषे देशमें प्रजा आनन्दते सब सुख छावत सुखते बसत २ धातु गेरू हिरमिजी मैनशिलादि बरसेते वहे सो शृंगनपर बहेते रँगमगे शृंगनपर श्याम मेघ धीरा धीरा गरजत सोहात सो मानों पर्वत सो आदि कमल जाते ब्रह्माजी प्रकट भये हैं सोहै अरु मेघ सोई भ्रमर है सुर मुनि सेवत हैं ३ पर्वतके शिखरको परस किहे बगुलनकी पांति मेघकी घटामें मिली कैसी सोहत मानों पर्वत आदिवाराह हैं बरसे को जलभूमि में भरा सो समुद्रते तामें विहरि कहीं यथा हिरण्याक्ष सों धरणी छीनि समुद्र ते निकासि बकपांति सोई दांत हैं तापै मेघ सोई मही है ताको दांतपर धरि आकाश में उड़जात हैं ४ निर्मल शिलनपर जलभरा ताकी तरंगमें आकाशकी अरु वनकी प्रतिबिम्ब झलकत है सो मानों जगत्की भांति भांतिकी विचित्र रचना सो विराटके अंग अंगमें विलसत विशेष शोभित होत ५ पर्वतते झरना झरि झरि भूमिमें भरिभरि बहि मंदाकिनी में मिलत आछेकहे सुन्दर सो मानों रामभक्ति के पाछे सकल सुख अरु सुकृत लागे हैं नदीभक्ति झरना सुख सुकृत हैं ६ ॥

मू० । रागसोरठ ॥ आजकोभोरऔरसोमाई ॥ सुन्यो नद्दारवेदवन्दीध्वनिगुनिगनगिरासुहाई १ निजनिजप तिसुन्दरसदननतेरूपशीलछबिछाई ॥ लैनअशीषशीश आगेकरिमोपैसुतवधूनआई २ बूझीहौंनाविहँसिमेरेरघु वरकहोसुमित्रामाता ॥ तुलसीमनहुमहासुखमेरेदेखिन सक्योविधाता ३ ॥

टी० । यहां बयालिस ते पचासलों आठ पदनमें नित्यविहार वर्णनकरेहैं काहेते चैत्रशुक्ल चतुर्दशीको प्रभु चित्रकूटमें पहुँचेतबतें वैशाखशुक्ल त्रयोदशीको भरतजी चित्रकूटमें पहुँचे तहां एकमास

को अन्तररहै इहां गोसाईंजी प्रथम शरद्‌ऋतुवर्णनकरे फिर वसंत पीछे वर्षा सो तीनऋतु एकवर्ष भुगततेहैं सो एकमासमें कैसेवनी ताते आठपद्दनमें नित्यविहारकहि अव फिर नैमित्तलीला वर्णन करत तहां चैत्रशुक्लनवमी ते चले वैशाखकृष्णपंचमी को सुमंत्र अयोध्याजीकोआये तहां गेरहदिनको अंतररहा कौशल्याजी को सुत वियोगको विरह के विलाप छःपदन में वर्णन करत तहां भोरपहर कौशल्याजी कहती हैं कि आजको भोर आन भांतिको देखातहै काहेते ऋषीश्वरनकी वेदध्वनि वंदीजनन को प्रताप विरदावलीकी ध्वनि अरु गुणीजननकी सुन्दरकीरति गानके गिरा की ध्वनि इत्यादि आजु द्वारपै नहीं सुनिपरत हैं१आप अपने सुन्दर पतिनके मंदिरन ते रूपभरी शीलवान् छविसों छाइ कहे छविमयी पुत्रवधू शीश आगेकरि शीशनवाय अशीश लेबेहेत हमारे पास नहींआईं २ हे मेरे रघुवर तुम्हारी सुमित्रामाता कहां हैं ऐसेवचन हमने हँसिकरबूझे अभिप्राय कि ऐसे वचन कासों बूझें ताते हमारो महासुख विधाता न देखिसक्यो ३ ॥

मू० । जननीनिरखत बानधनुहियां ॥ बारबारउर नैननलावति प्रभुजूकीललितपनहियां १ कबहुंप्रथम ज्योंजायजगावति कहिप्रियवचनसकारे ॥ उठहुतातब लिमातुबदनपरअनुजसखासबद्वारे २ कबहुंकहतबड़ि बारभई ज्योंजाहुभूपपहँभैया ॥ बंधुबोलिजेंइयेजोभावैग ईनिछावरिमैया ३ कबहुंसमुझिवनगमनरामको रहि चकिचित्रलिखीसी ॥ तुलसिदासयहसमयकहेतेलागत प्रीतिसिखीसी ४ ॥

टी० । बालअवस्था के छोटे बाण धनुष प्रभुके खेलबेकेरहे तिनको कौशल्याजी निरखती हैं प्रेमवश बालसमय की जो सुन्दरी प्रभुकी पनहीं हैं तिनको बारबारहृदय अरु नेत्रननमें लगावतीहैं १

कबहूं प्रभातकाल प्रथमकिताई प्रभु के शयनमन्दिर में जगावती जाय प्रियवचनकहि हे तात तुम्हारे चन्द्रबदनपर मैं बलिहारीहौं तुम्हारे अनुज अरु सखा द्वारेपर ठाढ़े हैं ताते उठहु २ कबहुं कहती हैं हे भैया बड़ी अबेर भई भूपके पासको जाउ ज्यों कही यथा आगे कहती रहीहैं तथा अब कहत माता जो मैं सो बलिजाउँ बंधुनको बोलाइ जो रुचै सो भोजनकरिये ३ कबहूं श्रीरघुनाथजी को वनगमनसमुझिकै यथा चित्र ऐसीलिखीचकि रही गोसाईंजी कहत कि सो समय वर्णन करिबे मैं प्रीतिसिखी ऐसी ज्ञानिपरति काहेते जो सांची प्रीति होती तौ तुरन्त प्राण देह त्यागते ४॥

मू०। माईरीमोहिन कोउसमुझावै ॥ रामगवनसांचोकिधौंसपनोमनपरतीतनआवै १ लगेरहतमेरेनयननआगे रामलषणअरुसीता ॥ तदपिनमिटतदाहयाउरकी विधिजोभयोविपरीता २ दुखनरहतरघुपतिहिविलोकत तननरहतबिनुदेखे ॥ करतनप्राणपयानसुनहुसखि अरुझिपरीयहिलेखे ३ कौशल्याकेविरहवचनसुनिरोइउठींसबरानी ॥ तुलसिदासरघुबीरविरहकीपीरनजातिबखानी ४॥

टी०। हे माईरी हमको कोऊ जनि समुझावत श्रीरघुनन्दन को वनको जाइबो सत्य है वा सपनोहै यह हमारेमनमें निश्चय नहींआवतहै १ काहेते हमारे नेत्रनके आगे राम लषण अरु सीता सदा लगे रहत ताहूपर हमारे हृदयकी दाह नहीं मिटतहै जो विधाता वाम भयो है ताते २ रघुपतिके देखे दुःखनहीं रहत अरु बिनदेखे तनुनहींरहत यहिलेखे मैं अरुझिपरेहैं सखी ताते प्राण पयान नहीं करत ३ श्रीकौशल्याजी के विरह के वचनसुनि सब

रनिवास रोइउठा गोसाईंजी कहत कि रघुवीरके विरहकी पीर बखानी नहींजात ४ ॥

मू० । जबजबभवनविलोकतसूनो ॥ तबतबविकल होतकौशल्या दिनदिनप्रतिदुखदूनो १ सुमिरतबाल विनोदरामकेसुन्दरमुनिमनहारी ॥ होतहृदयअतिशूल समुभिपदपंकजअजिरविहारी २ कोअबप्रातकलेऊमां गतरूठिचलैगोसाई ॥ श्यामतामरसनैनस्रवतजलकाहि लेउँउरलाई ३ जियौंतौंविपतिसहौंनिशिवासरमरौंतौम नपछितायो ॥ चलतविपिनभरिनयनरामकोबदननदेख नपायो ४ तुलसिदासयहविरहदशाअतिदारुणविपतिघ नेरो ॥ दूरिकरैकोभूरिकृपाबिनशोकजनितरुजमेरो ५ ॥

टी० । प्रभुको निवास मंदिर जव सूनो देखती हैं तब तब श्री कौशल्याजी विकल ह्वैजाती हैं ताते दिनप्रति दूनादुःख होतहै १ मुनिनको मन हरनहारो बालविनोद जो श्रीरघुनाथजीको ताको सुमिरत तव हृदय में अत्यन्त शूल होत काहेते कि कमलसम कोमल चरणनसों अजिरकहे आंगनके विहारी बाहर नहीं निकरे ते वनमें पैदल कैसे चलैंगे २ कौन बालविनोद सो कहतीहैं कि को अव प्रातःकाल कलेऊ मांगतमें रूठि चलैगो हे माई श्याम कमलसम नेत्रन में जलस्रवत देखि काको उरमें लगाइ लेउँ ३ जियौंतौ निशिदिन दुःखसहौं मरौंतौ मनमें पछिताव रहिजाइ काहेते वनगमन समय श्रीरघुनन्दन को बदन नेत्रन भरि नहीं देखन पायो ४ गोसाईंजी कहत कि श्रीकौशल्याजीकी जो विरह दशाकी अत्यन्त दारुण विपत्ति समूह है ताही शोक करिकै जनित कहे उत्पत्ति रुजकही रोग ताको भूरिकृपा जो रघुनाथजी तिन विना और को दूरि करिसकै ५ ॥

मू० । मेरोयहअभिलाषविधाता ॥ कबपुरवैसखिसा

नुकूलह्वैहरिसेवकसुखदाता १ सीतासहितकुशलकौश
लपुरआवतहैंसुतदोऊ ॥ श्रवणसुधासमवचनसखीकब
आइकहैगोकोऊ २ सुनिसंदेशप्रेमपरिपूरणसंभ्रमउठि
धावोंगी ॥ बदनविलोकिरोंकिनैननजलहरषिहियेलावों
गी३ जनकसुताकबसासुकहेमोहिंरामलषणकहेंमैया॥बां
हजोरिकबअजिरचलहिंगेश्यामगौरदोउभैया ४ तुलसि
दासयहिभांतिमनोरथकरतप्रीतिउरबाढ़ी ॥ थकितभई
उरआनिरामछविमनहुँचित्रलिखिकाढ़ी ५ ॥

टी० । हमारो यह अभिलाष विधाता कब पुरवहिंगे हे सखी सेवकन के सुखदाता हरि सानुकूल प्रसन्न ह्वैकै कब ऐसी बात सुनावहिंगे सो आगे कहत १ श्रीजानकीसहित दोऊपुत्र तुम्हारे कुशलपूर्वक कौशलपुर जो अयोध्याजी को आवत हैं हे सखी हमारे श्रवणनको अमृतसमान ऐसे वचन कब आइ कोऊ कहैगो २ ऐसो सन्देश सुनि प्रेमतें तन परिपूर्ण सम्भ्रमह्वै कब उठि धावोंगी नेत्रनभरि बदन निहारि नयननको जलरोंकि हरषिकै कब हृदयमें लगावोंगी ३ जनकसुता कब मोको सासु कहैंगी अरु राम लषण कब मात कहैंगे श्याम गौर दोऊ भैया कब बांहजोरि आंगनमें चलहिंगे ४ गोसाईंजी कहत कि श्रीकौशल्याजी याही भांति मनोरथ करतमें अत्यन्त प्रीति उरमें बाढ़ी श्रीरघुनाथजी की छवि उरमें आनिकै प्रेम में थकित भई सो कैसी देख परत मानों चित्रसारकी लिखि काढ़ी चित्रकी प्रतिमासी भई ५ ॥

मू० । सुन्योजबफिरिसुमन्तपुरआयो ॥ कहिहैंकहा
प्राणपतिकीगति नृपतिविकलउठिधायो १ पांयपरत
मंत्रीअतिव्याकुलनृपउठायउरलायो ॥ दशरथदशादेखि
नकह्योकछु हरिजोसंदेशपठायो २ बूझिनसकतकुश

लप्रीतमकीहृदययहैपछितायो ॥ सांचेहुसुतवियोगसुनिबेकहँधिगविधिमोहिंजियायो ३ तुलसिदासप्रभुजानिनिठुरहौंन्यायनाथविसरायो॥हारघुपतिकहिपरेउअवनिजनुजलतेमीनबिलगायो ४ ॥

टी०। जब सुन्यो कि सुमन्त पुरको फिरि आये तब चक्रवर्ती महाराज विकलह्वै उठि धावतभये काहेते कि प्राणकेपति रघुनन्दन की कैसी गति कहैंगे १ सन्मुख होतही मन्त्री सुमन्त व्याकुलह्वै पांवनपै गिरे तब महाराज ने सुमन्त को उठाइ उरमें लगाइलियो त्यहिसमय चक्रवर्ती महाराजकी दशा देखि सुमन्त ते कछु कहत न बनिपरो जो संदेश प्रभुने कहारहै सो न कहि सके २ प्रीतम जो श्रीरघुनाथजी तिनको कुशल श्रीदशरथ महाराज बूझि नहीं सकत काहेते हृदय में यह पछितावहै कि ऐसे पुत्रको सांचो वियोग सुनिबेको धिक्कार है जो विधाता हम को जीवत राख्यो ३ गोसाईंजी कहत कि श्रीदशरथजी प्रभु को निठुर जान्यो कहेते न्याव बिसराये कैकेयीको अपराध हम को फलभोग यह समझि हायकरि भूमिमेंपरे यथा जलते मीन अलगाइकै कोउ डारै ४ ॥

मू०। सुयहुनमिटैगोमेरो मानसिकपछिताउ ॥ नारिवशनविचारकीन्हों काजशोचतराउ १ तिलकको बोल्योदियोवन चौगुनोचितचाउ ॥ हृदयदाड़िमज्यों नविहरेउसमुझिशीलस्वभाउ २ सीयरघुवरलषणबिनु भयभभरिभाग्योनआउ ॥ मोहिंबूझिनपरतयातेकवन कठिनकुघाउ ३ सुनिसुमन्तकिआनुसुन्दरसुवनसहित जियाउ ॥ दासतुलसीनतरुमोकहँमरणअमीपियाउ ४॥

टी०। महाराज शोचतकी हमारे मनको पछिताव मेरेउपै न

मिटैगो काहेते नारिके वश ह्वै विना विचारे काज करिडारयउँ यह शोचहै १ तिलक देवेहेत वचन कहि बुलाये अरु दिये वन ताहूपर चित्तमें चौगुनो चावकहे आनन्द बनारहा ऐसेहू शील सुभाव समुझिकै हृदय दाडिम अनारसम बिहरेउ फटि न गयो २ श्रीराम लषण जानकी विना मंदिर देखि तिनकी विरहकी चोट की भयकरि भभरिकही गडबडाइ कै भाग्यो न आउकही आयुर्दाय जो ऐसेहु अवसर प्राण न पयान कीन्हैं तो याते अधिक कुघाउ हमको और नहीं बूझिपरत तामें प्राण जाहिंगे ३ हे सुमन्त सुनो यातो हमारे पुत्रनको आनहु तिनसहित जियावो हमको नाहीं तो हमको जीवन विष है ताते मरण सोई अमृत है ताको पियावहु ४ ॥

मू० । अवधविलोकिहौंजीवतरामभद्रविहीन ॥ काहकरिहैंआइसानुजभरतधरमधुरीन १ रामशोकसनेह संकुलतनविकलमनलीन ॥ टूटितारागगनमगज्योंहोत छिनछिनछीन२हृदयसमुझिसनेहसादरप्रेमपावनमीन॥ करीतुलसीदासदशरथप्रीतिपरमितिपीन ३ ॥

टी० । भद्रकही कल्याणरूप रघुनन्दन विना हौं अयोध्याको कैसे देखिहौं सानुज शत्रुहनसहित धर्मधुरीण भरत इहां आइ कहा करिहैं काहेते यह अनुचित को उपद्रव कैसे सहिसकिहैं ताते न आवहिं १ श्रीरघुनाथजी के विषे सनेह संकुलकही पूर्णहै तामें मनलीनहै तिनके बिछुरेको शोक तामें तनु कैसो विकल है जैसे आकाश मगसें तारा टूटै छीन छीन कहे हीनहोत २ गोसाईं जी कहत कि जल विना नहीं जीवत ताते मीनको प्रेम पवित्रहै ताके सनेह को आदरपूर्वक उरमें समुझि दशरथ महाराज प्रीतिकी परमिति कहे मर्यादा ताको पीनकही पुष्टकरि यथा जल विना मीन तनुत्यागत तथा त्यागे ३ ॥

मू०। करतशयमनमेंअनुमान ॥ शोकविकलमुखवचननआवैबिछुरेकृपानिधान १ राजदेनकहबोलिनारिवशमेंजोकह्योंवनजान ॥ आयसुशिरधरिचलेहरषिहियकाननभवनसमान २ ऐसेसुतकेविरहअवधिलौंजोराखहुँयहप्रान ॥ तौमिटिजायप्रीतिकीपरमितिअयशसुनौंनिजकान ३ रामगयेअजहूंहौंजीवतसमुझतहियअकुलान ॥ तुलसिदासतनुतजिरघुपतिहितकियोप्रेमपरमान ४ ॥

टी०। कृपानिधान श्रीरघुनाथजी के बिछुरे को दुःख करिकै मन विकल ताते मुखसों वचन नहीं आवत अरु रायदशरथजी मनमें अनुमान करत १ काह अनुमान करत कि राज्यदेबे को कहे अरु नारिकी वशमें परि बोलायकै वनजावेको कहे सो आज्ञा माथेपर धरि हर्षसहित उरमें यथा घरकी समान वनमानि चले गये २ ऐसे पुत्रके विरहमें जो अवधि चौदहवर्ष तक अपने प्राण राखिछांडों तौ प्रेमकीपरमितिमर्यादा मिटिजाय अपनेकानसों अयश सुनिवे परै ३ रघुनन्दनसे पुत्र चलेगये अवतक हम जीवत हैं यह समुझिकै अकुलाइउठे गोसाईंजी कहत कि रघुनाथके हित श्रीदशरथमहाराज प्रेमकोपरमानकही सत्यकरिकै तनुत्यागकरे ४

मू०। रागसोरठ ॥ ऐसोतैंक्योंकटुवचनकह्योरी ॥ रामजाहुकाननकठोर तेरोकैसेधौंहृदयरह्योरी १ दिनकरवंशपितादशरथसेरामलषणसेभाई ॥ जननीतूजननीतौकहाकहौं विधिकेहिखोरिनलाई २ हौंलरिहौंसुखराजमातुह्वैसुतशिरछत्रधरैगो ॥ कुलकलंकमलमूलमनोरथतैंबिनकौनकरैगो ३ ऐहैंरामसुखीसबह्वैहैं ईशअयशमेरोहरिहै ॥ तुलसिदासमोकोबड़ोशोचतूजन्मकौनविधिभरिहै ४ ॥

टी०। कैकेयीप्रति भरतजीकेवचनहैं कहत कि ऐसे कठोरवचन तैंकैसेकहे कि रघुनाथजी वनकोजाहिं कैसो तेरो कठोरहृदय रहो जो ऐसे वचन कहिगये इहां अरुनीनिरादरहै १ सूर्यवंशऐसो कुल तामेंजन्म दशरथसे पिता रामलषणसेभाई ये तीन बड़ाई हमको ताकी जननी हे जननी तुमको हमारीमाताहोइको रहे तो काह कहिये विधाता काको दोष नहींलगायोहै अथवा जैसीतेरी जननी तैसी तू भई २ हमारेपुत्रराजगदीपर बैठि शिरपरछत्रधारण करैगो राजाकी माता हैहमसुख पावहिंगी इहां छोटे भाईको राज्यदेवो कुलको कलंकप्रभुको वनकोदुःख भूपकोतनत्याग मातनको विरह इत्यादि मलपाप ताकोमूल तेरो मनोरथ जाते सबको दुःख भयो ऐसो मनोरथ तू सिवाय और कौन करैगो ३ श्रीरघुनाथजी अयो-ध्याजीको ऐहैं पुरवासी सब सुखीहैहैं हमारो अयश ईश्वर हरि है परंतु तू आपनोजन्मकौन विधिबितावैगीयहहमको बड़ोशोचहै४

मू०। तातेहौंदेतनदूषणतोहीं॥ रामविरोधीउरकठोरतेप्रकटकियोविधिमोहीं १ सुन्दरसुखदसुशीलसुधानिधिजरनिजायजेहिजोये॥ विषवारुणीबन्धुकहियतविधुनातोमिटतनधोये २ होतेजोनसुजानशिरोमणिरामसबनमनमाहीं॥ तौतेरीकरतूतिमातुसुनिप्रीतिप्रतीतिकहाहीं ३ मृदुमंजुलसांचीसनेहशुचिसुनतभरतवरबानी॥ तुलसीसाधुसाधुसुरनरमुनिकहतप्रेमपहिंचानी ४॥

टी०। हे कैकेयी रामविरोधी जो तू है ताकेकठोरउरते विधाता हमको प्रकटकरो तो तेरे सम्बन्धी ते हमहूँ दोषी भये ताते हम तोहूँको दोष नहीं देतहैं १ देखबेमें सुन्दरताकी प्रकाश सुखदायी सुशील सदा शीतल जाके देखेते जरनि तापजाती है काहेते सुधाको धामहै ताहू चन्द्रमाको विष अरु वारुणीबन्धुकहियतहै ताते निश्चयकरि नातोधोइबेते नहीं मिटत है २ सुजानकेशिरोमणि

श्रीरघुनाथजी सबकेउरमें न बसे होते भाव अन्तर्यामी न होते तौ हे माता सुन तेरीकरतूतिके आगे मेरी प्रीतिकी प्रतीतिकहांहै ३ कोमल सुन्दर सनेह की भरी वाणी सांची भरतजी की सुनिके गोसाईं जी कहत कि भरतजी के प्रेमको पहिंचान सुरनरमुनि कहत कि हे भरतजी तुम साधहो तुम्हारी वाणी सत्य है ४ ॥

मू० । जोपैहौंमातुमतेमहँह्वैहौं ॥ तौजननीजगमेंया मुखकीकहांकालिमाधोइहौं १ क्योंहौंआजुहोतशुचि शपथनकौनमानिहैसांची ॥ महिमामृगीकौनसुकृतीकी खलवचनविशिषतेबांची २ गहिनजाइरसनाकाहूकी कहौजाहिजेहिसूझै ॥ दीनबन्धुकारुण्यसिन्धुबिनुकौन हृदयकीबूझै ३ तुलसीरामवियोगविषमविषविकल नारिनरभारी ॥ भरतसनेहसुधासींचेसब भयेतेसमय सुखारी ४ ॥

टी० । श्रीकौशल्याजीतेभरतजी कहत कि जो हम माता कैकेयीके मतमेंहोहिंगे तौ हे मातु जगत् में अपने यहिमुखकी स्याही कहां धवैहौं काहेते रामविरोधीको नरक में भी ठौर संकोचहै १ आजु हम शपथ करिकै कैसे शुद्धहोहिंगे हमारी वाणीको आजु कौन सांच मानैगो काहेते कौनसुकृतीकी महिमारूपी मृगी खलनके वचनरूप बाणनते बचीहै खलनते काहूकी महिमा शुद्धनहीं रहनपाई है २ काहूकीरसना हमारीगही नहीं रहिसकत ताते जाको जैसो सूझिपरै सो तैसोकहै करुणा के समुद्र दीननके बंधु श्रीरघुनाथजी के विना हमारे हृदयकी कौनजानै ३ गोसाईंजी कहतहैं कि श्रीरघुनन्दनको वियोगसोई तीक्ष्णविष ताके पानकिहे अवधनरनारिभर विकलताकोप्राप्तहैं तहां भरतजीने सनेहरूपी अमृतवचनकहिसींचे ताते तेहिसमय सबसुखीभये ४ ॥

मू० । काहेकोखोरिकैकेइहिलावो ॥ धरहुधीरब

लिजाउँतातमोकोआजुविधाताबांवो १ सुनिबेयोगवि
योगरामकोहौंनहौंउँमेरेप्यारे ॥ सोमेरेनयननकेआगे
रघुपतिवनहिंसिधारे २ तुलसिदाससमुझायभरतकहँ
आंसुपोंछिउरलाये ॥ उपजीप्रीतिजानिप्रभुकेहितमनहुं
रामफिरिआये ३ ॥

टी० । भरतजीसों कौशल्याजी कहतीहैं कि कैकेयीको दोष काहेको लगावतहौ हमको विधाता बाम है मैं बलिजाउँ हे तात धीरजधरहु पुत्र यामें काहूको दोष नहीं है १ काहेते हे मेरेप्यारे पुत्र श्रीरघुनाथजीको वियोग मैं सुनिबे योग्य नहींरहिउँ सो मेरे नेत्रनके आगे रघुपति वनकोसिधारिगये मैं जीवतरही याते विधाता बाम हमको है २ गोसाईंजी कहत कि कौशल्याजी ने भरतजीको समुझाइके आंसुपोंछि उरमें लगाइ लियो प्रभुके परमहितकारी भरतजी को जानि कैसी प्रीति उपजी मानों राम फिरिआये ३ ॥

मू । मेरोअवधधौंकहहुकहाहै ॥ करहुराजरघुराज
चरणतजिलयलटिलोगुरहाहै १ धन्यमातुहौंधन्यला
गिजेहिराजसमाजढहाहै ॥ तापरमोसेप्रभुकरिचाहत
सबबिनुदहनदहाहै २ रामशपथकोउकछुकहैजानिमैं
दुखदुसहसहाहै ॥ चित्रकूटचलिहौंप्रभातही चलि क्षमि
योमोहिंहहाहै ३ योंकहिभोरभरतगिरिवरकहँ मारग
बूझिगहाहै ॥ सकलसराहतएकभरतजग जनमिसुलाहु
लहाहै ४ जानिहिंसियरघुनाथभरतको शीलसनेहमहा
है ॥ कैतुलसीजाकोरामनामसोंप्रेमनेमनिवहाहै ५ ॥

टी० । इंकुल के धर्ममें धुरीन रामभक्तन में शिरोमणि भरत जी हैं तहां कुलको धर्म ज्येष्ठस्वामी सेवकलघुभाई अरु जानेहु

सदाभरतकुलदीप याते धर्मधुरीन भक्तनको धर्म सकल कामना हीन जे रामभक्तिरसलीन तिनमें शिरोमणि भरतजी विचार करिकै कहत कि हमारो हित प्रभुकी सेवामेंहै सोतौ इहां है नहीं ताते अयोध्याजी में मेरो अबधौं क्या है ताको सब कहौ कदाचित् कोऊकहै कि प्रभुके चरणकमल छांड़ि राज्यकरो ताकोफल वर्त्तमानहै जो अवध के राज्यको लय कही लीनह्वैरह्यो आलक है परेरह्यो ताते प्रभुके चरणन को वियोगभयो तेहि शोक करि अवधवासी लोग लटिरहेहैं दुर्बल ह्वैरहेहैं सोई राज्य हमसे करिबे को कहतहैं १ ताते हमारी माता धन्यहै अरु हम धन्य हैं काहे ते कि जेहि लागिकही हमारे राज्य करिबेहेतु हमारी माता ऐसो प्रबन्ध बांधो कि जामें सब राजसमाजभरि ढहा कहे गिरिगया चक्रवर्ती प्राणत्याग श्रीरामजानकी लक्ष्मण ने वनवासके दुःख सहे माता वैधव्यभई अवधवासी समग्रप्रजा महा आर्त्त भये ताहूपर मोको प्रभुकही राजाकरिजाना चाहतहौ ताको फल यह है कि विना अग्नि जराचाहत हौ २ हमारे सुख के निमित्त प्रभु के वनवास को दुःख यह दुःख हमको दुसह कहे सहबे योग्य नहीं है सो हम सहियतुहैं ताते तुमको रघुनाथजीकी शपथहै हम को जनि कोऊ कछुकहै प्रभातकाल हम चित्रकूटको चलैंगे अरु तुमहूं सब साथ चलिये अरु हम हाहाकहै चिरौरी करते हैं ताते क्षमाकीजिये अबजनि कोऊ कछुकहै ३ ऐसाकहि भरतजी प्रभात ही मार्ग बूझि गिरिवर जो चित्रकूट ताको पयानकरते भये तहां भरतजीकी रीति देखि सब प्रशंसा करत कि जगत्में एक भरत जीके जन्मलेबेको लाभ लहाहै काहेते प्रभुके वियोगमें सबअवधवासी धामहीमेंपरेरहे अरु भरतजी राज्यको ऐश्वर्यत्यागि प्रभु के सन्मुखभये ताते जन्मको लाभ श्रीरामभक्ति ताके अधिकारी भये ४ भरतजीका शीलमयी स्वभाव अरु प्रभु में स्नेह इत्यादि महा कही बड़ाभारी है ताको केवल रामजानकी जानत हैं अथवा गोसाईंजी कहत कि रामनाम सों प्रेम सहित नेम

जाको निवहा है भाव जे रामानुरागी हैं ते जानत यह ५ ॥

सू० । माईहौंअवधकहारहलहिलैहौं ॥ रामलषणसियचरणविलोकनकालिहकाननजैहौं, १ यद्यपिमोतेकैकुमातुतेह्वैआईअतिपोची ॥ सन्मुखगयेशरणराखहिंगेरघुपतिपरमसकोची २ तुलसीयोंकहिचलेभोरहीलोगविकलसँगलागे ॥ जनुवनजरतदेखिदारुणदवनिकसिविहँगमृगभागे ३ ॥

टी० । अवधवासिन प्रति भरतजी कहतहैं हे भाई हमअयोध्याजीमें रहिकै काहलहैंगे हमको काहप्राप्त होइगो अभिप्राय कि जगमें अयश परलोक में दुःख ता वस्तु को हमनहीं ग्रहण करहिंगे ताते श्रीरामलषण जानकी के चरण विलोकिबे अर्थ कालिह वनको हम जाहिंगे कोऊ संदेह करै कि भरतजी फिर अवध को काहेको आये तहां आप सेवकहै स्वामीकी आज्ञापाइ स्वामी को कार्यकरिवेहेतआये ताहूपर डरमानि अवधमें ऐश्वर्यको पीठि दै नन्दीग्राम ते कार्य करतेरहे १ भरतजी कहत यद्यपि हमते वा कुमातु ते पोची कही अत्यन्त बुराई भई ताहूपर सन्मुख गये पर शरण में राखहिंगे काहेते रघुपति परम सकोची हैं ताते हम को भरोसाहै २ गोसाईंजी कहत कि ऐसे वचन कहिकै भरत जी भोरहीं चित्रकूटको चले तहां अवधवासीलोग विकलहैं ते सब संगहीं भरतजीके चले मानो महादावानल लागे वन को जरतदेखि विहंग मृग विकल ह्वै वन ते निकसि भागे तैसे राम विरहतप्त अवधवासी ३ ॥

सू० । शुकसोंगहवरहियकहसारो ॥ वीरकीरसियरामलषणबिनलागतजगअँधियारो १ पापिनिचेरिअज्ञानिरानिनृपहितअनहितनविचारो ॥ कुलगुरुसचिव

साधुशोचतविधिकोनबसाइउजारो २ अवलोकेनचलत भरिलोचननगरकुलाहलभारो ॥ सुनेनवचनकरुणाकर केजबपुरपरिवारसँभारो ३ भैयाभरतभावतेकेसँगवनस बलोगसिधारो ॥ हमपरपाइपींजरनतरसतअधिकअभा ग्यहमारो ४ सुनिखगकहतअम्बमौनीरहुसमुझिप्रेमप थन्यारो ॥ गयेतेप्रभुपहुँचायफिरेपुनि करतकरमगुण गारो ५ जीवनजगजानकीलषणकोमरणमहीपसँवारो ॥ तुलसीऔरप्रीतिकीचरचाकरतकहाकछुचारो ६ ॥

टी० । गद्दबरकही व्याकुल हृदयमेंहै सारिका सुवा सों कहत हे भाई कीर श्रीराम जानकी लक्ष्मण विना हमको जग अँधियारो लागत १ ताको हेतु कहत कि चेरी मन्थरा पापिनि कारण को मूलभई ताको कहामानि निर्बुद्धि कैकेयी ने समग्र उपद्रव रचो ताको देखि महाराज अपना हित अनहित नहीं विचारे ताको फल प्राप्त भयो तेहिको देखि कुलगुरु वशिष्ठ सचिव सुमन्तादि साधु अपर सज्जनहैं ते सब शोचतहैं कि विधाताकेहि को बसाइ नहीं उजारो है २ जासमय श्रीरघुनाथजी चले ता समय नेत्रनभरि देखे नहीं अरु जासमय पुरको अरु परिवार को सँभारकरत तासमय विविधभांति के वचन कहेहैं करुणाकर तावचननको नहींसुने काहेते नगरमें कुलाहल कही भारी शब्दरहै ताते ३ प्यारे भैया भरतके साथ अब सब अवधवासी लोग चित्रकूट को सिधारे अरु हम पर पंख पायेहन एकक्षणमें जाते सो परवश पींजरनमें,परे तरसित हन ताते हमारो अभाग्य अधिक है ४ ऐसे वचनसुनि सुवा कहत हे माता मैनी प्रेम की मार्ग न्यारी है ताको समुझिके मौनीकही मौनहैरहौ काहेते जे प्रभुके संगगये ते पहुँचायके मन में कर्म के गुणनको गारी कही निन्दा करत पुनि फिरिआये ५ तहां जीवनको लाहु लषण जान-

कीजीकोमिली अरु मरण महाराजदशरथने अपनो सुधारि गो-
साईंजी कहत कि और कोऊ प्रीतिकी चर्चा नाहककोकरत और
को कौन चारोहै काहेते न संगजाइसकै न तनुत्यागिसकै ६ ॥

मू० । कहैशुकसुनहुसिखावनसारो ॥ विधिकरतबवि
परीतिबामगतिरामप्रेमपथन्यारो १ कोनरनारिअवध
खगमृगजेहिजीवनरामतेंप्यारो ॥ विद्यमानसबकेगवनेव
नवदनकरमकोकारो २ अम्बअनुजप्रियसखासुसेवकदे
खिविषादविसारो ॥ पक्षीपरवशपरेपींजरनलेखोकौनह
मारो ३ रहिनृपकीबिगरीहैसबकी अबएकसवाँरनहारो ॥
तुलसीप्रभुनिजचरणपीठिमिस भरतप्राणरखवारो ४ ॥

टी० । सुवा कहत हे मैना सिखावन सुनो हमारो विधिकरत-
ब जो कर्म है सो विधिके विपरीत भयेते कर्मकी बामगति कहे
उलटी लागति है जातिहै सुखमें दुःख दुःखमें सुख. कर्म संसार
में एकरस नहीं निवहतहै अरु राम के प्रेमकी पथ जो भक्तिहै सो
न्यारी सदा एकरसहै १ अब कर्मकोनिषेधकरतकहतकिअयोध्या
जीमें खगमृग नरनारी ऐसो कौनहै जाको अपनोजीव राम सों
प्यारोहै सबको श्रीरामजीवते प्यारेरहे तिनसबके विद्यमानकहीं
नेत्रनकेआगे श्रीरघुनन्दन वनको चलेगये न काहूने प्राणछांडि
दियो न कोऊ संगसिधारयो तातें कर्म के वदन में स्याही लगी
काहेते कहत राम प्राणते प्यारे चलेगये प्राणरहिगये याते कर्मको
कछुनहीं है २ अम्ब जो माताहैं अनुजजे बन्धुवर्गहैं प्रिय जे सखा
हैं अरु सुसेवक ते सब देखिकै जो विषादरहा सो सब बिसारि
संतोषकरे अरु हमतौ पक्षी हैं त.हूपर परवशह्वै पींजरनमें परे तौ
हमारो कौन लेखोहै ३ एकनृपतिकी तौ रही कि प्रेमको सांचो
करि प्राण तजे और सबकी विपरीत परन्तु अब एकबात सँवारन
हारहै गोसाईंजी कहत कि चरणपीठि जो खराऊं हैं तिनकोप्रभु

ने दियो सोइ मानों यहि बहाने ते प्रभु भरतजीके प्राणन के रखवारे भये ४ ॥

मू० । तादिनशृंगबेरपुरआयो॥ रामसखातेसमाचार सुनिबारिविलोचनछायो १ कुशसाथरीदेखिरघुपतिकी हेतुअपनपोजानी ॥ कहतकथासियरामलषणकीबैठेहि रैनिबिहानी २ भोरहिभरद्वाजआश्रमह्वै करिनिषादपति आगे ॥ चल्योजनुतक्योतड़ागतृषितगजघोरघामकेला गे ३ बूझतचित्रकूटकहँजेहितेहिमुनिबालकनबतायो॥तु लसीमनहुंफणिकमणिढूंढ़तनिरखिहरखिउठिधायो ४ ॥

टी० । तौने दिन शृंगवेरपुर आवतेभये तहां राम के सखा नि- षादते समाचार सुने कि प्रभु चित्रकूट में हैं सो सुनि भरतजीके नेत्रन में जल भरिआयो १ तहां प्रभु के विश्रामस्थलीकी साथरी देखि ताको कारण अपना को जानि उरमें महादुःखहै ताते श्री रामजानकी लक्ष्मणजीको सुखविभव त्याग दुःखग्रहणकिइत्या- दि कथाकहते तहांरात्रि व्यतीतभई २ प्रभात प्रयाग में भरद्वाजके आश्रममें वासकरि तहां ते निषादपतिको आगे करि चले कैसे यथा गजके घोरकही महाकठिन घामलागेते तनु तपित ह्वै तृषा सहित यथा तड़ाग देखि चले तथा विरहतप्त दरशतृषित प्रभुको रूप जल चित्रकूट तड़ाग देखि भरतजीचले ३ तहां मार्ग में जो कोऊ मिलततासों पूँछि चित्रकूटमें प्रभुआश्रमकीमार्ग तबमुनि- नके बालकन प्रभु के वासको चरित्र अरु मार्ग बतायो ताको सुनि भरत जी कैसे प्रसन्न ह्वै चले गोसाईंजी कहत मानों सर्पकी मणि हेरानी ताको ढूँढ़त में यथा मणिको देखि हर्षि कै धावै ४ ॥

मू० । बिलोकेदूरतेदोउवीर॥उरआयतआजानुसुभगभु जश्यामलगौरशरीर १ शीशजटासरसीरुहलोचनबनेप रिधनमुनिचीर ॥ निकटनिषंगसंगसियशोभितकरनधुन

तधनुतीर २ मनअंगहुतनपुलकिशिथिलभयोनलिननय नभरेनीर ॥ गड़तगोड़मानोसकुचपंकमहँकढ़तप्रेमबल धीर ३ तुलसिदासदशादेखिभरतकीआयेअतिहिअधी र॥ लियेउठायउरलायकृपानिधिविरहजनितहरिपीर ४॥

टी० । चित्रकूट में प्रभुके आश्रमके निकट भरतजीपहुँचे तहां दूरिहीते दोऊवीर श्रीरामलषणको देखे ते कैसे हैं उर जो छाती सो आयतकही चौड़ी है सुन्दर आजानु जानुपर्यन्त लम्बायमान भुजा श्याम श्रीरघुनन्दन गौर लक्ष्मणजी ऐसे सुन्दर शरीर हैं १ शीशविषे जटा कमलसम नेत्र परिधन कही धारण किहे मुनि चीर वल्कलादि सोहतहैं कटि बिषे बामदिशि तरकस धारणकिहे ताके निकट जानकी जी शोभित हाथन में धनुष बाण धुनत कही बारंबार फेरत हैं २ प्रभुको देखि मन अगहुड़ कही आगे को इरादा किहे तनु प्रेमते पुलकि शिथिलहै ताते कमलसम नेत्र नमें जल भरा है तहां सकुचरूपी चहलामें पगगड़ि असजात तहां प्रेम के बल को धीरज है तासों पग कढ़ि आवत है ३ गोसाईजी कहत कि ऐसी दशाभरतजीकी देखि कृपानिधि जो श्रीरघुनन्दन हैं ते अत्यन्त अधीर है उठिकै धाइ भरतजी को उठाय उर में लगाय विरह करिकै जनित कहे उत्पन्न जो पीर ताको श्रीरघुनाथ जी हरिलेतेभये करुणाओपधि करिके ४ ॥ इत्यर्थः ॥

मू० । रागकेदार ॥ भरतभयेठाढ़ेकरजोरि ॥ हैनस कतसामुहेसकुचवशसमुझिमातुकृतखोरि १ फिरिहैंकि धौंफिरनकहिहैंप्रभुकलपिकुटिलतामोरि ॥ हृदयशोच जलभरेबिलोचनदेहनेहभइभोरि २ वनवासीपुरलोग महामुनिकियेहैंकाठकेसेकोरि ॥ दैदैश्रवणसुनिवेको जहँतहँरहेप्रेमभनबोरि ॥ तुलसीरामस्वभावसुमिरिउर

धरिधीरजहिंबहोरि ॥ बोलेवचनविनीतउचितहितकरुणा रसहिंनिचोरि ४ ॥

टी० । प्रभुके सन्मुख भरतजी हाथजोरि ठाढ़ेभये माताकै-केयीकृत जो कर्त्तव्य ताकी खोरिसमुझि संकोचवशहै सामने नेत्र नहींहैसकतहैं १ मनमें तर्कणा करत कि प्रभु अयोध्याजी को फिरिहैं वा हमारी कुटिलताको कल्पनाकरि मोको फिरनको कहिहैं यह शोच हृदय में तात नेत्रनमें जलभरा अरु देह नेहके वश भोरीकही देहकीसुधिभूलिगई भरतजीको २ तासमय वनवासी कोलभिल्लादि अरु अवधवासी लोग अरु महामुनि वाल्मीकि अत्रि अथवा वशिष्ठादि जे रहेहैं ते कैसेभये मानों काठको कोरिकै बनायेगये भाव जड़ ऐसे रहिगये याकोहेतु कि प्रभु कुसमय में क्याकहैंगे ताको सुनिवेहेतु श्रवणदिहे जहां तहां मनको प्रेम में बोरे स्थिरहैं ३ गोसाईंजी कहत भरतजी प्रभुको स्वभाव समुझि उरमें धीरजधरि बहोरिकही फिरि भरतजी करुणारसहिं निचोरिकही विशेष आर्त्तहै नरमवचन बोले उचित कही जो कहिवे योग्य जामें सबकोहितहै ४ ॥

मू० । जानतहौसबहीकेमनकी ॥ तदपिकृपालुकरौं विनतीसोइसादरसुनहुदीनहितजनकी १ येसेवकसंतत अनन्यअतिज्योंचातकहिंएकगतिघनकी ॥ यहविचारि गवनहुपुनीतपुरहरहुदुसहआरतपरिजनकी २ मेरोपुनि जीवनजानियऐसोइजियेजैसो अहिजासुगईमणिफन की ॥ मेटहुकुलकलंककोशलपति आज्ञादेहुनाथमोहिंब नकी ३ माकोजोइजोइलाइयेलागैसोइ जोउतपतिकुमा तुतेतनकी ॥ तुलसिदाससबदोषदूरिकरिप्रभुअबला जकरहुनिजपनकी ४ ॥

टी० भरतजी कहत कि हे कृपालु तुमसब के मनकी गति

जानतहौ तदपि मोको संतोषनहीं ताते मैं बिनती करत हौं आपुदीननके हितहौ मैं आपुका सेवकहौं ताते जनकी विनती आदर सहित सुनहु १ ये जो अयोध्यावासीहैं ते सदा आपुके अनन्यसेवकहैं यथा चातकको एकस्वातीमें मेघकीगति केवल स्वातीकी वृष्टिके बूंदको पीवत अन्यजलको त्यागत तथा अयोध्यावासी आपको सिवाइ दूसरो नहींजानत ॥ प्रमाण महारामायणे ॥ वाह्यान्तरंशृणुतथागिरिराजकन्ये त्वत्तोवदामिरघुनाथजनस्यमुख्यम् ॥ अन्योविहायसकलंसदसञ्चकार्य्यं रामस्यपंकजपदंसततंस्मरन्ति १ ऐसो विचारि पुनीत कहे पवित्र पुर श्रीअयोध्या ताको गमनहुकहे चलहु तेहिकरिकैपरिजननको दुस्सह जो सहि न जाय ऐसा आपुका वियोग तेहि करिकै आर्त्तकही दुःख ताको हरिलेहु २ अरु मेरो जीवन याप्रकार जानिये यथा काहू सर्पके फणकी मणिजातीरही सो जैसा जीवै तैसा मोको जानिये ताते हे कोशलपति कुलको जो कलंक छोटेभाईको राज्य बडेभाई को वनवास ताको मेटहु तहां जो पिताकी आज्ञा सो न भंगहोइ ताके हेतु हे नाथ वनजाइवे की आज्ञा मोको देहु ३ हमारे या तनुकी उत्पत्ति जो कुमातुते है तो मोको जो जो दोष लगाइये सो सो लागैगो इहां अपना को राज्य होना भरत जी दोषमानेहैं सो ताते मोको अयोध्याजीको जावो असिद्धांत दूरि करिये न कहिये अब आपको प्रण जो शरणागतपालक ताकी लाज कीजिये ४ ॥

मू० । तातेबिचारोधौंहौंक्योंआवौं ॥ तुमशुचिसुहृदसुजानसकलविधिबहुतकहाकहिकहिसमुझावौं १ निजकरखालखैंचियातनकीजोपितुपगपानहींकरावौं ॥ होंउनरऋणपितादशरथते कैसेताकेवचनमेटिपतिपावौं २ तुलसिदासजाकोसुयशतिहूंपुर क्योंतेहिकुलहिंकालिमा

लावों ॥ प्रभुरुखनिरखिनिराशभरतभये जान्योहैसबहि भांतिविधिबावों ३ ॥

टी०। हे तात भरतजी विचारौतौ हम क्योंआवों हम का-हे को वनको आये हैं वा हमकोआवो अयोध्याजीको तुमतौपवित्र बंधु सब विधिते धर्मशास्त्रमें सुजानहौ तुमको बहुत काह काहि काहि समुझावों १ रघुनाथजी कहत कि जो हम अपने हाथ ते अपने तनुकी खाल खैंचिकै पिताके पांवकीपनहीं बनवावैं ताहू पर पिता दशरथसों उऋण नाहीं ह्वै सकतहौं ताके वचन त्या-गिकै कैसे पतिपावों कहे कैसे मर्यादा पावों २ गोसाईंजी क-हत कि प्रभुकहे कि जेहिंदशरथ को उज्ज्वल यश तिहुँलोक में छायोहै ताके कुलमें हम क्यों कालिमाकहे स्याही लगावैं ऐसे वचन सुनि न लौटिबेको रुख प्रभुको देखि भरतजी निराशभये यह जान्यो कि सब विधिते विधाता हमारे बामहै ३ ॥

मू०। रागसोरठ ॥ बहुरोभरतकह्योकछुचाहैं ॥ स कुचसिंधुबोहितविवेककरि बुधिबलवचननिबाहैं १ छो टेहुतेछोहकरिआयेमैंसामुहेननहेरे ॥ एकहिबार आज विधिमेरोशीलसनेहनिबेरे २ तुलसीजोफिरिबोनबनै प्रभुतोहौंआयसुपावों ॥ घरफेरियेलषणलरिकाहैंनाथ साथहौं आवों ३ ॥

टी०। भरतजी निराशतोभये ताहूपर कछु कहा चाहतहैं तहां सकुचसिन्धु ते पारनहीं जाइसकत ताकेहेतु विवेक को जहाज करि तापै बुधिको बल सोई कर्णधार खेवनहार ते वचनपथिक-नको पारकीन चाहत हैं १ भरतजी कहत कि लरिकाईं ते सो-पर मया करि आये अरु मैं सामने कबहूं नहीं हेरे सो आजु एकहीवार विधाताने हमारो शीलसनेह छुड़ायदियो २ तात जो आपको फिरिबो अबहूंको न बने तो लक्ष्मणजी लरिकाहैं

तिनको फेरिकै घरको पठाइये औ मैं साथआवों कहे साथरहौं यहआज्ञा मोको दीजिये ३ ॥

सू० । रघुपतिमोहिंसंगकिनलीजै ॥ बारबारपुरजाहु नाथकेहिकारण आयसुदीजै १ यद्यपिहौंअतिअधमकुटिलमतिअपराधिनिकोजायो ॥ प्रणतपालकोमलस्वभावजियजानिशरणहौंआयो २ जोमेरेतजिचरणआनगतिकह्योहृदयकछुराखी ॥ तौपरिहरहुदयालुदीनहितप्रभुअभिअन्तरसाखी ३ तातेनाथकहौंमैंपुनिपुनिप्रभुपितुमातुगोसाईं ॥ भजनहीननरदेहवृथाखरश्वानफेरुकीनाईं ४ भरतवचनसुनिश्रवणनयनराजीवनीरभरिआये ॥ तुलसिदासप्रभुपरमकृपागहिबांहबन्धुउरलाये ५ ॥

टी० । भरतजी कहत हे रघुपति मोको साथ काहे नहीं लीजियतहौ हे नाथ अयोध्याजी में जावेकी मोको काहे आज्ञा देत हो १ यद्यपि मैं अधम कुटिलमति अपराधिनिके उरते प्रकटभयोहौं तदपि आपुको कोमलस्वभाव प्रणतपालजानि शरणागत आयों २ जो आपुके चरणछांड़ि मेरेआनगति होइ अथवा हृदयमें छलराखि मुखते कछु और कहत होउँ तौ आपु मोको त्यागिये हे दीन के हित आपु हृदयके जाननहारहौ जो सांची कहत होउँ तौ हे दीनदयालु मोको शरणलीजिये ३ जो कहौ कि माता पिताकी आज्ञा प्रतिपालकरौ तौ माता अरु पिता स्वामी हमारे आपुही हौ ताते बारबार मैं कहतहौं कि आपकी सेवा हमारो धर्म है तामें माता पिताके वचन ते विरोधहोत ताते भजनहीन जो आपुते विमुखभये तौ नरदेही वृथा है संसारमें परे यथा खर मोह भारवाहक यथा श्वान लोभ लोलुपता यथा शृंगार मलिन वासना मलभक्षक तहां यावत् लौकिक वैदिक धर्म हैं ॥ तिनको भक्तिके विरोधी जानि भक्तजन त्यागत ॥ प्रमाणं शिवसंहिता-

यां ॥ श्लोक ॥ लौकिकावैदिकाधर्माउक्तायेगृहवासिनाम् ॥ त्यागंतेषांतुपातित्यं सिद्धोकामाविरोधिता १ अरु यावत् सम्बन्ध के भावसों जगसों त्यागि सब नाता प्रभुमें राखत ॥ प्रमाणं शिवसंहितायां हनुमद्वाक्यम् ॥ पुत्रवत्पितृवद्रामोमातृवन्ममसर्वदा ॥ श्यालवद्रामवद्रामः श्वश्रुवच्छ्वशुरादिवत् १ पुत्रीवत्पौत्रवद्रामो भागिनेयादिवन्मम ॥ सखीवत्सखिवद्रामः पत्नीवदनुजादिवत् २ राजवत्स्वामिवद्रामोभ्रातृवद्बन्धुवत्सदा ॥ धर्मवदर्थवद्रामःकाम मोक्षादिवन्मम ३ व्रतवत्तीर्थवद्रामःसांख्ययोगादिवत्सदा ॥ दान वज्जपवद्रामो यागवन्मन्त्रवद्बलम् ४ राज्यवत्सिद्धिवद्रामोयशो वत्कीर्तिवन्मम ॥ घृतादिरसवद्रामोभक्ष्यभोज्यादिवत्समे ५ इत्यादि अरु गोसाईं जी वारंवार लिखे ॥ जहँ लगि नात नेह या जगमें प्रीति प्रतीति सगाईं । ते सब तुलसिदास मेरेप्रभु सिमिटिहोइं यकठाईं ॥ इति विनय ॥ अरु जाति पांति कुल धर्म बड़ाई । प्रिय परिवार सदन सुखदाई ॥ सब तजि तुमहिं रहै लव लाई । तिनके हृदय बसहु रघुराई ॥ इति अयोध्याकाण्डे अरु ॥ सबकी ममता ताग बटोरी । मम पद मनहिं बाँधि बरडोरी ॥ इति सुन्दर काण्डे ॥ येसब रामभक्ति के बाधक ॥ इति किष्किन्धा अरु ॥ राममात पितु बन्धु सुजन गुरुपूज्य परमहित । साहेब सखा सहाय नेहनातो पुनीत चित ॥ इति कवितावली ॥ अरु भक्तनको ऐसेहू चाही ॥ यथा ॥ हरिहर निन्दा सुनहिं जे काना । होहि पाप गोघात समाना ॥ सन्त शम्भु श्रीपति अपबादा । सुनिये जहँ तहँ असिमर्यादा ॥ काटीजीभ जो तासुबसाई । श्रवण मूंदि नतु चलिय पराई ॥ प्रमाणं शिवसंहितायां हनुमद्वाक्यम् ॥ रामा दन्यंवदेच्छ्रेष्ठंयोवैपाण्डित्यमात्रतः॥संतसहृदयस्तस्य जिह्वांछिंद्या महंमुने १ तहां कैकेयी के वधकरिबे में भरतजी केवल रघुनाथ जीको डरमाने ॥ यथा प्रमाणं बाल्मीकीये ॥ हन्यामहमिमांपापां कैकेयींदुष्टचारिणीम् ॥ यदिमांधार्म्मिकोरामोनासूयेन्मातृघातकम् १ तातेजन्मपर्यंतत्यागकियो यथा कैकेयी जबतक जियतरही

तबलगिबात मातसों मुहभरि भरत न भूलिकही ४ ऐसे निःछल वचन भरतजी के सो श्रवणनसों सुनि प्रभुके कमलरस नेत्रन में जलभरिआयो गोसाईंजीकहत कि श्रीरघुनाथजीने अत्यन्त कृपाकरिके बन्धुभरतजीकी बांहपकरि हृदयमें लगाइलियो ५॥

मू०। काहेकोमानतहानिहियेहौ ॥ प्रीतिनीतिगुण शीलधर्मकहँतुमअवलम्बदियेहौ १ तातजातजानिबेनये दिनकरिप्रमाणपितुबानी ॥ ऐहौंवेगिधरहुधीरजउरक ठिनकालगतिजानी २ तुलसिदासअनुजहि प्रबोधिप्रभु चरणपीठिनिजदीन्हें ॥ मनहुंसबनकेप्राणपाहरूभरत शीशधरिलीन्हें ३ ॥

टी०। प्रीतिकेआठअंग यथा ॥ प्रणय प्रेम आशक्तिपुनिल-गनलाग अनुराग। नेह सहित स्वप्रीतिके ज्ञानवअंगविभाग॥ अरु नीति प्रथम राजनीति ताके चारिअंग साम, दाम, दण्ड, विभेद, दूसरी लोकनीति ताके चारिअंग धीरज, संतोष, विचार, नम्रता॥ गुणलोकव्यापी बत्तिसअंग॥ शुभरूप अरु शीलगुण सत्यपराक्रमजान॥ सुचितआत्मअभ्यासगनि वरविचार परि-मान १ शास्त्रज्ञान ज्ञानीपरम पूरण परतियत्याग॥ मानीपुनि लोकेश गनि औ दासत्व विभाग २ विद्यापुष्टि बखानिये प्रिय वादी शुभ अंग॥ आत्मकाम सूक्षम बहुत गुण परिपूरणअंग ३ मातपिता गुरुभक्तहै मनवच कर्महिजान॥ रूप कर्णजित इन्द्रिऔदाताधर्मनिधान ४ सुरपूजन निद्राअलप स्वल्पअहारी होइ॥ येबत्तिसलक्षणयुतबिरलेजगमेंकोइ ५ पुनः॥ जगव्या पक जगवंदिकरण जगत्सराहत जाहि॥ जगचाहतजेहितेहि सुकवि गुणगणकहिये ताहि ६ धर्मके चारिअंग सत्य, शौच, तप, दान इत्यादि रघुनाथजी कहत कि हे भरतजी प्रीति, नीति,

गुण, शील, धर्मादि इनसबनको तुम अवलंबदियेहौ प्रीतिआदि जो जगमें लोप होनलागें तहां तुम्हारो नामलेवेते रहिजाइ तौ तुम तौ ऐसे धर्मधुरीणहौ ताते अपने हृदयसें हानिकाहेको मानते हौ जो कहौ चौदहवर्ष हमारो बिछोहहै १ सो यहकालकीगति जो होनहार सोकालमेंसोईहोत ताते कालकीगति कठिनजानि हृदयमें धीरजधरहु हे तात ये दिन जे चौदहवर्ष तिनको बीति जात न जानहुगे हम पिताके वचनप्रमाणकरि जल्दी अवधको भोरही आवहिंगे २ गोसांईजी कहत कि प्रभु अनुज जो भरत तिनको प्रबोधकरि अपने चरणपीठ खराऊं देते भये तिन्हें अपने अरु अवधवासिन के प्राणके पाहरू जानि भरतजी ने माथे पर धरि लियो ३ ॥

मू०। बिनतीभरतकरतकरजोरे॥ दीनबन्धुदीनतादीनकीकबहुंपरेजनिभोरे १ तुमसेतुमहिंनाथमोकोमोसेजनतुमकोबहुतेरे ॥ यहैजानिपहिंचानिप्रीति छमिबेअघअवगुणमेरे २ योंकहिसियारामपायनपरिलषणलाइउरलीन्हें॥ पुलकशरीरनीरभरिलोचनकहतप्रेमपनकीन्हे ३ तुलसीबीतेअवधप्रथमदिनजोरघुवीरनऐहौ ॥ तौप्रभुचरणसरोजशपथजीवतपरिजनहिंनपैहौ ४ ॥

टी०। श्रीभरतजी हाथजोरे बिनती करतहैं हे दीनबन्धु मुझ दीनकी दीनता कबहुं भोरे कहीं भूलिजनिजाइ १ कहौ ते तुम सरीखे नाथ मोको दूसरो नहीं है मेरे एक आपही नाथहौ अरु मोहिं ऐसे सेवक आपके बहुतहैं यह जानि मेरी प्रीति पहिंचानि मेरे अघ अवगुण क्षमाकीजिये २ ऐसे कहि श्रीराम अरु जानकीजी के पायनपरि लक्ष्मणजी को हृदयमें लगाइ लियो देह पुलकित नेत्रनमें जलभरा प्रेमते प्रणकिहे कहतहैं ३ हे प्रभु जो अवधि चौदहवर्ष बीते पीछे प्रथमदिन अयोध्याजीमें न आवहु-

गे तो आपुके चरणकमलकी शपथहै परिजनहिंकही मोको जी-
वत न पावहुगे ४ ॥

मू० । अवशिहौंआयसुपायरहौंगो ॥ जनमकैकयी
कोखिकृपानिधिक्योंकछुचपरिकहौंगो १ भरतभूपसि
यरामलषणवनसुनिसानन्दसहौंगो ॥ पुरपरिजनअ
वलोकिमातुसबसुखसन्तोषलहौंगो २ प्रभुजानतजेहि
भांतिअवधिलौंवचनपालिनिबहौंगो ॥ आगेकीबिनती
तुलसीतबजबफिरिचरणगहौंगो ३ ॥

टी० । आपकी आयसु पाय अवशिकै अयोध्याजी में रहौंगो
काहेते हे कृपानिधान कैकेयीकी कोखिते जन्मि मैं कैसे कछुबात
चपरिकै कहौंगो १ भरतको राज्य ताही हेतु श्रीरामजानकी ल-
क्ष्मण वनमें ऐसे वचन खुशीते सहिहौं पुरमें परिजन अरु मा-
तनको दुःखित देखि सुखपूर्वक सन्तोषको प्राप्त होउँगो २ या
को हाल प्रभु आपुजानतहौ जेहि भांतिते अवधिलौं आपके वचन
को पालि निर्वाह करौंगो जब आप अयोध्याजी को आवहिंगे
तब फेरि जब चरण गहौंगो तब आगेकी जो बिनती है ताको क-
रौंगो अभिप्राय यही कि आपु राज्यसिंहासनपर विराजमान
होहिं यह शेषहै ३ ॥

मू० । प्रभुसोंहौंढीठोबहुतदईहै ॥ कीनीक्षमानाथअ
रतितेकहीकुयुगुतिनईहै १ योंकहिबारबारपायनपरिप
वरिपुलकिउईहै ॥ अपनोअदिनदेखिहौंडरपत जेहिंविष
बेलिबईहै २ आयेसदासुधारिगोसाईजनतेबिगारिगईहै ।
थकेवचनपरतसनेहसरिपर्योमनोघोरघईहै ३ चित्रकू
तेहिसमयसबनकीबुद्धिविषाददईहै ॥ तुलसीरामभर
केबिछुरतशिलासप्रेममईहै ४ ॥

टी० । मैंने प्रभुसों बहुत ढिठाईकरीहै काहेते आपकी आज्ञा मानि चुपरहिबो हमारो धर्म है सो हम बारबार आपसे कहे सो यह नई कुजुगुति है सो आरति कही दुःखितहौं ताते कह्यों यह जानि हे नाथ क्षमा कीजिये १ ऐसा कहि बारबार पांयन में परि भरतजी प्रेम में पुलकि पांवरी खराऊं लेते भये अरु कहत कि हम अपना अदिन देखिकै डरत हैं काहेते कैकेयीने जो विषबेलिको बोइदई ताके फलन ते यह हालभयो कि जो श्री दशरथजी विना जाने खाइगये तिनको तुरंत मृत्यु प्राप्ति भई और अवधवासी जब जाने तब तिरस्कार करिभागे तिनके बयारि लागिगई ते मृत्युसरीखेह्वैगये ताहीते हम डरतहैं २ हे गोसाईं जन जो मैंहौं ताते बिगारिगई है तो आप सदा जनकी बिगरी को सँवारतआयेहैं इतनाकहि वचनथकितभये चुपह्वैरहे मानों सनेह रूप नदीके पैरतमें घोरघईकहे कठिनधारमें परे हैं ३ तासमयमें चित्रकूटबिषे सबकी बुद्धि को विषाद ने नाशकियो गोसाईंजी कहत कि श्रीराम अरु भरत के बिछुरतमें चैतन्यकी कोकहै जड़ शिला तेऊ प्रेमवश कठोरता तजि नम्रताको प्राप्तभई ४ ॥

मू० । जबतेचित्रकूटतेआये ॥ नन्दिग्रामखनिअवनि डासिकुशपर्णकुटीकरिछाये १ अजिनवसनफलअशन जटाधरिरहतअवधचितदीन्हें ॥ प्रभुपदप्रेमनेमव्रतनिरख तमुनिननमितमुखकीन्हें २ सिंहासनपरपूजिपादुकाबा रहिंबारजुहारे ॥ प्रभुअनुरागमांगिआयसुपुरजनसबका जसँवारे ३ तुलसीज्यौंज्यौंघटततेजतनत्योंत्योंप्रीतिस वाई ॥ भयेनहैंनाहिंहोहिंगेकबहूंभुवनभरतसेभाई ४ ॥

टी० । जबते चित्रकूटते भरतजी आये तबते नंदिग्रामखनि साढ़ेतीनि हाथ तर भूमिपर कुश बिछाइ पत्रनकी कुटीछाइ तामें वासकरें १ अजिन मृगचर्मके वसन धारणकिहे फलनके भोजन

करत शीशपर जटा चौदहवर्ष की जो अवधि तामें चित्तलगाये रहत प्रभुके पदकमलन में मनप्रेमते उमँगि नेत्रनसे जल बहत नेमकही त्रिकालस्नान काहूको स्पर्श न करना इति शौचनेम एक बार अल्पभोजन काहूकी वस्तु न ग्रहण इति सन्तोषनेम जलअग्नि शीतकोसहन इति तपनेम मंत्र संख्या नित्यजप नेमहै प्रभु हमा- रो कार्य पूर्ण करैंगे यह ईश्वरनिष्ठा नेम है व्रत प्रथम अनन्यता व्रत एक भरोसा दूसरो चांद्रायणादिव्रत इत्यादि भरतजीको देखि मुनिनकोमुख नमितहोत एकतौ राजकुमार दूसरो थोरी उमिरि तीसरो राज्यको सुखत्यागे ताते मुनिनको लज्जाहोत कि ऐसा हम नहीं करसकेहैं २ प्रभुकी जो पादुकाहैं तिनको सिंहासनपर धर अनुरागते पूजत अरु बारबार जुहारकरि आज्ञामांगि पुरके जननको काजसँवारतहैं ३ गोसाईंजी कहत कि ज्योंज्यों तनुको तेजपुष्टताघटतहै त्योंत्यों प्रीति बाढ़तजाति भरतसमभाई भुवन विषे न भयो न है न होहिंगे कबहूं ४ ॥

रा० । रागरामकली ॥ राखीभगतिभलीभलाईभ लीभाँतिभरत ॥ स्वारथपरमारथपथीजैजैजगकरत १ जोव्रतमुनिवरनकठिनमानसआचरत ॥ सोव्रतलियेचा तकज्योंसुनतपातकहरत २ सिंहासनसुभगरामचरण पीठधरत ॥ चालतसबराजकाजआयसुअनुसरत ३ आपु अवधविपिनबंधुशोचजरनिजरत ॥ तुलसीसमविषम सुगमअगमलखिनपरत ४ ॥

टी० । कविकीउक्तिहै भक्तिपरमार्थपथमें जगविषे भलाईस्वार्थपथ में दोऊकीभलीभांतिते राखीहै भरतजी ताते स्वार्थ परमार्थ दोऊ पन्थी हैं भरतजी असकहि जगसब जयजयकारकरत १ मुनिनमें जे श्रेष्ठ तिनको मनकरिकै जो आचरतमें कठिनहै वचन कर्मकी को कहै ऐसो जो अनन्य व्रत ताको धारण किहे वचन अरु कर्म

तीनिहूं करिके परिपक्क यथा चातकको स्वातीबूँद आधार कैसा व्रत है जाकेसुनेते पातकनाशहोतहैं ॥ अनन्यप्रमाणंशिवसंहितायाम् ॥ मधुरेभोजनेपुंसोविषवद्भोजनेमलम् ॥ मलंस्यादन्यदेवानांसेवनं फलवाञ्छया १तस्मादनन्यसेवीस्यात्सर्वकामपराङ्मुखः ॥ जितेंद्रिय मनःकायोरामंध्यायेदनन्यधीः २ सुन्दरसिंहासनपै रामचरण पीठिकही खराऊं तिनको भरत इत्यादि परमार्थ पथमें भक्ति भली भांतितेराखी तिनहीं खराऊँते आज्ञामांगि राजको काजचालतकहीं करत यह स्वार्थ पथमें भलाई भलीभांतिराखी आपतो भरतजी अवधमेंहैं बंधु श्रीरघुनन्दन वनमें हैं यह शोचरूपी जरनिमें भरत जीजरतहैं गोसाईंजी कहत कि सम अरु सुगम श्रीअयोध्याजीहैं तामें भरतजी रहत तहां को सुख नहीं जानिपरत विषम अरु अगम वन पहाड़ हैं तापर श्रीरघुनाथजी हैं तहां को क्लेश प्रभु को नहीं जानिपरत २ । ४ ॥

मू० । मोहिंभावतकहिआवतनहिंभरतजीकीरहनि ॥ सजलनयनशिथिलबयनप्रभुगुणगणकहनि १ अशनव सनअयनशयनधरमगरुवगहनि ॥ दिनदिनपनप्रेमनेम निरुपधिनिरवहनि २ सीतारघुनाथलषणविरहपीरसह नि ॥ तुलसीतजिउभयलोकरामचरणचहनि ३॥

टी० । कविकी उक्तिहै कहत कि भरतजीकी रहनि मोको भावत परंतु कहि नहीं आवतहै कैसी रहनिहै सजलकही नेत्रनमें जलभरो शिथिलबैनकही प्रेमसोंकंठरोधनहै ताते गद्गदवचनन सों प्रभुके गुणनके गण सुशीलता, वत्सलता, करुणा, क्षमा, उदा- रता, सौलभ्यता, सौहार्द, कृतज्ञतादि वर्णनकरि नामको स्मरण करि इत्यादि रामभक्तके लक्षणहैं ॥ प्रमाणंमहारामायणे ॥ श्रीरामनामरसिकाःप्रपठंतिभक्त्या प्रेम्णाचगद्गदगिरोऽप्यवहृष्ट लोमाः ॥ सीतायुतंरघुपतिंचविशोकमूर्तिंध्यायंत्यहर्निशिसुदापर यान्तरस्थम् १ अशन भोजन फलमूलादि वसन वल्कलादि अयन

मंदिर नंदिग्राममें निवासकिहे शयनशय्या भूमिमें कुशसाथरी बिछाये तापर विराजमान धर्मकहे जे जगत् धर्मसत्य शौचतपदान दूसरो क्षत्रिय खड्गदान तपमेंशूर, धीरज, सावधान, विद्या, नीति तीसरो श्रीरामभक्तकोधर्म सतासत् कर्मत्यागि प्रभुपदमेंप्रीति ॥ प्रमाणंमहारामायणे ॥ अन्येविहायसकलंसदसच्चकार्यं श्रीराम पंकजपदंसततंस्मरंति ॥ गुरुताकहीअसत्यबात बहुत न बोलन सत्यबात थोराबोलन ॥ प्रमाणंराजनीतौ यथा ॥ मुखरतालघुता प्रतिपादिका मुखराताहिगुरुत्वविधायिका ॥ कथमहोहृदयेहरणी हृशांमणिगणश्चरणेखलुनूपुरः १ ताते धर्म गुरुता धारणकिहे दिन प्रति प्रेमको प्रण नेमसहित उपाधिरहित निर्वाहत २ रघुनन्दन जानकी लक्ष्मणके वियोगके विरहकी पीरको सहत गोसांईजी कहत कि यालोकमें सुखकोत्यागकिहे परलोकमें मुक्ति त्यागकिहे श्रीरघुनन्दनके चरणनमें मनलगाये हैं यथा प्रयागत्रिवेणीतीर भरतवचन ॥ अर्थधर्मकामादिसुख गति न चहौंनिर्वान । जन्म जन्मरतिरामपद यहवरदान न आन ३ ॥

मू० । जानिहैंशंकरहनुमानलषणभरतरामभगति ॥ कहतसुगमकरतअगमसुनतमीठीलगति १ लहतसुकृतचहतसकलयुगयुगजगमगति ॥ रामप्रेमपथतेकबहुंडोलत नहिंडगति २ ऋद्धिसिद्धिविधिपूरिसुगतिजाबिनुमतिअगति ॥ तुलसीत्यहिंसम्मुखविनविषयठगनिठगति ३ ॥

टी० । कविकीउक्ति भक्तिकोप्रभाव शिवजीनेजान्यो यथा ॥ प्रण करिरघुपतिभक्तिदृढाई । कोशिवसम रामहिं प्रियभाई ॥ प्रमाणं शिवसंहितायां शिववाक्यम् ॥ ज्ञात्वैवंराममंत्रार्थंमनोरामेनिवेशयच ॥ राममेवसदाभद्रेजपभक्तिरसाश्रया १ ॥ कूर्मपुराणे ॥ श्रीरामनामसर्वेषामद्भुतंभुक्तिमुक्तिदम् ॥ जपस्वसततंभक्त्याममेष्टं प्राणवल्लभे २ अरु लक्ष्मणजी हनुमान्जीने रामभक्तिजान्यो है

यथा ॥ अहोधन्यलक्ष्मणवड़भागी । रामपदारविंदअनुरागी ॥ हनुमान् यथा ॥ पवनतनयसमकोवड़भागी । नहिंकोउरामचरण अनुरागी ॥ गिरिजाजासुप्रीतिसेवकाई । बारवारप्रभुनिज मुखगाई ॥ तत्र प्रमाणं शिवसंहितायाम् ॥ इदंरसज्ञहृदयेलक्ष्म णानिलपुत्रयोः । धन्याःशृण्वंतिभावज्ञाभक्ताःश्रीरामसीतयोः ॥ अथवा भरतजी में जो रामभक्तिहै ताको शंकर हनुमान् लक्ष्मण जी जानत तहां शिवजीको तौ मानसमें मुख्यसंवादहै हनुमान् जी को प्रमाण उत्तरकाण्डे ॥ बैठि देखिकुशआसन जटामुकुट कृशगात । रामरामरघुपतिजपत स्रवतनयनजलजात ॥ प्रभुके उपदेशते लक्ष्मणजीजाने । लषणतुम्हारिशपथपितुआना । शुचि सुबोधनहिंभरतसमाना ॥ सुनहुलषणभलभरतसरीखा । विधि प्रपञ्चजिनसुनानदीखा ॥ सो कैसीहै रामभक्ति जो कहतमें सुगमलागति काहेते माधुर्यरसमयी वार्त्ता ताते सुनतहू मीठीलागत परन्तु करतमें अगमहै सकलवासनाहीन जे रामभक्तिरसलीन । तहां अनेकजन्म जप, तप, योग, वैराग्य, ज्ञान, विज्ञानकरि वासना नाश शुद्धमन तब रामभक्तिकीप्राप्ति यथा ॥ नरसहस्रमहँ सुनहुपुरारी । कोउयकहोइधर्मव्रतधारी ॥ धर्मशीलकोटिनमहँ कोऊ । सम्यक्ज्ञानसुकृतकोउकोऊ ॥ ज्ञानवन्तकोटिनमहँप्रानी । जीवनब्रह्मलीनविज्ञानी ॥ सबतेअतिदुर्लभसुरराया । रामभक्तिरतगतमदमाया ॥ तत्रप्रमाणंमहारामायणे ॥ मुग्धेशृणुष्वमनुजोऽपिसहस्रमध्ये धर्मव्रतीभवतिसर्वसमानशीलः ॥ तेष्वेवकोटिपुभवेद्विषयेविरक्तः सद्ज्ञानकोभवतिकोटिविरक्तमध्ये १ तेषांहिषुकोटिषुसजीवनकोपिमुक्तःकश्चित्सहस्रशतजीवनमुक्तमध्ये ॥ विज्ञानरूपविमलोऽप्यथब्रह्मलीनस्तेष्वेवकोटिषुसंकृतखलुरामभक्तः २ येकल्पकोटिसततंजपहोमयोगैर्ध्यानैःसमाधिभिरहोपरबोधनिष्ठाः ॥ तेदेविधन्यमनुजाहृदिबाह्यशुद्धाभक्तिस्तदाभवतितेष्वपिरामपादे ३ ऐसी जो प्रभुकीभक्तिहै ताको सब चाहनाकरत परंतु सुकृतकही कोऊएकको प्राप्तहोत परंतु लोपनहीं

होत युगनयुगनमें जगमगात प्रसिद्धप्रकाशमान बनीरहति सत-युगमें प्रह्लाद, मनु, ध्रुव, त्रेतामें पृथु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, शबरी, विभीषण द्वापर में भीष्म, मोरध्वज कलिमें रामानुज, रामानं-दादिकेद्वारा प्रसिद्धहै श्रीराम प्रेममार्गते कवहूं डोलतकहे विल-ग नहींहोत डगतकही काहूकी हलाई हालत नहीं सदा अचलहै २ अब माहात्म्य कहतहैं ऋद्धिकहे जग में ऐश्वर्य सिद्धिकहे अ-णिमादि सामरस्तीसुगति चारिप्रकारकी मुक्तिइत्यादि भक्तिविना सब गतिकी अगतिहै तहां धर्मसों ऋद्धि तपसों सिद्धि ज्ञानसों सुगति इत्यादि विना भक्तिपक्ष विषयरूप ठगन्हि ठगिलेत भाव धर्म,तप,ज्ञानसों जीवको पतितकरिदेत अर्थात् भक्तिविना जीवको कल्याणनहींहै ॥ तत्रप्रमाणंसत्योपाख्यानेसूतवाक्यम् ॥ लोकेभव तुचाश्चर्यंजलाज्जन्मघृतस्यच ॥ सिकतायाश्चतैलंतुयत्नात्स्यात्तु कथंचन १ विनाभक्तिंनमुक्तिश्चभुजमुत्थायचोच्यते ॥ धूयंधन्याम हाभागायेषांप्रीतिस्तुराघवे २ अन्यच्च ॥ पठितसकलवेदशास्त्र पारंगतोवायमनियमपरोवाधर्मशास्त्रार्थकृद्वा ॥ अपितुसकलती र्थव्राजकोवाहिताग्निर्नहिहृदियदिरामःसर्वमेतद्वृथास्यात् ३ ॥

मू० । रागगौरी ॥ कैकेयीकरीधौंचतुराईकौन ॥ रा मलषणसियवनहिंपठाये पतिपठयेसुरभौन १ काहुभ लोधौंभयोभरतकोलगेतरुणतनदौन ॥ पुरवासिनकेनय ननीरबिनकबहुंतौदेखतिहौन २ कौशल्यादिनरातिवि सूरतिबैठिमनमहिंमनमौन ॥ तुलसीउचितनहोइरोइबो प्राणगयेसँगजौन ३ ॥

टी० । श्रीकौशल्याजीकी उक्तिहै कि कैकेयीने यामें कौनधौं चतुराई करी है काहेते श्रीराम लषण जानकीको वनको पठाये अरु पतिको देवलोक पठाइ आप विधवाभई १ यामें भरतको काहधौं भलोभयो जो युवावस्थाको तनदौनलागे भाव विरहपीर

में तसरहत अरु पुरवासिनके ऐसे आंसू पतितहोत कि बिना जल नेत्र मोको कबहूँ नहीं देखिपरत २ श्रीकौशल्याजी बैठी मौन मनहीमन बिसूरतीहैं काह चिन्तवन करतीहैं कि हमको रोइबो उचित नहींहै काहेते जो हमारेप्राण रघुनन्दनके साथ न गये तौ हमारो रोइबो झूँठहै ३ ॥

मू० ॥ हायमींजिबोहाथरह्यो ॥ लगीनसंगचित्रकूट हुतौह्यांकहँजातबह्यो १ पतिसुरपुरसियरामलषणवन मुनिव्रतभरतगह्यो ॥ हौंरहिघरमशानपावकज्योंमरिबो मृतकदह्यो २ मेरोहियकठोरकरिबेकहँ विधिकहुंकु लिशलह्यो ॥ तुलसीवनपहुंचाइफिरीसुत क्योंकछुप रतकह्यो ३ ॥

टी० । श्रीकौशल्याजी कहतीहैं कि हमको हायमींजिबोहाथ रह्यो काहेते हम चित्रकूटहुते रघुनन्दनके साथ नाहीं लागीं हन विना इहां काह यहा जातरहैं जाके हेतु लौटी १ पतिते सुख सो सुरलोक को गये पुत्रके देखबे को सुख सो राम जानकी लषण वनको गये भरतजी इहांते मुनिव्रत धारणकिये हम घरमें कैसे रहीं जैसे मशान की अग्नि मृतक जरावत है सो अशुभ होत तैसे हम अपनी मृत्यु सोई एक मृतक है ताको जराइ मशान अग्नि भई भाव हमने मृत्यु अंगीकार नहीं करी २ हमारो हृदय कठोर करिबे हेतु विधाताने कहूं कुलिशपायो ताहीते हमारो हृदय कठोर बनायदियो काहेते हम पुत्रको वनते पहुंचायके फिर आईं ताते कछु कहत नहीं बनत है ३ ॥

मू० । हौंतोसमुझिरहीअपनोसो ॥ रामलषणसिय कीसुषमा कहुँभयोसखीसपनोसो १ जिनकेविरहवि षादवढ़ावनखगमृगजीवदुखारी ॥ मोहिंकहासजनीस मुझावति हौंतिनकीमहतारी २ भरतदशासुनिसुमिरि

भूपगतिदेखिदीनपुरवासी ॥ तुलसीरामकहतिहौंसकुचत ह्वैहैजगउपहासी ३ ॥

टी० । सखी समुझावती हैं तिनसों कौशल्याजी कहत कि हे सखी हमको काह समुझावतीहौ हमतो आपुहीते समुझि रही हैं काहेते श्रीराम लषण जानकी की सुषमा कहे शोभा सो हम को सपने कैसो देखिबो भयो है १ जिन राम जानकी लषण के विरह दुःख बढ़ाइबे सें पक्षी मृगादि जीव दुःखित हैं तिनकी हम माताह्वै जीवती हैं ताते हे सजनी हमको काह समुझावतीहौ २ राजसुख त्यागि प्रभु विरह में तप्त ऐसी दशा भरतकी सुनि रघुनन्दनके विरहमें तुरंत तन त्यागे ऐसी गति भूपकी सुमिरि प्रभु वियोग में पुरवासी दुःखित देखि राम अस नाम कहत मोको सकोच लागत है ३ ॥

मू० । आलीहौंइनहिंबुझावहुकैसे ॥ लेतहियेभरिभरिपतिकोहित मातुहेतुसुतजैसे १ बारबारहिंहिनात हेरिउत जोबोलैकोउद्वारे ॥ अंगलगाइलियेबारेतेकरुणामयसुतप्यारे २ लोचनसजलसदासोवतसे खानपानबिसराये ॥ चितवतचौंकिनामसुनिशोचत रामसुरति उरआये ३ तुलसीप्रभुकेविरहवधिकहठि राजहंससेजोरे ॥ ऐसेदुखितदेखिहौंजीवतरामलषणकेघोरे ४ ॥

टी० । श्रीकौशल्याजी कहती हैं आली मैं इन घोड़नको कैसे समुझावों काहेते अपनो स्वामी जो रघुनन्दन लक्ष्मण हैं तिनके देखिबे हेतु दुःख हृदयमें भरिभरि उसासलेत हैं कैसे जैसे माता के हित लघु अवस्थाको पुत्र रोवत है १ तैसे बारबार हिंहिनात हैं जब कोऊ द्वारपर बोलत ताको जानत प्रभु तौ नहीं आये काहेते लरिकाईते दुलराइ अंगमें लगाइ लिये करुणामय प्यारे पुत्र २ घोड़नके नेत्र आंसुन सों भरे यथा सोवत ऐसी दशा से

खाइबो पीबो बिसरायेहैं जब कोऊ राम लषण को नामलेत तहां को सुनि चकितह्वै चितवत हैं प्रभुकी सुरति आयेते हृदयमें सोचतहैं ३ गोसाईंजी कहत कि श्रीराम लषणके घोड़े राजहंसके से जोड़े तिनको विरहरूप बधिकनने ग्रस्योहै कौशल्याजी कहत तिन घोड़नको दुःखित देखि मैं जीवतहौं ४ ॥

मू० । राघवएकबारफिरिआवो ॥ येवरवाजिबिलो किआपनेबहुरोवनहिंसिधावो १ जेपयप्यायपोषिकर पंकजबारबारचुचुकारे ॥ क्योंजीवहिंमेरेरामलाड़िले तेअबनिपटबिसारे २ भरतसौगुणीसारकरतहैंअतिप्रिय जानितिहारे ॥ तदपिदिनहिंदिनहोतझांवरेमनहुंकमल हिममारे ३ सुनहुपथिकजोमिलहिंरामवनकहियेमातुसँ देशो ॥ तुलसीऔरसोहिंसबहिनतेइनकोबड़ोअँदेशो ४ ॥

टी० । विरहवश कौशल्याजी कहती हैं हे राघव एकबार अयोध्याजीको फिरिआवो ये जो तुम्हारे वरकहे श्रेष्ठवाजीहैं तिन को देखि फिर वनको चले जाहु १ जिन घोड़न को दूध पियाय अपने करकमलनसों पोषे पालनकियो बार बार चुचकारे हैं मेरे राम लाड़िले तिनको निपटकै बिसारिदिये ते अब कैसे जीवहिं २ हे रघुनाथ तुम्हारे अत्यन्तप्रियजानि घोड़नकी भरतजी तुमते सौगुण सारकहे प्रतिपाल करत नित अपने हाथनसों ताहूपर दिन प्रति झाँवरे कही दुर्बल होतजात यथा हिम पाला मारेते कमल सूखिजाइ ३ हे पथिकहु मेरी बात सुनिलेहु जो कहूं वनमें रघुनन्दन मिलहिं तो मैं जो उनकी माताहौं ताको यतरा संदेशा कहियो कि तुम्हारी माताने कह्योहै कि कुलपरिवार प्रजादि सब सों अधिक अंदेशा मोको इन घोड़नको है ४ ॥

मू० । रागकेदार ॥ काहूसोंकाहूसमाचारअसपाये ॥ चित्रकूटतेरामलषणसिय सुनियतअनतसिधाये १ शैल

सहितनिर्झरवनमुनिथलदेखिदेखिसबआये ॥ कहतसुन तसुमिरतसुखदायकमानससुगमसोहाये २ बड़ीअवलम्ब वामविधिविघटितविषमविषादबढ़ाये ॥ सिरससुमनसु कुमारमनोहरबालकविंधचढ़ाये ३ अवधसकलनरना रिविकलअतिअकनिवचनअनभाये ॥ तुलसीरामवियो गशोकवशसमुझतनहिंसमुझाये ४ ॥

टी० । काहू पथिकते प्रभुके कुशलके समाचार पुरवासी परस्पर कहतेहैं कि हमसुने श्रीराम लषण जानकी चित्रकूटते अनत को चलेगये १ तहांके पर्वत नदी झरना वन मुनिनके आश्रम तिनको पथिक जे देखिआये ते हमसों कहे हैं तहांकी शोभाकहते में सुमिरत में सुखदायक है बसिबे को सुख कौन कहै मनकरि सुगम अरु सुहात है २ ऐसे वचन सुनि दूसरो कहत देखो तौ बड़ी जो अवधकीराज्य ताको अवलंब युवराजहोनो प्रभुको ताको विधाताने विघटितकही तूरिडारो अरु विषम विषादकठिनदुःख ताको बढ़ायदियो काहेते सिरसाके फूलसम कोमल मनके हरणहारे बालक श्रीराम लषण तिनको विन्ध्याचल पर्वतपर चढ़ाय दियो ३ ऐसे वचन अनभाये ताको अकनिकही सुनि समुझि व्याकुल गोसाईंजी कहत कि रघुनन्दन के वियोग दुःखके वश अवधवासी व्याकुल ताते समुझायेते समुझत नहीं हैं ४ ॥

मू० । सुनीमैंसखीमंगलचाहसुहाई ॥ शुभपत्रिका निषादराजकीआजुभरतपहँआई १ कुंवरसोकुशलक्षे मतेहिअवसरकुलगुरुकहपहुँचाई ॥ गुरुकृपालुसंभ्रमपु रघरघरसादरसबहिंसुनाई २ बधविराधसुरसाधुसुखी करिऋषिशिषआशिषपाई ॥ कुम्भजशिष्यसमेतसंगसि यमुदितचलेदोउभाई ३ रेवाविन्ध्यमध्यसुपासथलबसेहैं

परनगृहछाई ॥ पन्थकथारघुनाथपथिककी तुलसिदास सुनिगाई ४ ॥

टी० । पुरकी स्त्री परस्पर कहती हैं हे सखी मैं सुन्दर मंगल चाह सुनी है प्रभुकी शुभक्षेमकुशलकी पत्रिका निषादराजकी लिखी आजु भरतजी के पास आई हैं १ तापत्रिकाको कुंवरभरत जीने वशिष्ठजी के पास प्रभुजी की कुशलक्षेम पहुंचाय ताको गुरु कृपालु ने संभ्रम हर्षपूर्वक शीघ्रही आदरसहित पुर विषे घर घरमें सबको सुनाये २ ताको हालकहत मार्ग में विराध वध कीन ताते देवता अरु साधुनको सुख नींके आगे अगस्त्यादि ऋषिनको खलवधादि सिखावन अरु आशीर्वाद पाय कुम्भज शिष्य सुतीक्ष्ण जानकीसहित आनन्द ते दोऊ भाई आगेको चले ३ रेवा कहे नर्मदा अरु विन्ध्याचलके बीच में सुपासथल पंचवटी में तहां पत्रनसों मन्दिरछाइ तहां निवास कीन्हेहैं ऐसी रघुनाथकुंवर की पन्थकी कथा वेदपुराण रामायण गुरु सुखसों सुनि तुलसीदासजीने गाईहै यहहाल बारहवर्ष वादिको है काहे ते अवधते चले प्रभु तबते चैतशुक्लनवमीपर्यंत बारहवर्ष वीते चैतशुक्लपूर्णिमाको पंचवटी में वासकरे ताके दशपांच दिन पीछे पत्रिका निषादराजकी आई ४ ॥

सवैया ॥

अठ विस्फुरसुग्घलतांकुसुमांकुरु सौरभ मत्तमधुव्रत धारे ।
अचला हरिताचल निझरपै तटन्यंतर कञ्जसुपुञ्ज पसारे ॥
फटिकाद्रिप्रशस्तसुपत्रनतल्प सुखामृतप्रेम तृषाजु वढ़ारे ।
वसिबैजसुनाथउरस्थलमो सुमनीशप्रिया अवधेन्दुदुलारे ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमासियवल्लभशरण विरचितेसियवरगीतावल्यांमणिदीपिका टीकायांअयोध्याकाण्डंसम्पूर्णम् ॥

गीतावलीसटीक

आरण्यकाण्ड ॥

श्लोक ॥ ध्येयंयस्यसुखालयं सुगतिदंधर्मार्थकामप्रदं संसाराम्
यजीवनार्थसुगमंयस्यैकनामामृतम् ॥ सर्वस्मिन्नूलतेरसन्तियद्द्रिम
नूलर्वेचरूपे सदाकीर्त्याकल्मषनाशनंसुखकरंतंजानकीशंभजे १ ॥

मू० । देखेरामपथिकनाचतमुदितमोर ॥ मानतमनहुँ
सतड़ितललितघनधनुसुरधनुगरजनिटकोर १ कम्पैकला
पवरबरहिफिरावत गावतकलकोकिलकिशोर ॥ जहँज
हँप्रभुविचरततहँतहँसुखदण्डकवनकौतुकनथोर २ सघन
छांहतमरुचिररजनिभ्रम वदनचन्द्रचितवतचकोर ॥ तुल
सीमुनिखगमृगनसराहत भयेहैंसुकृतसवइनकिओर ३ ॥

टी० । देखे इति कविकी उक्तिहै श्रीराम लषण जानकीजीको
मार्ग में जातेदेखि आनन्दते मयूरनाचतहैं काहेते मानों तड़ित
सहित सुन्दर मेघ मानिके श्रीजानकीजीको तड़ित प्रभुको मेघ
मानि प्रभुकेधनुष इन्द्रधनुष ताकीटंकोर मेघकी गर्जनिमानि मोर
नाचत ताते भ्रमालंकारहै १ वहीं जो मयूर कलापकहे समूह पक्ष-
नको कंपाय फिरावत घूमतहैं ताके साथमें किशोरकहे युवावस्था
केकोकिलास्वरसहित गानकरत याहीभांति जहां जहां प्रभु विच-
रत तहां तहां दण्डकवनमें सुखको कौतुक थोरा नहीं है बहुतहै २
सघनवृक्षनकी छांह ताको अंधेरा ताको रात्रीको भ्रम तामें प्रभु
को सुन्दर मुख ताको पूर्णचन्द्रमानि चकोर यकटकहै चितैरहे हैं
इत्यादि आनन्दमें आनन्दकोप्राप्ति पक्षिन की अर्थात् विषय में
स्नेह करे ते रामानुरागी भये यथा मोरघन दामिनि जानि स्नेह

करे सो अनुराग प्रभुमें ठहरे तथा चकोर चन्द्रमाजानि अनुराग करे अरु ठहरो प्रभुमें सो रहस्य खग मृगनकी देखि मुनिजन प्रशंसा करत कि यावत् सुकृतहै सो सब इन पक्षिन मृगनकी ओर भयोहै काहेते जिनको विषय अनुराग में रामानुराग प्राप्त भयो अर्थात् जब अनेकजन्मकी सुकृत उदयहोइ तब जीव रामानुरागीहोत ॥ महारामायणे ॥ ये कल्पकोटि सततं जपहोम योगैर्ध्यानैस्समाधिभिरहोपरबोधनिष्ठाः॥ तेदेविधन्यमनुजाह्वदि बाह्यशुद्धाभक्तिस्तदाभवतितेष्वपिरामपादे ३ ॥

मू०। सुभगशरासनशायकजोरे ॥ खेलतरामफिरत मृगयावनवसतसोमृदुमूरतिमनमोरे १ पीतवसनकटिचारुचारिशरचलतकोटिनटसोतृणतोरे ॥ श्यामलतनश्रमकनराजतज्यों नवघनसुधासरोवरखोरे २ ललितकन्धवरभुजविशालउरलेहिंकण्ठरेखैचितचोरे ॥ अवलोकतमुखदेतपरमसुख लेतशरदशशिकीछविछोरे ३ जटामुकुटशिरसारसनयननगोहैतकतसुभौंहासिकोरे ॥ शोभाअमितसमातनकानन उमँगिचलीचहुँदिशिमतिफोरे ४ चितवतचकितकुरंगकुरंगिनिसबभयेमगनमदनकेभोरे ॥ तुलसिदासप्रभुबाणनमोचतसहजसुभायप्रेमवशथोरे ५

टी०। कविकी उक्तिहै सुन्दर धनुष बिषे बाणकोलगाये श्रीरघुनाथजी वनमें मृगया खेलतफिरतहैं तासमयकी कोमलमूर्ति श्यामसुन्दर रघुनन्दन हमारे मनमें बसत अर्थात् हमको भावत हैं १ कैसो वेषहै कटि बिषे पीताम्बर तहां चारिबाण धारणकिहे हैं कैसे अङ्ग झुकिकै चलत जामें कोटिन नटन की गतिहरत नट कहे नृत्यकारकेअंग नयजाबे में कोमल तथा प्रभुके कोमलअंग के झुकिजाबेपर कोटिन नटनकी गति तृणसमतोरि एकहीवारि दीजिये जो श्यामसुन्दर शरीरपै श्रमकणस्वेदबिन्दु छाइरहे हैं

सो कैसे शोभितहोतहैं मानों नवीन श्यामघन अमृतके तड़ाग में अवगाहित भयो ताते अमीबिन्दु खोरे कही लगेहैं २ सुन्दर कांधश्रेष्ठ आजानुभुजा विशालकहे चौड़ी छाती कण्ठकी जो रेखा सो चित्तको चोरायेलेतहै मुखकी शोभा देखतमें परमसुखदेत अरु शरदपूर्णचन्द्रमा छविको हरेलेत ३ जटाके मुकुट शिरपर राजत सारसकही कमल ॥ सारसःपक्षिभेदःस्यात्क्लीबेतुसरसी रुहइत्यमरः ॥ सारसकहे कमलसे नयनन सों भौंहैं सिकोरे गोहेकहे घातदेखतहैं तासमयमें प्रभुके अंग शोभा अमितहै ता समयकी शोभा मर्यादानहींहै ताते कानन जो है वन तामें अँबात नहीं ताते दशहू दिशिकी मर्यादा फोरिकै उमँगि चली है इहां चारिहूं दिशिते देखनहार देखतही शोभा में मगन होत ताते मर्यादारहित कहे ४ चारिबाण प्रभु के कटि विषे एकबाण धनुष में जोरे याही भांति पांचबाणनते मदनको भ्रमकरि कुरंग कुरंगिनी सब चकितहै चितवतहैं इहां प्रभुको मदनकी समता देखावतहैं याहीभांति जगतरूपी वनमें मृगसरीखे प्राणिन को मदन वधिकहै निपात करत ताको मोहवशते वधिककरिनहीं जानत मदनकी वार्ता श्रवणमें परत मृगसरीखे प्राणी मोहित होत तैसे प्रभु मृगनके मारिबेपर तत्परहैं अरु प्रभुको देखि मृगा मोहित होत तहां भेद देखावत कि मदन विषे प्राणीतो मोहित होत अरु मदन निपातै करत ताते मदनदयारहितहै गोसाईंजी कहत कि प्रभुको सहज में सुभाव ऐसहै कि थोरही प्रेममें वश होत ताते मृगनको मोहित देखि प्रभु बाण नहींछांड़त ताते दयावान्हैं मदन निर्दयी है ५ ॥

मू० । बैठेहैंरामलषणअरुसीता ॥ पंचवटीवरपरण कुटीतर कहैंकछुकथापुनीता १ कपटकुरंगकनकमणि मयलखि सियसोंकहतिहँसिबाला ॥ पाइपालबेयोग मंजुमृगमारेहुमंजुलछाला २ प्रियावचनसुनिविहँसिप्रे

मवशगवहिंचापशरलीन्हे ॥ चलासोभाजिफिरिफिरि चितवतमुनिमखरखवारेचीन्हे ३ सोहतमधुरमनोहरमूरतिहेमहरिनकेपाछे ॥ धावनिनवनिविलोकनिबिथकनिवसतुलसीउरआछे ४ ॥

टी० । पञ्चवटी में सुन्दरपत्रनकी कुटीबिषे श्रीराम जानकी लक्ष्मणजी बैठे कथापुनीतकही ज्ञानभक्तिको निरूपण करत तेहिसमयविषे १ कनकमणिनमय कपटको मृगारूप मारीचदेखि परो ताको देखि बाला श्रीजानकीजी प्रिया श्रीरघुनाथजी सों हँसिकै कहतीभईं कि यह सुन्दरमृगा जो पकरे मिलै तौ पालिवे योग्य है जो मारेमिलै तौ सुन्दर मृगचर्म है २ श्रीजानकीजीके वचनसुनि प्रेमवशह्वै कारणजानि हँसिकै गवहिंकही घात सों धनुषबाण हाथमें लेतभये पीछे धावत देखि मारीचनेचीन्हे कि विश्वामित्रकी यज्ञके रखवारे येई हैं यह जानि पीछे फिरि देखत भागिचल्यो ३ मनको हरणहारी माधुरीमूर्त्ति कपट हेमहरिनके पीछे धावत शोभित ता अवसरकी प्रभुकी धावनि नवनि मृगाको निहारनि थकित ह्वै ठाढ़े ह्वै रहनि तेहि अवसर की माधुरी गोसाईंजी कहत कि हमारे उर में नीकी प्रकार वसत है ४ ॥

मू० । करशरधनुकटिरुचिरनिषंग ॥ प्रियाप्रीति प्रेरितवनवीथिनविचरतकनककपटमृगसंग १ भुजविशालकमनीयकंधउर श्रमसीकरसोहैंसांवरेअंग ॥ मानों मुक्तामणिमरकतगिरिपर लसतललितरविकिरणप्रसंग २ नयननलिनशिरजटामुकुटविचसुमनमालमानोंशिवशिरगंग ॥ तुलसिदासअसिमूरतिकीबलिछविविलोकिलाजैअमितअनंग ३ ॥

टी० । हाथनमें धनुषबाणलिहे कटि में सुन्दर तरकसलगाये

प्रिया जो श्रीजानकीजी तिनकी प्रीतिकीप्रेरणा कहे आज्ञानुकूल कपट मृगके साथ श्रीरघुनाथजी वनकी राहनमें विचरत हैं १ लंबायमान भुजा सुन्दर कन्धा उच्च चौड़ी छाती सुन्दर साँवरे अंगमें पसीनाकी कणें शोभितहैं सो कैसाहै मानों मरकत श्याम मणि पर्वत पर सूर्य की किरण के प्रसंग सहित मुक्तामणि शोभितहै २ कमलसे नेत्र शीशपर जटाको मुकुट ताके बीच फूलन की माला कैसी शोभितहै मानों शिवजीके शीशपर जटामें गंगा जीकी धाराहै जिनकी अनूपछवि जाको देखि अनेगिन कामदेव लज्जितहोत ऐसी श्रीरघुनन्दनकी प्यारी सांवरीमूर्ति तापै तुलसीदास बलिहारी हैं ३ ॥

मू० । राघवभावतिमोहिंविपनकीवीथिनधवनि ॥ अरुणकंजवरणचरणशोकहरण अंकुशकुलिशकेतुअंकित अवनि १ सुन्दरश्यामलअंगवसनपीतसुरंग कटिनिषंग परिकरशिरवनि ॥ कनककुरंगसंगसाजेकरशरचापराजी वनयत्नइततउतचितवनि २ सोहतशिरमुकुटजटापटलनि कर सुमनलतासहितरचीवनवनि ॥ तैसेईश्रमसीकररुचिरराजतमुखतैसीयेललितभ्रुकुटिनकीनवनि ३ देखत खगनिकरखनिनयुतमृग थकितविसरिजहांतहाँकीभवनि ॥ हरिदरशनफलपायोहैज्ञानविमलयाचतभक्तिमुनि चहतजवनि ४ जिनकेमनमगनभयेहैंरसगुण तिनके लेखेअगुणमुक्तिकवनि ॥ श्रवनसुखकरनिभवसरितातरनि गावततुलसिदासकीरतिपवनि ५ ॥

टी० । अरुणकहे लालकमलवरण चरणनते दुःखहरणहारे अंकुश वज्रकेतुआदि चिह्ननकरि भूमि अंकित ह्वै रही है ता समय

की वनकी वीथिनकी मधुर मधुर धावनि श्रीराघवजू की सो हमको भावत कहे अत्यन्त प्यारी लागतहै १ सुन्दर श्यामअंग में पीताम्बर सिंहसम स्वच्छ कटिमें सुन्दर तरकस लगाये ताके शिरपर परिकर कहे फाड़बांधे बनिरूहे शोभा दैरही है कपट कनकमृग के पाछे हाथ में धनुषबाण साजे कमल सम नेत्रन सों इतउत चितवनि मोकोभावति है २ पटल कहेसमूह जटा को मुकुटबांधे ताके वीचमें अनेक फूल दलनसहित रचित सोहत बन कहे वनकबनी है जटाके वीचफूल दलन की रचना की बनावट अपूर्व बनी है तैसे सुन्दर श्रमसीकरन सहित चन्द्रमा से मुख शोभित होत तैसे कमल से नेत्रन की चितवनि में भृकुटिन की नचनि शोभादेत ३ ता अवसर प्यारे रघुनन्दन की छविकी छटा देखि अनेकन पक्षी मृगिन सहित मृगादेखत में प्रेमसों थकित है जहां तहांकी भवनि कहे घूमनि बिसरिगई प्रभुके दर्शन भयेते विकार रहित भये ताते ज्ञान भयो अबभक्ति याचत हैं जाको मुनि चाहना करतहैं ज्ञान फलको भक्तिरसहै ४ ताको हेतु कहत कि सगुणरस भक्तिमें जिनके मन मग्नभये हैं तिनके लेखे निर्गुण मुक्तिकौनिहै ॥ महारामायणे ॥ ये रामभक्तिममलांसुविहायरम्यां ज्ञानेरताःप्रतिदिनंपरिक्लिष्टमार्गे। आरान्महेन्द्रसुरभीम्परिहृत्य मूर्खाअर्कंभजंतिसुभगेसुखदुग्धहेतुम् १भक्तिकैसीहै सुनतमेंश्रवण को सुखकारी है भवसरिता के पारकरनहारी है ऐसी पावनि कीर्ति तुलसीदास गावत हैं ५ ॥

मू०। रघुवरदूरिजाइमृगमारो ॥ लषणपुकारि राम हरुयेकहिभरतहुबयरसँभारी १ सुनहुतातकोउतुमहिंपुकारतप्राणनाथकीनाईं ॥ कह्योलषणहत्योहरिणकोपि सियहठिपठयोबरिआई २ बन्धुबिलोकिकहततुलसीप्रभुभाईभलीनकीन्ही ॥ मेरेजानजानकीकाहूखलछलकरिहरिलीन्ही ३ ॥

टी०। कपटरूप मृग को दूरिजाइ श्री रघुनाथजी मारे तहां मारीचने लक्ष्मणजीको नाम करैरे पुकारि रामनाम हृदये करी धीराते कहे यहां मुनिमख समयको वैर मरतीवार संभारे १ सो सुनि श्रीजानकी जी कहती हैं हे लक्ष्मण जी प्राणनाथ की नांई तुमको कोऊ पुकारत है ताको देखो जाइ लक्ष्मण जी बोले कि मृग को प्रभुमारे सोई मृग है पुकार करत सो नहीं माने कोप करि हठिकै जबरई लक्ष्मण जी को पठायो २ ल० बन्धुको आवत देखि प्रभु बोले कि हे भाई इहां आयो सो भली नहीं करी काहेते हमको जानि परतहै कि काहू खलने छलकरिकै जानकी को हरिलियो ३ ॥

मू०। आरतवचनकहतवैदेही॥ बिलपतभूरि बिसूरि दूरिगयेमृगसँगपरमसनेही १ कहिकटुवचनरेखनांघीमैं तातक्षमासोकीजै ॥ देखिबधिकवशराजमरालिनिलषण लालछिनिलीजै २ वनदेवनसियकहनकहतयोंछलकरि नीचहरीहौं ॥ गोमरकरसुरधेनुनाथज्योंत्योंपरहाथपरी हौं ३ तुलसिदासरघुनाथनामधुनिअकनिगीधधुकिधा यो॥ पुत्रिपुत्रिजनिडरहिन जैहै नीचमीचुहौंआयो ४॥

टी०। जासमय लक्ष्मणजी चलेगये ताही अवसर कपटरूप यती बनि छलकरिजानकीजीको रथपरबैठारिलेतभयो तेहि प्रवशते आरत वचन कहती हैं यह मन में बिसूरती हैं कि परमसनेही प्रभु मृगके साथ दूरिगयो यह विचारि भूरिकही बहुतबिलाप करतीहैं १ लक्ष्मणजीको कटुवचन कहे तिनकी खचाई रेखा मैं नांघिगई ताको तातक्षमा कीजे काहेते यथा बधिक के वश राजहंसीपरे तथा मोको परवशजानि हे लषणलाल मोको परवश रावणसे छीनिलीजे २ प्रभुते कहबेको जानकीजी वनके देवतनसों कहतीहैं कि प्रभुसों कहियो कि मोको छल करिके

नीचने हरलियोहै रावण हेनाथ यथा गोमर कसाईके वश कामधेनुपरै तथामैं परायेहाथपरीहौं ३ गोसाईंजी कहत कि जानकीजीके मुखते रघुनाथ के नामकी धुनि अकनिकही सुनि समुझिके गीधराज जटायु धुकिकही क्रोधकरिवेगतेधायो यह कहि कि हे पुत्री डरेसि ना तोंकोलैकैजानेनहीं पावैगो नीचरावणकीमीचु मृत्युरूपी मैं आइगयों ४ ॥

मू० । फिरतनबारहिंबारप्रचारयो ॥ चपरिचोंचचंगुलहैहतिरथखण्डखण्डकरिडारयो १ विरथविकलकियो छीनिलीन्हसियघनघावनअकुलान्यो ॥ तबअसिकाढ़िकाटिपरपांवरलैप्रभुप्रियापरान्यो २ रामकाजखगराज आजलरयोजियतनजानकित्यागी ॥ तुलसिदाससुरसिद्धसराहतधन्यविहंगबड़भागी ३ ॥

टी० । गीधराज बारबार प्रचारत परन्तु रावण लौटत नहीं चपरि हर्षपूर्वक बाढ़िकै चोंच चंगुलनसों घोड़नको घायलकरि रथको खण्डखण्डकरि तूरिडारे १ रावणको रथ ते गिराइदीन जानकीजीको छीनिलीन चोंचसों देह विदीर्णकरे त्यहि समूह घावनकरि रावण अकुलायउठो तब पांवर दुष्टरावण तरवारि काढ़ि गीधके पक्ष काटि प्रभुप्रियाजानकीजीकोलैकै परान्योभागि गयो २ देवता सिद्ध यह प्रशंसाकरत कि देखो गीधराज प्रभुके कामहेतु आज रावणते लरयो अपने जियत श्रीजानकीजी को नहीं दियो ताते विहंग बड़भागी धन्यहै ३ ॥

मू० । हेमकोहरिणहानिफिरेरघुकुलमणि लषणललितकरलियमृगछाल ॥ आश्रमआवतचलेसगुणनभयेभलेफरकेबामबाहुलोचनबिशाल १ सरितजलमलिनसरनसूखेनलिनअलिनगुंजतकलकूजैंनमराल ॥ कोकिलान

कोलकिरात जहांतहांबिलखातवननविलोकिजातखगमृ
गमाल २ तरुजेजानकीलायज्यायेहरिकरिकपिहेरनहुक
रिझरेफलनरसाल ॥ जेशुकसारिकापालेमातुज्योंललकि
लालेतेऊनपढ़तपढ़ावैंमुनिबाल३ समझिसहमैंसुठिप्रिया
तौनआईउठितुलसीबिबरनपरणतृणशाल ॥ औरैसोसब
समाजुकुशलनदेखौआजुगहवरहियकहैकोशलपाल४॥

टी०। हेमहरिणको मारि श्रीरघुनाथजी फिरे ताही मृगको सुन्दर छाला ललितकहेसुन्दर करकमलमें लक्ष्मणजी लिहेहैं आश्रमकोचलेआवतमें सगुणअच्छेनहींभये अशकुनभये अर्थात् वामअंगके नेत्र भुजा फरकनलगे अरु वनवीथी उदास देखिपरीं ताते चितहू उदासीनभयो १ सरितनमें जलमलीनह्वैरह्यो तड़ागनमें कमल सूखिरहे तापरभौंरनहींगुञ्जारत सुन्दरस्वरतेहंस नहीं कुरुकत कोकिला नहीं बोलत कोल किरातजहांतहां बिलखातहैं वनकेपक्षी अरु मृगनकी मालकहे पांति सो ऐसीउदास है जो देखिनहीं जातिहै २ जिन वृक्षनको जानकीजीअपनेहाथते लगाये ते कुँभिलाइगये जे सिंह हाथी वानरादिकनको पालेरहे ते हुंकरिकैदेखनहीं उदासीनहैं रसालकहे आंबके वृक्षनते फल बौर झरिपरेहैं फाल्गुनकृष्णअष्टमीकी यहलीलाहै ताते फलन को ऋतुरहा जे सुवा मैना पाले माताकीसमान ललकिकै दुलारे तेऊ नहींपढ़तीहैं न मुनिनकी स्त्री उनको पढ़ावें ३ पत्रनकी साल बिबर देखि त्याहिसा ते प्रियाजी उठिकै नहीं आई यह समुझिसुन्दर रघुनाथजी सहमिगये और कोशलपालगहवर हृदय ते कहत कि सबसमाज और भांतिकी देखिपरत उदासीनताते आजु कुशल नहीं है ४ ॥

मू०। आश्रमनिरखिभूलेद्रुमनफले फूलेअलिखगमा

नोकबहुंनरहे ॥ मुनिनमुनिवधूटीउजरीपर्णकुटीपंचवट
पहिचानिठाढ़ेइरहे १ उठिसलिललियेप्रेमप्रमुदितहिये
प्रियानपुलकिप्रियवचनकहे ॥ पल्लवसालनहेरीप्राणवल्ल
भानटेरीविरहबिथाकिलखिलखगहे २ देखेरघुपतिगति
विबुधविकलअतितुलसीगहनाबिनदहनदहे ॥ अनुज
दियोभरोसो तौलौंहैशोचखरोसोसियसमाचारप्रभुजौ
लौनलहे ३ ॥

टी०। आश्रमको देखिभूले काहेते वृक्ष न फूले हैं न फले हैं भ्रमर अरु पक्षी मानों कबहूं रहबै नहींभये हैं न आश्रममें कोऊ मुनि देखिपरे न मुनिनकी स्त्री देखिपरें अरु पत्रनकी कुटी उजारसी देखातहैं यहगति पंचवटी विषे पहिंचानि श्रीरघुनाथजी ठाढ़ेइरहिगये १ श्रीरघुनाथजी कहत कि प्रेमसों आनन्दितहृदय में पुलकिकै प्रिया श्रीजानकीजी प्रियावचन उठिकै नहींकहे हे प्राणवल्लभा प्राणप्यारी टेरी नहींकहे बोलीनहीं ताते पत्रनकी शालाको नहीं निहारे विरहमें थकित देखि लक्ष्मणजी प्रभुको गहिलेतेभये २ श्रीरघुनाथजीकी गतिदेखि देवता अत्यन्तविकल भये गोसाईंजी कहत कि त्यहि समयमें प्रभुकी दशा देखि वन विना अग्निही सब जरोसो देखिपरत प्रभुकीगति देखि लक्ष्मणजी भरोसादियोकि जबलगि श्रीजानकीजी की सुधिनहीं पाइयत तबैलगे दुःखहै सो खरकी समानहै खबरिपायेतेही रिपुको जीति जानकीजीको लावहिंगे ३ ॥

मू०। जबहिंसियासुधिसुरनसुनाई ॥ भयोसुनिसजग
विरहसरिपैरतथकेथाहसीपाई १ कसितूणीरधनुधररघुर
धीरवीरद्वौभाई ॥ पंचवटीगोदाहिप्रणामकरिकुटीदाहिनी
लाई २ चलेबूझतवनबेलिविटपखगमृगअलिअवलिसु
हाई ॥ प्रभुकीदशासोसमोकहिबेको कविउरआहनआ

ई ३ रटनिअकनिपहिंचानिगीधफिरेकरुणामयरघुराई ॥ तुलसीरामहिंप्रियाबिसरिगईसुमिरिसनेहसगाई ४ ॥

टी० । जबदेवतन श्रीजानकीजीकी खबरि सुनाई ताकोसुनि सजगभये यथा विरहकी सरितामें पैरतरहे तामें थाहसीपाई १ तब कटिबिषे तरकस धारणकरि हाथमें धनुषवाणलै धीरजकी धुरीकेधारण करनहारे दोऊभाईवीर पंचवटी गोदावरीको प्रणाम करि कुटीकी प्रदक्षिणाकरि २ वनबिषे बेली विटपनते पक्षीमृगनते सुन्दर भौंरनकी पांतिनते बूझत मार्गमें चलतेभये ता समयकी प्रभुकी जो दशा है सो समुझि कविकेउरमें आहकी पीर है ताते सो दशा नहीं कहिआई प्रभु विरहकी दशा कहत नहीं बनी ३ रामनामकी रटनि अकनि सुनि गीधको चीन्हिकेकरुणामय रघुराई फिरे ता गीधके सनेहकी सगाई सुमिरि गोसांईजी कहत कि प्रभुको प्रियाकी सुधिभूलिगई ४ ॥

मू० । मेरेएकोहाथनलागी ॥ गयोवपुबीतिबादिकाननज्योंकल्पलतादवदागी १ दशरथसोंनप्रेमप्रतिपाल्योहुतेसकलजगसाखी ॥ बरबसहरतनिशाचरपतिसोंहठिनजानकीराखी २ मरतनमैंरघुवीरविलोकेतापसवेषबनाये ॥ चाहतचलनप्राणपांवरबिनुसियसुधिप्रभुहिंसुनाये ३बारबारकरमींजिशीशधुनिगीधराजपछिताई ॥ तुलसीप्रभुकृपालुतेहिअवसरआइगयेदोउभाई ४ ॥

टी० । गीधराज अपने मनमें कहतहैं पश्चात्तापकरिकै कि हमारे हाथ एकहु बात नहींलागी हमारीदेह बादिही बीतिगई जैसे वनमें कल्पलता काहूकेकाज न लागी दावानलमेंजरिगई १ दशरथजीसों हमसों मित्रताहै ताको साखी सबजगतहै तिनको

प्रेम प्रभुको राज्याभिषेककोरह्यताप्रेमको हम न प्रतिपालकियो कछु सहायता न करे अथवा श्रीदशरथके साथही प्राणनत्यागे जब इन राक्षसपति हरेलिहे जात में हठकरि जानकीजीको न राखिछोड़े २ हमारीदेह छूटनचाहतहै तासमय तापसवेष बनाये रघुवीरको देखन न पाये अरु जानकीजीकी खबरि विनासुनाये प्रभुको हमारे प्राणपांवर चलनचाहतहैं ३ याहीप्रकार गीधराज हाथमींजि शिर धुनि पछितातहै गोसाईंजी कहत कि ताहीस-मय विषे कृपाके आलय दोऊभाई आइगये यहपद नाटक के अनुकूलहै यथा ॥ नमैत्रीनि०यूंढादशरथनृपेराज्यविषया नवैदेही त्राताहठहरणतोराक्षसपतेः ॥ नरामस्यास्येन्दुर्नयनविषयोभूत्सु कृतिनोजटायोर्जन्मेदंवितथमभवद्भाग्यरहितम् ४ ॥

मू० । राघोगीधगोदकरिलीन्हो ॥ नैनसरोजसनेहस लिलशुचिमनहुंअर्घजलदीन्हो १ सुनहुलषणखगपति हिमिलेवनमैंपितुमरणनजान्यो ॥ सहिनसक्योसोकठिन बिधाताबड़ोपक्षअजुभान्यो २ बहुविधिरामकह्योतनराख नपरमधीरनाहिंडोल्यो ॥ रोकिप्रेमअवलोकिवदनविधु वचनमनोहरबोल्यो ३ तुलसीप्रभुझूठेजीवनलगिसम यनधोखेलैहौं ॥ जाकोनामभरतमुनिदुर्लभतुमहिंकहां पुनिपैहौं ४ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी गीधराजकोगोदीमें करिलियो प्रभुकेनेत्र कमलनते सनेहसलिलआंसूगिरे मानोंआधीतिलांजुलि देचुके १ प्रभु कहत कि हे लक्ष्मणजी वनमें गीधराजके मिलिबेते मोको पिताको मरण भूलिगयो ताको कठिन विधाता सहि न सक्यो आजहमारो बड़ाभारी पक्षतोरिडारो २ गीधसों प्रभुबहुत भांति ते देहराखिवेको कहे पर धैर्य्यमान गीधने मनको नहीं डोलायो प्रेमकोरोकि प्रभुकोमुखचन्द्र निहारिमनोहरवचन बोलतोभयो ३ गीधराज बोले कि संसारमें जीबोझूंठाहै आखिर एकदिन मरना

है ताते झूंठे जीवेअर्थ या समयको मरनाछांड़ि और समयको मरिबो मैं धोखेते न लेउँगो काहेते जाको नामलेबो मरतबार मुनिनको दुर्लभहै ते मेरे आगेहो फिरि तुमको कहां पैहों ४॥

मू०। नीकेकैजानतरामहियोहौ॥ प्रणतपालसेवककृपालुचितपितुपटतरहिंदियोहौ १ त्रिजगयोनिगतगीधजन्मभरिखाइकुजंतुजियोहौ॥ महाराजसुकृतीसमाजसबऊपरआजुकियोहौ २ श्रवणवचनमुखनामरूपचखरामउछंगलियोहौ॥ तुलसीमोहिंसमानबड़भागीकोकहिसकतबियोहौ ३॥

टी०। गीधराज कहत कि मैं प्रभुको स्वभाव हृदयतेनीकी प्रकारते जानतहौं कैसेहैं प्रभु प्रणतकहे दुखियाके पालनहार हैं औ सेवकपरकृपालुहै चित्त जिनको काहेते हमको पिताकेतुल्य माने १ कैसा मैंहौं त्रिजगयोनिमें गतकहे उत्पन्नभयों गीधजाति जन्मभरि कुजन्तु मलीनजीव खाय जीवत जग में रहेहौं त्यहि मोसों अधमको सुकृतिनकी समाजमें सर्वोपरि महाराज रघुनाथ जी आज मोको कियोहै २ काहेते श्रवणनते प्रभुके वचन सुनतहौं मुखते प्रभुको नामलेतहौं नेत्रनते रूपदेखत तापै प्रभुमोको गोदलिहे हैं गीधकहत कि मो समान बड़भागी बियो कहीं दूसर संसार में को कहिसकतहै ३॥

मू०। मेरेजानताततकछुदिनजीजै॥ देखियेआपुसुवनसेवासुखमोहिंपितुकोसुखदीजै १ दिव्यदेहइच्छाजीवनजगविधिसनाइमांगिलीजै॥ हरिहरसुयशसुनायदरशदैलोगकृतारथकीजै २ देखिवदनसुनिवचनअमियतनुरामनैनजलभीजै॥ बोल्योविहँगविहँसिरघुवरबलिकहौस्वभावपतीजै ३ मेरेमरिबेसमनचारिफलहोहिंतौक्योंन

कहीजै ॥ तुलसीप्रभुदियउतरुमौनही परिमानोप्रेम सहीजै ४ ॥

टी०। श्रीरघुनाथजीकहत गृध्रराजसों हे तात मेरी जान आपु कछुकदिन जीवन जगमें राखिये पुत्रकी सेवाकोसुख आपु हमसे लीजिये पिताको सुख आपु हमको दीजिये १ जो कहौ कि गृध्र देह अधमहै तो दिव्यदेहलीजै जो कहौ जगमेंजीवन झूठाहै तो इच्छापूर्वक जीवनजीजै कहौ जन्मभरि हिंसा करो है सो कर्म विधाता के यहां लिखोहै ताकोफल दुःखदेवेअर्थ विधाता क्रोधित है सो विधाताको मनाइके कहे प्रसन्न देखि तब हमसों मांगि लीजै भाव आपके अशुभकर्म नाशह्वैगये ताते विधाता प्रसन्न है जो कहो हम संसार में क्याकरैं ताके हेतु प्रभुकहत हैं कि हरि हरको सुयश सुनाय अपने दर्शन दै जग में लोगन को कृतार्थ कीजिये २ श्रीरघुनाथजीको मुख देखि वचनामृत सुनि प्रभुके नेत्रन के जलसों अपनोगात भीजोजानि श्रीरघुनाथजीसों गृध्र हँसिकै बोल्यो हे प्रभु तुम्हारी बलिहारीहै मैं सहजस्वभाव कहतहौं ताको मानलीजै ३ गृध्र कहत कि हमारे सरिखे सम चारिफल आजु नहीं हैं कदाचित् होहिं तौ कहिये गोसाईंजी कहत कि ता वचननको जवाब प्रभु मौनही दियो चुपाइ रहे मानों प्रेम बाग्विलासमें प्रभु मौनरहे ताते अपनी पराजयकरि गृध्रराजकी जय प्रभुको सहिवेको परी ४ ॥

मू०। मेरोसुनियोतातसँदेशो ॥ सियाहरणजनिकहे उपितासोंह्वैहैअधिकअँदेशो १ रावरपुण्यप्रतापअनल महँअल्पदिननरिपुदहिहौं ॥ कुलसमेतसुरसभादशान नसमाचारसबकहिहौं २ सुनिप्रभुवचनराखिउरमूरति चरणकमलशिरनाई ॥ चल्योनभसुनतराभकलकीरति अरुनिजभाग्यबड़ाई ३ पितुज्योंगृध्रक्रियाकरिरघुपति

अपनेधामपठायो ॥ ऐसेप्रभुविसारितुलसीशठतूचाहत सुखपायो ४ ॥

टी०। हे तात मेरोसंदेशा सुनिये जानकीजीको हरण पिता सों जनि कहियो काहेते एकतो हमारा अंदेशा हई है यह हाल सुने अधिक अंदेशा होइगो १ आपके पुण्यके प्रतापरूपी अग्निमें थोरही दिनमें शत्रु रावण भस्म होइगो तब कुलसहित रावण देवनकी सभामें समाचारकहैगो २ ऐसे वचन सुनि प्रभुकीमूर्ति उरमें आनि चरणकमलनमें माथ नवाइ प्रभुकी सुन्दर कीर्त्ति गुणत अपने भाग्यको बड़ाई करत आकाशमार्ग से गृध्रराज चल्यो ३ पिताकी समान क्रिया रघुनाथजीकरि गृध्रको दिव्यदेह धारणकराय अपने धामको पठाइ दियो गोसांईजी कहत हे शठ मन ऐसे प्रभुको विसारि तू सुख चाहतहै ४ ॥

मू०। शबरीसोइउठीफरकतवामविलोचनबाहु ॥ शकुनसोहावनसूचितमुनिमनअगमउछाहु १ मुनिअगम उरआनन्दलोचनसजलतनुपुलकावली ॥ तृणपर्णशाल बनाइजलभरिकलशफलचाहनचली २ मंजुलमनोरथ करतसुमिरतविप्रवरबाणीभली ॥ ज्योंकल्पबेलिसकेलि सुकृतसुफूलफूलीसुखफली ३ प्राणप्रियपाहुनेऐहैंराम लषणमेरेआजु ॥ जानतजनजियकीमृदुचितरामगरीब नेवाजु ४ मृदुचितगरीबनेवाजआजविराजिहैंगृहआइ कै ॥ ब्रह्मादिशंकरगौरिपूजितपूजिहौंअबजाइकै ५ लहि नाथहोरघुनाथबानो पतितपावनपाइकै ॥ दुहुँओरलाहु अघाइतुलसीतीसरेगुणगाइकै ६ ॥

टी०। प्रभातकाल शबरी के उठतेही वामनेत्र भुज फरकन लगे ताको हेतु मुनिनके मनको आगम प्रभुको दरशहोनहारहै ता

हेतु स्वहावने शकुन होत सो सूचित करत कि प्रभु आवत हैं १ मुनिनको जो आगम सो आनन्द शबरी के उरमेंहै ताते नेत्रन में जलभराहै प्रेमतेपुलकितगात तृणपत्रनकीशाला बहारि लीपिकै बनाइ राखी है तामें कलश में जलभरि धरि आपु फल लेबेको चलती भई २ विप्र मतंग ऋषिकी वाणी को स्मरणकरि मनमें मञ्जुल उज्ज्वलमनोरथकरतहै यथा कल्पलता सब सुकृतिन को बटोरि सुन्दर फूलनसहित सुखरूपी फलन को फली है शबरी कल्पलता सुन्दर मनोरथ फूल प्रभुदर्शन फल ३ अब मनोरथ कहतहैं प्राणनते प्रिय पाहुने श्रीराम लषण आजु मेरे धाम आवहिंगे तो मैं काह पहुनईकरिहौं ताको सन्तोष रामगरीबनेवाज कोमलचित्त जनके उरकी गति के जाननहार हैं ४ तेई कोमल चित्त गरीबनेवाज रघुनाथजी मेरे धाममें विराजमान होइँगे ते कैसेहैं ब्रह्मादि शङ्कर पार्वतीके पूजनीय तिनको अब मैं जायकै पूजिहौं ५ अब एक तौ मैं पतित प्रभुको पतित पावन बाना पाइकै दुहूँओर ते अघायकै लाभु लेउँगी गोसाईजी कहत तीसरे गुणानुवाद गानकरिकै हमहुँ अघायकै लाभुलेब ६ ॥

मू० । दोनारुचिररचेपूरण कंदमूलफलफूल ॥ अनुपमअमियहुतेअंबकअवलोकतअनुकूल ७ अनुकूलअंबकअंबज्योंनिजडिंभहितसबआनिकै ॥ सुन्दरसनेहसुधासहशजनुसरसराखेसानिकै ८ क्षणभवनक्षणबाहरविलोकतपंथभ्रूपरपानिकै ॥ द्वौभाइआयेशबरिकाकेप्रेमप्रणपहिचानिकै ९ श्रवणहिंसुनीचलीआवतदेखिलषणरघुराउ ॥ शिथिलसनेहकहैसपनोविधिकैधौंसतिभाउ १० सतिभाउकैसपनोनिहारिकुमारकोशलरायके ॥ गहेचरणजेअघहरणनतजनुवचनमानसकायके ११ लघु

भाग्यभाजनउदधिउमँग्योलाभसुखचितचायके ॥ सोज ननिज्योंआदरीसानुजरासभूखेभायके १२ ॥

टी० । सुन्दर दोना बनाय तिनमें कन्दमूल फल फूल आदि सों पूर्णकही भरिलिये कैसेहैं फल अनूप हैं जासें अमृतहूते अधिक स्वादु अरु अम्बक कहे नेत्रन देखन अरु अनुकूल कहे प्रिय लागत हैं नेत्रनके देखबे में सुन्दर ऐसे फल प्रीतिसों शबरीधरे यथा अम्ब जो है माता डिंभ कहे पुत्रहेत यथा माता सब वस्तु लावत ताही भावते शबरी फलधरे जे सुधाते हजारन गुण स्वाद सुन्दर सनेहमें हैं ते सनेहके रसते सानिकै मानों धरेहैं ७।८ क्षण भरि भवनमें बैठत क्षणभरेपर द्वारपरआइ भ्रूकहे भौंह तापर हाथ लगाइ पंथको निहारत कि प्रभु आवत कि नहीं क्षणभवन क्षण द्वारपर प्रभु मिलिबे की आतुरता ताको नेहीजन जानत ताशबरी को प्रेम प्रण पहिचानि दोऊ भाई आवतेभये भौंहपर हाथ लगाये दूरितक देखत ९ प्रभुको आगमन श्रवणते सुनतेही शबरी चली आगे श्रीरघुनंदन लषणलालको देखतीभई कि आवतहैं तब शबरी सनेहते शिथिल ह्वैकै कहति है हे विधाता प्रभुको आगमन सांचु है या स्वप्नो है १० स्वप्न या सांचुहै यह विचार करतेही कोशलरावके कुमारन को देखिकै चरणारविन्द गहतीभई कैसेहैं चरण नत कही शरणागतह्वैकै अघ वचन मन कर्म के हरैलेतहैं ११ ते चरणपाइकै शबरी विचारत कि मेरी भाग्यको पात्र छोटाहै अरु लाभके सुखको चित्तमें आनन्दको समुद्र उमँगो यथा माता बालकनको तथा शबरी रघुनाथजीको लक्ष्मणजी सहित आदरकियो ताको प्रभु अंगीकार कियो काहेते प्रभु भावके भूखेहैं १२ ॥

मू० । प्रेमपटपांवरेदेतसुअर्घविलोचनवारि ॥ आश्रमलैदियोआसनपंकजपाँयपखारि १३ पदपंकजातपखारिपूजेपंथश्रमविरहितभये ॥ फलफूलअंकुरमूलधरेसुधा

रिभरिदोनानये १४ प्रभुखातपुलकितगातस्वादसराहि आदरजनुजये ॥ फलचारिहूंफलचारिदेतप्रचारिफलश बरीदये १५ सुमनवर्षिहर्षिसुरमुनिमुदितसराहिसिहात॥ केहिरुचिकेहिक्षुधासानुजमांगिमांगिप्रभुखात १६ प्रभु खातमाँगतदेतशबरी रामभोगीयागके ॥ बालकसुमित्रा कौशलाके पाहुनेफलसागके १७ पुलकतप्रशंसतसिद्ध शिवसनकादिभाजनभागके ॥ सुनिसमुझितुलसीजानि रामहिंवशअमलअनुरागके १८ ॥

टी० । प्रेमरूपीवसन ताकेपांवड़ेदेत त्रिविकहे दोलोचनके ज-लकोअर्घ्यदेत आश्रममेंलाइआसनदियो पदपंकजधोये १३ पद पंकजधोय षोड़शोपचार पूजाकरतीभई ताते पंथचलिबेको परि-श्रम प्रभुको विशेषरहितभयो तब नवीनदोनन में फलफूलअंकुर मूलादिभरिकैदेतभई १४ प्रेमतेपुलकितगातते स्वादसराहिके प्रभु खातहैं फलनकीप्रशंसानहीं है आदरको जायेकही उत्पन्न करत हैं मूलांकुर फूलफल चारिभांतिके शबरी दये ते कैसे चारिभांतिके फलहैं अर्थ धर्म - काम मोक्ष तिनको ललकारिदेत अभिप्राय अर्थ कही द्रव्यकी वृद्धिसों शबरीको सत्संगरूप मूलते सन्तोष है ताते अचाहरूप द्रव्यसों अर्थको ललकारिदियो धर्म सत्य शौच तप दानादिसों शबरी प्रभुमें प्रीतिरूप अंकुरसों धर्मकोललका-रिदियो कामकहे कामना अरु ताको प्रयोजन पुत्रकी प्राप्तिसो शबरी वात्सल्यरसकी वासनारूप फूलनसों शबरी प्रभुको सेवत ताते कामफलको ललकारिदेत मोक्ष ज्ञानफलको रससम भ-क्ति सो शबरी मुक्तिको ललकारिदये १५ फूलवर्षि देव मुनि हर्ष सहित प्रशंसाकरत सिहात कहे ललचात कि कौनीक्षुधाते कौ-नीरुचिते लक्ष्मणसहित प्रभु फलमांगिमांगि खातहैं १६ योग यज्ञ उत्तम भागके भोगी प्रभु मांगिमांगिखात शबरी भावसहित

देत सुमित्रा कौशल्याकेपुत्र उत्तमपदार्थ के खानेवाले ते शवरीको मातासममानि पाहुनहै सागकही कन्दमूलखातहैं १७ तिनको देखि सिद्धजन शिव सनकादिक जे भाग्यके पात्र तेऊ प्रेमते पुलकांग है शबरीकीप्रशंसाकरतहैं काहेते प्रभुकेवचनसुनि ताको अभिप्राय समुझिकै गोसांईजी कहत कि सिद्धजन यह विचारत कि श्रीरघुनन्दनजी एक निर्मल अनुरागके वशहैं अनुरागकही जामें नेत्र रँगेरहैं दूसरा न देखिपरै सो अमलहै १८ ॥

मू० । रघुवरअचैउठेशबरीकरिप्रणामकरजोरि ॥ हौ बलिबलिगईपुरईमंजुमनोरथमोरि १९ पुरईमनोरथ स्वारथहुपरमारथहुपूरणकरी ॥ अघअवगुणकीठीकरी करिकृपामुदमंगलभरी २० तापसकिरातिनिकोलमृदु मूरतिमनोहरचितधरी ॥ शिरनाइआयसुपायगवनीपर मनिधिपालेपरी २१ सीयसुधिसबकहीनखशिखनिर खिनिरखिद्वौभाइ ॥ दैदैप्रदक्षिणाकरतप्रणामनप्रेम अघाइ २२ अतिप्रेममानसराखिरामहिंरामधामहिंसो गई ॥ तेहिमातुज्योंरघुनाथअपनेहाथजलअंजलिदई २३ तुलसीभणितशवरीप्रणतिरघुवरप्रकृतिकरुणामई ॥ गावतसुनतसमुझतभगतिहियहोयप्रभुपदनितनई २४ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी अचैकैउठे तब शवरी हाथजोरिप्रणाम करि कहत होकही मैं बलिगई काहेते मेरा मंजु कहे उज्ज्वल मनोरथ पूरण करो १९ ऐसे कृपालुहौ हे प्रभु मेरो स्वार्थ परमार्थ दोऊपूरणकरयो काहेते पाप अरु अवगुणकी मैं ठिकरी तामें मुद मंगलअपुभरिदियो कृपाकरिकै २० तासमय में मनोहरमूर्त्ति प्रभुकी कोमलताको तापस किरातिनी कोल सब हृदयमें धारण करतीभई परमनिधि भक्ति पालेपरीकही प्राप्तिहैकै प्रभुकी आ-

ज्ञापाइ मोथनताइ गवनी कही परमधामको जातीभई २१ श्री-
जानकीजीकी खबरिबताइ नखशिखलौं दोऊभाइनको निहारि
प्रदक्षिणा दैदै प्रणाम करते प्रेमते मन नहीं अघात २२ अति
प्रेमसों मनमानस राखि रामहिं अत्यन्त प्रेमसों रघुनाथजी को
हृदयमें राखि प्रभुके धामको शबरी जाती भई ताको माताकी
समान रघुनाथजी अपने हाथते तिलांजलि देतेभये २३ तुलसी
की भणित ताको गावत शबरीकी प्रणति कहे गरीबी ताको सुनत
प्रभुकीकरुणामयी प्रकृतिकही स्वभाव ताको जो प्राणी समुझत
तिनके विषे भक्ति प्रभुपदमें प्रीति नितनई होई २४ ॥

सवैया ॥

मुकुटाद्भुतपत्रप्रसून जटाक्षसरोजशुभास्यशुभ्रारसटी ।
वपुषाम्बुदसेश्रमसीकरणीपटपीतिपुरीवरतंकनटी ॥
करमार्गनकार्मुकसंयुतकै पुरटेनहतार्थाग्वितैकपटी ।
उरवैजसुनाथसदैववसौ रघुनन्दसियाछविपंचवटी ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभशरणविर
चिते सियवरगीतावल्यांमणिदीपिकाटीकायामा
रण्यकाण्डंसंपूर्णम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

गीतावलीसटीक ॥

किष्किन्धाकाण्ड ॥

इलोक ॥ बभूवुःपुलकांगाश्चयस्यदृष्ट्वामृगादयः ॥ श्रीरामस्यास्योषधीशं भजेहंतंचकोरवत् १ ॥

मू० । भूषणवसनविलोकतसियके ॥ प्रेमविवशमनकंपपुलकतनुनीरजनयननीरभरेपियके १ सकुचतकहतसमुझिउरउमँगतशीलसनेहसगुणगनतियके ॥ स्वामिदशालखिलषणसखाकपि पघिलेहैंमांटआंचमानोंघियके २ शोचतहानिमानिमनगुणिगुणिगयेविघटिफूलसकलसुकियके ॥ वरण्योजाम्बवंततेहिअवसरवचनविवेकवीररसबियके ३ धीरवीरसुनिसमुझिपरस्परबलउपायउघटतनिजहियके ॥ तुलसिदासयहसमउकहेकविलागतनिपटनिठुरजड़जियके ४ ॥

टी० । ऋष्यमूकपर्वतपर सुग्रीव श्रीजानकीजीके भूषण वस्त्रादिदियो तिनको विलोकि उद्दीपनकारि विरह ते प्रभुको मन विशेष प्रेमके वशभयो तनुमें कम्पभई प्रेमसों पुलकि कमलसे नेत्र जलभरिआयो १ तिय जो श्रीजानकीजीहैं तिनको शील सनेह सहित गुणनकोगण समुझि कहिवेको उरमें उमँगतहै परंतु संकोच ते नहींकहतहैं ऐसी दशा श्रीरघुनाथजीकीदेखि लक्ष्मणजी सुग्रीव अपरवानर ऋक्षादि ते सब कैसे प्रेमते उमँगे यथा आंचलागे घृतके

मटुकापर्यंपिलवहैं तैसे सब समाज विकलहै नेत्रनते जलकीधारा बहनेलगी इहां वियोग श्रृंगाररसते करुणारसकी प्रबलताई देखि वीररसकी सहायता जानिये सो आगे जाम्बवन्तके वचन में प्रसिद्धहै २ वियोगकी हानि मानि करुणारससों शोचवश वारंवार मनमें हानिको गुणत बिसूरि बिसूरि करुणारस सिंधुमें मग्नभये तेहिते निसरिबे हेतु उपाय ढूंढ़त सो नहीं मिलत काहेते सुकिय कहीं सुकृतफल सब निघटि कहीं बीतिगये इहां प्रारब्ध को प्रबलमाने तहां जाम्बवंत तेहि विद्यमानकर्मनको बली ठहराय तेहि अवसर विषे विवेकमयी वीररसके उत्पन्न करनहारे बीजके समान वचन जाम्बवंतजी धीर्यधरि वर्णनकरे भाव सबको धैर्य्यदै कहे कि शोचत्यागि याको उपाय बांधिये ३ जाम्बवन्तके वचन सुनि मनमें समुझिकै धैर्य्यवान् जो सब समाज हैं अथवा धीरवीर श्रीरघुवीर सुनि निज उरते बलको उपाय उघटे कही प्रकटे सो सुनि सब समाजके वीर अपने अपने हृदयते प्रकटे अथवा जाम्बवन्तके वचन सुनि सब धैर्यवान् वीरभये तब अपने २ हृदयते बलको उपाय प्रकट कहन लगे सो समय की जो व्यवस्था रही सो नहीं कहत बनत गोसाईंजी कहत कि ता समय की जो दशा वर्णनकरें सो निपटके जी से निठुर लागत है ताते नहीं कहत बन्यो ४ ॥

मू० । प्रभुकपिनायकबोलिकह्योहै ॥ वर्षागईशरद ऋतुआईअबलौंनहिंसियसोधुलह्योहै १ जाकारणतजि लोकलाजतनुराखिवियोगसह्योहै ॥ ताकोतौकपिराज आजुलगिकछुनकाजनिबह्योहै २ सुनिसुग्रीवसभीतन मितमुखउत्तरुदेनचह्योहै ॥ आइगयेहरियूथदेखिउरपूरि प्रमोदरह्योहै ३ पठयेबादिबदिअवधिदशहुंदिशिचले बलसबनगहयोहै ॥ तुलसीसियलगिभवदधिमानोफिरि हरिचहतमह्यो है ४ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी सुग्रीव को बुलाइ कहते भये कि वर्षा ऋतु बीतिगई शरद ऋतुआई अरु अब ताँई श्रीजानकी जी की खबरि नहीं लियो १ जिन जानकीजी के कारण जगमें लोककी लाजतजि देहराखिकै वियोग सहे हे कपिराज ताको कार्य्य आजु लगि नहीं निवहो नहीं भयो २ ऐसे वचन सुनि सुग्रीव सभीत कहे उरकरिकै मुख नमित कहे नवाइलियो कछु जवाब देवेकी चाह नाहीं करयो भाव अपनी गाफिलियतको कसूरसाखि चुपाय रहे ताही अवसर में हरि कही वानरनके यूथ आइगये तिनको देखि आनन्दते हृदय भरिरहा है अभिप्राय यह कि वानरन में यूथपती बलवान् चतुर समूह हैं अरु वार्त्ता करतेही पहुंचे तो ज-ल्दी कार्य्य होइगो ३ तिन वानरनको सुग्रीव अवधि कहे अवादा मास दिवस को बदि बदि दशौं दिशाको पठाये ते चले सब बल गहे कही मनमें प्रभुकार्य करिवेको व्रतराखे हैं गोसाईंजी कहत कि वानरन को चलिवो नहींहै मानों जानकीजीके अर्थ भवलिधि कहे संसार सिंधु ताको फिरि प्रभु मथो कही मथा चाहतहैं ४ ॥

छन्द ॥

मेदुरतोयधरैतड़ितासर दर्शितलोपसहृष्टिघसण्डा ।
वस्यसहर्षनिनादितनृत्यतभूधरशृंगकलापशिखण्डा ॥
बाणविलससुपत्रनसालसुचाहतसोधसियारिपुखण्डा ।
वैलसुनाथसदारघुनन्दन वासप्रवर्षणशैलअखण्डा ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभशरणवि-रचितोसियवरगीतावल्यांमणिदीपिकाटीकायांकि-ष्किन्धाकाण्डंसंपूर्णम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

गीतावलीसटीक ॥

सुन्दरकाण्ड ॥

श्लोक। पवनननीलनलांगदऋक्षपप्रमुखसंस्तुत आहतरावणिः।
विनजोवनिजावनसुक्षमोवतुसदैवभवाम्बुधिभीतितः १ ॥

मू०। रजायसुरामकोजवपायो ॥ मालमेलिमुद्रिका मुदितमनपवनपूतशिरनायो १ भालुनाथनलनीलसाथ चलेबलीबालिकोजायो ॥ फरकिसुअंगभयेशकुनकहत मानोंमगमुदमंगलछायो २ देखिविवरसुधिपाइगीधसों सबनअपनबलमायो ॥ सुमिरिरामतकितड़कितोयनिधि लंकलूकसोआयो ३ खोजतघरघरजनुदरिद्रमणिफिरत लागिधनुधायो ॥ तुलसीसियविलोकिपुलक्योतनुभूरि भागभयोभायो ४ ॥

टी०। श्रीरघुनाथजीकी आज्ञापाय हनुमान्जी आनन्दमन ते मुद्रिकाकोगाल में धारणकरिप्रभुकोमाथ नवावतेभये १ जाम्बवंत नलनील बालिको जायोअंगद इत्यादि बलीवीर सबसाथचलते भये तिनके सुअंगदक्षिण अंगफरके अपरशकुनमंगलीकभये तिनको विचारि सबपरस्परकहतकि मानों आनन्दमंगलराहमें छाइ रहाहै २ सब वीर जलहेतु विवरमें प्रवेशकरे तहां विष्णुकी माया जो नारदजीको मोहितकरे सोई भगवतीअपराध मिटाइवे हेतु तपस्याकरतरहै सो कपिनतेसुनि प्रभुके दर्शनकरि पावनभई तासों वार्त्ताकरिसिंधुतीरसंपातितेखबरिपाइ सब वानरलंकाजानेको अपनोबलसाथकहीतौलो पारजानेकी शक्तिकाहूकी पूरि ना उतरी

ता अवसर जाम्बवंतके कहेपर हनुमान्‌जी श्रीरघुनाथजीकोमाथ नवाइप्रभुको स्मरणकरिकै तकिकै समुद्रफांदि लूक कहे यथा आकाशमें ताराचलते तैसे लंकाको हनुमान्‌जी गये ३ इत्यर्थः तहां लंकाविषे पैठिकैहनुमान्‌जी श्रीजानकीजीको कैसे ढूंढ़त जैसेमणि अरु धन पाइवेहेतु दरिद्रीढूंढ़त धावाधावा फिरत विकल गोसाईं जी कहत कि श्रीजानकीजी को देखि तन पुलक्यो कि मनको भावतोभयो ताते अपनीभाग्यको हनुमान्‌जी बहुतमान्यो ४ ॥

मू० । देखीजानकीजबजाय ॥ परमधीरसमीरसुतके प्रेमउरनसमाय १ कृशशरीरसुभायशोभितलगीउड़िउड़िधूलि। मनहुंमनसिजमोहनीमणिगईभोरेभूलि २ रटतिनिशिवासरनिरन्तररामराजिवनैन ॥ जातनिकटन विरहिनीचरिअकनिताते बैन ३ नाथकेगुणगायकहि कपिदईमुँदरीडारि ॥ कथासुनिउठिलईकरवररुचिरनामनिहारि ४ हरषहृदयविषादअतिपतिमुद्रिकापहिचानि । दासतुलसीदशासोकेहिभांतिकहैबखानि ५ ॥

टी० । श्रीजानकीजी को जब देख्यो जाइ ता समय धैर्यवान् जो श्रीहनुमान्‌जी तिनके हृदयमें करुणासमूहकरि प्रेम नहीं समात ताते नेत्रद्वारा आंसूपतितहोनलगे १ श्रीजानकीजी सहज हीमें शोभायमान हैं तिनके कृशकही दुर्बलदेह विषे उड़ि उड़ि धूरिलागिगईहै सो कैसे देखि परत मानों कामदेव की मोहनी मणिहै ताको भोरे कही भ्रमते भूलिगयो है सोई है २ राजीव कमल नयन जो रघुनाथजी तिनको नाम दिनराति रटती हैं निरन्तरकही यामें अन्तरनहीं परत ताही रटनिकी गरमबानी अकनिकही सुनिकै विरहिनीअरि त्रिविधपवन सो श्रीजानकी जीके निकट नहीं जात डेरात कि भस्म ह्वैजाब इहां सुख की विपरीतता वर्णनहै ३ नाथ श्रीरघुनाथ के गुणगानकरि कहिकै

हनुमान्‌जी मुद्रिकाकोडारिदई ता कथाकोसुनिउठिकै श्रीजानकीजी करवरकहे श्रेष्ठ हाथ में लेके देखतीभई श्रीरामोजयति इति सुन्दर नामअंकितनिहारि ४ पतिकी मुद्रिका पहिचानि ताके मिलिवेको हर्ष इहां कौन भांतिआई यह विषाद अत्यन्त हृदयमें भयो गोसाईंजी कहत कि ता समयकीदशा कौनिभांति ते बखानिकै कहौं ५ ॥

मू० । बोलुबलिसुंदरीकुशलकोशलपाल ॥ अमियबचनसुनायमेटहिविरहज्वालाजाल १ कहतहितअपमानमैंकियोहोतहियसोइशाल ॥ रोषक्षमिसुधिकरतकबहूंललितलक्ष्मणलाल २ परस्परपतिदेवरहिकाहोतचरचाचाल ॥ देविकहुकेहिहेतुबोलेविपुलवानरभाल ३ शीलनिधिसमरथसुसाहिबदीनबंधुदयाल ॥ दासतुलसीप्रभुहिकाहुनकह्योमेरोहाल ४ ॥

टी० । श्रीजानकीजी बूझती हैं हे सुंदरीबोलु अनुज सहित कोशलपाल कुशलहैं अमृतमय वचनसुनाय हमारेउरके विरह अग्निके ज्वालनके जाल समूह तिनको मेटहि मिटाइदे १ हमारे हितके वचन कहत में लषणलालको मैं अपमान कीन्हों ताको सुमिरि हमारे हृदयमें शाल होतहै तेहिरोषको क्षमाकरिकै ललित लषणलाल कबहूं हमारी सुरतिकरतहैं २ पति श्रीरघुनाथजी देवर श्रीलक्ष्मणजी तिनते आपसमेंकौने चालकीचरचा होतहै हेदेवि बहुत वानरभालु काहेकेहेतु बुलाये हैं इहांमुद्रिका डारतमें हनुमान्‌जीप्रभुके गुणगानकहेतामें वानरनको बोलावब सुनि पूंछे ३ शीलनिधिप्रभु सबलायक समरथहैं सुसाहिब कही सबके सुखदाता दीनबन्धु दुखितपै दयाहै परन्तु मेरोहाल प्रभु ते काहूने नहींकहो कि रावण जबराई हरिलेगयो ४ ॥

मू० । सदलसलषणहैंकुशलकृपालकोशलराउ ॥ शी

लसदनसनेहसागरसहजसरलसुभाउ १ नींदभखनदेव रहिपरिहरेकोपछिताउ ॥ धीरधुररघुवीरकोनहिंसपनेहू चितचाउ २ सोधबिनुअनुरोधरिपुकोबोधविहितउपाउ ॥ करतहैसोइसमयसाधनफलतिबनतिबनाउ ३ पठैकपि दिशिदशहुजेप्रभुकाजकुटिलनकाउ ॥ बोलिलियेहनुमा नकरिसन्मानजानिसमाउ ४ दईहौसंकेतकहिकुशलात सियहिसुनाउ ॥ देखिदुर्गविशेषिजानकिजानिरिपुगति आउ ५ कियोसोइप्रसुबोधसुंदरीदियोकपिहिलखाउ ॥ पाइअवसरनाइशिरतुलसीशगुणगणगाउ ६ ॥

टी०। श्रीजानकीजीसों मुद्रिका कहत कि शीलकेमंदिर सनेह केसमुद्रसहजमें सरलस्वभाव जिनको ऐसे कृपालु कोशलराव रघुनाथजी साहित कपिदल साहितलक्ष्मण कुशलहैं १ रोष की कैसीवार्ताहै लषणलालको तुम्हारे छांड़िबेको पछितावहै ताते न दिनको भूख न रात्रीको नींदहै अरु धैर्य्य धुरी के धारक जो रघुवीरहैं तिनको तुम बिन स्वप्नेहु विषे चित्तमें चाउकहीआनंद नहींहै २ रिपुको बोधकही युद्ध करि जीतिलेना सो सोधकही खबरि बिनापाये रिपुके बोधको अवरोधकही रोकरहा विहित कही वर्त्तमानमें रिपुके बोधको जो उपायहै ताहीसमयकेसाधन की कर्त्तव्यता तेहिको सोई जो वानर रीछहैं ते करतहैं तिनको बनाव बनतेही कही खबरि तुम्हारी पावतेही फलत कही रिपु को बोधहोतही है यामें वानरसों विहित पद्से वर्त्तमान काल भयो ता हेतु फलतकहा ताको अर्थ रिपुको बोध होतहै लंका भस्मेति निश्चय ३ दशहूदिशिके वानरनको पठायेहैं जे प्रभु के कार्य करिबेमें कुटिल कोऊनहीं हैं तिनमें ते समयकही कार्य करिवेलायक जानि हनुमान्‌जीको आदरसहित प्रभुबोलायलि यो ४ संकेतकही एकांतमें हमको देकै प्रभुकह्यो कि जानकीजी

को कुशलता सुनाय कोटको देखि विशेष करिकै जानकी जी को देखि रिपुकी गतिकोजानि भाव पराक्रम फौज कैसी है सो देखि लौटिआउ ५ इत्यादि वचनकहि मुद्रिकाने श्रीजानकी जी को प्रबोधकरि हनुमान्‌जी को दिखाय दियो सोई अवसर पाइ माथनवाइ तुलसीकेईश श्रीरघुनाथजी केगुणनकेगण गानकरनेलगे ६॥

मू० । सुवनसमीरकोधीरधुरीनवीरबड़ोइ ॥ देखिगतिसियमुद्रिकाकीबालज्यों दियोरोइ १ अकनिकटुवाणीकुटिलकीक्रोधविन्ध्यबढ़ोइ ॥ सकुचिसमभयोईशआयसुकलशभवजियजोइ २ बुद्धिबलसाहसपराक्रमअछतराखेगोइ ॥ सकलसाजसमाजसाधकसमखकहसबको इ ३ उतरितरुतेनमतपदसकुचातशोचतसोइ ॥ चुकेअवसरमनहुंसुजनहिंसुजनसनमुखहोइ ४ कहेवचनविनीतप्रीतिप्रतीतिनीतिनिचोइ॥ सीयसुनिहनुमानजान्योभलीभांतिभलोइ ५ देखिबिनकरतूतिकहिबोजानिहैलघुलोइ ॥ कहोगोमुखकीसमरसरिकालिकारिखधोइ ६ करतनहिंकछुबनतहरिहियहर्षशोकसमोइ ॥ कहतमंनतुलसीशलंकाकरहुसघनघमोइ ७॥

टी० । यद्यपि श्रीहनुमान्‌जी धीरजकीधुरी के उठावनहार बड़े वीरहैं परन्तु श्री जानकीजी की अरु मुद्रिकाकी गति देखि यथा बालक रोइदियो १ कुटिल रावणकी कही कटुवाणीसुनि श्रीहनुमान्‌जी के उरमें क्रोधरूप बिंध्याचलबढ़ो परन्तु ईश रघुनाथ जी की आज्ञा रूप अगस्त्य विचारि कि हमको रावण के मारिबे की आज्ञानहीं है ताते सकुचिकै सम भयो यथा बिंध्याचल बाढ़त में गुरु अगस्त्य को देखि सकुचि थोरा रहिगयो तथा हनुमान्‌जी को क्रोध प्रभुआज्ञा विचारिसकुचि थोराभयो २ बुद्धिबल निश्शंकता

पराक्रम सब वर्त्तमान हैं परन्तु इनको हनुमान्जी छिपाइ राखे काहे ते सब कोऊ यह कहत है कि जैसी समयकी समाज होइ तैसे साधक होबेको चाही यह विचारि हनुमान् जी बुद्धि के बल ते साहस पराक्रम को छिपाइ राखे ३ सकुच सहित शोक करत वृक्षते उतरि हनुमान्जी श्रीजानकीजी के चरण कमलन को नमस्कार करे कौनी प्रकार यथा अवसर पर सज्जन को कार्य सज्जन चूकिजाइ ताके मिलिबे को संकोच लागत है ४ हे मातु यह विनीत वचन है मुद्रिका मैं लायों यह प्रीति वचन है तुमको प्रभु सहिदानी दियोहै यह प्रतीति वचन है अरु नीति को निचोइ के वचन आगे कहत जो कालिह कारिख धोइ कहौंगो हनुमान् जी के वचन सुनि जानकीजी भलीभांतिते भलाकरि जान्यो ५ तहां नीतिको निचोइ कहत कि हेदेवि विनाकरतूति किहे कहेसबलोग लघुकरि जानि हैं ताते समर रूपी नदीमें अपने मुख की स्याही धोइ के कालिह आपुते कहौंगो ६ जानकीजी के मिलिबे को हर्ष दुःख की दशा देखि कै शोक ताते हरि हनुमान्जी ते कछु हृदय में करतनहीं बनत तब तुलसीश हनुमान्जी मनमें यह कहत कि लंका को ऐसा चौपट करौं जामें सघन बसोय जामें घमोइ बाढ़े नगर उजारि होत ७ ॥

मू० । हौंरघुवंशमणिकोदूत ॥ मातुमानुप्रतीतिजानकिजानुमारुतपूत १ मैंसुनीबातैंअसैलीकहिजेनिश्चर नीच ॥ क्योंनमारैगालबैठोकालदाढ़नबीच २ निदरिअरिरघुवीरबललैजाउंजोहठिआजु ॥ डरौंआयसुभंगतेअरु बिगरिहैसुरकाजु ३ बांधिवारिधिसाधिरिपुदिनचारिमें दोउवीर ॥ मिलहिंगेकपिभालुदल सँगजननिउरधरु धीर ४ चित्रकूटकथाकुशलकहिशीशनायोकीश ॥ सुहृदसेवकनाथकोलखिदई अचलअशीश ५ भयेशीतल

श्रवणतनमनसुनेवचनपियूख ॥ दासतुलसीरहीनयन
नदरशहीकीभूख ६ ॥

टी० । मैं रघुवंशमणिको दूतहौं अरु पवनको पुत्रहौं हे मातु जानकी मेरी बातकी प्रतीतिमान १ नीच निशाचर रावण जो असैलीकही विषयकी आशालिहे दुष्टताकी बातैं कही हैं सो सब मैं सुनीहैं कालकी दाढ़नके बीचमें बैठो है तौ काहे न गालमारै भाव कालकेवशहै ताको सन्निपात चढ़ा ताते ऐसीबात काहे न कहै २ श्रीरघुनाथजी के बलते अरि रावणको निदरिकही जीति कै आजु हठि करिकै तुमको मैं लैजाउँ तौ प्रभुके आयसुभंग को डेरात कि प्रभुकी आज्ञा यहिबातकी नहीं है अरु दूसरे देवतन को कार्य रावणको परिवार सहित नाशहोना सो बिगरिजाइगो ३ रिपुको साधिकही फोरुकराय विभीषणको मिलाय चारि दिनकहे अल्पदिननमें समुद्र विषे सेतुरचि कपिभालुदलसंयुक्त दोउ भाई आइ मिलहिंगे ताते हे जननी धैर्य्य को धारण करु इहां चारिदिन कहिवे में दूसरा अभिप्राय है अगहनशुक्लद्वादशी को हनुमान्‌जी श्रीजानकीजी ते वार्त्ताकरत अरु पौषशुक्लत्रयोदशीको सेतुबांधि तैयारभयो तामें एकमासको अन्तर है तहां एकमासमें एक दिन चारिबार बीतत ताते चारिदिनकहे रिपुको साधव एकतौ विभीषणको मिलावब दूसर समुद्रलंकाको प्रथम फाटक है ताको टूटिजाबो समुद्रपार प्रभुको आइबे की खबरि मिलिबो सोईकपि सैन्यसहित प्रभुको मिलिबो श्रीजानकीजीको है सोई अभिप्रायते श्रीहनुमान्‌जी को कहिबो श्रीजानकी प्रति है ४ चित्रकूटकीकथा इंद्रके पुत्र जयन्तकी तुम्हारे विरोधते कैसी दशा प्रभुकरी जो देवराजकोपुत्रहै तहां और दुष्टनकी कौन हकीकतिहै अरु कुशल प्रभुकी कहि हनुमान्‌जीसाथनवाये सुहृदमित्र वर्गसहित श्रीरघुनाथजीको सेवक देखिहनुमान्‌जीको श्रीजानकीजी अचलअशीषदई कि तुम्हारीप्रीति प्रभुमेंअचलरहै ५ श्रीजानकीजी के अमृतमय वचनसुनि हनुमान्‌जी श्रवण ते मनतनते

शीतलभये ते सब आशाभरोसाछाँडि एकनेत्रनमें श्रीरामजानकी के दरशकी भूखरहगई अथवा हनुमानजी के असीवचन सुनि श्रीजानकीजी शीतलभई विरहताप जातीरही केवल नेत्रनमें प्रभुके दर्शनकी भूखरहिगई ६ ॥

सू०। ताततोहूसोंकहतहोतिहियेग्लानि ॥ मनको प्रथमप्रणसमुझिअछततरलाखिनइगईगतिभइमतिमलानि १ पियकोवचनपरिहरेउजियकेभरोसेसंगचलीवनबडोलाभजानि ॥ पीतमविरहतौसनेहसरबससुतअवसर कोचूकिबोसरिसनहानि २ आरजसुवनकेतोदयादुवनहु परमोहिंशोचतोतेसबविधिनशानि ॥ आपनीभलाईभलो कियोनाथसबहीकोमेरेहीअदिनवशविसरीबानि ३ नेम तोपपीहाहीकेप्रेमप्यारीमीनहीकेतुलसीकहीहै नीकेहृदय आनि ॥ इतनीकहीसोकहीसियाज्योंकीत्योंहीरहीप्रीति परसहीविधिसोंनबसानि ४ ॥

टी०। हे तात तोहूसों बातकहत हमारे हृदय में ग्लानिहोत काहेते प्रथमको अपनो प्रण समुझि कि प्रभु बिना हमारेप्राण न रहैंगे सोई अछतकही तनुकेरहे नईगति प्रीतमको वियोगभयो तनु बनोरहो यह गतिदेखि हमारीमति मलिनभई ताको समुझि ग्लानि आवतहै १ प्रभुको यह वचन कि तुम अयोध्यामेंरहो ताको परित्यागकरि जियको भरोसाराखि कि संगगयेहमारेप्राण रहैंगे घररहे प्राण न रहैंगे यह जियको भरोसाजानि प्रभुकेसंग आई कि प्रभुकेसंग वनमें बड़ोलाभहै यहजानि तहां लोगकुटुम्ब छांड़ि सर्व सनेह प्रीतमको जाने तिनके वियोगकी विरह भई तेहि अवसर प्राणछांड़िदेवो उचितरहा सोनहींभयो ताअवसर के चूकिवे समान आनहानि नहींहै दूसरी २ आरजकही बड़ेको

ऐसे बड़े राजा दशरथके पुत्र तिनकी दयातौ दुवनकही शत्रुता करत ताहूको वधकरि सुन्दरगति देत अरु मैंतौ शरणागत हौं मेरी तो सब क्षमहि करैंगे सोको यह शोच है कि मोते सब विधिते नशानीहै प्रथम आज्ञाभंगकरि वनमें संगआई दूसरे हितके वचन कहतमें लषणलाल को कटुवाणी कही तीसरे वियोग में तनुराखि छोड़े तहां प्रभु अपनी भलाईते सबको भलोकीन्हे हैं परंतु मेरे अदिनहैं ताहीते प्रभुने अपनी बानिकहे स्वभावको विसारि दियो ३ नियमतौ एक पपीहाकेहै कि घन कितकहूँ निरादरकरै परंतु पपीहा नियम को नहीं छांड़त अरु प्रेम एक प्यारी मीनही के है जलके बिलगातही प्राण छांड़त यह बात नीकी भांति ते श्रीजानकीजी हृदयमें आनिके कहती भई इतनी बात कहि सियाजी ज्यों की त्यों रहगई भाव प्रीतितो सही पर यथा चित्रसी लिखी रहि गई परन्तु विधितो कही जैसी मरजी प्रभुकी होत तैसी विधाता करावत तामें किसीको उपाय नहीं ४ ॥

मू०। मातुकाहेकोकहतअतिवचनदीन ॥ तबकीतुही जानतअबकीहौंहींकहतसबकेजियकीजानतप्रभुप्रवीन १ ऐसेतोशोचहिंन्याय निठुरनायकरतशलभकुरंगखगकमलमीन ॥ करुणानिधानकोतौज्योंज्योंतनुक्षीणभयो त्यों त्योंमनभयेतेरेप्रेमपीन २ सियाकोसनेहरघुवरकीदशासुनिरिपवनपूतदेखिप्रीतलीन ॥ तुलसीजनकजननिहुंप्रबोधकियेसमुझितातजगविधिअधीन ३ ॥

टी०। हनुमानजी कहत हे मातु अत्यन्त दीन वचन काहे को कहती हो प्रभुकी प्रीति तुमविषे जैसी रहै तबकी तुमहीं जानत हौ अबकी प्रीति हम कहतहैं औ प्रभुतौ प्रवीण सबके जीकी गति जानत तौ तुम्हारे दुःखसमुझि काहेन दुःखितहोइँ १ जैसा तुम शोच करती हौ तैसा तो शोच उइकरैं जे निठुर न्यायनायक विपेरत होइँ यथा शलभको दीपशिखा कुरंगको गान खगपपीहाको

स्वाती के मेघ कमल को सूर्य मीनको जल इत्यादि निठुरन्याय नायक हैं अरु करुणानिधान रघुनन्दन के तो ज्यों ज्यों तनुक्षीण कहीं दुर्बल होत त्यों त्यों तुम्हारे प्रेम में पीनकही पुष्टता होत २ श्रीजानकीजीको नेह अरु रघुनाथजीकी दशा सुमिरि हनुमान्‌जी प्रीति में लीन भयो दुःखित भयो देखि श्रीजानकीजी ने हनुमान्‌जीको समुझायो कि हे तात जगत् विधि के अधीन है ३ ॥

मू०। रागजैतश्री ॥ कहौंकपिकबरघुनाथकृपाकरि हैंनिजवियोगसम्भवदुख ॥ राजिवनयननमयनअनेकछ विरघुकुलकुमुदसुखदमयंकमुख १ विरहअनलसहायस समीरनिजतनुजरिबेकहँरहीनकछुशक ॥ अतिवलजल वरषतदोलोचन दिनअरुरयनिरहतएकहितक २ सुदृढ़ ज्ञानअवलंबसुनहुंसुत राखिप्राणविचारिदहनमत ॥ श कुनरूपलीलाविलाससुखसुमिरनकरतरहतअन्तरगत ३ सुनहनुमन्तअनन्तबंधुकरुणास्वभाउ सुशीलकोमलअ ति ॥ तुलसिदासयहत्रासजानिजियबरुदुखसहौंप्रकटन कहिसकति ४ ॥

टी०। हे कपि श्रीरघुनाथजी कब कृपा करिकै अपनो वियोग को सम्भव कहीं उत्पन्न जो दुःख ताको हरिहैं कैसे हैं प्रभु कमल सम जिनके नेत्र तनमें अनेकन कन्दर्प की शोभा रविकुल कुमुद के हित प्रकाशक सुखदायक जिनको मुख सुन्दर चन्द्रमा है १ अपनी श्वास पवन की सहायताते विरहरूप अग्निमें तनुके जारिवेमें कछु सन्देह नहींरहै परन्तु दिनराति यकतारते दोऊ नेत्र प्रबल कहीं समूह जलधार वर्षत ते विरह अगिन बुझाय देत ताते तन जारिबे नहीं पावत २ सुदृढ़ ज्ञानकहे दुःख सुख तो देह को धर्महै आत्मा सदा एकरस है ताते दुःखहू की नाश है सुखहू की

नाशहै ताको सोचुमानि दुःखमें अधीर्य ह्वै तनुको भस्म करि देना अज्ञानमतहै ताते हे पुत्र सुन्दर ज्ञानके अवलम्ब करि धैर्य्य धारणाकरि विचारबलते दहनमत अज्ञानको खण्डनकरि प्रधान को राखतहौं अथवा प्रभु शरणपाल दयालु जाको अपन्यावत ताको त्यागत नहीं तौ हमको क्यों न मिलहिंगे यह सुन्दर दृढ़ ज्ञानको अवलम्ब बिचार बलते दहनमत देहको भस्मकरिदेना ताको रोकि प्राणनको राखतहौं विचार यह कि प्रभु फिरि मिलहिंगे अरु शकुन कही सुन्दर दिव्यगुणनसहित जो प्रभुको नाम रूप लीलाधाम तिनको अन्तर्गत कहे मन चित्त बुद्धि अहंकार इत्यादि अन्तःकरणमें स्मरण करतरहतहौं भाव प्रभुको नाम अनेकन पतितन को पावन करतहै ताको अहंकार अन्तःकरणमें सुमिरत लीलाको जो विलास ताको बुद्धि अन्तःकरणमें सुमिरण रूप जोहै ताके अंगअंगकी माधुरी चित्तमें स्मरण करत धामको जो सुख ताको मन अन्तःकरणमें सुमिरण करत ३ हे हनुमन्त अनन्त जो लक्ष्मणजी तिनके बन्धु श्रीरघुनाथजी को करुणामयी स्वभावहै यथाकवितावल्यां॥ तौलौं न दापदल्यो दशकन्धर जौलौं विभीषणलातनमारे ॥ अरुसुशीलहैं ॥ यथाभगवद्गुणदर्पणे ॥ शोणितोत्सिक्तसर्वाङ्गंकृच्छ्रादंचजटायुषम् । अङ्कमारोप्यपप्रच्छसंचस्कारमृतंनृपः ॥ अरु अत्यन्त कोमल हैं प्रभु ताते श्री जानकीजी कहत कि प्रभुको करुणामय स्वभाव सुशील कोमल समुझि तेहि त्रासकरिकै बरु दुःख सहत अरु प्रकट कहि नहीं सकतहौं कि जब तुम कहिहौ तब प्रभु बड़े दुःखमें परहिंगे यहि त्रासते नहीं कहतहौं ४ ॥

मू० । रागकेदार ॥ कबहुंककपिराघवआवहिंगे ॥ मेरे नैनचकोरप्रीतिवशराकाशशिमुखदेखरावहिंगे १ मधुपमरालमोरचातकह्वैलोचनबहुप्रकारधावहिंगे ॥ अंगअंगछविभिन्नभिन्नसुखनिरखिनिरखितहँतहँछावहिंगे २

विरहअग्निजरिरहीलताज्योंकृपादृष्टिजलपलुहावहिंगे ॥ निजवियोगदुखजानिदयानिधि मधुरवचनकहिसमुझावहिंगे ३ लोकपालसुरनागमनुजसबपरेबन्दिकबमुकतावहिंगे ॥ रावणवधरघुनाथविमलयश नारदादिमुनियशगावहिंगे ४ यहअभिलाषरैनिदिनमेरेराज्यविभीषणकबपावहिंगे ॥ तुलसिदासप्रभुमोहजनितभ्रमभेदबुद्धिकबबिसरावहिंगे ५ ॥

टी०। हे कपि कबहूं श्रीरघुनाथजी इहां आवहिंगे हमारे नेत्र चकोर जो प्रीति के वशहैं तिनको राका पूर्णमासी के चन्द्रसों सुख देखावहिंगे १ सो छबिदेखि हमारे नेत्र बहुत प्रकारके रूपह्वै धावहिंगे अरु अंग अंगपर छवि भिन्न भिन्न अपनो सम्बन्धी सुखदेखि तहां छावहिंगे सो कहत मधुपकहे भ्रमरह्वै पद कर नेत्र मुखकमल जानि धाइ वासकरहिंगे नाभी सरोवर श्रमसीकर मुक्ताजानि मरालह्वै वासकरहिंगे वाणी गर्जनि पीताम्बर दामिनि जानि मोरह्वै छावहिंगे श्यामतनु मेघजानि चातकह्वै कब धावहिंगे २ विरहकी दावानलसे लताकी समान जरिरह्यो है ताको कृपा की दृष्टिरूपी जलसींचि पलुहावहिं कहे हरितकरहिंगे अपने वियोगको दुःख जानि कृपाकेनिधि रघुनन्दन मधुर वचन कहि काहि समुझावहिंगे ३ लोकपाल सब औ स्वर्गवासी देवता पातालवासी नाग मर्त्यलोकवासी मनुष्य ते सब रावणके बंदीखानेमें परे हैं तिनको कब छुड़ावहिंगे सेन परिवारसहित रावणको वध तेहिको सुन्दर यश रघुनाथजीको विमलकही जेहिमें कोई मलिन कर्त्तव्यता नहीं है ऐसो विमलयश नारदआदि मुनिजन गावहिंगे ४ यह अभिलाष हमारेरातिदिनहै कि विभीषण लंकाकोराज्य कबपावहिंगे इत्यादि पूर्वाभिलाष दशाहै श्रीजानकीजी कहती हैं कि हमारे मोहकरिकै जनितकहे उत्पन्न जो भ्रम कनकमृगको अथवा मारीचको लक्ष्मण

कोहेवा असुको भ्रमभई भेदबुद्धि से लक्ष्मणजीको दुर्वचनकहे ताको प्रभु कब बिसरावहिंगे ५ ॥

मू०। सत्यवचन सुनुमातुजानकी ॥ जनकेदुखरघुनाथदुखितअति सहजप्रकृतिकरुणानिधानकी १ तुववियोगसम्भवदारुणदुखबिसरिगई महिमासुबानकी ॥ नतकहुं कहुँ रघुपतिशायकरवि तमअनीककहँयातुधानकी २ कहँहमपशुशाखामृगचंचलबातकहौं मैंविद्यमानकी ॥ कहँहरिशिवअजपूज्यज्ञानघन नहिंबिसरतवहलगनिबानकी ३ तुवदर्शनसंदेशसुनिहरिकी बहुतभई अवलंबप्रानकी ॥ तुलसिदासगुणसुमिरिरामके प्रेमाबिवशनहिंसुधिअपानकी ४ ॥

टी०। हे मातु जानकी हमारे सत्य वचनन्नको सुनो श्रीरघुनाथजी करुणानिधानहैं जिनको सहजहीमें प्रकृति कहे स्वभावहै कि अपने जननके दुःखते आप अत्यन्त दुःखित होत हैं १ हे मातु तुम्हारे वियोग करिकै सम्भवकहे उत्पन्नजोहै दारुणदुःख तेहिते अपने बाणनकी महिमा ताको प्रभु बिसरिगये नाहींतो कहां रघुनाथजी के बाण सूर्यरूपी तिनकेआगे राक्षसनकी अनीकहे सेना अंधकार सम तिनको काहकीकतिहै २ काहेते बाणनकी महिमा बिसरी जानियतहै कहां हम शाखामृगवानर चञ्चलपशु तिनसों प्रीति करि सलाह करत सो विद्यमान जो हमारे ऊपर बीती है ताकी बात कहतहैं कहां तौ श्रीरघुनाथजी ब्रह्माविष्णु शिवके पूजनीय ज्ञानघन कहे पूर्णज्ञानमय स्वरूप परब्रह्म ते हमारे कान में लागि वार्त्ता करत सो कानकी लागनि हमको बिसरत नहीं है महिमा यथा ॥ विधिहरिहरपदबन्दतरेनू ॥ पुनः ॥ शिवविरञ्चिहरि जाकेसेवक। तत्रप्रमाणंवशिष्ठसंहितायां ॥ जयमत्स्याद्यसंख्येशावतारोद्भवकारण ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशादिसंसेव्यचरणाम्बुज १ पुनः

शिववाक्यंमहारामायणे ॥ अहंविधातागरुड़ध्वजश्चरामस्यबालेस मुपासकानाम् ॥ गुणाननंतान्कथितुंनशक्ताःसर्वेषुभूतेष्वपिपावना स्ते २ पुनः स्कन्दपुराणेविष्णुवाक्यम् ॥ नमोरामायविभवेतुभ्यंवि श्वैकसाक्षिणे ॥ नमोविश्वैकदेहायनमोविश्वातिगायते३ सत्त्वोपा धिरहंरामहृदयंतुपितामहः ॥ कण्ठस्तेनीलकण्ठोऽयंभ्रूमध्येचतवे श्वरः ४ ऐसी महिमा जिनकी वेदवेदांतप्रतिपाद्य ज्ञानसमूह पर- ब्रह्म श्रीराम ते अपने भक्तनपै करुणाकरि आपु दुःखितहोत ३ हनुमान्जी कहत हे श्रीजानकीजी तुम्हारे दर्शनके सन्देश सुनते प्रभुको बहुत प्राणनकी अवलम्बभई भाव अब होइगी इहां धीरज दृढ़ करवाइबे हेतु भूतकाल भविष्यकाल वर्तमान सो बोधकहे जब सुग्रीवते भेंटभई तब पट भूषणदै आपके दर्शनको सन्देश सुग्रीव सो सुनि प्रभुको प्राणनकी बहुत अवलम्बभई यह भूतकाल है अरु अब सन्देश सुनिके होइगी तामें विलम्ब नहीं यह भविष्य काल है गोसाईंजी कहत कि ता अवसरमें शीलसौहार्द करुणा आदि गुण प्रभुके सुमिरि श्रीहनुमान्जी प्रेमके वश भये ताते अपानकहे अपनी देह की सुधि नहीं ४ ॥

मू० । रागकान्हरा ॥ रावणजोपैरामरणरोखे ॥ को सहिसकैसुरासुरसमरथ विशिषकालदशननतेचोखे १ तपबलभुजबलकैसनेहबल शिवविरंचिनीकेविधितोखे ॥ सोफलराजसमाजसुवनजन आपननाशआपनेपोखे २ तुलापिनाकसाहनृपत्रिभुवन भटबटोरिसबकेबलजोखे ॥ परशुरामसेशूरशिरोमणि पलमेंभयेखेतकेसेधोखे ३ कालिहकिबातबालिकीसुधिकरि समुझहिताहितखोलिझ रोखे ॥ कहोकुमंत्रिनकोनमानिथेबड़ीहानिजियजानि त्रिदोखे ४ जासुप्रसादजन्मिजगपुरुषनसागरसजेखने

अरुसोखे तुलसिदाससोस्वामिनसूझ्योनयनशीशमंदिरकेसेमोखे ९ ॥

टी०। रावण प्रति श्रीहनुमान्जी के वचन हैं हे रावण तोपै जो श्रीराम रणमें रोपे भाव रोपकरहिंगे तब विशिख जो प्रभुके बाणहैं सो कालके दांतनते चोखेकही पैनेहैं तिनको देवता दैत्य ऐसाको समर्थहै जो सहिसकै भाव ऐसा कोऊनहीं है जो सहिसकै १ तपबलते अर्थात् शीशकाटि शिवको चढ़ायो अथवा भुजबलतेभ,व कैलास उठायो ताते अथवा तपको फल ब्रह्माको वरदान पायो अथवा विश्रवा अपनो पौत्र ताको पुत्रजानि सनेह कीन्हे ताके बलते इत्यादि शिवको अरु विरंचिको नीकी विधिते तोपे भाव प्रसन्नकरे तेहिको फल राजसमाज पुत्र सेवकपायो तेहि अपने पोपे परिवारको अपने हाथही नाशकिया चाहतहो २ साहुराजा जनकजी पिनाकधनुवको तराजूबनाय तीनिहूँलोकके योद्धनको बलबटोरिकै जोखिलियो भाव काहूको उठाया न उठा ताको प्रभुने सहजहीमें तोरडारे अरु परशुराम ऐसे शूरन में शिरोमणिते प्रभुके सामने पलमें खेतके ऐसे धोख ह्वैगये भाव देखिबेको परशुरामकी सामर्थ्य कुछ न रहगई ३ काल्हिकही थोरे दिनकी बातहै वालि ऐसावली जाके सन्मुख कोऊवीर नहीं होत अरु तुमहूँ छःमहीना कखरी में जाकी रहे तेहि बालिको एक बाण ते प्रभुनेमारे ताकी सुधिकरके झरोखाखोलि मोह अभिमान छांड़ि हृदयते विचारि देखहु का हितहै का अनहित मनते विचारो अरु कुमंत्रिनको कहा न मानिये काहेते यथा कफ पित्त वात तथा काम क्रोध लोभको त्रिदोषको सन्निपात ते कालकी वश हैं तिन मंत्रिनको वचन मानिबेते बड़ी तुम्हारी हानिहै यह जी में जानिये ४ जिन श्रीरघुनाथजी के प्रसादते जन्मलैकै पुरिखा वा पुरुषन ते प्रियव्रत सागर सजें उत्पन्न करे सगरके पुत्रने खने अगस्त्यजी ने सोखे गोसाईंजी कहत कि हनुमान्जी रावण सों कहत कि

ऐसे स्वामी रघुनाथजी तोको नहीं सूझिपरत तौ तेरे नेत्र शीश मंदिरकेसे झूठे झरोखे हैं ५ ॥

मू० । रागमारू ॥ जोहौंप्रभुआयसु लैचलतो ॥ तौयहि रिसतोहिंसहितदशाननयातुधानदलदलतो १ रावणसो रसराजसुभटरसरहितलंकखलखलतो ॥ करिपुटपाकना कनायकहित घनेघनेघरघलतो २ बडेसमाजलाजभाज नभयोबडोकाजबिनछलतो ॥ लंकनाथरघुनाथवैरतरुआ जुफैलिफुलिफलतो ३ कालकर्मदिगपालसकलजगजाल जासुकरतलतो ॥ तारिपुसोंपरभूमिरारिरणजीवनमरण सुथलतो४ देखीमैंदशकन्धसभासबमोतेकोउनसबलतो॥ तुलसी अरिखर आनिएकअबएतीगलानिनगलतो ५ ॥

टी० । रावण सों श्रीहनुमान्जी कहतहैं कि जो हम प्रभुकी आज्ञा युद्धकरिबेकी लैके चलेहोते तौ यही रिसमें हे दशानन तो को सहित यातुधान राक्षसनको दल ताको दलिडारतो कौनीभांति ताको रूपक आगे कहत १ रसराजकहे पारा जो मारिबेमें दुर्घट सो रावणको रसराज करतो अपरभटनको हरतार गंधकआदि रस करतो तिन सहित लंकारूप खरिल में खलतो कहे घोटतो पुटकहे अपरओषधी सुहागाआदि कणको मिलाय पाककहे फूंकि खाक करिदेतो कौने हेतु नाकनायक इन्द्र ताको महारोग नाश होवे हेतु घनेकही बहुते राक्षसनके घरघालतो नाश करतो २ विना प्रभुकी आज्ञा आजु जहां देव दानव यक्ष गन्धर्व सबहैं ताते बड़ी समाजहै तामें लाजके भाजन भये नाहीं तौ आजु विना छलके करे सन्मुखमें प्रचारि बड़ाकामकरतो हे लंकनाथ आजुप्रभुकेवैर करिबेको वृक्ष फैलि फूलि फरतो शत्रुको उपद्रवफैलब ताको पछिताव फुलबसजाय पायजावो फलहै ३ लव निमेष दण्ड दिनमास

वर्ष युग कल्पादि कालहैं शुभाशुभ कर्म करतव्यता कर्म हैं इन्द्र वरुण कुवेर यमादि दिग्पाल हैं इत्यादि सब संसार मायाजाल मोर तोर तामेंपरे सब जाके हाथमें हैं ऐसे जो श्रीराम हैं तिनके रिपु रावणसों परभूमि कहे शत्रुकीसभा विषे युद्ध करतो तौ जीवन मरिबो दुइउ सुफल रहैं ४ जो कहो परसभा विषे युद्ध कैसे बनतो ताके हेत कहत हे दशकण्ठ तुम्हारी सभामें हमते सबल कोऊ नहीं है यह हमदेखी है सब सभाकी एक अन्दाज लैलियो है जो युद्ध करिबेकी आज्ञा प्रभुकी पाइ आवते तौ रिपुकी अन्दाजपाय इतनी गलानि न करनेको परती ५ ॥

मू० । तौलौंमातुआपनीकेरहिबो ॥ जौलौंहौंल्यावौंरघुवीरहिदिनद्वै और दुसहदुखसहिबो १ सोखिकैखेतकैबांधिसेतुकरिउतरिबोउदधिनवोहितचहिबो ॥ प्रबलदनुजदलदलिपलआधमेंजीवतदुरितदशाननगहिबो २ वैरिवृन्दविधवावनितनकोदेखिबोवारिविलोचनवहिबो ॥ सनुजसैन्यसमेतस्वामिपद निरखिपरममुदमंगललहिबो ३ लंकदाहउरआनिमानिबोसांचरामसेवककोकहिबो ॥ तुलसीप्रभुसुरसुयशगाइहैंमिटिजैहैसकलशोचदवदहिबो ४॥

टी० । लङ्का भस्मकरि हनुमान् जा श्रीजानकीजी सों कहत हे मातु तवतक आपुको नीके रहिबोहै भाव दुःखसुख सहि शरीर को राखियो जबतक मैं श्रीरघुनाथजी को इहां लवाइ लावों तब तक दिनद्वै कहे थोरे दिनन को दुसहदुःखको सहिबो है १ समुद्र को सोखिकै वा खेत कही पाटिकै समरथ करिकै वा सेतुबांधिकै समुद्र को उतरिबोहै वोहित कहे जहाजको काम नहीं है प्रबल कही कठिनदल निशाचरन को आधेपलमें दलि नाशकरिकै दुरिता कहे पापरूप रावणको जीवतही पकरिलेब भाव डरिकै भागै तौ न

जाय पावहिगो २ वैरी शत्रु समूहनकी स्त्रीवृन्द विधवनको रोवत में नेत्रनसें जलकी धार वहिबो देखहुगी अरु अपनीसेना अरु अनुजसहित श्रीरघुनाथजी के चरणारविंदको निरखि मनमें मोद अरु नेत्रनते मंगल पावहुगी ३ लङ्काको भस्महोबो जानि ताको उर में आनि तब श्रीरामसेवक जो मैं हौं ताको कहा सांच मानिबो गोसाईंजी कहत कि प्रभुको सुयश देवगण गानकरिहैं दव कहे विरहाग्निको दहिबो अरु शोच सब मिटिजाई ४ ॥

मू० । कपिकेचलतसियकोमनगहवरिआयो ॥ पुलकिशिथिलभयोशरीरनीरनयननछायो १ कहनचह्यो संदेशनहिंकह्योपियकेजियकी जानिहदयदुसहदुःखदुराये ॥ देखिदशाव्याकुलहरीशग्रीषमकेपथिकज्योंधरणि तरणितायो २ मीचतेनीचलगीअमरता छलकोनकलको निरखिपरुषप्रेमपायो ॥ कैप्रबोधमातुप्रीतिसोंप्रभुअसी षदीन्हीहैहैतिहारोईभायो ३ करुणाकोपलाजभयभर्यो कियोगौनमौनहीचरणकमलशीशनायो ॥ यहसनेहस रबससमौतुलसीरसनारूखीताहीतेपरतगायो ४ ॥

टी० । हनुमान्जी के चलत में श्रीजानकीजी को मन गहर कही करुणाते भरि आयो प्रेमते पुलकित है देह शिथिल भई नेत्रन में जलछाइ रह्यो १ अपनेदुःखकी बात कहिबे को इरादा कियो परंतु प्रभुके जीकी कोमलता जानि कि हमारे दुःख सुनि प्रभु कोमलते अधिक दुःखित होहिंगे यह समुझि नहीं कह्यो अपनो दुसह दुःख अपने हृदय में दुराय राख्यो सो जानकीजी की दशा विरहकी देखि हरीश जे हनुमान्जी ते व्याकुल हैगये कैसे यथा ग्रीष्म ऋतुमें तपायेते सूर्य भूमि तपिजाति तापर चलत पथिक व्याकुल होत तैसे विरह सूर्य श्रीजानकीजी को मन तनुभूमितलपर प्रेमपथिकहनुमान्जीको मनव्याकुलभयो २ मीचु

मृत्युते अमरता अपनी हनुमान्जी को नीचकही तुच्छलगी भाव इहि अवसर में जीवेते मरिवो अच्छा काहेते इहां छलते काम चलै न वलते काम चलै इहि थल बिषे छल बल नहिं चलिसकत ताको विचारि हनुमान्जी अपने प्रेमको परुषकहे कठोरकरि पाये भाव मृत्युन भई तो प्रेम झूँठाहै मातु जानकी हनुमान्जी को प्रबोध कीन्ह अरु प्रीतिपूर्वक मनते आशीषदियो कि हे पुत्र तुम्हारे मनको भायो जोहै सोई होइगो ३ श्रीजानकीजी की दशा देखि ताते करुणा भरे रावणकी कुटिलवाणी सुने ताते कोपभरे विना शत्रुको नाशकरे लौटे ताते लाजविना प्रभुआज्ञा लङ्काजराये ताते भय कही डरसेभरे श्रीजानकीजी के चरण कमलको शीशनवाइ मौनही गमन कियो तनकरि मनकरि वचनकरि सर्वसु सनेह में है ताके गाइबे को तुलसीकी रसना रूखी है अर्थात् दास भावते गावत बनत है जो सरस होती अर्थात् रसिक होते तौ यह समय गावत न बनतो-यथा ॥ अञ्चल ओटभये सजनी लघुमीन ज्यों वारि विना दहिये इत्यादि ४ ॥

मू० । रागवसंत ॥ रघुपतिदेखोआयोहनुमंत ॥ लंके शनगरखेलोवसंत १ श्रीरामराजहितसुदिनशोधि ॥ साथीप्रबोधिलांध्योपयोधि २ सियपांइपूजिआशिषापाय ॥ फलअमीसरिसखायोअघाय ३ काननदलहोरीरचिबनाय ॥ हठितेलवसनबालधिबँधाय ४ दियेढोलचलेसँगलोगलागि । बरजोरिदईचहुंओरआगि ५ आवत आहुति कियोयातुधान ॥ लखिलपटिभभरिभागेविमान ६ नभत लकौतुकलंकाविलाप ॥ परिणामपचहिपातकीपाप ७ ॥

टी० । श्रीलक्ष्मणजी किष्किन्धा नगरगये तहां ते हाल पाय कहतेहैं हे रघुनाथजी देखो हनुमान् लंकामें वसन्त खेलिकैआयो १ श्रीरामराज्य के हित सुन्दर दिन शोधि साथी अंगदादिकन को

प्रबोध करि पयोधि जो समुद्र ताको नांघिगयो २ तहां अशोक वाटिका में श्रीजानकीजी के पांइपूजि आशीष पाय रावण की फुलवारी में अमीसम फल अघायके खायो ३ तेहि वनको उजारि होरी रची बनायकै हठि करिकै तेल बोरे पट बालधि जो पूँछ तामें बँधाय लियो ४ निशाचर लोग साथ लागे ढोल बजावत चले पूँछ में आगि जरत सोई आगि बरजोर कहे जबरदस्ती चारिहूं ओर लंकामें आगि लगाइदियो ५ तहां आहुति के आखत जब ब्रह्मा आदि निशाचरनको करि बरत आगिमें बहायदिये तेहि अग्निके लपट झपट में आकाश के विमान भभरिकहे घवड़ाय भागे ६ विमान भागे सोई कौतुक लङ्काको विलाप को कौतुक नभ में देवता देखत पातकीजन परिणाम कहे अन्तमें अपने पापही में पचहिं कहे विलाइ जात सोई लङ्कामें वर्त्तमान है ७॥

मू०। हनुमानहांकसुनिबरषिफूल॥ सुरबारबारबरणहिं लँगूल ८ भरिभुवनसकलकल्याणधूम॥ पुरजारिवारिनिधिबोरिलूम ९ जानकीतोषिपोष्योप्रताप॥ जैपवनसुवन दलिदुवनदाप १० नाचहिंकूदहिंकपिकरिविनोद॥ पीवतमधुमधुवनमगनमोद ११ योंकहतलषणगहेपांयआय॥ मणिसहितमुदितभेंट्योउठाय १२ लगेसजनसैन्यभयोहियहुलास॥ जयजययशगावततुलसिदास १३॥

टी०। श्रीहनुमान्जी के गर्जबेकी हांकसुनि देवता फूलवर्षि बारबार लंगूरको उपमा दैदै वर्णन करत यथा कवितावल्यां॥ बालधी विशाल विकराल ज्वाल जाल मानों लंक लीलिबे को काल रसना पसारी है। कैधों व्योम विथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु वीर रसवीर तरवारिसी उघारी है। तुलसी सुरेश चापकैधौं दामिनी कलाप कैधौं चली मेरुते कृशानु सरिभारी है। देखे यातुधान यातुधानी अकुलानी कहैं कानन उजारो अब नगर प्रजारी है ८ सब लोकनको द्रोही रावणको नगर भस्महोबो संसार को

कल्याण रूप धूम्र भुवनमें भराहै पुरजो लङ्का ताको जारि हनुमान्‌जी वारिनिधि समुद्रमें लूम जो पूँछ ताको बोरिकहे बुझाइकै ९ प्रभुको प्रताप पोषे कहे पुष्टकरि लङ्कामें दिखायो तेहि करिकै श्रीजानकीजी को तोषे संतोषकरे दुवनजे शत्रुदुष्ट राक्षसन को दाप कहे दर्प अभिमान दलि पवन सुवन हनुमान्‌जी जयपायो १० अब यहि समयमें इहां आइ किलकारी मारि नाचत कूदत इत्यादि विनोद कहे क्रीड़ा सब कपि करिरहे हैं अरु आनन्द में मगन मधुवन में मधुपान करिरहे हैं मधु फलनको मकरंद अथवा फलन को रस अथवा शहद ११ यों ऐसे वचन लक्ष्मणजी कहे तेहिसाथ हनुमान्‌जी प्रभुको पांव गहेते हनुमान्‌जी को चूड़ामणि सहित प्रभु उठायके भेंटे १२ लंकाको सब हाल सुनि प्रभु हृदय में आनन्द उमंग सहित सेना सजै लागे तेहि यशको जय जयकार करि तुलसीदास गावतहैं १३ ॥

मू० । रागजैतश्री ॥ सुनहुरामविश्रामधामहरिजनकसुताअतिविपतिजैसेसहति ॥ हेसौमित्रिबंधुकरुणानिधिमनमहुरटतिप्रकटहुनहिंकहति १ निजपदजलजविलोकशोकरतनयननिवारिरहतनएकछन ॥ मनहुंनीलनीरजशशिसंभव रविवियोगह्वैस्रवतसुधाकन २ बहुराक्षसीसहिततरुकेतरतुम्हरेविरहानिजजन्मबिगोवत ॥ मनहुंदुष्टइंद्रियसंकटमहँबुद्धिविवेकउदयमगुजोवत ३ सुनिकपिवचनविचारिहृदयहरिअनपायनीसदासोएकमन ॥ तुलसिदासदुखसुखातीतहरिशोचकरतमानहुंप्राकृतजन ४

टी० । हे विश्रामधाम हरि श्रीरघुनाथजी जौनीभांति श्रीजानकीजी विपत्ति अत्यन्त सहती हैं ताको सुनहु हे सौमित्रिबंधु करुणानिधान जानकीजी आपुको नाम मन में रटती हैं अथवा हे सौमित्रिबंधु हे करुणानिधि हे दीनदयालु इत्यादि मनमें रटती

हैं अरु आपके वियोगकी जो विरह है ताको प्रकटमें नहीं कहती हैं १ नीचे को शीश किहे अपने पद कमलन को देखती हैं दुःख में रतहैं ताते नेत्रन सों जल एकहू क्षण बन्द नहीं रहत ते नेत्र दूनों मानों नील कमल सुख शशिमें संभवकहे उत्पन्न भये हैं सो रवि जो तुमहौ तिनके वियोगते नेत्र कमलन को दुःख है ताते अमृत के कणमोचत कहे छोंड़त हैं २ बहुत राक्षसिन सहित अशोक वृक्षतर आपुकी विरह में अपनो जन्म वितावती हैं कैसे मानों राक्षसी सोई दुष्टइन्द्रियहैं तिनके बीचमें जानकीजी बुद्धि हैं ते इंद्रिनकी विषय चाह दुःखते पीड़ित विवेक जो हौतुम ताको उदय भाव आइवेकी मार्ग देखती हैं ३ कपि हनुमान्‌जी के वचन सुनि हरि जो श्रीरघुनाथजी हृदय में अज्ञविचारे कि सो जानकी जी को मन अनपायनी जो अचलभक्ति तामें सदारत है गोसाईं जी कहत कि दुःख सुखते परे हरि रघुनाथजी कैसो शोच करत तथा प्राकृत संसारी जन अथवा भक्तके दुःख में प्रभु दुःखित ताते याहि समयको दुःख सुख ते परे है भाव जन्मभरेको सुख एकपल भरि दुःख तौलिये तो दुःख गरूलागै ४ ॥

मू०। रागकेदार ॥ रघुकुलतिलकवियोगतिहारे ॥ मैं देखीजबजायजानकीमनहुंविरहमूरतिमनमारे १ चित्रसे नयनअरुगढ़ेसे चरणकरमढ़ेसेश्रवणनहिंसुनातिपुकारे। रसनारटतिनामकरशिरचिररहै निजनिजपदकमलनिहारे २ दर्शनआशलालसामनमहँराखेप्रभुध्यानप्राणरखवारे ॥ तुलसिदासपूजतित्रिजटानीकेरावरेगुणगणसुमन सुधारे ३ ॥

टी०। रघुकुल तिलक तुम्हारे वियोग में दुःखित जानकीजी को जब मैं देखा कैसी देखिपरीं मानों विरहकी मूर्त्तिहैं सोऊ मन मारे उदासीन बैठीहैं १ नेत्रमानों चित्रकी प्रतिमा कैसे पलक

रहित हाथपद गढ़े ऐसे चेष्टारहित कान मानों मढ़े ऐसे जो धीरा को कहै गोहराये नहीं सुनती हैं रसना सों तुम्हारो नामरटती हैं कर जो हाथ ताको माथपै चिरकही बहुत वीचतक धरे रहत नेत्रनसों अपने पदकमल निहारि निहारि रहती हैं २ तुम्हारे दर्शनकी आश की लालसा मन में है ताते अपने प्राणन के रखवारे तुम्हारो ध्यान हृदयमें किहेरहती हैं ऐसी विरह कीसी मूर्त्ति श्रीजानकीजी को त्रिजटाराक्षसी तुम्हारे गुणके गणको सुन्दर फूल बनाय तिनहिनसों पूजन भाव तुम्हारे गुणनकेगण सुनाय प्रसन्न राखतिहै नीकी भांतितें ३ ॥

मू०। अतिहिअधिकदरशनकीआरति ॥ रामवियोगअशोकविटपतरसीयनिमेषकल्पसमटारति १ बारबारबरवारिजलोचनभरिभारिवरतवारिउरढारति ॥ मनहुँविरहकेसद्यघायहिय लखितकितकिधरिधीरजतारति २ तुलसिदासयद्यपिनिशिवासर क्षणक्षणप्रभुमूरतिहिनिहारति ॥ मिटतनदुसहतापतउतनुकी यहविचारिअन्तरगतिहारति ३ ॥

टी०। हे श्रीरघुनाथजी विना आपुके दर्शनभये जानकीजी अत्यन्त अधिक आर्त्त कहे दुःखितहैं हे रघुनन्दन तुम्हारे वियोगकरिके अशोक वृक्ष तरे जानकीजी पलकको कल्पसम बितावती हैं १ श्रेष्ठ कमलसे नेत्रन सों वरतकहे गरमवारि जो है जल बराबरि भरि भरि हृदयपर ढारती हैं आंसू मानों उरमें विरहके घाव सद्य कही तुरतके जानि तिनको तकि तकि धीरज धरि तारत कही गरम जलको छींटा दैदै धोवतीहैं २ गोसाईंजी कहत कि यद्यपि श्रीजानकीजी दिनराति ध्यानमें प्रभुकी मूर्त्ति को क्षण २ प्रति निहारति रहती हैं ताहूपर विरहकी ताप तन कही नहीं मिटत दुसह कहे जो सहि न जाय तहां सगुणरूप लीला सुख संयोगके

भोक्ता प्रत्यक्ष रूपदर्शन के सदा प्यासे हैं अरु ताही में आनन्द है तिनके वियोगके दुःखकेसामने अन्तरकी जो गतिहै ध्यानको जो सुख सो अपनो प्रभाव नहीं विस्तारि सकत ताते वियोग विरह दुःख को प्रबल विचारि अन्तरगतितौ ध्यानको सुखसों आपुही हारिजात है इहां प्रीतिकी लगन अंगवर्णन याकी उत्कण्ठा दृष्टि अभिलाष दशा है ३ ॥

मू० । तुम्हरेविरहभईगतिजौन ॥ चितदैसुनहुराम करुणानिधिजानहुंकछुपैसकौंकहिहौंन १ लोचननीरकृपणकेधनज्योंरहतनिरन्तरलोचनकौन ॥ हाधुनिखगीलाजपिंजरमहँराखिहियेबड़ेबधिकहठिमौन २ जेहिवाटिकाबसतितहँखगमृग तजितजिभजेपुरातनभौन ॥ श्वास सभीरभेंटभइभोरेहु तेहिमगुपगुनधरोतिहुंपौन ३ तुलसिदासप्रभुदशासियाकीमुखकरिकहतहोतअतिगौन ॥ दीजेदरशदूरिकीजैदुखहौतुमआरतिआरतदौन ४ ॥

टी० । हे करुणा निधान श्रीरघुनाथजी तुम्हारे वियोग विरह करिकै जो गति श्रीजानकीजीकी भइहै ताको चितदैके सुनहु काहे ते कछु जानत तौ मैंहौं परन्तु कहि नहीं सकतहौं ताते चित्तमें विचारिलीजै १ कैसी दशाहै नेत्रनको जल नेत्रनके कोनेमें सदाभरा रहत यथा कृपणकोधन तथा अरु हा धुनि हृदयमें खगीकहे लगी रहत कौन भांति तहां लाजरूपी पिंजरा में मौनरूपी बधिकने पक्षी सरीखे हा धुनिको हठि करिकै बंदकरि राखोहै ताते निकरन नहींपावतहैं २ जिहि वाटिकामें वास लिहे हैं तहां के पक्षी मृगा जानकीजी के विरहाग्निके ज्वालाको डरि डरि व्याकुलह्वै अपने पुराने स्थान छांड़ि भागि गये श्रीजानकीजी श्वासते पवनते भूलिहूं भेंटह्वैगई तहां सपनेहूं में जानकीजीकी तरफ शीतल मन्द सुगन्ध तीनिहूं पवन नहीं जातीहैं भाव श्वास हमको जराइदेइ-

गी-ताते पवनडरतहैं ३ हनुमान्जी कहत कि हे श्रीरघुनाथ जान-कीजीकी जो दशाहै सो कहत नहीं बनत काहेते सुख करिकै कहिये तौ गौनहोत भाव जो दुःखकी दशा उनकी है ताको कही तो सोई दशा हमारी होत तेहि करुणाकी प्रबल भयकरिकै हम कहि नहीं सकित दूसरकी गुनिआये गौनी लक्षणा कहावतहै ताते हे प्रभु अपनेदर्शनदीजिये अरुदुःखको दूरिकीजिये काहेते आरत दुःखित के आरति कहे दुःख ताके दवनकही नाशकरनहार आपुहौ ४ ॥

मू०। कपिकेसुनिकलकोमलबैन ॥ प्रेमपुलकिसबगातशिथिलभयोभरेसलिलसरसीरुहनैन १ सियवियोगसागरनागरमनुबूड़नलग्योसहितचितचैन ॥ लहीनावपवनजप्रसन्नताबरबसतहांगह्योगुणमैन २ सकतनबूझिकुशलबूझेबिनुगिराविपुलव्याकुलउरऐन ॥ ज्योंकुलीनशुचिसुमतिवियोगिनिसन्मुखसहैविरहशरपैन ३ धरिधरिधीरवीरकोशलपतिकियोयत्नसकेउतरनदैन ॥ तुलसिदासप्रभुसखाअनुजसोंसैनहिंकह्योचलहुसजिसैन ४ ॥

टी०। उक्ति युक्तिते कल है करुणारसभरे ताते कोमल ऐसे कलकहे सुन्दर कोमलकहे मधुरवचन कपि हनुमान्जी के सुनि श्रीरघुनाथजीको गात प्रेमसों पुलकि शिथिल है कमलसे नेत्रन में जलभरि आयो १ श्रीजानकीजी के वियोगरूपी समुद्र में प्रभु को मननागर कहे चतुर तेहि सहित चित्त की आनन्द बूड़नलग्यो तेहि अवसरमें पवनज जो हनुमान्जी तिनकी जानकीजीके देखि आइबेकी प्रसन्नतारूप जहाजपाये तहां संयोग सुखरूपी वासना रूपगुण कहे डोरी ताको कन्दर्पने बरबस जबरई गहिराख्यो मैन मनको खैंचै ताते बहिबे नहीं पायो २ प्रेमसों कण्ठारोधन ताते कुशल बूझि नहीं सकत अरु विना बूझे हृदयरूप मन्दिरमें बानी अत्यन्त व्याकुलहै कौनीभांतिसों कहत यथा कुलीनपवित्र मति

वाली वियोगिनी स्त्री विरहरूपी पैनेवाण सन्मुख सहै तथा प्रभु हृदयमें वाणी विकल है इहां पत्नीव्रत अनुकूल नायकत्व वर्णन करे ३ वीर कोशलपति धीरजधरि वचन कहिबेको अनेक यत्नकरे पर जवाब देते न बना तब सखा सुग्रीव अरु लक्ष्मणजी सों सैनहीं में प्रभु कहे कि सेना सजिकै चलहु ४ ॥

मू० । रागमारू ॥ जबरघुवीरपयानोकीन्हों ॥ क्षुभितसिंधुडगमगतमहीधरसजिशारँगकरलीन्हों १ सुनिकठोरटंकोरघोरअति चौंकेविधित्रिपुरारि ॥ जटापटलतेचलीसुरसरीसकतनशम्भुसँभारि २ भयेविकलदिगपालसकलभयभरेभुवनदशचारि ॥ खरभरलंकसशंकदशाननगर्भस्रवहिंअरिनारि ३ कटकटातभटभालुविकटमर्कटकरिकेहरिनाद ॥ कूदतकरिरघुनाथशपथउपरीउपरावदिवाद ४ गिरितरुधरनखकरालरदकालहुकरतविषाद ॥ चलेदशादिशिरिसिभरिधरुधरुकहिकोबराकमनुजाद ५ पवनपंगुपावकपतंगशशिदुरिगयेथकेविमान ॥ यांचितसुरनिमेषसुरनायकनयनभारअकुलान ६ गयेपूरिसरधूरिभूरिभयअगजगजलधिसमान ॥ नभनिशानहनुमानहांकसुनिसमुझतकोउनअपान ७ दिग्गजकमठकोलसहसाननधरतधरणिधरधीर ॥ वारहिंबारअमर्षतकर्षतकरकैबरीशरीर ८ चलीचमूचहुंओरशोरकछुबनैनवरणतभीर ॥ किलकिलातकसमसतकोलाहलहोतनीरनिधितीर ९ यातुधानपतिजानिकालवशमिलेविभीषणआइ ॥ शरणागतपालककृपालकियोतिलकलियोअपनाइ १० कौतकहीबारिधिबँधाइउतरेसुबेलतटजाइ ॥ तुलसिदासगढदेखिफिरेकपि प्रभुआगमनसुनाइ ११ ॥

टी० । जेहि समयमें श्रीरघुनाथजी लङ्काको प्रयानकरे ता अवसरमें बांधिवेकी भयकरिकै समुद्र सशंकित भयो पृथ्वी हालि उठी ताते पर्वत डगमगाइ उठे ताही समय शारँगधनुषको सजि कहे रोदाचढ़ाय हाथमें लेतेभये प्रभु १ रोदाखैंचि छांड़ि दियो तेहि टंकोरको कठोरघोर धुनि सुनिकै ब्रह्मा चौंकिपड़े अरु शिवजी के जटा पटलते गंगाजी बहिचलीं ताको शिवजी सँभारि नहींसकत२ सकल दिग्पाल विकलह्वैगये काहेते चौदहौं भुवन में भयकही डर भरि रहाहै लङ्कामें खरभरभई है रावण शंकायुत भयो निशा-चरनकी नारीगर्भको पतितभई ३ रीछ भट कटकटात दांतपीसत मर्कट वानर विकट कठिनभट सिंहकी समान गर्जत उपरीउपरा बढ़ी बढ़ा को वादकरि प्रभुकी शपथखाइ कूदत ४ पर्वत वृक्ष धारणकिहे करमें नख मुखमें दांत कराल देखि कालहू विषाद करत ते कोपके भरे वानर रीछ धरुधरु मारुमारु करत दशहूं दिशि को चले तिनके आगे तुच्छ राक्षस बिचारे क्या हैं ५ पवन को च-लिवो बन्द ह्वैगयो धूरिकी समूह ताते अग्नि रवि चन्द्रमा छिपाइ गये हाहाकार ते विमान थकितह्वै थँभिगये धूरिसों आंखीबंद ताते देवता पलक चलिवो चाहत धूरि भरिभई ताते इंद्र नेत्रन के भारते अकुलाइ उठे ६ सर तड़ाग धूरिते पूरि पटिगये भूरिकहे अनेकन अंग जे हैं पर्वतते पृथ्वीमें समाय गये ताते भूमि ते जल निकरि आयो ताते सब जलधिकी समान ह्वैगये आकाशते देवतन के वाजाको शब्द इहां हनुमान्‌जी की हांकमें आपन कहा का कि नहीं समुझिपरत ७ दिग्गज दिशि कुञ्जर कच्छप वाराह सहस्रवन शेषजी आदिते धीरज धरिधरि पृथ्वीको धारण करत लेकिन ... नहीं सहिसकत ताते अंगमें करिकै परीचोट खाइगये ताके अर्थ अमर्षि कहे रिसाइकै कर्षतकहे ललकारिकै अथवा कर्षतकहे खैंचिकै देह सीधी करत बराबरि ८ चमू कही सेना चलीं ताते चारिहूं दिशिते शोर मचिरहाहै जैसीभीरहै सो वर्णत नहीं बनत वानर किलकिलात कसमसत कहे एकमें एककी देह कसिगई

ताते समुद्रतीरमें कोलाहलशब्द ह्वैरहा है ९ राक्षसन को पति रावण सो कालकी वश जानि विभीषण प्रभुको मिलेआइ शरणागतपालु कृपालु रघुनाथजी लङ्काको राज्यदै तिलककरि अपना भक्तकरि मानिलया १० कौतुक तमाशामात्रमें समुद्र बांधि सेतु पारउतरि सुबेल के किनारे निवासकियो गोसाईंजी कहत कि वानर रीछ लंकागढ़ देखि प्रभु आगमन जनाय लंका तटते घूमें ११॥

मू० । रागआसावरी ॥ आयेदूतदेखिसुनिशोचशठ मनमें ॥ बाहिरबजावैंगालभालुकोपकालवश मोसेवीर सोंचहतजीत्योरारिरणमें १ रामछामलरिकालछनबालि बालकहिघालकोगनतरिच्छजलज्योंनघनमें ॥ काजको नकपिराजकायरकपिसमाजमेरेअनुमानहनुमानहरिगन में २ समयसयानीरानीमृदुबानीकहै पियपावकनहोहिं यातुधानवेणुवनमें ॥ तुलसीजानकीदियेस्वामीसोंसनेह कियेकुशलनतरुसबह्वैहैंछारछिनमें ३ ॥

टी० । अब रावणको हालकहत रावणकेदूत प्रभुकी सेना देखि आइ हाल कहे सो सुनि शठ रावणके मनमें शोचहै परन्तु बाहरते गालबजावत कि देखो वानर भालु कालके वश हैं जो हम ऐसे वीरको रणमें युद्धकरि जीति चाहत हैं १ राम छाम दुबैल हैं लक्ष्मणलरिकाहैं बालिको बालक कुलघालकहै रिच्छ जाम्बवान् यथा विनाजलको मेघ तथा बलकरि खाली गनतहौं सुग्रीव कछु काजको नहीं वानरसमाज सबकादरहैं मेरी अनुमानते एक हनुमान् कपिगण में बली है २ ताही समय में सयानीरानी मन्दोदरी मृदुबानी कहत है कि हे पति रामस्वरूप वेणुकहे वांसवन तामें तुमहीं अग्नि न होहु श्रीजानकीजी को दै प्रभुते स्नेहकरौ तौतो कुशल है नाहीं तो श्रीरघुनाथजी के बाण

की अग्निमें जरि २ सब वंशभरि छारकहे खाक है जाहुगे ३ ॥

मू० । अपनीअपनीभांतिसबकाहूकहीहै ॥ मन्दोदरी महोदरमालिवानसहामति राजनीतिपहुंचजहांलोंजाकी रहीहै १ महामदअन्धदशकन्धनकरतकानमीचवशनीचहठिकुगहनिगहीहै ॥ हँसिकहैसचिवसयानेमोसेयों कहतमेरुचहतउड़नबड़ीबयारिबहीहै २ भालुनरवानर अहारनिशिचरनको सोऊनृपबालकनमांगीधारलहीहै ॥ देखोकालकौतुकपिपीलिकनपंखजामें भागमेरेलोगनकेभ ईचितचहीहै ३ तोसेनतिलोकआजुसाहससमाजुमहाराजआयसुभोजोईसोईसहीहै ॥ तुलसीप्रणामकैविभीषण विनीतकहै ख्यालबेधेतालकोपकेलिलंकदहीहै ४ ॥

टी० । अब रावण के समुझाइबेको हाल कहत मंदोदरी औ महोदर औ महामतिमान् जो मालिवान जो रावणके नानाको मंत्रीहै ते सबको राजनीतिकी पहुंच जाकी जहांतक रही ते सब अपनी अपनी विधिते सब रावण को समुझाइकै कह्यो १ पै म-हामदमें अंध रावण काहूकी कहीको कान नहीं कीन काहेते मृत्यु के वशते नीचरावणने हठिते कुगहनि गही कुमारग गही हँसि के रावण कहत कि देखो ऐसे सयाने सचिव ते मोते कहत कि ऐसी बड़ीबयारि बही जामें सुमेरु उड़ा चाहत है प्रभु सैन पवन सुमेरु सम आपु २ एकतो नरवानर रिच्छ निशाचरन के अहार ताहूपर नृपबालकनकी मांगी धारकही फौजहै मांगिलाई फौज युद्धके लायक नहीं होत यह कालको कौतुक देखो पिपीलचींटी के पंख जामें अर्थात् नरवानर चढ़ि आये सो मेरे निशाचर लोग-नकी भाग्यते चितचाहीभई मनभावत अहार मिला ३ प्रणाम करिकै नम्र वचन विभीषण बोले कि आजु तुम्हारी समान सा-

हसी बलवान् त्रैलोक में नहीं है अरु राज्यके साज को समाजु तुम्हारो ऐसो काहू को नहीं है हे महराज रावण जो आपु की आज्ञाभई सोईसहीहै परन्तु प्रभुको प्रताप तो देखो जिनने ख्याలही में तालकहे तारवेधे बालिवधकेप्रथम औ केलि खेलवारही में हनुमान् तुम्हारेसामनेही लंकाफूके यह आगमन जनायो ४॥

मू०। दूसरोनदेखियतसाहिबसमरामहिं। वेदउपुराणकविकोविदविरदरत जाकोयशगावतसुनतगुणग्रामहिं १ मायाजीवजगजालसुभावकरमकालसबकोसासकुसब मेंसबजामहिं॥ विधिसेकरणहारहरिसेपालनहारहरसे हरणहारजपैजाकेनामहिं २ सोईनरवेषजानिजगकीत्रिनतीमानिमतोनाथसोइजातेभलोपरिनामहिं॥ सुभटशिरोमणिकुठारपाणिसारिलेहु लखीऔलखाईइहांकियोगुभसामहिं ३ वचनविभूषणविभीषणवचनसुनिलागेदुख दूषणसेदाहिनेउरवामहिं॥ तुलसीहुमकिहियेहन्योलातभलोतातचल्योसुरतरुतकितजिघोरघामहिं ४॥

टी०। रावणप्रतिविभीषणकहत कि श्रीरघुनाथजीके समानस्वामी दूसरोनहीं देखिपरत हैं काहेते जाको चारिहूवेद अरु अठारहू पुराण व अपरपुराण कविशेष वाल्मीक्यादि पंडित ब्रह्मासरस्वती आदिविरतकहे वैराग्यरत शंकर नारदादि ते सब जाको यशगावत अरु करुणा सौशील्यादि समूह दिव्यगुणनकेग्राम ताको सबसुनत अरु अन्तकोऊनहीं पावत तिनको प्रमाणं सामवेदे यथा। या देवनांपूरयोध्यातस्यांहिरण्मयःकोशःस्वर्गलोकोज्योतिषावृतोयोवै तांब्रह्मणोवेदामृतेनवृतांपुरीं तस्मैब्रह्मचब्रह्मचआयुःकीर्तिंजांददुरितितामवेदेतैत्तरीयश्रुतिः। यथापद्मपुराणेशिवत्राक्यम्॥ नतत्पुराणंनहियत्ररामोयस्यांनरामोनचसंहितासा॥ सनेतिहासोनहि

सिकिलरौद्रेणवपुषा त्वमेकः सर्वात्मन् विहरसि न चान्यो गुणनिधे १ स्मन्तेयोगीन्द्रास्त्रिपुरहरमुख्यास्त्वयिसदा समाधौविश्वात्मन् नियमितहृषीका रघुपते ॥ तथाप्येतेशारंनिखिलनिगमागोचरवि भोमहिम्नस्तेनूनंगमयितुमलंनैवकुशलाः २ स्थावर जंगमआदि जो ब्रह्मांडकी समग्र रचनाहै सो जिनकी इच्छाते विधि ऐसे उ- त्पत्ति करनहार अरु जिन रघुनाथजी की अनुग्रहते हरि विष्णु ऐसे पालनहार हैं अरु जिनकेप्रभावकरिकै शिव ऐसे नाशकरन- हार तेई ब्रह्मा विष्णु महेश जिन श्रीरघुनाथजीको नाम सदाजपत हैं यथा विनयपत्रिकायाम्। हरिहिहरिता विधिहिविधिता शिवहि शिवताजिनदई । सो जानकीपतिमधुरमूरतिमोदमयमंगलमई ॥ तत्रप्रमाणंरुद्रयामलेशिववाक्यम् ॥ यत्प्रभावेणहर्त्ताहंत्राताविष्णू रमापतिः ॥ यत्प्रसादेनकर्त्ताभूद्देवोब्रह्माप्रजापतिः१ पुनःभविष्यो- त्तरपुराणेनारयणवाक्यम् ॥ अजस्त्वकमलेनित्यं नामसर्वेपुपूजित म । रामेतिमधुरंसाक्षाद्दहंलक्ष्मीसमेतहृदि ॥ आदिपुराणेशिववा क्यम् ॥ अहंजपामिदेवेशिरामनामाक्षरद्वयम् श्रीसीतायाःस्वरूप स्यध्यानंकृत्वाहृदिस्थले ॥ ब्रह्मपुराणेब्रह्मवाक्यंनारदंप्रति ॥ इदमे वापिमांगल्यमिदमेवधनागमम् । जीवितस्यफलंचैवरामनामानु कीर्त्तनात् ॥ पुनःनिर्वाणखण्डेशिववाक्यम् ॥ भवन्नामामृतंपीत्वा गीत्वाचभवतांयशः । शिवोऽहंसर्वदेवैश्चपूजनीयोदयानिधे ॥ पुनः स्कन्दे निर्वाणखंडे ॥ विष्णुरुवाच । नमोरामायविभवे तुभ्यंविरवै कसाक्षिणे । नमोविश्वैकदेहायनमोविश्वातिगायते ॥ नमोनित्य यशुद्धायप्रभवेकालमूर्तये । ब्रह्मादिग्राहवेतुभ्यंनमोस्तु नरगायच ॥ इत्थं विधिहरिहर ऐसे जिन दशरथनन्दनको नाम जपते हैं २ सोई परात्परब्रह्म साकेतविहारी श्रीरघुनाथजी अपनी इच्छाते नरको ऐसोवेषबनायोहै तामें न भूलो जो परब्रह्मरूप श्रीरघुनाथ जीको जानि जन जोहौ मैं ताकीविनतीमानि अपने मनमें वि- चारि ऐसामत करहु जामें परिणाम कहे अन्तमें भलाई निकरहि काहेतेदेखहु सुभटनमेंशिरोमणि कुठारपाणि परशुराम ऐसे वी

तेऊ अपनो बलदिखाइ प्रभुकोबलदेखि अपनो शुभकर्मकल्याण विचारि सामेंकहे मिलापैकरै ३ ईश्वरको रूप लखावना शरणागत लखावना यहिहेतुके जे वचनहैं ते अपर सब वचननके विशेष भूषण हैं ऐसे वचननकविभूषणवचन विभीषणके सुनिरावणको दुःखदूषणसे लगें यद्यपि वचन दाहिने हैं काहेते यह वेद पुराण को सिद्धांत है कि विना ईश्वरकी शरणागतगये जीवको कल्याण नहीं है॥ प्रमाणं सत्योपाख्याने सूतवाक्यम् ॥ विनाभक्तिंनमुक्ति श्चभुजमुत्थायचोच्यते ॥ यूयंधन्यामहाभागायेषांप्रीतिस्तुराघवे १ परंतु सो वचन रावणकोवामहीलगे काहेते जे ईश्वर ते विमुख ते वाममार्गी पापहीको पुण्य मानते तथा वज्रसूच्याम् । शाक्ताः कौलकुलागमचारनिरताःकापालिकाःशाम्भवाः सर्वेवामनिरस्त दुस्सहमहाद्वैतपराश्शाक्तिकाः ॥ कर्तारंप्रभजंतिपापनिरताभूतेषु तेनिर्दयास्तेषामैहिककल्पमेवानिफलंनैवास्तिमोक्षःपरः २ ऐसे वेदसिद्धांतके वचन रावण हरिविमुखको वामलागे गोसाईंजी कहत कि ताही ते रिसाइ हुमकिकै लात रावण विभीपणके मारी हृदयपै हे नाथ भलीकरी ऐसा कहिकै विभीपण चले कौनीभांति इहां रावण रूप घोर घाम में तप्तभयो ताको त्यागि सुरतरुकी छांहीं रूप रघुनाथजी की शरणतकि चल्यो ४ ॥

मू० । जायमायपांयपरिकिथासोसुनाईहै ॥ समाधान करतविभीषणकोबारबारकाहभयोतातलातमारेबड़ोभाई है १ साहिबपितुमानयातुधानकोतिलकताकेअपमान तेरीबड़ीपैबड़ाईहै ॥ गरलगलानिजानिसनमानिसिख देतरोषकियेदोषसहेसमुझेभलाईहै २ यहांतेविमुखभये रीति तिनकीशरणगयेभलेनेकु राखेनिकटनिकाईहै ॥ मात राणंनी शिनाइतुलसीअशीशपाइ चलेभलेसगुनकहतम ३ ॥

यत्ररामःकाव्यंनतत्स्यान्नहियत्ररामः॥सर्वेषांवेदसाराणांरहस्यंतेप्र
काशितम्॥एकोदेवोरामचन्द्रोव्रतमन्यन्नतत्समम्॥भागवतेनवमे
शुकवाक्यम्॥यस्यामलंनृपसदस्सुयशोऽधुनापिगायंत्यघघ्नमृषयो
दिगिभेन्द्रपट्टम्। तन्नाकपालवसुपालकिरीटजुष्टपादांबुजंरघुपतेःश
रणंप्रपद्ये॥पुनःकाव्येबाल्मीकीये॥ वेदवेद्येपरेपुंसिजातेदशरथात्म
जे। वेदःप्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना॥ पुनःहनुमन्नाट
के॥ महाराजश्रीमञ्जगतियशसाते धवलिते पयःपारावारंपरम
पुरुषोऽयंमृगयते । कपर्दीकैलासंकुलिशधरणोऽभ्रंकरिवरंक
लानाथंराहुःकमलभवनोहंसमधुना॥ पुनःकोविदविरागरतसन
त्कुमारसंहितायांयथा॥ तत्त्वस्वरूपंपुरुषंपुराणंस्वतेजसापूरित
विश्वमेकम्। राजाधिराजंरविमंडलस्थं विश्वेश्वरंराममहंभजा
मि॥इत्यादि सब प्रभुको यश गावत अरु गुणग्रामसुनत तिनकी
सम और कौनहै १ मायापंचप्रकार अविद्या १ जो जीवको भुला-
वत विद्या २ जीवको चेतन करै संधिनी ३ जो जीवईश्वरकीसंधि
मिलावै संदीपनी४जो जीवके अन्तरईश्वरकी दीप्ति प्रकाशै आ-
ह्लादिनी जो जीवके अन्तर परब्रह्मको आनन्दकरै इति माया अथ
जीव बद्ध १ मुमुक्षु २ मुक्त ३ कैवल्य ४ नित्य ५ यथाअर्थपंचके॥ ब-
द्धोमुमुक्षुः कैवल्योमुक्तोनित्यइतिक्रमात्॥तहांबद्धमेंतीनिभेदएक
पामर जो ईश्वरको जानते नहीं १ दूसरो विषयीजानतहै पर विषय
में रत २तीसरेचतुर जो समुझिकै धिक्कारमानत पर ईश्वरसम्मुख
होबेकी शक्ति नहीं इतिबद्ध १ अथ मुमुक्षुमें चारिभेद प्रथम विषय
मुमुक्षु जो द्रव्यको उपायकरै पै भगवत् भागवतमें लगावत शास्त्र
सुनि मंद वैराग्यमें आरूढ १ दूसर कृपाशील मुमुक्षु जो श्रवणकी-
र्तन पूजन जपादिकरि भगवत् अर्पणकरत आपु वैराग्यवान्है २
तीसर मननशील मुमुक्षु शास्त्रसुनि ताको मननकरि सारासार
विचारि तीव्रवैराग्यमें आरूढ है ३ चौथे मुक्तशीलमुमुक्षुसारासार
दृढ विचार मुक्तनकी दशामें अनुसंधानहै ते तीव्रतर वैराग्यवान्
इति मुमुक्षु२अथ मुक्तामें तीनि भेद एक जीवन्मुक्त यथा जनक१

दूसरे विदेहमुक्त यथा ऋषभदेव २ तीसरे जीवन्मुक्त विदेहमुक्त दोनों दशामें यथा सनकादि इति मुक्त ३ अथ कैवल्य जे ज्ञानानन्दमें मगन यथा अष्टावक्र जे तीव्रतम वैराग्यमें आरूढ़हैं इति कैवल्य ४ अथ नित्य जे दास प्रभुके पासरहत यथा हनुमान् आदि इति नित्य ५ जगजाल कही अविद्या मायारचना यथा ॥ जन्म मरण जहँलगि जगजालू। संपति विपति कर्म अरु कालू ॥ धरणि धाम धन पुर परिवारू। स्वर्ग नरक जहँलगि व्यवहारू ॥ स्वभाव कहे जो उत्तम मध्यम कर्म करत तैसेही जीवको स्वभावपरिजात इति स्वभाव अथ कर्म प्रथम कायिक वाचिक मानसिक पुनः उत्तम मध्यम निकृष्ट पुनः वर्णाश्रम अनुकूल पुनः रजोगुणी तमोगुणी सतोगुणी कर्म यथा ॥ संग राग अरु द्वेष बिन नित्य कर्म जो होय। तजि फल इच्छा कीजिये सात्त्विक कर्म सुजोय ॥ जो कीजै करि कामना कीधौं करिहंकार। जामें श्रम है अतिघनो सो राजसनिरधार ॥ पौरुषहिंसा शुभाशुभ ज्ञान न वचन विचार। जो कीजै अज्ञानते तामस कर्म निहार ॥ अथवा कर्मज्ञान भक्ति सदाचार शरणागत अभिमान पांच उपाय जीव के हैं कल्याणार्थ ॥ यथा अर्थपंचके ॥ उपायाःकथिताःकर्मज्ञानभक्तिप्रवृत्तयः। सदाचार्याभिमानश्चेदित्येवंपंचधास्मृताः ॥ इति कर्म अथ काल पल दण्ड दिन रात ताके पट्अंग तिथिवारनक्षत्र योग करण लग्न पुनः वर्ष ताके पांच अंग पक्ष मास ऋतु काल अयन पुनः सतयुग त्रेता द्वापर कलियुगादि कल्पपर्यन्त इति काल विभीषण कहत कि माया अरु जीव अरु जगत्‌को जाल स्वभाव कर्म काल इत्यादि जो विश्वरचना है ताहिके सबके शासक कहे प्रेरक श्रीरघुनाथजी हैं अरु सबके प्रकाशरूप व्यापक हैं श्रीरघुनाथजी सब जामाहिं कहे ज्याहि रघुनाथजी में सब रमतहैं अर्थात् सबको अपने वश किहे आपु स्ववशहैं तनकौतमाशादेखि रहे हैं यथा राममहिम्नि ॥ निजाव्यक्तेनेदंजगदखिलमिच्छाविकरणे समुत्पन्नंकृत्वाह्यवसिसततंश्रीरघुपते ॥ युगान्तेसर्वेवैहर

साइके ॥ सपनेकेसोतुखसुखशससुरसौंचतदेतनिराइकै ६ गुरुगौरीशसाईंसीतापतिहितहनुमानहिंजाइकै ॥ मिलि हौमौंहिंकह्यकीवेअबअभिमतअवधिअघाइकै ७ मरतो कहांजाइकोजानैंलटिलालचीललाइकै ॥ तुलसिदासभ जिहौंरघुवीरहिअभयनिशानबजाइकै ८ ॥

टी०। शिवजीका आशीर्वाद औ सिखावनपाइ महेशकोमाथ नवाइ विभीषण मनहींमन मनोरथ करतचले सो आगे कहत १ चलतमें दशहूदिशिमें सुन्दर मांगलीक शकुन देखा ताते मनको प्रथमको शोच जातरहा मनमें आनन्द उमँग्यो ताते देहमें पुल-कावली अधिकानी ताते नेत्र जलसों भरिआये २ विभीषणकहत कि आखिर अन्तमें भाईको भाइही भलाहोत तहां रावण हमा-रो अनभलो मनाइ लातमारी तिरस्कारकियो सो कुबेरकी लात भई लातलागे कुबेर सीधाभयो ताहीभांति विधाता हमारी बात बनाइके राखी ३ नाहीं तो कुबेरके घरमें शिव क्यों मिलते चित्त लगाइके हमारो हित क्योंकहते जाको सुनि मैं प्रभुकी शरण कि अपने राक्षस कुलकी वामता कहे टेढ़ाई छांड़िके ४ विनापरिश्रम ही कृपालु शूलपाणि अनुकूल ह्वै मोको दीनजन जानि अपनाय कहे आपन मानिलियो काहेते मुद जो आनन्द ताकी मूल कहे जड़ श्रीरघुनाथजीकी शरणागति ताको मार्ग कहे राह दिखाइ दियो संसाररूपी वन अरु मोहरूपी अन्धकार जगकी लज्जामें भूलो रहौं ताते उबारे ५ यामें स्वार्थ परमार्थ दोऊ हाथ आये परि-श्रमकी मार्ग जप तप आदि सिराइगये कैसे यथा स्वप्नका परि-श्रम जागेते मिटी सुख कौनीभांति भयो यथा तुखकही भूसीके बोयेते शस्यकही अन्न जामै ताहूको देवता सींचिकै निराई देइ इहां रावण निरादर की ग्लानि को वैराग्य आसार भूसी सम प्रभुकी सांची शरणागत भूसी सों अनाजहोबो शिवकी कृपाको उपदेश सींचब निरावन है स्वप्न सों हुरु संसार प्रभुशरण जावे

को ज्ञान जागब है ६ गौरीश सुखके उपदेशते स्वामी सीतापति अरु हित हनुमान् ते जाइ मिलौंगो अब मोको कहा करिबेको है वाञ्छित की मर्य्यादा अघायकै मिली ७ विशेषण कहत कि मैं लालची अर्थात् विषयमें आसक्त ताहीकी वासनारूप क्षुधाते विकल तुच्छ देव अथवा उपाय आदिकके द्वार द्वार ललाइ दौड़ि दौड़ि लटिकै न जानी कहां मरिजातो अब उपायरहित शून्य शरणागतधर्मसों अभयहोयकै यथाप्रमाणंगीतायाम्॥ सर्वधर्म्मान् परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज॥अहंत्वांसर्व्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमा शुचः१ताते निशानभक्तिरूपनगाराअनन्यह्वैरघुवीरकोभजिहौं८॥

मू०। पदपदुमगरीबनेवाजके ॥ देखिहौंजायपाय लोचनफलहितसुरसाधुसमाजके १ गईबहोरओरनिबाहि कसाजकबिगरेसाजके ॥ शबरीसुखदगीधगतिदायकश मनशोककपिराजके २ नाहिंनमोहिंऔरकतहूंकछुजैसे कागजहाजके॥ आयोशरणसुखदपदपंकज चोथेरावण बाजके ३ आरतहरणशरणसमरथसबदिनअपनेकीलाज के॥ तुलसीयाहिकहतनतपालकमोसेनिपटनिकाजके४॥

टी०। देवतासाधुनके सभाके हितकर्ता ऐसे गरीबनेवाज श्रीरघुनाथजीके चरणकमल देखिहौं जाय अरु नेत्रनको फल प्रभु के दर्शन पाइकै सनाथ ह्वैहौं १ गई बातके बहोरनहार यथा जीव को अपनोस्वरूप भूलिगयो सो शरण आवतही सुधिकराय देत हैं अरु प्रीति व कृपा अन्ततक निबाहनहार अपनाइ फिरि त्यागत नहीं अरु बिगरे साजके साजनहार यथा मोहवश भक्त बिगारि दियो ताको सुधारिदेत यथा नारद गरुडको सुधारे फिरि कैसे हैं श्रीरघुनाथजी जे शबरी को सुखदीन्हें अरु गीध जटायु को सुन्दरगति दीन्हें कपिराज सुग्रीव ताको शोक कहे दुःख ताको

टी०। विभीषण अपनी माताके पासजाय पांयनपरिकै हित उपदेश करत में रावणके लातमारिबेकी कथा सुनावतभयो सो सुनि माता विभीषण को बारबार समाधानकरत कि हे तात जो बड़ाभाई ह्वैकै लातमारिसि तामेंकाहभयो तुम्हारी बड़ाई घटि गई १ एकतौ मालिक दूसरे पितासम बड़ाभाई तीसरे निशाचरनमें राजा ताने तेरो अपमानकियो यामें तेरी बड़ीबड़ाई है ग्लानि में गरतजानि विभीषणको माता सिखावनदेत कि हे पुत्र रोपकीन्हें दोषहै अरु रोषरोंकिसहिलेबे में समुझेपर भलाई है २ काहेते इहां रावणते विमुख ह्वै प्रभुकी शरणगयेते यद्यपि भलोहै परलोक राखे में किंचित् निपटकरिकै निकाई है काहे ते अनीति विचारि प्रथम क्यों न चलेगये अब लोग कहैंगे कि असमयपरे डरिगये भाईको छांडि शत्रुकोमिले गोसाईंजी कहत कि माताके पांयन में माथनवाइ अशीष पाइ विभीषण चले मार्ग में भलेभले शकुनमिले ताते कहत कि मनभाई भई प्रभु प्रसन्न ह्वै शरण राखहिंगे ३ ॥

मू०। भाईकैसीकरौंडरौंकाठिनकुफेरै ॥ सुकृतसंकट परोजातहौं गलानिगरोकृपानिधिकोमिलौंपैमिलिकैकुबेरै १ जायगहेपांयधायधनदउठायभेंटे समाचारपायकोचशोचतसुमेरै। तहँईमिलेमहेशदियेहितउपदेशरामकी शरणजाहिसुदिननहेरै २ जाकोनामकुम्भजकलेशसिंधु सोखिबेकोमेरोकह्योमानुतातबांधेजनिबेरै ॥ तुलसि मुदितचलेपायेहैंशकुनभले लंकलूटिबेकोमानोंमानिम गनढेरै ३ ॥

टी०। विभीषण कुबेर सों कहत हे भाई कैसा करौं कुटिल कुफेर पराहै ताको डरतहौं सुकृतकहे धर्मसंकट में परोहौं काहेते एकतौ रामविरोधीको संग अनुचित दूसरे हमारो अपमान

किये ताते त्यागिबे योग्य है अरु त्यागते जगमें उपहासहै कि आपत्कालमें भाईको छांडिभागे यहि ग्लानि में ग्रस्तहौं ताते विचारिकै यह निश्चयकरो कि प्रथम कुबेरको मिलि लेउँ तब कृपानिधान श्रीरघुनाथजीको मिलौं १ ऐसा विचारकरि विभीषण जासमय कुबेरकेपासगये तबहीं धनदने उठाय हृदयलगाय भेंटे कुशलपूंछेते पीछे समाचार विग्रहके पाये ताते शोचत सुमेरैकहे सुन्दरदोऊभाई मेरुमिलापकिहेरहे सो आकुलमें विग्रह भई अथवा सुमेरुगिरिपर अथवा विग्रह सुमेरु सम भारी काहूके मानकी नहींहै तात शोचत तईं शिवजी मिले तिन हितको उपदेशदियो जामें सदा कल्याणहै हे तात श्रीरामशरणजाहु यामें सुदिनकही अवसरकुअवसर न विचारहि २ क्लेशरूपीसमुद्र सोखिबेको नाम अगस्त्यसमहै तेहि क्लेशपारजाबे को जहाजरूपी उपाय जनिबांधे वा बेर यात्रा जनिविचारे वा बेर जनिकरै मेरो कहामानि शीघ्र प्रभुकी शरणजाहु जाको नाम लेतहीसब शुभहोत तत्रप्रमाणं॥ तदेवलग्नंसुदिनंतदेवताराबलंचंद्रबलंतदेव॥ विद्याबलंदैवबलंतदेवसीतापतेर्नामयदास्मरामि ३॥

सू०। रागकेदार॥ शंकरसों मुनि आशिषपाइकै॥ चलेमनहिंमनकहतविभीषणशीशमहेशहिनाइकै १ गये सोचभयशकुनसुमंगलदशादिशिदेतदिखाइकै॥ सजलनयनआनन्दहृदयतनप्रेमपुलकिअधिकाइकै २ अन्तहुभाइ भलोभाईकोकियोअनभलोमननाइकै॥ भरतहैघरकीला त विधाताराखीचालबनाइकै ३ नाहितक्योंकैरघरासिलहरहितकहतेचितचाइकै॥ जो सुनिशरणराम ताकेमैं निजबामताबिहाइकै ४ अनायासअनुकूलशूलधरमगमुदमूलजनाइकै॥ कृपासिंधुसनमानिजानिजनदीनलियो अपनाइकै ५ स्वारथपरमारथकरतलभातश्रमतपगयो

शमनकहे नाश कीन्हें जिनने २ यथा जहाज पर को काग ताको सिवाय जहाजके और अवलम्ब कुछ नहीं है ताही भांति मोको सिवाय आपकी शरणागत और दूसरो अवलम्ब कछू नहीं है रावणरूप बाजके पंजनको चोथा दुःखित पीड़ित आपके चरण सुखदायक जानि तातें शरणमें आयोहौं ३ अपने शरणागत के लाज के राखनहार सदा समर्थहौ विभीषण याही कहत कि मोहिं ऐसे निपट करिकै निकाज अर्थात् जो संसारको निपट त्याग कियो वा जो अपनाको काहू काजको नहीं गनते हैं तिन शरणागत पालुहौ ४ ॥

मू० । महाराजारामपहँजाउँगो ॥ सुखस्वारथपरिहरिकरिहौंसोइ जोसाहिबहिसुहाउँगो १ शरणागतसुनिवेगिबोलिहैंहौंनिपटहिंसकुचाउँगो ॥ रामगरीबनिवाजनिवाजहैं जानिहैंठाकुरठाउँगो २ धरिहैंनाथहाथमाथेयहितेकेहिलाभअघाउँगो ॥ सपनोसोअपनोनकछूलखि लघुलालचनलोभाउँगो ३ कहिहौंबलिरोटिहारावरोबिनमोलहीबिकाउँगो ॥ तुलसीपटउबरेओढ़िहौंउबरीजूठनिखाउँगो ४ ॥

टी० । विभीषण कहत कि महाराज रघुनाथजीके पासको जैहौं अपने सुखको स्वार्थ छांड़ि जो मालिकको भावैगी सोई मैं करिहौं १ शरणागत आगमन मेरो सुनि जल्दी बोलाइहैं अरु मैं रावणको सम्बन्धी विचारि निपटकै सकोच करहुंगो ठाउँगो ठाकुर अपनी जागाको छूटा ठाकुर मोको जानि राम गरीब निवाज मोको निवाजहिंगे यह स्वाभाविक राजनकी रीति है २ नाथ श्रीरघुनाथजी मेरे माथेपर हाथ कृपाकरिकै धरिहैं यहिते अधिक और कौन लाभहै जामें अघाऊंगो भाव याही में अघाउँगो स्वप्नकैसो झूठा सुख संसारहै तामें आपन करि कछु न मानहुंगो काहेते जगकी तुच्छवस्तु ताके लालचमें न लोभाउँगो ३ विभीषण

कहत कि मैं यह बात प्रभुसों कहौंगो कि रावरो रोटिहा होय बलिहारी विना मोलही आपके हाथ बिकाउँगो आप के उतारे वस्त्र पहिरिहौं बचीजूंठनि खैहौं ४ ॥

मू० । अससचिवविभीषणकेकही ॥ कृपासिंधुदश कन्धबन्धुलघुचरणशरणआयोसही १ विषमविषादवा रिनिधिबूड़तथाहकपीशकथालही ॥ गयेदुखदोषदेखि पदपंकजअबनसाधएकौरही २ शिथिलसनेहसराहतन खशिखनीकिनिकाईनिबही ॥ तुलसीमुदितदूतभयेमन महँअमियलाहुमांगतमही ३ ॥

टी० । विभीषण के सचिवने रघुनाथजीसों कहे कि हे कृपा-सिंधु दशकंधको लघुबंधु छोटा भाई आपुके चरणन की शरण आयोहै सही सांचा छलरहित १ विषम कही तीक्ष्ण विषाद कहे दुःखरूप समुद्र में डूबत रहा ता अवसरमें सुग्रीव की कथा सुनि समुझि थाहपाई भाव बालिकी त्रासते सुग्रीवको उबारे तौ शरण गये हमहूंको उबारहिंगे आपुके पदकमल देखेते संसाररूपी दुःख प्रभुपद विमुखतारूपी दोष सब जातेरहे सो साधककहे वासना अब कुछ नहीं रही २ निकाई कहे सौंदर्यता प्रभुके तनमें जो नख ते शिखातक जहां चाही तहां तैसी नीकी भाँति निबही है भाव कोऊ अंगमें दूषणकी संधि नहींहै ऐसो श्यामसुन्दर तनकी मा-धुरी नखशिखलौं देखि सनेहवश ते प्रेम उमँगि देह शिथिलभई मनमें आनन्दते प्रशंसा करत हैं गोसाईंजी कहत कि विभीषण को दूत कौनी प्रकार मनमें आनन्दहै यथा मही माठा मांगत में अमृत मिलै संदेह नहीं प्रभु असी ३ ॥

मू० । बिनतीसुनिप्रभुमुदितभये ॥ ऋक्षराजकपिरा जनीलनल बोलिबालिनन्दनलये १ बूझियकहारजाय पायनयधर्मसहितउत्तरदये ॥ बलीबन्धुताकेविमोहवश

वयरबीजबरबसबये २ बांहपगारद्वारतेरेतेसभयनकबहूं फिरिभये ॥ तुलसीअशरणशरणस्वामिकेविरदविराजत नितनये ३ ॥

टी० । विभीषणके सचिवकी प्रेम आरतयुक्त बिनती सुनि प्रभु आनन्द भये तहां जाम्बवन्त सुग्रीव नील नल अंगदादिको बोलावते भये १ सब सों प्रभु पूंछे कि यामें तुम्हारी काह सलाह है यह प्रभुकी रजाय पाय नीति धर्ममय वचन सब बोले कि तेहि बली रावणको बन्धुहै जाने विशेष मोहबशहै वैरको बीज बरबस कहे जबरई बोयो यह नीति है कि शत्रुसों गाफिल न रही अरु छल बलकरि जीती २ परन्तु पगार कही भीति ताकी आड़ में कोई चोट नहीं लागत तथा आपुकी बांह अचल भरोस करि सभीत आये आपके द्वारते लौटि नहीं गये गोसाईंजी कहत कि अशरणशरण लेवेको बाना नितनवा विराजतहै ३ ॥

मू० । हियबिहँसिकहतहनुमानसों ॥ सुमतिसाधुशुचिसुहृदविभीषणसमुझिपरतअनुमानसों १ हौंबलिजाउँ औरकोजानैकहिकपिकृपानिधानसों ॥ छलीनहोयस्वामिसम्मुखज्योंतिमिरसातहोयानसों २ खोटोखरोसभीतपालियेसोसनेहसनमानसों ॥ तुलसीप्रभुकीबोजोभलोसोईबूझिशरासनबानसों ३ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी बिहँसिकै हनुमान्जी सों कहत कि हमारी अनुमान सों यह बूझि परत कि सुन्दर मतिमान् पवित्र मित्र विभीषण साधुहै १ इत्यर्थः तब कृपानिधान रघुनाथजी सों हनुमान्जी कहत कि मैं बलिजाउँ आप छांड़ि दूसरा कौन हृदय की बात जानै काहेते स्वामी जो हौ आपु तिनके सम्मुख छली पुरुष नहीं है सकत कैसे जैसे सातयान कही सूर्य तिनके सम्मुख अन्धकार नहीं जाइसकत २ सो विभीषण सभीत डरसहित

शरणागत आयो तौ चहै खराहोय चहै खोटाहोय वाको सनेह सन्मान सहित पालिये नाहीं जो कछु आपको करना मंजूरहोइ सो कीजिये ताही में भलोहै अरु जो बूझनाहोइ तौ धनुषबाण सों बूझिलीजिये भाव दुष्ट छलिनको नाशक साधुनको पालक है वा दूसरो आपको सहायक अपर कौनहै जासों बूझिये २ ॥

मू० । सांचेहुविभीषणआइहै ॥ बूझतविहँसिकृपालुलषणसुनिकहतसकुचिशिरनाइहैं १ ऐहैंकहानाथआयो ह्वैह्यांक्योंकहिजातबनाइहैं ॥ रावणरिपुहिराखिरघुवरबिनुकोत्रिभुवनपतिपाइहै २ प्रभुप्रसन्नसबसभासराहतदूतवचनमनभाइहै ॥ तुलसीबोलियवेगिलषणसोंभइमहराजरजाइहै ३ ॥

टी० । कृपालु रघुनाथजी बूझत विहँसिकै कि सांचेहु विभीषण आवहिंगे ताको सुनि सकोचसहित माथनवाइ लषणलाल बोलतेभये १ हे नाथ आपु भविष्य काहेको कहत कि आइहै हे नाथ विभीषण तौ वर्त्तमान आइगयो काहेते इहां आपके सामने कोऊ झूठी बनाइकै नहीं कहिसकत यह कास विमुख है एक आपुको रिपु रावणछांड़ि विना आपकी सांची सम्मुखता झूठकही ऐसा त्रैलोक्य में को है जो पति कहीं मर्यादा पावहिंगे अथवा विभीषण शरण क्यों न आवै काहेते रावण रिपुहि राखि रावण सों शत्रुता राखि एक रघुवीर सिवाय और ऐसा त्रैलोक्यमें कौन समर्थ है जाको विभीषणपति पावहिंगे जो रावणको रिपु राखि सकै २ आपही शरणागत लायकहौ यह सुनि प्रभु प्रसन्न भये सभा सब लषणलालकी प्रशंसा करत है सो वचन विभीषण के दूतनके मनभावतेभये गोसांईजी कहत कि महाराज रघुनाथजीकी रजायभई लषणलालको कि विभीषणको जल्दी बुलाइलीजिये३॥

मू० । चलेलैनलषणहनुमानहैं ॥ मिलेमुदितबूझिकु

शलपरस्परसकुचतकरिसनमानहैं १ भयोरजायसुपाव धारियेबोलतकृपानिधानहैं ॥ दूरितेदीनबन्धुदेखेजनदेत अभयवरदानहैं २ शीलसहसहिमभानुतेजशतकोटिभा नुकेभानुहैं ॥ भक्तनकोहितकोटिमातुपितु अरिन्हकोको टिकृशानुहैं ३ जनगुणरजगिरिगनिसकुचतनिजगुणगि रिरजपरमानुहैं ॥ बाँहपगारबोलकोअविचलवेदकरत गुणगानहैं ४ चरचाचलतविभीषणकी सोइसुनतलुचि तदैकानहैं ॥ चारुचापतूणीरतामरसकरतसुधारतपान हैं ५ हरषतसुरवरषतप्रसूनशुभसगुनकहतकल्यानहैं ॥ तुलसीतेकृतकृत्यजेसुमिरतसमयसुहावनध्यानहैं ६ ॥

टी० । विभीषणको बुलायबे हेतु हनुमान् अरु लक्ष्मणजी चल- तेभये मिले परस्पर कुशलपूंछि आनन्दपूर्वक सन्मानकरत हितसों सन्मान प्रेमसों वाताही सन्मान है रिपुपक्षते मित्रपक्ष होत ताको प्रथम समागम ताते संकोच है १ हनुमान्‌जी कहत कि प्रभुकी आज्ञा भई चलिये कृपानिधान बुलावत हैं दीनबंधु दूरिहीते देखि जनको अभय वरदान देत प्रभु निकट भय नहीं है ताते निर्भय चलिये इहां दयालुता दीनपालुता शरणपालुतादि गुण दिखावतहैं २ कैसेहैं प्रभु हजारन चंद्रसम शीतल हैं शीलवान् अरु प्रताप- वान् कैसेहैं जो कोटिन शतगुण सूर्यनते अधिक प्रतापवान् सूर्य हैं अरु भक्तनके हितकर्त्ता भक्तवत्सल कैसेहैं जे कोटिन माता पिताकेसमानहैं ॥ यथा रामायणे लक्ष्मणवाक्यं ॥ अहंतावन्महा राजन्पितृत्वंनोपलक्ष्यसे ॥ भ्राताभर्त्ताचबंधुश्चपितामाताचराघ वः १ शत्रुनाश करिबे को कोटिन अग्निकी समान हैं ॥ भगवद् गुणदर्पणे ॥ पूर्णेन्दुस्स्वजनेष्वेतत्कालाग्निरितरेषुच ॥ भाव जिन के शत्रुको कोऊ रक्षक नहीं है ॥ रामायणे हनुमद्वाक्यं ॥ ब्रह्मास्त्रयं भूश्चतुराननोवाइन्द्रोमहेन्द्रःसुरनायकोवा ॥ रुद्रस्त्रिनेत्रस्त्रिपुरांत

कोवात्रातुत्रशक्तोयुधिरामवध्यम् ३ जनको गुण रज रेणुकाभरि होइ ताको गिरि सम करि ताको सकुच मानि संकोच करत अरु अपनो गुण जो गिरिकी समहोय ताको रेणुकासम जानत॥ यथा भगवद्गुणदर्पणे ॥ दोषादर्शीगुणग्राहीभावग्राहीचराघवः॥ अरु शरणागतरक्षिवे को बांह पगार कहे प्रबलहैं॥ यथा काव्येकालिदासेन ॥ सानन्दाःप्लवमानौहिमरुचिसरुषःसागरेसावलेपाः। सुग्रीवे सानुरागारजनिचरचमूचूर्णनेपूर्णकोपाः॥ अरु बोलको अविचल कही श्रीरघुनाथजी जो वचन बोले सो सत्य अचल बोले ॥ यथा भगवद्गुणदर्पणे ॥ नवेत्तिरामःपरुषाणिभाषितुं नवेत्तिरामोविनयं चजल्पितुम् ॥ ऐसे सत्यसन्धकरि वेदगान करतहैं ४ तेहि समय विषे विभीषणकी जो चरचा ह्वैरहीहै ताको सुचित्त ह्वै प्रभु कान देकै सुनत हैं तहां तरकस धनुष शोभित करकमलनसों बाण सुधारतहैं ५ तेहि अवसर प्रभुकी भक्तिवत्सलता देखि हर्षित देवता फूल वर्षत गोसाईंजी कहत कि तेहि समय को सुंदर सुहावन जो कल्याण करनहारो ध्यानहै सो स्मरण करि जे शुभ सगुनकरि स्मरण करतेहैं ते कृतकृत्यहैं ६ ॥

मू० । रामहिंकरतप्रणामनिहारिकै॥ उठेउमँगिआनंदप्रेमपरिपूरणविरदविचारिकै १ भयोविदेहविभीषणउतइतप्रभुअपनपौविसारिकै ॥ भलीभांतिभावतेभरतज्यों भेंट्योभुजापसारिकै २ सादरसबहिमिलाइसमाजहिनिपटनिकटबैठारिकै॥ बूझतकुशलक्षेमसप्रेमअपन्यायभरोसोभारिकै ३ नाथकुशलकल्याणसुमंगलविधिसुखसकलसुधारिकै ॥ देतलेतजेनामरावरोविनयकरतमुखचारिकै ४ जोमूरतिसपनेनविलोकतमुनिमहेशमनमारिकै ॥ तुलसीतेहिहौंलियोअंकभरिकहतकछूनसँवारिकै ५ ॥

टी० । विभीषण प्रभु को निहारिकै नमस्कार करत तिनको

देखि प्रभु अपना विरद कही शरणपाल को बाना विचारिकै प्रेम ते परिपूर्ण आनन्दते उमँगिकै प्रभु उठे ता समय उतते प्रेमावेश ते विभीषण विदेह भये इतते प्रभु अपनी देहकी सुधि बिसारी भावते कही प्रियमानि भलीभांतिते भुजा पसारिभेंटे यथा भरत सों प्रभुभेंटे १।२ आदरसहित सब समाजको मिलाइ प्रभु विभीषणको अतिसमीप बैठारिकै आपनो मानिकै भरोसा भारी देकै भाव हमारेहौ काहूको डरौ नहीं यह कहि प्रेमपूर्वक कुशल पूँछि सन्मान करते भये यामें प्रभुको सौलभ्य सौशील्य क्षमागुण को वर्णन है ३ रघुनाथसों विभीषण बोले हे नाथ जे संसार में आपु को नाम लेत तिनको ब्रह्मा कुशल कल्याण सुन्दर मंगल सकल प्रकार को सुधारिकै देत अरु चहूँमुखते बिनती करत अरु मैंतौ आपके समीप शरणहौं मेरी कुशल को का पूँछतहौ ४ मुनिजन सनकादि अरु महादेव जे मनको जीते हैं ते जौनी मूरतिको नहीं देखे तिन प्रभुको मैं अङ्कभरि मिल्यों याते अधिक का कहै यह सांची बात कहत यामें कछुक बनायकै नहीं कहतहौं ५ ॥

मू० । करुणाकरकीकरुणाभई ॥ मिटीमीचुलहिलंक शंकगइकाहुसोंनखुनसखई १ दशमुखतजोदूधमाखी ज्योंआपुकाढ़िसाढ़ीलई ॥ भवभूषणसोइकियोविभीषण मुदमंगलमहिमामई २ विधिहरिहरमुनिसिद्धसराहतमु दितदेवदुन्दुभिदई ॥ बारहिबारसुमनवरषतहियहरषत जयजयजयजई ३ कौशिकशिलाजनकसंकटहरिभृगुपति कीटारीटई ॥ खगमृगशबरनिशाचरसबकीपूजीबिनबा ढ़ीसई ४ युगयुगकोटिकोटिकरतबकरनीनकछुकबरनीन ई ॥ रामभजनमहिमाहुलसीहियतुलसीहूकीबनिगई ५ ॥

टी० । करुणाकर श्रीरघुनाथजी की करुणाभई ताते राक्षस

कुलकी मृत्युमिटी वा जीवन्मुक्तभये लङ्काकी राज्यमिली सब- णकी शङ्कागई अरु काहूसों सुतस ईर्षा नहीं भई विना परिश्रमें सब भई १ रावण विभीषणको दूबकीसी आखी त्यागिकर आप साढ़ी सरीखे लंकाको सुखलई सोई विभीषणको भव जो संसार ताको भूषण प्रभुने कियो भगवद्भक्तन में गिनती भई जिन महिमा पुराणन में रामचरित्र लिखि हुदै मंगलमयी है २ ब्रह्मा विष्णु महेश मुनि नारदादि सिद्ध लोमशादि प्रशंसा करत आन- न्दते देव दुन्दुभी बजाय रहे विभीषण पै प्रभुकी भक्तिवत्सलता देखि हृदयते हर्षि जयजयकार करिकै फूलवर्षत ३ विश्वामित्र की यज्ञ पूर्णकरि अहल्या को तारे धनुष तूरि जानकीजी को स- कटहरे तहां परशुराम की टईकहे जनकपुरवासिन के सुख में आड़रहे सो प्रभु टारिदये खग गीध मृग मारीच आदि शवर श- वरी कोल किरात निशाचर विभीषणादि इन सबकी पूजी विना वढ़ती भई भाव विना सुकृतीकी पूजी सईकहे वरकातिभई ताते महासुकृतीभये ४ गोसाईंजी कहत कि युगयुगप्रति कोटिन कर्तव प्रभुकेहैं यह करणी कछु नई नहीं वरणी गई जेहि श्रीरघुनाथ के भजनकी महिमा हृदयमें हुलसी ताते तुलसीहूकी वनिगई ५ ॥

मू० । मंजुलमूरतिमंगलमई ॥ भयोविशोकविलोकि विभीषणनेहदेहसुधिसीवगई १ उठिदाहिनीओरतेस न्मुखसुखदमांगिवैठकलई ॥ नखशिखनिरखिनिरखिसुख पावतभावतकछुकछुऔरभई २ बारकोटिशिरकाटिसाटि लटिरावणशंकरपैलई ॥ सोइलंकालखिअतिथिअनवस रराममृणासमज्योंदई ३ प्रीतिप्रतीतिरीतिशोभासरिथा हतजहँतहँईबई ॥ बाहुबलीवानैतबोलकोवीरविश्वविजयीजई ४ कोदयालुदूसरोदुनीजेहिजरनिदीनहियलीह ई । तुलसीकाकोनामजपतजगजगतीजामतिबिनुबई ५ ॥

टी० । मंगलमई मञ्जुल मूरति प्रभुकीदेखि विभीषण दुःख करिकै रहित भयो ताते देहसम्बन्धी नेहकी मर्यादा जगत् मोह ताकी सुधि भूलिगई १ दाहिनी दिशि बैठेरहे तहांतेउठि सामने को बैठक सुखदाता जानि विभीषण मांगिलियो भाव सखा पद छांड़ि पदलियो वा सन्मुखते सब अंग देखिबे अर्थ प्रभुको रूप नखशिख देखि परम सुख पावतहै देखो मनमें कुछ और भावना रही अर्थात् रावण की समीपता में कुछ और भई भाव प्रभुके समीपी ह्वै गये २ साटि कही ऊख यथा शिरकाटे ते शिरजामत है परन्तु क्षीण परिजात तैसे करोरिनवार शिरकाटिकाटि रावण शिवजीको चढ़ायो तहां शीशतौ जामें परन्तु परिश्रम तो परो ताते लटि कही दुर्बलभई देह तब लंकाको ऐश्वर्य्य शिवजीने रावणको दियो सोई लंका विभीषणको अतिथिमानि अनवसर समुझि भाव आरत समयमें विशेष सत्कार नाहीं बनत तहां वन में वास प्रिय वियोग विषे विभीषण को लंकाकी राज तृणके समान सम जानि प्रभुने सकुचदई भाव हम कछु नहींदेतहैं ३ प्रीति के अंग यथा ॥ प्रणवप्रेम आसक्तपुनि लगनलाग अनुराग। नेह सहित सब प्रीतिके जानब अंगविभाग ॥ इत्यादि हम तुम्हारे तुमहमारे यह प्रण है याकी सौम्यदृष्टि है जामें आसक्त होन सो आसक्ती है याकी यकटक दृष्टिहै ये दोऊ अहंकारकी विषयहैं अरु प्रीति उमगि नेत्र कण्ठभरिजाइ ताको प्रेमकही याकी विह्वलदृष्टिहै प्रतिक्षण सुधिहोना यह लगनहै याकी उत्कण्ठा दृष्टि है ये प्रेमलगन दोऊ मनकी विषयहैं चित की जो चाह सो लागहै याकी चोपदृष्टिहै जाकेरंग में चित्तरँगाहै ताको अनुराग कही याकी मत दृष्टिहै ये लाग अरु अनुराग दोऊ चित्तकी विषयहैं मिलनि बोलनि हँसनि सो प्रसन्नता सो स्नेह है याकी ललित दृष्टि है कनता शोभा सहित सर्वांग व्यवहारसों प्रीति याकी आधीन दृष्टी है इत्यादि अहंकार, मन, चित्त, बुद्धिद्वारा सबविषय अनुकूल ह्वै जेहिरसको अत्यन्त भोगी ह्वै सर्वांग परिपूर्ण ह्वैजाइ ताको प्रीति

कही ॥ भगवद्गुणदर्पणे ॥ अत्यन्तभोग्यताबुद्धिरानुकूल्यादि शालिनी । परिपूर्णस्वरूपायासास्यात्प्रीतिरनुत्तमा ॥ सोप्रीति छःप्रकारते होत दिहे लिहे गोप्य पूछे कहे खाये खवाये ॥ भगवद्गुणदर्पणे ॥ ददातिप्रतिगृह्णातिगुह्यंवक्तिचपृच्छति । भुंक्तेभोजयतेचैवषड्विधंप्रीतिलक्षणम् ॥ इत्यादि प्रीति प्रतीतिकहे विश्वासराखिवो योग्य प्रभुयथा ॥ शरणगये नहिं त्यागिहैं मोहिं रघुवीरभरोस । प्रभुमें विश्वास सेवककी यथा । भरतहिहोइ न राजमद विधि हरिहर पदपाइ ॥ इत्यादि प्रतीति रीतिकहे सदा शरणपाल भाव यथा ॥ करिआई करिहैं करती हैं तुलसिदासदासनपरछा हैं ॥ अथ शोभा यथा ॥ द्युतिलावण्यस्वरूपसोइ सुन्दरस्ताररमणीय ॥ कांतिमाधुरीमृदुलता सौकुमार्यकमनीय ॥ चन्द्रमाकीसी झलक ताको द्युतिकही मोतीकैसोपानी लावण्यता विन भूषण भूषित सो स्वरूप सव अंग सुठौर सुन्दरता देखत अनदेखीसी रमणीकता सोनेसी झलक कांति देखे तृप्त न सो माधुरी कोमलता सुकुमारता प्रसिद्धहै इत्यादि प्रभुको रूप समुद्रहै तहां जैसे अनेकननदी एकमें मिलिकै समुद्रमें मिलत तैसे यहां सौशील्य वात्सल्य सौहार्द सौलभ्य करुणादया उदारादि अनेकन दिव्य गुणमिलि प्रीतिकहे अरु कृतज्ञता चातुर्यता ज्ञान वाग्मी नीति आदि गुणमिलि प्रतीतिकहे आदम्रानियंतारमा वशीकरण सदृश संहननस्थैर्य धैर्यादिगुणन मिलिरीति कहे रूप सौन्दर्य माधुर्य सौकुमार्य्यन नवयौवन लावण्य सौगन्ध्य वेषखड़ांग उज्ज्वलत्व प्रतापादि गुणको मिलाय शोभाकहे इत्यादि प्रीति प्रतीति रीति शोभाआदि नदीसरीखे अथाह प्रभुमें देखते विभीषण जहां जौने गुण रूप नदी को थाहलेत कि कितनाहै वहां बड़ कही अथाह है काहू गुणनको अंत नहींपावत याते प्रभु सबगुणनके मर्यादहैं ॥ प्रमाणं भगवद्गुणदर्पणे ॥ अवतीर्णेरवेवंशेरामनाम्नीतिविश्रुते । ईश्वरतां भगशब्दार्थंनान्यत्रक्रियतांमनः १ सौभाग्यसीमाखिलभाग्यसीमा प्रकाशसीमामहनीयसीमा । स्तोतव्यसीमामननीयसीमा शोभै-

कसीमा रमणीयसीमा॥ दायित्यसीमाखिलसिद्धिसीमा दानादि सीमागुणरत्नसीमा द्रष्टव्यसीमामननीयसीमाश्लाघ्यसीमागृह मध्यसीमा माधुर्यसौंदर्यशुभैकसीमामांगल्यसीमासुमुखैकसीमा विद्याविनोदादिरसैकसीमा २ बाहुबली कहे जिनबाहुन ते कठोर धनुष शिवजीको भंजनकरे त्रैलोक्यविजयी परशुरामको गर्बतोरे बालिको एकबाणतेमारे जिनबाहुनको शत्रुकोत्रिलोकमें रक्षक नहीं यथा जयंत॥ ब्रह्मधामशिवपुरसबलोका। फिराश्रमितव्याकुल मनशोका॥ काहूबैठनकहानवोही। राखिकोसकैरामकरद्रोही॥ प्रमाणंभगवद्गुणदर्पणे॥ रामवध्योनशक्यःस्याद्रक्षितुंसुरसत्तमैः। ब्रह्मरुद्रेंद्रसंसैश्चत्रैलोक्येचप्रभुश्त्रिभिः॥ इत्यादिबाहुनकोबली वचनको अविचलबाना जो सोईकरै॥ यथा रामोमिथ्यानभाषयते सनत्कुमारसंहितायां॥ सत्यसंधंजितक्रोधंशरणागतवत्सलम्। पुनःभगवद्गुणदर्पणे॥ नवेत्तिरामःपरुषाणिभाषितुंनवेत्तिरामोवि तथंचजल्पितुं॥ पुनःरामायणे॥ सत्येनलोकान्जयतिदीनान्दाने नराघवः। विश्वविजयीकहे परशुराम बालि रावणादि जे सबजग जीति विजयपायेरहे ऐसे जे विश्वविजयी हैं तिनको जयीकहीं जीतनहारी वीरताको विरदकहे बाना है जिनको ऐसे श्रीरघुनाथ जी हैं ४ एक श्रीरघुनाथजी छांड़ि और ऐसोको दयालु दुनीकहे सं-सारमेंहै जेहिने दीननकी हृदयकी जरनि अधिदैहिक,अधिदैविक, अधिभौतिक, अथवा काम, क्रोध, लोभ, मोह अथवा सुत, वित्त, नारि अथवा जन्म मरण ताको सिवाय रघुनाथजी और को हरि सकत गोसाईंजी कहत कि और काको ऐसो नामहै जाको ज-पतमें पृथ्वी विना बोये जामत अर्थात् विना सुकृतही नामजपत महासुकृती शिरमौर होत यथा॥ उलटानामजपतजगजाना। बालमीकिभेब्रह्मसमाना॥ अथवा जाट धनाको खेत विनाबोयन भूमिते जामो ५॥

मू०। सबभांतिबिभीषणकीबनी॥ कियोकृपालअ

भयकालहुतेगईसंसृतसांसतिघनी १ सखालषणहनुमा नशम्भुगुरुधनीरामकोशलधनी ॥ हियहिऔरऔरहिकी न्हीविधिरामकृपाऔरैठनी २ कलुषकलंककलेशकोशभ योजोपदपायरावणरनी ॥ सोइपदपायविभीषणभोभव भूषणदलिदूषणअनी ३ बांहपगारउदारशिरोमणिनत पालकपावनपनी ॥ सुमनबरषिरघुपतिगुणवरणतहरषि देवदुन्दुभिहनी ४ रंकनिवाजरंकराजाकियोगयेगर्भगि रिगिरिगनी॥ रामप्रणाममहामहिमाकरसकलसुमंगलम णिजनी ५ होयभलोयसहीअजहुगयेरामशरणपरिहरिम नी। भुजाउठाइसाखिशंकरकरिकसमखाइतुलसीभनी ६॥

टी०। विभीषणकी सब भांतिते बनी लोकहू परलोकते कृपाल श्रीरघुनाथजी कालहूते अभय कियो जीवनमुक्त भये ताते संसृत जो संसारकी सांसति घनीकही समूह जन्म मरण सो सब जाती रही संसारमें राजाभये १ लक्ष्मणजी हनुमानजी ऐसे सखापाये शिवजी ऐसे गुरुपाये श्रीरघुनाथजी ऐसे धनीकहे स्वामी पाये प्रथम हृदयमें और रहा कि रावणको हित उपदेश करिकै भलाकरै ताको विधाताने और करि दियो जाते रावणने अनहित मानि चरणप्रहार करि तिरस्कार कियो अब रामकृपाते औरै ठनी भाव प्रभुके समीपीभये २ रनी युद्ध करनहारो रावण जो पदपाइकै कलुषपापको कलङ्कको कलेशको खजानाकहे कलंक पापकरि कलेशको पात्रभयो सोई लंकाको राजपदपाइ विभीषण समूह दूषणनको नाशकरि सुकृती ह्वै संसारको विभूषणभयो ऐसोभक्तन सों संसार भूषितहै ३ सभीतको अभयपद देबेको पगार कहे भारी है बांह जिनकी उदारता तनमें शिरोमणि दीनशरणागत पालिबे में पनी कहे प्रतिज्ञा पावन पवित्रहै जिनकी ऐसे श्रीरघुनाथजी के अनूप दिव्य गुणानुवाद वर्णनकरि फूल बरषि देवता आनन्द

मनते दुन्दुभी हनीकही नगारावजाइ रहे हैं ४ रंकनिवाज रघुनाथजीने रंक विभीषणको राजाकियो कैसे गनी जे धनी कुवेर आदि तेऊ विभीषणको ऐश्वर्य देखि आपन गर्वछांड़ि अथवा रंक राक्षस पापको पात्र सुकृतको रंक ताको प्रभुत्वराजन में कियो तिनको देखि भक्तनमें जे गनीकहे गिनतीवारे नारदादिते अपनी कर्त्तव्यताको गर्वछांड़ि शून्य शरणागतहै विचार ताकी श्रीरघुनाथजी के प्रणामकी जो महामहिमा सोई एकखानि है तेहिमा ते सवप्रकार सुन्दर मंगलरूप अनेकनमणी प्रकटभई ५ मणी कही अभिमान ताको छांड़ि अजहूंशरणगये ताही भांति भलो होइ यथा विभीषणको भयो भुजाउठाय यामें सबसुनै शंकरकी साक्षी दैकै यामें सब साचुमाने ताहूपर कसम खायकै तुलसीदास कहतहैं ६ ॥

मू० । कहौक्योंनविभीषणकीवनै॥ गयोछांड़िछलशरणरामकीजोफलचारिचारयोजनै १ मंगलमूलप्रणामजासु जगमूलअमंगलकेखनै ॥ तेहिरघुनाथहाथमाथेदियोको ताकीमहिमाभनै २ नामप्रतापपतितपावनकियेजनअघानेअघघनै ॥ कोउउलटोकोउसूधोजपिभयेराजहंसवायसतनै ३ हुतोललातकृशगातखातखरिमोदपायकोदोकनै ॥ सोतुलसीचातकभयोयांचतरामश्यामसुन्दरघनै ४ ॥

टी० । आरतको अर्थ जिज्ञासूको धर्म अर्थार्थीको कामज्ञानी को मोक्ष इत्यादि चारिभक्त चारिउजन तिनको चारिफल उत्पन्न करनहारी श्रीरघुनाथजीकी शरणको छल छांड़ि विभीषण गये तौ क्यों न वनै १ जिन रघुनाथजीको प्रणाम जगत् विषे मंगलको मूल है अरु अमंगलकी मूलको खोड़िडारत तेई रघुनाथजी विभीषणके माथेपर हाथधरे तौ ताकी महिमा को वरनै २ जे पाप ते अरु अनीतिते नहीं अघाने तिन पतितनको प्रभुको नाम अपने

प्रतापते पावन करिदियो कोऊ उलटाजपि यथा वाल्मीकि कोऊ सीधा जपि प्रह्लाद गीध शबरी आदि नीचवायस काग समेत राज हंससम पावन उत्तम ह्वैगये २ क्षुधातेआरत दुर्बलगात एकटूक को ललात पशुवत्खरी को खात संसार असारसुख याचक कोदव के कण समस्वर्ग सुखपाववेमें सुखीरहो सो तुलसीप्रभुकीशरणागत भयेते चात्रिकह्वै रामरूप श्यामसेघ स्वातीको यांचतहौं ४ ॥

मू० । अतिभागविभीषणकेभले ॥ एकप्रणामप्रसन्न रामभयेदुरितदोषदारिददले १ रावणकुम्भकरणवर मांगतशिवविरंचिबाचाछले ॥ रामदरशपायोअविचल पदसुदिनशकुननीकेचले २ मिलनिविलोकिस्वामिसे वककीउकठेतरुफूलेफले ॥ तुलसीसुनिसनमानबन्धुको दशकन्धरहँसिहियेजले ३ ॥

टी० । विभीषणके अत्यन्त भाग्यभलेहैं काहेते एक प्रणाम के करे रघुनाथजी प्रसन्नभये ताते दुरित सामान्य पापदोष अनुचित पाप गोब्राह्मण वध आदि पापदोष दारिद सहित सबको प्रभुने दलिडारे १ ॥ इत्यर्थः ॥ रावण कुम्भकरण के वरमांगत में शिव ब्रह्मा बाचाछले भाव मांगेको और इच्छारही सरस्वतीकी प्रेरणा ते औरै कछुमांगे यह न्यूनताहै अरु इहां विना वर मांगे प्रभुके दर्शनमात्रसे विभीषण अविचल पदपाये औ सुन्दर दिन सुन्दर शकुननीकी भांतितेचले भाव विभीषण प्रभुशरण आवतमें सुदिन नहीं विचारे न शकुन विचारे परन्तु प्रभुकीशरणजात जानि सब बलीह्वै संगहीचले यथा ॥ तदेवलग्नंसुदिनंतदेव ताराबलंचन्द्र बलंतदेव । विद्याबलंदैवबलंतदेव सीतापतेर्नामयदास्मरामि २ स्वामी रघुनाथजी सेवक विभीषणकी मिलनि भाव सहित देखि उकठेतरु सहित प्रेम रहित तेऊ फूलेफले भाव प्रेमीभये गोसाईं जी कहत प्रभुकेपासको सनोन्मान विभीषणको सुनि रावणमुख ते तौ हँसो परंतु हृदयमें दाहभई ३ ॥

मू० । गयेरामशरणसबकोभलो ॥ धनीगरीबबड़ाछोटोबुधमूढहीनबलअतिबलो १ पंगुअन्धनिरगुणीनिसंबलजोनलहैयांचेजलो ॥ सोनिबह्योनीकेंजोजनमिजगरामराजमारगचलो २ रामप्रतापदिवाकरकरतेगरततुहीनज्योंकलिमलो ॥ सुतहितनामलेतभवनिधितरिगयोअजामिलसोखलो ३ प्रभुपदप्रेमप्रणामकामतरुसद्यविभीषणकोफलो ॥ तुलसीसुमिरतनामसबनकोमंगलमयनभजलथलो ४ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी की शरणगये सबको भलोहै धनीहोय वा गरीबहोइ, बड़ा, छोटा, पण्डित, मूढ़ विनाबल, अतिबली इत्यादि कोऊहोइ विनाप्रभुके शरणगये कल्याण नहीं १ पंगुला, आंधर, विना गुणको, निसंबल, विनाखर्चको जेमांगेते पानीतक नहीं पावत तेऊ रामराज मार्गकही शरण है भक्तिमार्ग में चलेते जगमें जन्म पाय नीकीभांति सोऊनिबहे २ काहेते प्रभुके नामको प्रताप सूर्यनकी किरणिनसम तिनकेआगे कलिमल जो पाप सो तुहिन कही बर्फसम गलिजात है देखो पुत्रके हेतु प्रभुको नामलैकै अजामिल ऐसोखल भवसागरपार भयो ३ प्रभुके पदपङ्कज में प्रेम किहेते प्रणामरूप कल्पवृक्षते तत्कालही विभीषणको भलोभयो गोसाईंजी कहत कि सबजीवनका प्रभुके नाम सुमिरत में नभ जो आकाशमें जल थल कहे पृथ्वी में सर्वत्र मंगलमयी होतहै ॥ प्रमाणकालिकापुराणे धर्मराजवाक्यं ॥ रामेतिनामयात्रायां ये स्मरन्तिमनीषिणः । सर्वसिद्धिर्भवेत्तेषां यात्रायांनात्रसंशयः । अरण्येप्रांतरेवापिश्मशानेचभयानके । रामनामस्मरेत्तस्यत्रियन्ते नापदोद्विजेत्यादि समूह ४ ॥

मू० । सुयशसुनिश्रवणहौंनाथआयोशरण ॥ उपलके

वटगीधशबरीसंसृतशमन शोकसमसीवसुग्रीवआरतहरण १ रामराजीवलोचनविमोचन विपतिश्यामनवतामरसदामसवारिववरण ॥ लसतजटाजूटशिरचारुमुनिचीरकटिधीररघुवीरतूणीरशरधनुधरण २ यातुधानेशभ्राताविभीषणनामबन्धुअपमानगुरुग्लानिचाहतगरण ॥ पतितपावनप्रणतपालकरुणासिन्धु राखियेमोहिंसौमित्रसेवितचरण ३ दीनताप्रीतिसंकुलितमृदुवचनसुनिपुलकितनप्रेमजलनैनलागेभरण ॥ बोलिलंकेशकहिअंकभरिभेंटिप्रभुतिलककरिदियोदीनदुखदोषदारिद्दरण ४ रातिचरजातिआरातिसबभांतिगत कियोकल्याणभाजनसुमंगलकरण ॥ दासतुलसीसदयहृदयरघुवंशमणिपाहिकहेकाहिकीन्होंनतारणतरण ५ ॥

टी०। विभीषण कहत हे नाथ आपको सुयश काननसों सुनिमैं आपुकीशरणआयोहौं कौनसुयश पाषाणते अहल्या दिव्यदेहकरी केवटको मित्रकरि कुलसहित पावनकरो गीध शबरीको संसृत संसारछुड़ाय अपनो धामदियो दुःख अरु परिश्रमके मर्यादा सुग्रीव तिनकेदुःखहरिलियो इत्यादि १ राजीव जो कमल तद्वन्नेत्र श्याम कमलक माला सम श्याम वरण देहहै जटाको जूट बांधे सुन्दर शिरपर शोभित है मुनिकेसे वसन धारण किहे कटि विषे तरकस करमें धनुषबाण धारणकिहे ऐसे श्रीराम धीरमान रघुवंशिनमें वीर ते विपत्तिको छोड़ावनहारहौ २ यातुधानेश रावण ताकोभ्राता विभीषण नाम सो बंधु रावणके अपमान किहे कि गुरु कही बड़ी ग्लानि तामें गलाचाहतहौं हे पतित पावन हे प्रणतपाल हे करुणासिन्धु हे सौमित्र करिकै सेवितचरण मैं दीन अरु पतित हौं ताते मोको शरणागत राखिये ३ संकुलित कहे सहित प्रीति दीनताके कोमल वचनसुनि श्रीरघुनाथजी के मनमें प्रेमउमगि

तनपुलकिकै भरिआयो ताते नेत्रनते जलवहै लाग सौशीलता भक्तिवत्सलता गुणको सँभारि शरणागतपाल प्रभु विभीषणको तुरतहीबोलाइ लंकेश कहि अंकभरि भेट दीनके दुःख दोषदारिद के दरणहार ने लंकाको तिलक कियो बोलाइबेमें वत्सलता भेटबे में सौलभ्यता राजदेबेमें उदारता ४ रातिचरनिशाचरजातिआर-तिशत्रु रावणको भाई सबभांतिते गत शरणराखिबे योग्य नहीं ताको कल्याणकोपात्र बनायो सुन्दरमंगलभरिबे हेत गोसाईंजी कहत कि पाहिपाहि शरणहौं ऐसाकहे ते रघुवंशमणि दयासहित हृदयते काको तारणहार अपरको तारणहार नहीं कियेहै ५ ॥

सू० । दीनहितविरदपुराणनगायो ॥ आरतबंधुकृपालमृदुलचितजानिशरणतकिआयो १ तुम्हरेरिपुकोअनुजविभीषणवंशनिशाचरजायो ॥ सुनिगुणशीलस्वभावनाथकोमैंचरणनचितलायो २ जानतप्रभुदुखसुखदासनकोतातेकहिनसुनायो ॥ करिकरुणाभरिनैनविलोकहुतबजानौंअपनायो ३ वचनविनीतसुनतरघुनायकहँसिकरिनिकटबोलायो ॥ भेंटेहरिभरिअंकभरतज्योंलंकापतिमनभायो ४ करपंकजशिरपरसिअभयकरिजनपरहेतुदेखायो ॥ तुलसिदासरघुवीरभजनकरि को न अभयपदपायो ५ ॥

टी० । दीनन को हित कारक बाना आपुको पुराणन गायो है दीनबन्धु कृपाल कोमल चित्त आपको जानि मैं शरणागत आयो है १ आपुको रिपु रावण ताको अनुज विभीषण नाम निशाचरकुल में जन्म सो मैं शील गुणमयी सुभाव आपुको सुनिकै हे नाथ आपुके चरणन में चित लायोहै २ हे प्रभु आपु दासनके दुःखसुख जानतहौ ताते कहिकै नहींसुनायो जब आप करुणाकरिकै नेत्रन भरि ते मेरीओर देखो तब जानिहौं कि प्रभु

मोको अपनायो है ३ ऐसे नम्रवचन सुनि रघुनाथजी ने हँसिकै समीप बोलाइ अंकभरि भेंटे यथा भरततों प्रभु मिले तब लंकापति बिभीषणके मनमें भाये ४ करकमल शिरपर फेरि अभय कियो जब विभीषण परहेतु कही प्रीतिदेखाये गोसाईंजी कहत कि प्रभुके भजनते को अभयपद नहींपावा ५ ॥

मू० । रागधनाश्री ॥ सत्यकहौंमेरोसहजसुभाउ ॥ सुनहुसखाकपिपतिलंकापतितुमसनकौनदुराउ १ सब विधिहीनदीनअतिजड़मतिजाकोकतहुंनठाउ ॥ आयेशरणभजोंनतजोंत्यहियहजानतऋषिराउ २ जिनकोहौंहितसबप्रकारचितनाहिंनऔरउपाउ ॥ तिनाहिंलागिधरि देहकरौंसबडरहुंनसुयशनशाउ ३ पुनिपुनि भुजाउठाय कहतहौंसकलसभापतिआउ ॥ नाहिंनकोउप्रियमोहिं दाससमकपटप्रीतिबहिजाउ ४ सुनिरघुपतिकेवचन विभीषणप्रेममगनमनचाउ ॥ तुलसिदासतजिआशत्रास सबऐसेप्रभुकहँगाउ ५ ॥

टी० । मेरो सहजमें जो सुभावहै ताको सत्यकरिकै कहतहौं हे सखा कपिपति लंकापति तुमते कछु छिपाइकै नहीं कहतहौं ताते सुनहु१चाहै दीनहोइ चाहै जड़मतिहोइ जाकोकहूंठौरनहीं इत्यादि सब विधिते हीन नीच ऐसहू शरण आवै ताको भजों अंगीकारकरों तजों नहीं ताशरणागतको प्रभाव ऋषिराव नारद बाल्मीकि जानत अथवा ऋषि दुर्वासा राव अम्बरीष जानत २ जिनके सबप्रकार एक हमहीं हितहैं चितबिषे दूसरो उपाव नहीं है तिनहीं के हितकरिकै देहधरि ऊंचनीच सबकरतब करतहौं तामें अपने सुयश नाश होबेको डर नहीं करतहौं ३ बारबार भुजा उठाइकै कहतहौं ताते सब सभा प्रतीति मानों मोकोदास के समान कोऊप्रिय नहीं है यहहम सत्य अचलवचन कहतेहैं

अरु कपटप्रीति बाहिजाव कपटको प्रीतिमें कछुकाम नहीं ताते दुरिजाव बहिकहे प्रीतिते बाहेरहो वा कपट प्रीतिवारो भवसागरमें जाइबहौ मोको नहीं पावौ ४ रघुनाथजी के वचन सुनि विभीषण प्रेममें मग्न मनमें आनन्दभयो गोसाईंजी कहत कि स्वर्ग सुखकी आश नरक दुःखकी त्रासछांडि निर्वासिक है ऐसे प्रभु श्रीरघुनाथजी तिनको सुयश प्रेम सहित गानकरु ५ ॥

मू०। नाहिंनभजिबेयोगवियो ॥ श्रीरघुवीरसमान आनकोपूरणकृपाहियो १ कहौकौनसुरशिलातारिपुनि केवटमीतकियो ॥ कौनेगीधअधमकोपितुज्यों निजकरपिण्डदियो २ कौनदेवशबरीकेफलकरिभोजनसलिल पियो ॥ बालित्रासवारिधिबूड़तकपिकेहिगहिबांहलियो ३ भजनप्रभावविभीषणभाष्यो सुनिकपिकटकजियो ॥ तुलसिदासकोप्रभुकोशलपतिसबप्रकारबरियो ४ ॥

टी०। कविकी उक्ति वियो कहीं दूसरा भजिबे योग्य नहीं है श्रीरघुनाथजीकी समान कृपाते पूरण हृदय और कोहै जाको भजिये यथा ॥ अससुभाव कहुँ सुनौं न देखौं। केहि खगेश रघुपति समलेखौं १ ऐसो कौन देवताहै ताको कहौ जो शिलारूप ते अहिल्या तार्यो केवट नीचजातिको मित्रकरि ताके अवगुण न बिचारे कुलसहितपावन करे गीध ऐसे आमिषभोगी अधम पक्षी ताको पिताके समानजानि अपनेहाथसों ताको तिलांजलि दियो पिंडदानदीन्हे इहां दया अरु सौहार्दता सौलभ्यता गुणहैं ॥ यथारामायणे ॥ मित्रभावेनसंप्राप्तंनत्यजेयंकथंचन । दोषोयद्यपितस्यस्यात्सतामेतदगर्हितम् १ पुनःस्तवराजे ॥ भक्तप्रियंभानुकुलप्रदीपं २ कौन ऐसोपतितपावन देवहै जो शबरी के जूंठेफल खाइ ताके हाथ को भरा जलपानकरो अत्यन्तबली बालिकीत्रासरूप समुद्रमें बूड़त सुग्रीवको बांहगहिराखै ऐसा को बली है ३ इत्यादि प्रभुकेभजनको प्रभाव विभीषणकहतेभये

ताको सुनि बानरनकीसबसेना जीउठी आपु प्रभुकीशरण जानि आनन्दभये गोसाइंजीकहत कि कोशलपाल जो श्रीरघुनाथजी हैं तिनके समान बरियो कहे बली सब प्रकारते और दूसरा कोनहैं भाव केवल रघुनाथैजीहैं ४ ॥

मू० । रागजैतिश्री ॥ कबदेखौंगीनयनवहमूरति ॥ राजिवदलनयनकोमलकृपाअयन मयनबहुछबिअनङ्ग दूरति १ शिरसिजटाकलापपाणिशायकचाप उरसि रुचिरवनमालसूरति ॥ तुलसिदासरघुवीरकीशोभासुमि रिभईहैमगननहिंतनसूरति २ ॥

टी० । श्रीजानकीजीकी उक्ति नवीन कमल सम नेत्र कोमल सुभावकृपाके मन्दिर अपनेअंगकी छविके आगे अनेकन कामदेवकीछविको दुरतकहे दूरिकरत सोई वहमूरति नेत्रनभरि कब देखौंगी शिरसिकहे शिरपर कलापकहे समूह जटाशोभित हाथनमें धनुषबाणलिहे उरसिकहे छाती विशाल कहे चौड़ी तापै वनमाला रतिकहे लटकतहैं वनमाल यथा ॥ तुलसीकुंदमंदार पारिजातसरोरुहैः।पञ्चभिग्रंथिताभालावनमालाप्रकीर्तिता१गोसाईंजीकहत कि नखशिख प्रभुकी शोभाको सुमिरि प्रेममें मगन भई ताते जानकीजीको तनकीसुरति भूलगई यह उत्कण्ठाहै २॥

मू० । कहुंकवहुंकदेखिहौंआलीआरजसुवन ॥ सानुजसुभगतनजबतेबिछुरेवन्न तबतेदवसीलागितीनिहुंभुवन १ मूरतिसूरतिकिहेप्रकटप्रीतमहियेमनकेकरनचाहैचरणछुवन ॥ चितचाहेंगोवियोगदशानकहिबेयोग पुलकगातलागेलोचनचुवन २ तुलसीत्रिजटाजानीसिया अतिअकुलानीमृदुवाणीकह्योअहैदवदुवन ॥ तमीचरत महारीसुरकंजसुखकारीरविकुलरविअबचहतउवन ३ ॥

टी० । त्रिजटासों जानकीजी कहती हैं हे आली आरज श्रेष्ठ दशरथ सुवनको कबहुँमें देखिहौं शोभायमान जिनको तन ऐसे रघुनन्दन लषणलाल सहित जबते वनमें बिछुरे तबते हमको तीनिहूं लोकमें आगिसी लगीहै १ प्रभुकी मूरतिकी सूरतिकहे प्रीतिहृदयमें प्रकट होत तहां मनके हाथनकरि चरणछुवा चाहतहौं परन्तु वियोग की दशा चित्त में बढ़िगई है सो कहिबे योग्य नहीं है प्रेमसों तनपुलकि नेत्रन में जल बहैलाग २ गोसाईंजी कहत कि त्रिजटाजान्यो कि जानकीजी अकुलानी हैं तब मृदुवाणी ते कह्यो कि दुवन जो शत्रु ताके नाशकर्त्ता प्रभु आइहैं निशाचर अन्धकार के हरणहार देवकमल के प्रकाशक प्रभु रविकुलके रवि उयो चाहतहैं ३ ॥

मू० । अबलगिमैंतोसोंनकहेरी ॥ सुनुत्रिजटाप्रियप्राणनाथबिनबासरनिशिदुखदुसहसहेरी १ बिरहविषम विषबेलिबढ़ी उरतेसुखसकलसुभायदहेरी ॥ सोइसींचिबेलागिमनसिजकेरहटनयननितरहतनहेरी २ सरशरीरसूखेप्राणबारिचरजीवनआशतजिचलनचहेरी ॥ तैं प्रभुसुयशसुधाशीतलकरिराखेतदपिनत्वलहेरी ३ रिपुरिसघोरनदीविवेकबलधीरजसहितहुजातबहेरी ॥ दैमुद्रिकाटेकितेहिअवसरशुचिसमीरसुतपैरिगहेरी ४ तुलसिदाससबशोचपोचमृगमनकाननभरिपूरिरहेरी ॥ अब सखिसियसँदेहपरिहरहियआयगयेदोउबीरअहेरी ५ ॥

टी० । हे त्रिजटा अबहीं तक मैं तोसों नहीं कह्यो अब सुनु प्राणनाथ बिन निशिदिन दुःख को सहती रहौं १ हृदय रूप भूमिते विषमकहे तीक्ष्ण विरहरूप बेलि विषकी बाढ़ी ताने अपर वृक्षरूपी सकल सुखन को सहज ही में जराइदियो तेहि

विरह बेलि सींचिबे हेत मनसिज के रहट सरीखे हमारे नेत्र नधे रहत रहटही कूपते जल निकारत २ विरहकी ताप करिकै शरीर तड़ाग सरीखे सूखिगयो ताते जलचर सरीखे प्राण अकुलाइ जीवेकी आशछांडि चलाचहैं पर तैंने प्रभुसुयश रूप अमृतते सुनाइ सींचि शीतल करिराखे परन्तु तृप्त न भये ३ रिपु रावण ताकी रिस घोर सोई नदी है तामें धीरजसहित विवेक को बल सेना सब बहेजातरहैं तहां मुद्रिकारूप टेक कही आधार पकराइ पवित्र मतवारे समीरसुत हनुमान्जी पैरिकै गहिलियोहै ४ सब प्रकारके शोच सोई पोत्र मृगासरीखे मनरूप काननमें भरिपूरि रहे हैं यह सुनि त्रिजटाकहत कि हे श्रीजानकीजी संदेह हृदयते छांडिदेहु शोकरूपी मृगन के शिकार खेलिबे को अहेरी शिकारी दोऊभाई आइगये ५ ॥

मू० । रागबिलावल ॥ सोदिनसोनेको बहुकबऐहै ॥ जादिनबाँध्योसिंधुत्रिजटासों तूसंभ्रममोहिंआनिसुनैहै १ विश्वदवनसुरसाधुसतावनरावणकियेआपनोपैहै ॥ कनकपुरीभयेभूपविभीषण विबुधसमाजविलोकनधैहै २ दिवदुंदुभीप्रशंसिहैंमुनिगणनभतलविमलविमाननछैहै ॥ बर्षिहैंकुसुमभानुकुलमणिपर तबमोहिंपवनपूतलैजैहै ३ अनुजसहितशोभिहैंकपिनमहँ तनुछविकोटिमनोजहितैहै ॥ इननयननयहिभांतिप्राणपतिनिरखिहृदयआनन्दसमैहै ४ बहुरोसदलसनाथसलक्ष्मण कुशलकुशलविधिअवधदेखैहै ॥ गुरुपुरलोगसासुद्दौदेवरमिल तदुसहउरतपनिबुतैहै ५ मंगलकलशबधावनघरघरपैहै माँगनेजोजेहिभैहै ॥ विजयरामराजाधिराजकोतुलसिदासपावनयशगैहै ६ ॥

टी०। श्रीजानकीजी त्रिजटासों कहतीं कि सोदिन सोनेको उत्तम दिन कबआइहै हे त्रिजटा जादिन सिंधु बांधेको हाल तू संभ्रम हर्षवश विह्वलह्वै मोसे कबसुनैहै १ विश्वको दवन शत्रुसुर साधुनको सतावनहार रावण आपने किये कुकर्मनको फल कब पैहै भाववंशसहित नाशहोइगो कनकपुरी लंकाकेराजा विभीषण भये यहजानि विबुध जो देवता तिनकी समाज देखिबेको कब धावैगी २ दिव जो आकाश तामें देवता दुन्दुभी बजाइ प्रभुपर फूलवर्षि विमाननपर छाइरहिहैं तल जो पृथ्वी तामें मुनिगण प्रशंसिहैं वेदनके ऋचनसहित आशीर्वाददेहैं तब पवनपूत हनुमान्‌जी मोको इहांते लेवाइ लैजैहैं ३ मोहिंसहित लषणलाल सहित श्रीरघुनाथजी कपिकटकमें शोभितह्वैहैं तासमयमें तनकी छविकोटिनमनोज सहितलागी अथवा तनकीछविदेखि लज्जित ह्वै कोटिनमनोज तेहैं संतप्त ह्वैहैं यहिभांति सों प्राणपतिको इन नयननसों निरखिहों तब आनन्द हृदय में समाई दुःख निकरि जाइहै ४ बहुरि कपिदलसहित लषणलालसहित श्रीरघुनाथजी के साथ अपनीसमाज कुशल अरु कुशलसहित अयोध्याजी को विधाता कब देखैहैं तासमय गुरुवशिष्ठ सबपुरवासी कौशल्यादि सासु भरत शत्रुहन द्वैदेवर तिनको मिलतमें हृदयको जो दुसह ताप सो बुताइजाई ५ पुरमें द्वारद्वार में मंगलकलशधरे घर घर में बधावनह्वैहैं तासमयमें याचकजन मनभावत दानपैहैं श्रीरघुनाथ राजाधिराजके विजयको पवित्रयश तुलसीदासगाईहै ६॥

मू०। सियधीरजधरियेराघवअवऐहैं॥ पवनपूतपहँ पाइतोरिसुधिसहजकृपालुविलंबनलैहैं १ सैनसाजिकपि भालुकालसमकौतुकहीपाथोधिबँधैहैं॥ घेरोइदेखिबो लंकगढ़विकलयातुधानीपछितैहैं २ निशिचरशलभ कृशानुरामशरउड़िउड़िपरतजरतजड़जैहैं॥ रावणकर परिवारअगमनोयमपुरजातबहुतसकुचैहैं ३ तिलकसा-

रिअपनाइविभीषण अभयबांहदैअमरबसैहैं ॥ जयधुनि सुनिवर्षिहैंसुमनसुर व्योमविमाननिशानबजैहैं ४ बन्धु समेतप्राणवल्लभपदपरसिसकलपरितापनशैहैं ॥ राम वामदिशिदेखितुम्हिंसब नैनकृतलोचनफलपैहैं ५ तु मअतिहितचितइहौनाथतनुबारबारप्रभुतुमहिंचितैहैं ॥ यहशोभासुखसमयविलोकतकाहूतौपलकैनाहिंलैहैं ६ कपिकुललषणसुयशजयजानकि सहितकुशलनिजनग रसिधैहैं ॥ प्रेमपुलकिआनन्दमुदितमनतुलसिदासकल कीरतिगैहैं ७ ॥

टी०। त्रिजटा कहति है श्रीजानकी धीरज धरिये अब श्रीरघु नाथजी ऐहैं काहेते तुम्हारी सुधि हनुमान् जीसों पाइ सहजही में कृपालु श्रीरघुनाथजी इहांआवतमें बिलम्ब न लगैहैं १ काल के समान कपिभालुनकी सेन साजिकै कौतुकमात्रमें समुद्रबँधाइ लैहैं अरु लंकागढ कपिसेनासों घेरेइ देखिपरैगो विकल ह्वैके राक्षसी पछिताइँगी विमुखी २ रामबाणको प्रतापयथा॥हनुम न्नाटके॥ शतचक्रसमोविष्णुःशतशूलसमोहरः ॥ शतवज्रसमः शक्रोरामबाणःप्रतापवान् १ तूणेनैकशरःकरेणदशधासंधानकाले शतम् । चापेसूत्रसहस्रमेवगमनेलक्षंचकोटिर्वधे॥ अन्तेचार्बनिखर्वबाणनिकरैस्सीतापतिःशोभितः। एतद्बाणपराक्रमस्यमहिमास्तोत्रद्वातेयथा २ नागानामयुतंतुरंगानियुतंसार्द्धंरथानांशतंपद्मानांशतकोटयोयदिहतएकःकबंधोरणे॥ एवंकोटिकबंधनर्तनविधौ किंचिद्ध्वनत्किङ्किणिःपायाद्वैपरमात्मनोरघुपतेःकोदंडघंटारवः ३ इत्यादि श्रीरघुनाथजीके बाण अग्निके समान तामें शलभ कहे पाँखी समान निशिचर उडिउडि परत जरत चले जैहैं जडमृत्यु की वश ह्वैहैं परिवारको अगमनो कहिआगेकरि रावण यमपुरके जातमें बहुत संकोचकरी भाव अनेकन पातकनकी सजायमोको

क्या होइगी जन्म भरेको पाप मृत्युकी बेर सबको सुधिहोत यह स्वाभाविक सम्प्रदायहै ३ लंकाकी राज्यको तिलकदै विभीषण को आपनो नित्यपार्षद बनाइ भाव लंकाते दुष्टता मिटाइ तब श्री रघुनाथजी देवतन को अभयबांहदेकरि देवलोकमें बसेहैं पृथ्वी विषे वेदध्वनिसहित आशीर्वाद की जयजयकार ध्वनि मुनिनकी हैहैं आकाशमें देवता फूलवर्षि निशान कहे बाजाबजैहैं इत्यादि महाआनन्द तेहिसमय में देखिहौ तब ४ बंधु लक्ष्मणजीसहित प्राणवल्लभ श्रीरघुनाथजी के चरण परसिकहे छुइकै आनंदित ह्वैहौ हृदय को परिताप विरहजनित सो सब नाश ह्वैजाई श्रीरघुनाथजीके वामभाग विषे तुम्हें देखि नैनवन्त इंद्रादि अथवा जो जिनको प्रभुदर्दकी प्यास तेई नैनवन्त हैं अपर सब अंधेहैं तेई जे प्रभुदर्शके प्यासे कपि मुनि देवादि ते नेत्रनको फल प्रभुको रूप अघाइकै देखिहौ ५ अत्यन्तहितसहित तुम प्रभुके श्यामसुन्दर तन को चितैहौ अरु प्रभु बारबार हितसहित तुमको चितैहैं इहां परस्पर प्रीति सूचित करत ॥ कवित्त ॥ यथा ॥ जैसी रीति रहसि सुहाई मनभावन को रावरो स्वभाव सोई सहजमें देखती । प्रीतमकी रुचिचित चषनसों चाहि चाहि चारियाम रुचिरचि रचना अशेषती ॥ वामवरवदन बिलोकि बलिजात वर वारको बिलोकि वाम तननसरेखती ।बैजनाथ यशबुद्धि यौवन सकुचि भाग अचल सोहागभरी दूसरी न लेखती ॥ इत्यादि श्याम गौररूप अन्योन्य युवावस्था अन्योन्य परस्परप्रीति अन्योन्य लावण्यता अन्योन्य सुकुमारता अन्योन्य प्रेमावलोकन अन्योन्य इत्यादि युगल तन की जो शोभा है तेहि समय जा समय लोकनको रोगरूप रावण को मारि जगको सुखी करिहैं तेहि समय शोभाको सुख बिलोकतमें काहू को पलक लागिबो काहूको न सुधिरही काहूके पलकैं नहीं ते है जो अस पाठ होइ तौ काहूको पलकै जो लागिबो हित न लागिहै ६ लंकाविजयको सुयशसहित कपिकुलसमूह वानरनसहित श्रीजानकी लक्ष्मणजीसहित कुशलपूर्वक प्रभु निज

नगर अयोध्याजी को सिधे हैं निशाचरन को सुगतिदान देवतन को अभयदान इत्यादि कीरतिको प्रेमसों पुलकि मुदितमन आनंदते सुन्दरकीरति तुलसीदास गानकरिहैं अथवा तुलसी कवि कहत कि त्रिजटा श्रीजानकीजी सों कहत कि प्रभुकी सुन्दर कीरति ताको दास जे हैं नारदादि ऋषीश्वर अथवा शिव पार्वती काकभुशुण्डि गरुड़ याज्ञवल्क्य भरद्वाज अथवा बाल्मीकि अगस्त्य हनुमानादि जे प्रभुके दासहैं ते कलकहे समूह कीरति गैहैं ७ ॥

दोहा ॥

होत जो अस्तुति दानते कीरति कहिये ताहि ।
होत बाहुबलसों सुयश सज्जन पढ़त सराहि ॥

सवैया ॥

धरन्याजिनरम्यसयर्ससुखासन शोभिसबन्धकपीशकछेशा ।
जलजाम्बकचन्द्रप्रभास्यमहाभुजदण्डशिरेमुकुटाङ्कुतकेशा ॥
सुनियस्यसप्रेमविभीषणवाच कृताधिपलंकसमीपजलेशा ।
करुणाकरबैजसुनाथसदा मनकंजप्रकाशकरामदिनेशा ७ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपद शरणविरचितेगीतावलिमणिदीपिकायां सुन्दरकाण्डं समाप्तम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

गीतावलीसटीक ॥

लङ्काकाण्ड ॥

रामंकञ्जविलोचनंगुणनिधिंसीतापतिंराघवं श्रीमत्पङ्क्तिरथात्मजंरघुवरंराजाधिराजंहरिम् ॥ सान्द्रानंदपयोदनीलवपुषं चापेषुपाणिप्रभुंवन्देऽहंरघुवंशभूषणवरंदेवंप्रसन्नाननम् १ ॥

मू० । रागमारू ॥ मानुअजहुँसिखपरिहरिक्रोध ॥ पियपूरोआयोअबकाहिकहुकरिरघुवीरविरोध १ जेहिताड़कासुबाहुमारि मखराखिजनायोआपु ॥ कौतुकहीमारीचनीचमिस प्रकट्योविशिखप्रतापु २ सकलभूपबलगर्वसहित तोरोकठोरशिवचापु ॥ ब्याहीजेहिजानकीजीति जगहरयोपरशुधरदापु ३ कपटकाकसासितप्रसाद करिबिनश्रमवध्योविराधु ॥ खरदूषणत्रिशिराकबन्धहति कियोसुखीसुरसाधु ४ एकहिबाणबालिमारेजेहिबलउदधिअगाधु ॥ कहुधौंकन्तकुशलबीतेंकेहिकियेरामअपराधु ५ लांघिनसकैलोकविजयीतुमजासुअनुजकृतरेखु ॥ उतरिसिन्धुजारोप्रचारिपुरजाकोदूतविशेखु ६ कृपासिन्धुखलवचनकृशानुसम यशगावतश्रुतिशेखु ॥ सोईविरदैतवीरकोशलपतिनाथसमुझिजियदेखु ७ मुनिपुलस्त्यकेयशमयंकमहँकतकलंकहठिहोहि ॥ औरप्रकारउबारनहींकहुँमैंदेख्योंजगतोहि ८ चलुमिलिवेगिकुशलसा

दरसियसहितअघकरिमोहिं ॥ तुलसिदासप्रभुशरणश न्दसुनिअभयकरहिंगेलोहिं ९ ॥

टी० । रावणप्रति मन्दोदरी कहत कि हे पति क्रोध छांड़ि अजहूँ सिखावन मानहु काहेते श्रीरघुवीरसों वैर विरोध करि काको पूर पूरो ताको अब कहो १ जब रावण उत्तर न दिये तब मंदोदरी वैर करनहारनको देखावत प्रथम मुनिकी यज्ञके रक्षा हेतु रहे तहां ताड़का सुबाहु वैर करे तिनको मारि मखकी रक्षा करे यामें अपनो प्रभाव जनाये कौतुकमात्र में मारीचको बाण में उड़ाइदियो समुद्रपार आयो ताके मिसते बाणनको प्रभाव प्रकट करे २ सकल लोकके भूपनको गर्वसहित जनकपुर में शिवजी को महाकठोर धनुष तोरे ताके हेतु परशुराम विरोधकरे तिनको दापकही अभिमान तोरि जगको जीति श्रीजानकीजीको विवाही जिन श्रीरघुनाथजीने ३ फटिकशिलापर कपट करि काकरूप ह्वै जयन्त विरोध कियो भाव श्रीजानकीजीके चोंच प्रहार कियो ताकी ऐसी सासति कियो कि त्यहि को रक्षक कोऊ न ठहरो तब व्याकुल ह्वै शरण आये ताको प्रसाद कही प्रसन्न ह्वैके नेत्रको भंग करि प्राण छांड़ि दिये वनमें विराध वैरकियो ताको वर रहै अस्त्र सों मृत्यु न होइ सो विन परिश्रमही मारे भाव जीवतही भूमिमें गाड़ि दियो दण्डकारण्य विषे खर दूषण त्रिशिरा कबंध विरोध कियो तिनको मारि देवनको अरु साधुनको सुखी करे ४ सुग्रीव को वलदै पठायो तहां बालि वैर कियो जो बल में अथाह समुद्र ताको एकबाणते मारे जिन प्रभुने मन्दोदरी कहत हे कन्त श्रीरामचन्द्रको अपराधकरिकै काकोधौं कुशलबीती है ताको अब तुम कहो ५ जासु कही जिन श्रीरघुनाथजीके अनुजने पंचवटी विषे जानकीजीके आसपास रेख खँचाई ताको लोकविजयी तुम नांघि न सक्यो उनको दूत समुद्र नांघि विशेष करिकै तुम्हारे सन्मुख प्रचारिकै तुम्हारो नगरजारिकै कुशलते चलोगयो ६ सज्जननपर

कृपाके समुद्र दुष्ट वनके भस्म करिबे में अग्निसमान यह सुन्दर यश वेद शेषादि गावतहैं जिनको सोई विरदैत कहे बानावाले वीर कोशलपति सोई श्रीरघुनाथजीहैं हे नाथ अपनेजीमें विचारि के देखु ७ पुलस्त्यमुनिको यश निर्मल चन्द्रमा ताके कुल में तुम हठिकै काहेको कलंकीहोत भाव ईश्वरसों विमुखहोत तहां मैं सब जग टोहि कहे ढूंढ़िके विचारिदेख्यों रामके विरोध किहे और कौनहूं प्रकार तुम्हारो उबार कहूं नहीं है भाव त्रैलोक्यमें कोऊ रक्षक नहीं है॥ प्रमाणंवाल्मीकीयरामायणे॥ ब्रह्मास्वयंभूश्चतु राननोवाइन्द्रोमहेन्द्रःसुरनायकोवा। रुद्रस्त्रिनेत्रस्त्रिपुरांतकोवा त्रातुंनशक्तोयुधिरामवध्यम्॥ पुनः॥ भगवद्गुणदर्पणे॥ रामव ध्योनशक्तःस्याद्रक्षितुंसुरसत्तमैः। ब्रह्मरुद्रेन्द्रसंज्ञैश्चत्रैलोक्यप्रभु भिस्त्रिभिः ८ मन्दोदरी कहत कि और उपाय बचिवेको नहीं है एक उपायहै अब सोको करिकै आदरते जनकसुताकोलैके चलिकै प्रभुको मिलो तब तुम्हारी कुशलहै या प्रकार शरणागतके आरत शब्द सुने प्रभु तोको अभय करैंगे ९॥

सू०। रागकान्हरा॥ तूदशकंठभलेकुलजायो॥ ता महुँशिवसेवाविरंचिवर भुजबलविपुलजगतयशपायो १ खरदूषणत्रिशिराकबन्धरिपु जेहिबालीयमलोकपठायो॥ ताकोदूतपुनीतचरितहरि शुभसन्देशकहनहौंआयो २ श्रीमदनृपअभिमानमोहवश जानतअनजानतहरिलै यो॥ तजिव्यलीकभजुकारुणीकप्रभु दैजानकिहिसुनहि समुझायो ३ यातेतवहितहोहिकुशलकुलअचलराजच लिहैनचलायो॥ नाहिंतोरामप्रतापअनलमहँ ह्वैपतंगप रिहैशठधायो ४ यद्यपिअंगदनीतिपरमहित कह्योतथा पिनकछुमनभायो॥ तुलसिदाससुनिवचनक्रोधअतिपा वकजरतमनहुँघृतनायो ५॥

टी० । रावणप्रति अंगद कहत हे दशकंठ तू भले पुलस्त्य मुनिके कुलमें उत्पन्न भयो तामें शिवजीकी सेवामें मन लगायो ताको बल ताहूपर तपकरि ब्रह्मालों वर पायो तेहिकरिकै जगमें भुज बलको बड़ा यश पायो १ खर दूषण त्रिशिरा कवंधादि रिपु सहित बालि यमलोकको पठाये कालके वशकरे जिनने ताको दूत मैं हौं जिनको यश पवित्रहै ऐसे हरिको शुभ सन्देश तुम्हारे कल्याणरूप संदेश मैं कहवे हेतु आयाहूं तुम्हारे ढिग २ श्रीकहो द्रव्यमदते राजपदके अभिमानते महामोहसें अन्ध ह्वै ज्ञानत मैं अजान वनि श्रीजानकीजीको हरिलायो तासें अवहीं कुशल है जानकीजीको दैके कपट अभिमान छांड़ि कारुणीक प्रभुको भजो यामें तुम्हारो कल्याणहै यह हमारो समुझायबो सुनो ३ यामें तुम्हारो हित ऐसो है कि कुशलसहित तुम्हारो अचल राज्य ह्वैहै जो काहू के चलाये न चलिहै नाहीं तो हे शठ रघुनाथजी के प्रतापरूप अग्निमें पतंगह्वै धाइधाइ तामें परि भस्मह्वैहै ४ यद्यपि अंगद नीति अरु परमहित कह्यो तथापि रावणके मन कछु नहीं भायो गोसाईंजी कहत कि अंगदके वचन सुनि रावण के कैसे क्रोध भयो मानो अग्निमें जरत घृतपरे अधिक प्रज्वलित भयो ५॥

मू० । तैंमेरोमरमकछूनहिंपायो ॥ रेकपिकुटिलढीठ पाँवरपशुमोहिंदासज्योंडाटनआयो १ भ्राताकुम्भकरण रिपुघातक सुतसुरपतिहिबांधिकरिल्यायो ॥ निजभुजब लअतिअतुलकहौंक्यों कंदुकज्योंकैलासउठायो २ सुरन रअसुरनागखगकिन्नर सकलकरतमेरोमनभायो ॥ निशि चररुचिरअहारमनुजतन ताकोयशखलमोहिंसुनायो ३ कहाभयोवानरसहायमिलि करिउपायजोसिंधुबँधायो ॥ जोतरिहैभुजबीसघोरनिधि ऐसोकोत्रिभुवनजनजायो ४ सुनिदशशीशवचनकपिकुञ्जर विहँसिईशमाथहिशिर

नायो ॥ तुलसिदासलंकेशकालवशगुणतनकोटियतन समुझायो ५ ॥

टी० । अंगद सों रावण कहतहै कि तैं मेरो हाल कछु नहीं पायो है रे कपिकुटिल ऐसा पशु पाँवरहै ढीठ कि अपने दाससम मोको डाटै तू चलाहै १ कुम्भकरण अस मेरे भ्राता जो शत्रु रुर नाशकर्त्ता मेघनाद ऐसा पुत्र वली जो इन्द्रको वांधिलायो मेरे भुजनको वल अत्यन्त अतुल ताको कैसे वखानकरौं जिनते गेंद समान कैलास उठाय लियो २ देवता, दैत्य, नर, नाग, पक्षी, किन्नर आदि सब मेरे मनभायो करत भाव हमारे भयते सदा डरत हैं अरु मानुष तौ निशाचरनको सुन्दर आहारहै तिनको यश खल मोको सुनावतहै ३ वानरनकी सेना मिलिकै उपाय करिकै समुद्र बँधायलियो तामें काहभयो मेरे भुजा वीस घोरसमुद्र हैं तिनको जो तरिहै ऐसो को वीर त्रिभुवनमें है ४ कपिकुञ्जर अंगद रावण के वचन सुनि हँसिकै रघुनाथजीकी मायाको माथ नवावतेभये गोसाईंजी कहत कि अंगदने कोटिनभांति ते समुझायो परन्तु रावण कालकी वशहै ताते कछु नहीं गनत मन में कि काहबनी काह विगरी ५ ॥

मू० । सुनुखलमैंतोहिंवहुतबुझायो ॥ येतोमानतोहिं जोमोहवशजानतहूचाहतविषखायो १ जगतविदितअ तिवीरवालिवलजानतहौकिधौंअबबिसरायो ॥ विनप्र याससोहतोएकशर शरणागतपरप्रेमदिखायो २ पाव हुगेनिजकर्म्मजनितफलभलेठौरहठिवैरबढ़ायो ॥ वानर भालुचपेटलपेटनि मारततवह्नैहैपछितायो ३ हौंहींदश नतोरिवेलायक काहकरौंजौनआयसुपायो ॥ अबरघु वीरवाणविदलितउर सोवहिगोरणभूमिसोहायो ४ अ विचलराजविभीषणकीसब ज़ेहिरघुनाथचरणचितला

यो ॥ तुलसिदासयाहिभांतिवचनकहि गर्जतचलोबालि नृपजायो ५ ॥

टी० । अंगद कहतहैं हे खल रावण मैं तोहिं बहुत समुझायो सो नहीं माने ताको फल होनहारहै सो सुनु मोहवशते तोको एतो अहङ्कार भयो यासैं जानि बूझ जहर खावा चाहतहो १ जगमें विदित वीर अत्यन्त बली बालि जाके बलको तुमहूं जानतहौ षट्मास कखरी में रह्यो ताको अब कैधौं बिसराइदियो ऐसे बालिको रघुनाथजी विन प्रयास एक बाणतेमारे शरणागत सुग्रीवपै प्रेम जगमें दिखायो कृपाकरि कपिकुलको तिलककियो २ भले ठौर हठि करिकै वैर वढ़ायो है ताते अपने कर्मनको जनित उत्पत्तिफल पावहुगे जब वानर भालु चपेट थपेरा लपेटि मुष्टिका तुम्हारे मारहिंगे तब पछिताव होइगो ३ हौंहीकहौ मैहीं तुम्हारे दांत तोरिबे लायकहौ पर प्रभुकी आज्ञा नहीं है ताको काहकरौं अब रघुनाथजी के बाणन करिकै विशेष दलित तुम्हारो हृदय ताते रणभूमिमें सोवहिगो तब रणभूमि शोभित होहिगी ४ अब लङ्काकी राज्य विभीषणकी है अचल जे रघुनाथजीके चरणनमें चित्तलगाये हैं गोसाईंजी कहत कि याप्रकारकी वार्त्ताकरि बालि नृपकोजायो जो अंगद सो गर्जि चलतभयो ५ ॥

मू० । रागकेदार ॥ रामलषणउरलाइलयेहैं । भरे नीरराजीवनयनसबअंगअंगपरितापतयेहैं १ कहतससो कविलोकिबंधुमुखवचनप्रीतिगथयेहैं ॥ सेवकसखाभक्ति भायपगुण चाहतअबअथयेहैं २ निजकरणीकरतूति ताततुमसुकृतीसकलजयेहैं ॥ मैंतुमबिनतनुराखिलोकअ पनेअपलोकलयेहैं ३ मेरेपनकीलाजइहांलौंहठिप्रियप्रा णदयेहैं ॥ लागतसांगविभीषणहीपरसोपरआपुभयेहैं ४ सुनिप्रभुवचनभालुकपिसुरगण शोचसुखायगयेहैं ॥

तुलसीश्राइपवनसुतविधिमानोंफिरिनिर्मयेनयेहैं ॥ ५ ॥

टी० । शक्तिलागि रोइ लक्ष्मणजीको श्रीरघुनाथजीने हृदय में लगाइलियो तासमयमें कमलसरीखे नेत्रनसें जलभरा सब अंगअंग परिताप करिकै तये कही तसहै १ बन्धु लक्ष्मणजीको मुख देखि श्रीरघुनाथजी प्रीति के सर्वांग गयये कही गुहेसहित शोक अर्थात् प्रीतियुक्त करुणारस सहित वचन कहत कि सेवकके यावद्गुणहैं अरु सखाके यावद्गुणहैं और भाइपकहे भाइपन के यावद्गुणहैं ते सब पूर्ण लक्ष्मणजीमें रहे सो सब अथवा चाहतहैं भाव लक्ष्मणछांडि दूसरेमें नहींहैं सेवककेगुण यथा सिद्धांतमुक्तावली ॥ दोहा ॥ सर्वेश्वरसर्वज्ञप्रभु अतिशयकृपानिधान। इत्यादिकगुणआश्रयण सो अवलम्बन जान १ आठौं अंगप्रणाम पुनि पादप्रक्षालनपान । कृपा दृष्टिकी वांछनित सो उद्दीपन जान २ आज्ञाशिरधारेसदा सेवनचतुरअमान । ढीठवचनवोलै नहीं यह अनुभाव बखान ३ पूर्वकहेते प्रणययुत अष्टसात्त्वकीजान । तन मनको जो छोभही ताहि स्त्रातिका मान ४ हर्षगर्व चिन्तास्मृति मति धृति अरु निरवेद । तर्कशंक पुनि दीनता सब संचारि सुवेद ५ जिय प्रभुताको ज्ञानपुनि संभ्रम आदर दान । स्वामिभाव करि प्रीति यह स्थायि भाव जियजान ६ प्रथमहि ते सियराम को दर्शनहीं संयोग । दर्शन पुनि अन्तरपरे ताकहँ जानि वियोग ७ वियुत प्रभुत है जागमें यह दश दशा बखानि । कृशता जड़ता जागरण अनालम्ब धृतिहानि ८ ज्वरता पादिक व्याधि पुनि जरनि अंगसोजान । बाढ़ै चित्त उन्मत्तता मूर्च्छा मरण निदान ६ इति सेवक ॥ अथ सखागुण यथा ॥ सरस सलोने नेहनिधि रघुवर बड़े सुजान । इत्यादिक गुण आश्रयण सो अवलम्बन जान १ चपल तुरंगनि फेरनि मृगतकि मारन बान । करि प्रण लक्षण बेधनी सब उद्दीपन जान २ धरिगल भुज बतलावनी इकसँग भोजन शैन । अनुभावन यह सखाके सब विधि सुखको ऐन ३ पूर्व कहेते स्वातिको रोमांचादिक अत्र । हर्ष गर्व आदिक सकलसंचा-

रिहु जो तत्र ४ सख्यरसकी अस्थायि पुनि प्रणय प्रेम अरुनेह । अनुरागो अस जानिये एकजीवद्वैदेह ५ इति सखागुण ॥ अथ भक्ति यथा ॥ महारामायणे ॥ बाह्यांतरंशृणुतथागिरिराजकन्ये रवत्तोवदाम्रिघुनाथजनस्यमुख्यम् ॥ अन्येविहायसकलंसदसच्चकार्यं श्रीरामपंकजपदंसततंस्मरन्ति १ श्रीरामनामरसिकाःप्रपठन्तिभक्त्या प्रेम्णाचगद्गदगिरोप्यथहृष्टलोमाः ॥ सीतायुतंरघुपतिंचविशोकमूर्तिं पश्यन्त्यहर्निशिमुदापरयाचरम्यम् २ भूमौजलेनभसिदेवनरासुरेषु भूतेषुदेवसकलेषुचराचरेषु ॥ पश्यन्तिशुद्धमनसाखलुराममरूपं रामस्यतेभुवितलेसमुपासकास्ते ३ शांतःसमानमनसाचसुशीलयुक्तस्तोषक्षमागुणदयामृदुबुद्धियुक्तः ॥ विज्ञानज्ञानविरतिःपरमार्थवेत्ता निर्ममकोऽभयमनाःसचरामभक्तः ४ भालेचरम्यतिलकंविवरेणदीप्तंरामस्यपादसदृशंत्वथपीतमध्यम् ॥ कंठेतथातुलसिदामलसद्भुजोवै तप्तेनबाणधनुषासचरामभक्तः ५ रामस्यचैवहृदयंशुचिमंत्रराज श्रीरामनामसहितंसततंस्मरेद्यः ॥ सत्संगनित्यनिरतःश्रुतितत्त्ववेत्ता ज्ञातोमहान्रघुपतेःसमुपासकस्स ६ इति भक्तगुणस् ॥ अथ भाइपन यथा ॥ श्रीमद्रामायणेलक्ष्मणवाक्यम् ॥ अहंतावन्महाराज पितृत्वंनोपलक्षये ॥ भ्राताभर्ताचबंधुश्च पितामाताचराघवः ॥ इत्यादि यावद्गुण हैं तो सब लक्ष्मणजी में परिपूर्ण हैं ताते इनविना दूसरा कौन धारैगो ताते गुण सब लोप होनचाहतहैं २ निज कहे अपनी करतूति जो कर्तव्यता अर्थात् ज्ञान वैराग्य तप त्याग प्रभु में निरछल अनुराग भक्ति अन्यता इत्यादि करतूति ताकी कीरति सो अथवा ॥ होत जो अस्तुतिदानसों कीरति कहिये ताहि । होतबाहु बलते सुयश कहतसुसज्जनताहि । स्तुति यथा ॥ नाथस्वामि तुमदास मैं तजौ तौ काहबसाइ । अरु दान मैं तो लक्ष्मणजी तनमन धन प्रभुपर वारणकरे । यथा । रामविलोकि बंधु करजोरे । देह गेह सब तृणसम तोरे ॥ इत्यादि सो कीरति करतूतिकहे यावद्यशदायक कर्तव्यता । यथा । रघुपतिकीरति रुचिरपताका । दण्डसमानभयो

यशजाका ॥ तहां रघुनाथजी कहत कि हे तात लक्ष्मणजी तुम अपनी करतूतिकी कीरति जो यावत् सुकृतीहैं तिनको जयेकही जीत लियो तहां प्रथम सुमित्राजी सुकृतशिरोमणि यथा ॥ पुत्रवतीयुवतीजगसोई । रघुपतिभक्तजासुसुतहोई ॥ तेहि सुमित्रा के वचन यथा ॥ भूरिभागभाजनभयो मोहिंसमेतवलिजाउ । जोतुम्हरेमनछांडिछल कीनरामपदभाउ ॥ पुनः सुकृतशिरोमणि भरतजी यथा ॥ सुनहुँभरतरघुपतिमनमाहीं । प्रेमपात्र तुमसनकोउनाहीं ॥ तिन भरत के वचन यथा ॥ अहोधन्यलक्ष्मणबड़भागी । रामपदारविंदअनुरागी ॥ अरु आगे पन्द्रहे के पद में गोसाईंजी ने लिखाहै कि उपमा राम लषणकी प्रीतिकी क्यों दीजै छीरै नीरै तहां रघुनाथजी कहत कि हे तात तुमविना जगत् में मैं अपनो तनराखि अपलोककहे अयश को लियेहौं ताके निवारण हेतु उठौ काहेते हमारे वचनके सुयशके रक्षक हौ सो सम्भारि हमारो अयशमिटावो ॥ इति शेषः ॥ प्रभुकहत हे तात तुमको मेरे प्रणकी इतनी लाज है कि प्रणकी रक्षाहेतु हठिकरिकै प्रियप्राण देदियो काहेते विभीषण को लंकाराज्य देवेकी प्रतिज्ञाजानि विभीषणपर शक्ति आवत देखि लक्ष्मणजी सीपर कहे ढालह्वै अपने ऊपर आड़िलियो जामें विभीषणके न लागै जो प्रभुकी प्रतिज्ञाजाइ यहां विभीषणके मारिबे को प्रण मेघनाद किहेरहा यथा ॥ कहांविभीषणभ्राताद्रोही । आजुशठै हठिमारौंवोही ३१४ तेहि अवसरमें करुणाभरे वचन प्रभुके सुनि वानर भालु देवगण शोचवश ह्वै सुखाइगये भाव आखिरी सम्मुझि शोकअग्नि में तप्तभये गोसाईंजी कहत कि ताही समय पवनसुत ओषधिलाइ मानो विधाताह्वै फिर नये शिरते लक्ष्मणजी को बनाये हैं ५ ॥

मू० । रागसोरठ ॥ मोपैतौनकछूह्वैआई ॥ औरनिबाहिभलीविधिभायपचल्योलषणसोंभाई १ पुरपितुमातु

सकलसुखपरिहरि जेहिंवनविपतिबढ़ाई ॥ तासँगहौंसुर लोकशोकतजिसक्योंनप्राणपठाई २ जानतहौंयाउरकठो रतेकुलिशकठिनतापाई ॥ सुमिरिसनेहसुमित्रासुतकोदर किदरारनजाई ३ तातमरणतियहरणगृद्धवधभुजदाहिनी गवाँई ॥ तुलसीमैंसबभांतिआपनेकुलहिकालिमालाई४॥

टी०। नरनाथ्य में प्रभु कहत मोपै कहे हमसों कछुन बनि-परी और कही अन्तलौं भलीविधि भाइपना निबाहिकै लक्ष्म-ण ऐसो भाई चलोजात हमारे वर्तमान १ पुरको ऐश्वर्य छांड़े माता पिता को छांड़े सब प्रकारको सुख छांड़े हमारे साथ वन में हमारी विपत्ति बांटिलियो तिन लक्ष्मण के साथ वनको शोकछांड़ि सुरलोक प्राण न पठाइ सक्यों भाव जिनने सुख छांड़ि वन विपत्ति में साथ दियो तिन के साथ हम वनकी वि-पत्तिछांड़ि स्वर्ग सुखके साथी न भये २ यह मैं जानतहौं कि मेरो यह उर ऐसो कठोरहै जासों कुलिश जो वज्रहै सोऊ कठो-रता पाई है काहेते सुमित्रा सुत जो लक्ष्मण हैं तिनके सनेह सुमिरि हृदय में दराकिकै दरार न भई ताते कुलिशहू ते कठोर है पुरमें मेरेहेतु पिता तनत्याग वनमें स्त्री हरण गृद्धको मृत्युभई अब इहां दाहिनीभुजा लक्ष्मणसे भाईको गवाँये ताते मैं सब भांतिते कुलमें कालिमा कहे स्याही लगाय अयशी भयउँ ३४॥

मू०। मेरोसबपुरुषारथथाको ॥ विपतिबटावनबन्धु बाहुबिनकरौंभरोसोकाको १ सुनुसुग्रीवसांचहूमोपरफे रोवदनविधाता ॥ ऐसेसमयसमरसंकटहौं तज्योलषणसे भ्राता २ गिरिकाननजैहैंशाखामृगहौंपुनिअनुजसँघा ती ॥ ह्वैहैकाहविभीषणकीगतिरहीशोचभरिछाती ३ तुलसीसुनिप्रभुवचनभालुकपि सकलविकलहियहारे ॥ जाम्बवन्तहनुमन्तबोलितब अवसरजानिप्रचारे ४ ॥

टी०। नरनाट्यमें प्रभुकहत कि हमारो पुरुषार्थ सब थकिगयो काहेते दाहिनभुजा विपत्ति बटावनहारो लक्ष्मण विना केहिको भरोसाकरौं १ हे सुग्रीव हमारे ऊपर विधाताने सांचेहू सुखफेरो भाव विमुख भयो काहेते ऐसे समय समर में संकट परेपर लक्ष्मण असभाई हमको तजे जात वा हम भाई को तजे वा विधाताने ऐसे समय में भाईको छुड़ाये २ कौन संकट सो कहत शाखामृग वानर तो गिरिकन्दरन में जाहिंगे हम बंधुकेसंग देह छांडि देहिंगे तब विभीषण की कौन गति होयगी यही शोचते हमारो हृदय भरि रहाहै सो संकट है ३ गोसाईंजी कहत कि करुणामय वचन प्रभुके सुनि दुःख को मिटावनहारो पुरुषार्थ काहू में न देखिपरो ताते वानर ऋक्ष हृदय में हारिगये ताते विकलभये तहां करुणारस में वीर रस को उद्दीपन समयजानि जाम्बवान् हनुमान्जी को बोलाइ प्रचारि कही ललकारे कि याको उपाय तुम्हारे करिबे योग्य है ४॥

मू०। रागमारू॥ जोहौंअबअनुशासनपावौं॥ तौचन्द्रमहिंनिचोरिचैलजिमिआनिअमीशिरनावौं १ कैपाताललदलौंव्यालावलिअमृतकुंडमहिलावौं॥ भेदिभुवनकरिभानुबाहिरहितुरतराहुदैतावौं २ विबुधवैद्यबरबसआनौंधरितोप्रभुअनुगकहावौं॥पटकौंनीचमीचमूषकजिमिसबहिकोपापवहावौं ३ तुम्हरीकृपाप्रतापतिहारेनेकविलम्बनलावौं॥ दीजेसोइआयसुतुलसीप्रभुज्यहितुम्हरेमनभावौं ४॥

टी०। इहां करुणारस अनुभाव देखि दयावीरको उद्दीपन तहां उग्रवचन लालवदन प्रफुल्लितदेह यह अनुभाव भयो गर्ब धैर्य संचारी उत्साहस्थायी सो वीर रसके वचन हनुमान्जी बोले कि जो अब मैं प्रभुकी आज्ञा पावों तो चन्द्रमाको वस्त्र समान निचोरि अमृत लैकै लौटि माथ प्रभुको नवावों ताको पानकरैं

लक्ष्मणजी जीवहिं १ कदाचित् चन्द्रमा में थोड़ा अमृत होइ निचोड़ेते न मिलै तो पातालमें सर्पनकी अवली जे रक्षक तिन को दलिकै अमृतकुण्ड सहित भूमि उठाय लावों कदाचित् ताहूते कार्य न होइ प्रभातभये ते हानिहै ताके हेतु भुवनको मण्डलफारि सूर्यको ब्रह्माण्डके बाहर निकारि ताही मार्गमें राहु को धरि ताइदेउँ जामें या लोकमें आइ न सकैं तव प्रभातै न होई २ तबतक विबुधवैद्य अश्विनकुमार साइति मृत्युलोकजानि बोलाये न आवहिं तो बरबसकहे जबरई पकरि लावों तिनहूं ते कार्य न होइ तौ नीचमृत्युको पकरि मूषसमान पटकिडारों तामें सबके पाप बहावों जामें काहू को मृत्युहोबै न करै ३ हे प्रभु आपकी कृपाते आपके प्रतापते इत्यादि कार्य करिबे में नेकऊहेथोरहू विलम्ब न लावों तातेअस आज्ञादीजै जामें आपु के मनमें मेरी कर्तव्यता रुचै ४ ॥

मू० ।सुनिहनुमंतवचनरघुवीर ॥सत्यसमीरसुवनसव लायककह्योरामरणधीर १ चाहियेवैद्यईशआयसुधरि शीशकीशबलऐन ॥ आन्योसदनसहितसोवतहीजौलौं पलकुपरैन २ जियेकुवँरनिशिमिलैमूलिकाकीन्हीविन यसुषेन ॥ उठ्योकपीशसुमिरिसीतापतिचलोसजीवनले न ३ कालनेमिदलिवेगिविलोक्योद्रोणाचलजियजानि ॥ देखीदिव्यओषधीजहँतहँजरीनपरीपहिचानि ४ लियो उठायकुधरकंदुकज्योंवेगनजाइबखानि ॥ ज्योंधायेगजराजउधारनशपदिसुदर्शनपानि ५ आनिपहारजुहारेप्रभुकि योवैद्यराजउपचार॥ करुणासिंधुबंधुभेट्योमिटिगयोसकलदुखभार ६ मुदितभालुकपिकटकलह्योजनुसमरपयोनिधिपार ॥ बहुरिठौरहीराखिमहीधरआयोपवनकुमार ७ सेनसहितसेवकहिसराहतपुनि२रामसुजान॥ बरषिसुमन

हियहरषिप्रशंसतविबुधबजाइनिशान ८ तुलसिदाससुखिपाइनिशाचरभयेमनहुंबिनुप्रान ॥ परीभोरहीरोरलंकगढ़दईहांकहनुमान ९ ॥

टी० । हनुमान्‌जीके वचन सुनि श्रीरघुनाथजी बोले कि हे पवनसुत तुम्हारे वचन सांचेहैं अरु तुम सबलायकहो ऐसे वचन श्रीरामरणधीर कहते भये १ हे हनुमान् लंकामें सुषेण वैद्यहैं ताको लवाइ लैये ईश जो श्रीरघुनाथजी तिनकी आज्ञा माथेधरि बल ऐन कीश जो हनुमान्‌जो ते मन्दिर सहित सोवतही में वैद्यको उठाय लाये जवतक पलक न परै तेतीबार में २ श्रीलक्ष्मणजीको देखि सुषेणवैद्य बिनती करि कहत भयो कि रात्रिहीको सजीवन मूरि मिलै तो कुवँर जीवहिं प्रभात होन न पावै तबै तक कुशलहै यहसुनि प्रभु आज्ञादियो ताको शिरधरि कपीश हनुमान्‌जी उठे दुर्घटकार्य साइति कुसाइति बिना बिचारे तत्काल जावेमें विघ्न निवारन हेत सब मंगल को मूल सीतापतिको सुमिरि सजीवनल्याइबेहेतु चल्यो ३ मगमें छलरूप कालनेमिमिलो ताको दलि शीघ्रते चलेजाइ द्रोणागिरि देख्यो हृदयते जान्यो कि यही द्रोणागिरिहै काहेते दिव्य ओषधी जो अग्निसम तेजवान् तिनको जहां तहां बहुती देखे परन्तु सजीवन मूरि नहीं पहिचाने कि कौनि है ४ तब कुधर जो पर्वत ताको गेंदकी समान उठाइलियो कैसे वेगसों चल्यो जो बखानी नहीं जात ताकी उत्प्रेक्षाकरत मानों गजराज को उबारिबे अर्थ चक्रपाणि जो विष्णु सो चले तद्वत् वेगसों हनुमान्‌जी चले ५ द्रोणागिरि को लाइ हनुमान्‌जी प्रभुको जोहारकीन तब वैद्यराजने उपचार कही ओषधी पियावत भयो तुरतही लक्ष्मणजी उठि बैठे तब करुणासिंधु जो श्रीरघुनाथजी सो बन्धु को भेंटे आनन्द भयो अरु यावत् दुःखको भार सो सब मिटिगयो ६ ताअवसर में कपि भालु ऐसे आनन्दभये मानों समररूपी समुद्रको पारपाय मानों समर जीतिगये महीधर जो द्रोणागिरि

ताको हनुमान्‌जी जेहि स्थानते लाये रहैं तहां धरिआये इत्यादि कर्त्तव्यता मान रहित हनुमान्‌जीको देखिकै ७ कपि सेना सहित सुजान जो रघुनाथजी अर्थात् कृतज्ञहैं ताते सेवक जो हनुमान् तिनकी वारम्बार सराहना करत हैं विबुध जो देवता हृदयते हर्ष फूल वर्षि बाजाबजाइ प्रशंसा करत हैं ८ गोसाईंजी कहत कि लक्ष्मणजी के जीवेकी सुधिपाय निशाचर मानों विना प्राणके भये प्रभातही गर्जि हनुमान्‌जी ललकारे सो हांकसुनि लंकामें रोर कही जाहिनहीं ९ ॥

मू० । रागकेदार ॥ कौतुकहीकपिकुधरलियोहै ॥ चल्योनभनाइमाथरघुनाथहिसरिसनवेगवियोहै १ देख्यो जातजानिनिशिचरबिनुफरशरहयोहियोहै ॥ पर्यो कहि रामपवनराख्योगिरिपुरतेहितेजपियोहै २ जाइभरतभरि अंकभेंटिनिजजीवनदानदियोहै ॥ दुखलघुलषणमरमघायलसुनिसुखबड़ोकोशजियोहै ३ आयसुइतहिस्वामिसंकटउतपरतनकछुकियोहै ॥ तुलसिदासविहर्योअकाशसोकैसेकैजातसियोहै ४ ॥

टी० । कौतुकमात्रमें हनुमान्‌जी कुधर जो पर्वत ताकोउठाइ लियो श्रीरघुनाथजीको माथनाइ आकाशमार्गचल्यो ऐसीवेगसों जाकीसरिस वियोकही दूसरो नहींहै वेगवालो १ अयोध्याजी पर आयो तहां जासमयमें शक्तीलगी ताअवसर में सुमित्राजीको स्वप्नभयो कि दाहिनी भुजा सर्पने लीलिलियो ताकोवशिष्ठजीसों पूंछे तिनने कह्यो कि लषणलालको कछुअरिष्टहै ताके शांतिहेतु यज्ञकिया चाहिये ताते भरतजीके पासचलो तो यज्ञकीरक्षाकरैं नाहीं निशाचर विघ्नकरहिंगे ताकेहेतु भरतजीकेपासआइ वशिष्ठजी यज्ञकरनेलगे तब भरतजी रक्षाहेतु धनुषबाणलै बैठे ताही अवसर में हनुमान्‌जी आकाशमें हहाने तहां भरतजी निशाचर जानि बिनागांसीको बाण हृदयमें हयोकहीमारे ताके लगतराम

राम कहि हनुमान्‌जी गिरिपरे अरु पर्वत को पवनदेवने रोंकि राख्यो जामें अवधपुर दवि न जाइ ताही पवनके सहायताते पर्वत गिरिवे को जो वेग तेहि तेजको पुरपियो कही पान करिगयो भाव यथा कोऊ चोंटमारै ताको कछू न मानै सोई पीजावो है यथा घोड़ाके कोड़ामारो सो पीगयो २ हनुमान्‌जीके मुखते राम राम शब्द सुनतेही भरतजी जान्यो कि कोऊ सज्जनहै तहां हनुमान्‌जी को अंकमें उठाइ भरतजी निज जीवन दानदये भाव जो कपि जीवहिंगे तो हम जीवहिंगे नाहीं हम ना जीवहिंगे अथवा जीवनदानदै मृतक शरीर जिआये ताते हनुमान्‌जी उठे तव समाचार कहे ताको सुनि दुःख लघुभाईके मर्मस्थान में घाव सुनि दुःखभयो सो थोरा दुःखभयो अरु कीश हनुमान् जिये ताको सुख बड़ा भयो यामें अभिप्राय एक तौ क्षत्रियको सन्मुख घावलेवो धर्म दूसरे प्रभु के साथमें तीसरे लक्ष्मणजी के जीवे की औषध हनुमान्‌जी लिहेजात ताके भक्षणमात्रही में जीउठेंगे यह समुझि लघु दुःखभयो अरु हनुमान्‌जी औषध लिहे न जीते तौ सम्पूर्ण कार्य नशातो तो अयशके पात्र भरतजी होते ३ इतकहे अयोध्याजीमें चौदहवर्ष रहवे की आज्ञा प्रभुकी है उत लंकामें स्वामीको रणसंकट है तहां न जात बनै न रहत बनै ताते कछु करत नहीं बनत गोसांईजी कहत कि यथा आकाशफाटै ताको कोऊ कैसे सींवे तथा भरतजीसों कछु करत नहीं बनिपरत है ४ ॥

मू०। भरतशत्रुसूदनविलोकिकपिचितचकितभयोहै ॥ रामलषणरणजीतिअवधआये कैधौंमोहिंभ्रमकैधौंकाहू कपटठयोहै १ प्रेमपुलकिपहिचानिकैपदपदुमनवायोहै ॥ कह्योनपरतजेहिभांतिदुहुँभाइन सनेहसोंसोउरलायलयोहै २ समाचारकहिगहरुभोतेहितापतयोहै ॥ कुधरसहितचढ़ोविशिखवेगिपठवौंसुनिहरिहिय गर्भगूढ़रपयो

है ३ तीरतेउतरियशकह्योचहैगुनगननजयोहै ॥ धन्य भरतभरतकरतभयोमगन मौनरह्योमनअनुरागरयोहै ४ यहजलनिधिखन्योमथ्योलंघ्योबांधोअचयोहै ॥ तुलसि दासरघुवीरबंधुमहिमाकोसिंधुतरिकोकपिपारगयोहै ५ ॥

टी० । भरत शत्रुहनको देखि कपि हनुमान्‌जीको चित्त चकित भयोहै यह भ्रम भयो कि रणजीति श्रीराम लषण अवधको आये किधौं मोको भ्रम भयो है किधौं काहूने कपट ठयो कहीं ठानो है माव कपट करि राम लषण तो नाहीं कोऊ बनोहै १ तव धीरज धरि पहिचाने कि एतो श्रीभरत शत्रुहन अयोध्याजी में हैं यह जानि प्रेमते पुलकि चरणकमलन में नमस्कारकरे सोई जो हनुमान्‌जी हैं तिनको श्रीभरत शत्रुहनजी दोऊ भाइन ने सनेह सहित जेहि भांतिते उरमें लगाय लियो सो सनेह कहत नहीं बनत २ तब कुशल पूछेपर हनुमान्‌जी युद्धमें शक्ति लागिवे के समाचार कहि कहे कि मोको औषध लेजावेकी विलम्ब भई तेहि ताप ते भरतजी तपि उठते भये हैं तब भरतजी कह्यो कि पर्व्वत सहित हमारे बाणपर चढ़ो जहां प्रभुहैं तहां को तुम को जल्दी पठैदेउँ ताको सुनिकै हनुमान्‌जी के हृदयमें भारी अहंकार भयो कि हमारे भारते कैसे बाण चलैगो अथवा हनुमान्‌जीके हृदयमें गूढ़ कहे गुप्त जो प्रथमहिं वलभाषेरहैं ताको निवारण हेतु प्रभु भरतजी के द्वारा मिटाइवेहेतु उपाय बांधिदियो ३ परीक्षालेवे हेतु बाणपर चढ़े भरतजीको कछु भार न समुझिपरा चलाइवेको इरादा कियो तव हनुमान्‌जीने बाणते उतरि प्रभाव समुझि भरत जी के यश कहिवेको इरादा कियो परन्तु भरतजी के गुण गणोंने जीतिलियो ताते कहिवेकी सामर्थ्य न ह्वैसकी ताते हनुमान्‌जी भरतजी को धन्यधन्यकरि तिनके अनुराग में मनरँगिगयो तेहि आनन्दमें मग्नह्वै मौनरहे ४ यह जो समुद्रहै ताको सगरके पुत्रन खने देव दैत्य मिलि मथ्यो हनुमान्‌जी नांघ्यो श्रीरघुनाथजी

बांध्यो गोसाईंजी कहत कि भरतजीकी महिमाको जो समुद्रहै ताको कौन ऐसा कविहै जो तरकिकै पारजाइसकै यथा भरद्वाज ॥ भरतधन्यतुमजगयशठयऊ । असकहि प्रेमसगन मुनिभयऊ ॥ पुनः वशिष्ठ ॥ भरतमहामहिमाजलरासी । मुनिमतितीरठाढ़ि अबलासी ॥ पुनः विदेह ॥ भरतअमितमहिमासुनुरानी । जान-तरामनसकतबखानी ५ ॥

मू० । होतोनहिंजोजगजनमभरतको ॥ तौकपिकहत कृपाणधारमगचलिआचरणचरतको १ धीरजधरमधर निधरधुरहुतेगुरुधुरधरनिधरतको ॥ सबसदगुणसनमा निआनिउरअघऔगुणनिदरतको २ शिवहुनसुगमस नेहरामपदसुजननिसुलभकरतको ॥ सजिनिजयशसुरत रुतुलसीकहुअभिमतफरनिफरतको ३ ॥

टी० । कपि हनुमान्‌जी यह बात कहत कि जो जगमें भरतजी को जन्म न होतो तौ उत्तम नेहकोमार्ग कृपाणकी धारकीसमान है तापर चढ़िकै तेहि प्रेमानन्यताव्रत ताके आचरणको कौन करिसकत सो आचरण आगे कहत १ धरनिधर जो पर्वत ताके धुर कहे भार ताहूते गुरुकहे गरू जो धीरज अरु सेवकधर्म को धरकहे भार ताकीधुरीकोभार धरनिकहे भूमिविषे को धारण करत भाव पर्वतते गरुअ जो धीरज धर्मको भार तेहिको भरतविना भूमिमें और कौनहै जो धारणकरत अरु सद्गुणकहे ज्ञान वैराग्य क्षमा द-या शांति सन्तोष सत्य भक्तिआदि तिनको सन्मानिकै हृदय में आनि अघ अरु अवगुणकहे काम क्रोध लोभ मद अहङ्कार अस-त्य तत्पोषकता इत्यादिकन को निदरत निरादर करत भाव भरत विना और कौन अवगुणनको त्यागि गुणग्रहणकरत २ जो सनेह शिवजीको नहींसुलभहै अर्थात् खान पान शयनकेलि एक संग सदा माधुरी अवलोकनि इत्यादि श्रीरघुनाथजीके चरणन में सनेह भरतविना सज्जननको को सुलभकरत भाव भरतजी

को स्नेह स्मरणकरि दशा समुझि कौन ऐसो सज्जनहै जाकी प्रीति प्रभुपद में न होत भरतजी अपनो यशरूप कल्पवृक्ष न सिरजते तौ तुलसीको वाञ्छितफल कौन फरत ३॥

मू०। सुनिरणघायललषणपरेहैं ॥ स्वामिकाजसंग्रामसुभटसोंलोहेललकिलरेहैं १ सुवनशोकसन्तोषसुमित्रहिरघुपतिभगतिबरेहैं॥ छिनछिनगातसुखातछिनहिंछिनहुलसतहोतहरेहैं २ कपिसोंकहतसुभायअम्बकेअम्बकअम्बुभरेहैं॥ रघुनन्दनबिनुबन्धुकुओसर यद्यपिधनुदुसरेहैं ३ तातजाहुकपिसँगरिपुसूदन उठिकरजोरिखरेहैं॥ प्रमुदितपुलकिपैंतपूरेजनुविधिवशसुढरढरेहैं ४ अम्बअनुजगतिलखिपवनजभरतादिगलानिगरेहैं ॥ तुलसीसबसमुझाइमातुतेहिसमयसचेतकरेहैं ५॥

टी०। स्वामि श्रीरघुनाथजीके कार्य हेतु संग्रामविषे सुभट जो मेघनादहै तासों ललकारिके लोहसों लरे हैं तेहि रणविषे लषण लाल घायलपरे हैं यह सुनि १ तहां पुत्रको तौ शोकहै सुमित्राजी को परंतु लक्ष्मणजी भक्तिको बरे हैं भाव प्रभुकीभक्ति अंगीकार किहे हैं ताते सन्तोषहै याहीहेतु जब पुत्रको घायलकी सुधिकरत तब वा क्षणमें गात सूखिजात अरु जब भक्तिमें रत पुत्रको विचारत ताक्षणमें सुमित्राजीके गात हुलसिकै हरित होतहै २ अम्ब सुमित्राजीके अम्बक नेत्रन में अम्बु जलभर काहे हेतु हनुमान् जी सों सहज में कहती हैं कि कुअवसर में रघुनन्दन बिनभायके भये यद्यपि धनु दूसरकही दूसरभाई शत्रुहन इहांहैं परन्तु उहां अकेले हैं ३ सुमित्राजी कहती हैं हे तात रिपुसूदन तुम कपि के साथ रघुनाथजीके पासजाउ यह सुनि शत्रुहन उठि हाथजोरि ठाढ़े भये हृदय में आनन्द ताते तनप्रेमसों पुलकितभये कैसे प्रसन्न भये मानो विधिवशते पूरे दांवपर सुढर है पांसाढरे प्रभु निकट

जायवो पूरो पैतकहे दांव माताकी आज्ञा विधिवश अनाश्रित ४ अम्ब सुमित्राजी अनुज शत्रुहन तिनकी गति देखि हनुमान् भरतादि सब ग्लानिमें गरतभये गोसांईजी कहत कि तेहि अवसरमें करुणा में बेसुधि सुमित्राजीको देखि सब समुझाय के सचेत करते भये ५ ॥

मू० । विनयसुनाइवीरपरिपाय ॥ कहौंकाहकपीश तुमशुचिसुमतिसुहृदसुभाय १ स्वामिसंकटहेतुहौंजउजननिजन्मौंजाय ॥ समयपायकहायसेवकघट्योतौनसहाय २ कहतशिथिलसनेहभोजन धीरघायलघाय ॥ भरतगतिलखिमातुसबरहिं ज्योंगुड़ीबिनबाय ३ भेंटकहिकहिबोकह्योयोंकठिनमानसमाय ॥ लाललोनेलषणसहित सुललितलागतनाय ४ देखिबन्धुसनेहअम्बसुभायलषणकुठाय ॥ तपततुलसीतरणित्रासकयहिनएतिहुताय ५ ॥

टी० । भरतजी कहत कि हे हनुमान्जी प्रभुके पांयनमें परिकै हमारी विनती सुनाइबे हे कपीश तुम स्वाभाविक में सुन्दर पवित्र मतिवाले सुहृदकही प्रिय मित्रहौ तुमसों कहांतक कहौं १ स्वामी जो रघुनाथजी तिनके केवल संकटहेत हमको हमारी माताने जन्मो है जाये कहे वृथा मैं जड़ जगमें जन्म पायो है काहे तें सेवक कहाय समयपर सहाय तौ न घट्यो भाव समयपर सहाय न करिसके २ वार्ता करतमें भरतजी सनेह में शिथिल भये यथा धीरजवान् घाव करिकै घायलहोय प्रभुवियोग पीड़ित भरतजी की गति देखि माता सब कैसीरहीं यथा बिनु वायुकी पतंग तस थकित भई ३ श्रीकौशल्याजी कहती हैं कि हमारी भेंट कहिकै अस कहब कि कठिन मानस कठोर मनकी तुम्हारी माताने अस कहो है कि हे लाल रघुनन्दन लोने लषणसहित तुम्हारो नाम ललित लागत है यथा राम लक्ष्मण ने अथवा श्याम ढिग गौर

अथवा स्वामि अनुकूल सेवक यथा शृंगारढिग प्रेम तैसे लषण सहित श्रीराम शोभित ताते जो अपनी शोभा चाहो तौ लषण सहित आइयो ४ बन्धु जो भरत शत्रुहन तिनको सनेह देखि अम्ब कौशल्या तिनको सुभाय देखि लक्ष्मणजी कुठावँ विषे घायल जानि याही नई तीनिहूं तापन में तरणि सूर्य्य तिनके त्रासक जो हनुमान्‌जी ते तप्त ह्वैरहे हैं ५ ॥

मू०। हृदयघावमेरेपीररघुवीरै ॥ पाइसजीवनजागि कहतयोंप्रेमपुलकिबिसरैशरीरै १ मोहिंकहापूंछतपुनि पुनिजैसेपाटअरथचरचाकीरै ॥ शोभासुखक्षितिलाहुभूप कहँ केवलकान्तिमोलहीहीरै २ तुलसीसुनिसौमित्रवचन सबधरिनसकतधीरोधीरै ॥ उपमारामलषणकिप्रीतिकी क्योंदीजैक्षीरैनीरै ३ ॥

टी०। तब सजीवन खवाये पर लक्ष्मणजी जागि उठे तब सब घावके पीरको हाल पूछन लगे ताको सुनि प्रेम सों पुलकि देहकी सुधि बिसराये लक्ष्मणजी कहत घाव देखिबे होइ तौ हमारे हृदय में देखो पीर पूछबे को होइ तौ रघुनाथजी से पूछो १ लषणलाल कहत कि हमसों बारबार का पूछतहौ तथा पाट के अर्थ की चरचा कोऊ सुवासों पूछै ताको का जाने यथा हीराकी शोभा को सुख गयेकी हानि मिलेकी लाभ यह सब राजा को होत अरु हीराको तो कांति अरु मोलकहे कीमतिमात्रहै तैसे हम को जानो २ गोसाईंजी कहत कि लक्ष्मणजीके वचनसुनि सब जो धीरजवान्‌हैं तिनहूंको धीरज धरा नहीं रहिसकत सो श्रीराम लषण के प्रीति की उपमा क्षीरनीरकी कैसे दीजै भाव दूध पानी खटाई ते हंसकी चोंचते बिलगाइ जातहै ताते सम नहीं ३ ॥

मू०। रागकान्हरा ॥ राजतरामकामशतसुन्दर। रिपुरणजीतिअनुजसँगशोभित फेरतचापविशिखवनरुह

कर १ श्यामशरीररुचिरश्रमसीकरशोणितकनबिचबीचमनोहर ॥ जनुखद्योतनिकरहरिहितगनभ्राजतमरकतशैलशिखरपर २ घायलवीरविराजतचहुँदिशि हर्षित सकलरीछअरुवनचर ॥ कुसुमितकिंशुकतरुसमूहमहँ तरुणतमालविशालविटपवर ३ राजिवनयनविलोकि कृपाकरिकियेअभयमुनिनागविबुधनर ॥ तुलसिदासयह रूपअनूपमहृदयसरोजबसिदुसहविपतिहर ४ ॥

टी० । रिपु रावणादिको जीतिकै लक्ष्मणजीसहित शोभित करकमलनमें धनुषबाण फेरत ताअवसरमें कैकरन कामकी शोभासम श्रीरघुनाथजी विराजमानहैं १ श्यामगातपर श्रमसीकर स्वेदबिंदु शोभित ताके बीचबीच शोणितकी बिंदु सुन्दर शोभित मानों मरकतगिरि शिखरपर समूह खद्योतनके बीचबीच हरि हित हरिकहे इन्द्र ताके हित इन्द्रवधू बीरबहूटीकेगण शोभित अथवा हरिहितमुनि तिनकेगण लालमुनीपक्षी शोभित अथवा हरि सूर्य ताकेहित भौम खद्योतनके मध्यसमूह राजत वा हरिहित चन्द्रमा ताके गण नक्षत्र राजत २ वानर रीछआदि बहुत वीर घायल प्रभुकी विजय ताते हर्षसहित चारिहूं दिशि विराजत तिनके बीचमें प्रभु कैसे शोभितहोत मानों फूलेपलाश वृक्षनके मध्य नवीन तमालवृक्ष सुन्दर शोभित हैं ३ ते घायल वीरनको देखि राजिवनयन श्रीरघुनाथजी कृपाकरिकै भाव इंद्रद्वारा अमृतवर्षि अभयकियो अथवा देवस्वर्गवासी नरभूमिवासी नागपातालवासी इत्यादि और मुनिन के सहित सबपर कृपाकरि अभय कियो भाव रावणको नाशकरै ताते सुजनपालक दुष्ट जनघायक यह समयको अनूपरूपहै गोसाईंजी कहत कि सोई समयको रूप हमारे हृदयकमलमें वासकरि दुसह विपत्ति जन्म मरण ताको दुष्टजानि हरिलेउ अरु भक्तको अभयकरो ४ ॥

मू०। रागआसावरी ॥ अवधिआजुकिधौंऔरौदिन ह्वैहैं ॥ चढ़िधवरहरविलोकिदक्षिणदिशिबूझधौं पथिक कहांतेआयेवैहैं १ बहुरिविचारिहारिहियशोचतपुलक गातलागेलोचनच्वैहैं ॥ निशिवासरनवर्षपुरवैगोविधि सेरेतहांकर्मकठिनकृतक्वैहैं २ वनरघुवीरमातुगृहजीवति निलजप्रानसुनिसनिसुखस्वैहैं ॥ तुलसिदाससोसोंकठो रचित कुलिशसालभञ्जनिकोह्वैहैं ३ ॥

टी०। कौशल्याजी कहती हैं कि रघुनन्दन के आइबेकी अवधि आजुहीहै कि और दिनहोइगो दक्षिण दिशिको देखि धवरहरपर चढ़ि सखीसों कहत कि देखुतौ वै पथिक कहांतेआये उनते बूझो तौ कहो रघुनन्दनते भेंटतो नहींभई १ तेहि अवधिको विचारि अर्थात् अवहीं प्रभुके आइबेको दिन नहीं आयो यह जानि हृदयमें हारि शोचकरतीं ताते नेत्रनमें जल टपकन लागो गात प्रेमसों पुलकिआयो दुःखमें अधीरह्वै कहती हैं कि जहां विधाताहैं तहां हमारे कृतकहे कीन्हें कठिन कुत्सितकर्महैं ताके वशह्वै विधाता अपने दिननसों चौदहवर्ष पूरेकरी यह प्रेमकी आतुरताहै २ श्री रघुनन्दनतौ वनवासदुःखमें हैं तिनकी माता हम गृहमें जीवतीहैं वनको चरित सुनि सुनि हमारे निलजप्राण सुखते सोवाहिंगे ताते मोते कठोरचित्त कुलिशकी सालकहे सांखू ताकी भाजनि नाश- कर्त्ती कुल्हारी वज्रकी सोऊ हमते कठोर नहीं ह्वैसकत अथवा साल जो छेद श्रवण नासिका सुखादि ताको भंजनि प्रतिमा वज्रकी सोऊ हमसरीखे कठोर नहीं है ३ ॥

मू०। आलीअबरामलषणकितह्वैहैं ॥ चित्रकूटतजौतब तेनलहीसुधिवधूसमेतकुशलसुतद्वैहैं १ वारिबयारिविष महिमआतपसहिबिनुबसनभूमितलस्वैहैं ॥ कंदमूलफ लफूलअशनवनभोजनसमयामिलतकैसेह्वैहैं २ जिनहिं

विलोकिशोचिहैंलताद्रुमखगमृगमुनिलोचनच्वैहैं ॥ तुल सिदासतिनकीजननीहौं मोसोंनिठुरचितऔरोकहुँह्वैहैं२

टी० । श्रीकौशल्याजी कहती हैं कि हे आली श्रीरघुनन्दन लषण अब कित ह्वैहैं जबते चित्रकूट को तजे तबते कुशल नहीं पाई कि पुत्रवधूसहित दोऊपुत्र कुशलसहित हैं हनुमान्जी सों सुने रही सो व्याकुलता सों भूलिगई १ वर्षाको जल हिमऋतुकी विषम बयारि ते जाड़ ग्रीष्मको घामआदि सब सहिहैं बिन वस्त्रन भूमिमें शयनकरिहैं वनमें कन्द मूल फल फूल भोजन सोऊ भोजन समयपर कैसे मिलत ह्वैहैं २ जिन रघुनन्दनको देखि वृक्ष बेली जे जड़ तेऊ शोच करिहैं पक्षी अरु मृगा अरु मुनिनके नेत्रन में प्रेम करि जल चुइहै तिनकी माता मैं हौं सो मोसों कठोरचित्त वाली औरहू कोऊ ह्वैहै ३ ॥

मू० । रागसोरठ ॥ बैठीसगुनमनावतमाता ॥ कबऐहैंमेरेबालकुशलघर कहहुकागफुरिबाता १ दूधभातकी दोनीदेहौंसोनेचोंचमढ़ैहौं ॥ जबसियसहितविलोकिनयनभरिरामलषणउरलैहौं २ अवधिसमीपजानिजननीजिय अतिआतुरअकुलानी ॥ गनकबोलाइपायँपरिपूंछत प्रेममगनमृदुबानी ३ तेहिअवसरकोउभरतनिकटतेस माचारलैआयो ॥ प्रभुआगमनसुनततुलसी मानोंमीनमरतजलपायो ४ ॥

टी० । शुभदिशापर काग बोलत ताको देखि माता सगुन जानि मनावती हैं हे काग सांची बातकहो मेरे बालक कब कुशलसों आवहिंगे १ हे काग दूध भातकी दोनी तुमको खाबेको देहौं अरु सोने सों चोंच मढ़ैहौं जब जानकीसहित राम लषण को देखि हृदय में लगाइहौं २ अवधि कही अवादा नगीच जानि माता जीमें आतुरह्वै अत्यन्त अकुलाइउठीं ताते ज्योतिषीबोलाइ पांयन

में परिकै प्रेम सें मन्द कोमल वाणीते पूछती हैं कि कृपाकरिकै बताओ कि कब मेरे पुत्र कुशलसों ऐहैं ३ ताही अवसर में भरत जी के पासते प्रभुके आगमन को समाचार काहूने आनिकै कह्यो ताको सुनतेही गोसाईंजी कहत कि माता कौशल्यादि कैसी जी उठीं मानों मीन सूखि भूमि में मरत तासमय काहूने जलमें डारि दियो ४ ॥

मू० । रागगौरी ॥ क्षेमकरीबलिबोलिसुबानी ॥ कुशलक्षेमसियरामलषण कबऐहैंअवधिअवधरजधानी १ शशिमुखकुंकुमवरणिसुलोचनि मोचनिशोचनि वेदबखानी ॥ देविदयाकरिदेहिदरशफल जोरिपाणिविनवहिं सबरानी २ सुनिसनेहमयवचननिकटह्वैमंजुलमंडलकैमडरानी ॥ शुभमंगलआनन्दगगनधुनिअकनिअकनिउरजरनिजुड़ानी ३ फरकनलगेसुअंगविदिशिदिशि मनप्रसन्नदुखदशासिरानी ॥ करहिंप्रणामसप्रेमपुलकितनमानिविविधबलिसगुनसयानी ४ तेहिअवसरहनुमानभरतसोंकहीसकलकल्याणकहानी ॥ तुलसिदाससोइचाहसजीवनिविषमवियोगबिथाबड़िमानी ५ ॥

टी० । श्वेतमुख की चील्ह शुभस्थानपर बैठि बोलत देखि कौशल्याजी कहती हैं हे क्षेमकरी मैं बलिजाउँ सुन्दर वाणी बोल अवधि जो चौदहवर्षकी ताके अन्तदिन अवध राजधानीको जानकीसहित राम लषण कुशलसहित कब ऐहैं सो बोल १ हे चन्द्रमुखी अरुणवरणी सुन्दरलोचनी शोचनि जो शोच ताको मोचनहारीहौ ऐसा तुमको वेद बखानत हैं हे देवि दयाकरिकै अपने दर्शनको फल देहु भाव रघुनन्दन आवहिं ऐसी विनती हाथजोरि करिकै सब रानी कहतीहैं २ ऐसे सनेहमयवचन रानिनके सुनिकै निकटह्वैकै सुन्दरमण्डलदैकै मड़रानी अरु शुभमंगलमय आनन्द-

मयवचन गगनमें बोलीं निकट होबेते यह जनायो कि प्रभु निकट आइगये आकाशमें उड़बेते यह जनायो कि आकाशमार्गमें विमान पर आवत मण्डलदै मड़राइबे में यह जनायो कि त्रैलोक्यविजयी मण्डलेश्वर रावणको जीति मण्डलके विषे यश प्रकाश होतभयो मधुरवचन बोलिबे में यह जनायो कि लषणलाल शुभक्षेसहैं अरु जानकीजी मंगलपूर्वक प्रभुके वामभाग में विराजमान हैं अरु रघुनाथजी आनन्दहैं याको हेतु लषणको घायल जानकीको हरण हनुमान्‌जीसों सुने रही ताते लषण शुभक्षेम जानकी मंगलसच प्रभुनिकट अरु रावणको जीति देवतन को अभयकियो ताते प्रभु आनन्द ऐसी शुभमंगल आनन्दमय धुनि क्षेमकरी की गगन में सुनि ताको हेतु समुझि कौशल्यादि मातन की उरकी जरनि सो जुड़ातीभई २ तेहि अवसर में वाम भुजा वाम नेत्रादि सब अंग फरकनलगे दिशा जो पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर विदिशा आग्नेय नैर्ऋत्य वायव्य ईशान आकाश अरु भूमि इत्यादि तव दिशनमें शुभसगुन होनलगे तहां दक्षिणको मुख किहे कौशल्याजी बैठीहैं तहां पूर्व दिशामें बायें काग बोलत आग्नेयते सौभागिनी स्त्री बालकनको लिहे आवत दक्षिणदिशिते ग्वालिनी दधिलिहे आवती नैर्ऋत्यमें मृगगण भूमि घूमिजात पश्चिम में क्षेमकरी बोलिरही वायव्य में नकुल दरश दैरह्यो है उत्तरमें सरयूजलके घटलिहे सौभागिनी चलीआवतीं ईशानते कोविद जन पुस्तकलिहे चले आवत आकाश निर्मल शीतल मन्द सुगन्धित पवन वहिरहीहै पृथ्वी हरित ह्वैरही है तेहिको विचारि मन प्रसन्न भयो प्रथम दुःखकी जो दशा यथा विशाखा नक्षत्रपै केतु उदयहोय तौ अयोध्याकेराज्य को नाशकरै ॥ प्रमाणंमयूरचित्रे ॥ यस्मिन्नृक्षेस्थितःकेतुराकाशे संप्रदृश्यते॥ तद्दिग्व्यूहान्समाहंतियोत्रशेषोवदामितम् १ कुरुक्षेत्राधिपंत्वाष्ट्रेहस्तेदण्डकनायकम् ॥ वातेकांबोजकाश्मीरांद्वैवेकोसलाधिपम् २ सो दुःखकी दशा मिटगई सयानी जो कौशल्यादि रानीहैं ते शुभगुणिन को देखि प्रेमसहित पुलकित तनु तो नम-

स्कार करिकै निर्विघ्न हेतु देवनकी अनेक पूजा बलिदान मानती हैं ४ ताही अवसरमें भरतजीसों हनुमान्जी कल्याणकी सकल कहानी अर्थात् ॥ रिपुरणजीति सुयश सुरगावत । सीता अनुज सहित प्रभु आवत ॥ इत्यादि इतिहास कहतेभये गोसाईंजी कहत कि सोई जो कहानी भरतजी की मनकी चाहके जियावनहारी सजीवन सो जनित कहे उत्पन्न जो व्यथा ताको भानी अर्थात् चाह सजीवनने वियोगकी व्यथा को नाश करिदियो ५ ।

सू० । रागधनाश्री ॥ सुनियतसागरसेतुबँधायो । कोशलपतिकीकुशलसकलसुधि कोउइकदूतभरतपहिंल्यायो १ वधिविराधत्रिशिराखरदूषण शूर्पणखाकोरूपनशायो ॥ हतिकबन्धबलअंधबालिदलिकृपासिंधुसुग्रीवबसायो २ शरणागतअपनाइविभीषणरावणसकुलसमूहबहायो ॥ विबुधसमाजनिवाजिबाँहदैबंदिछोरवरविरदकहायो ३ एकएकसोंसमाचारसुनिनगरलोगजहँतहँसबधायो ॥ घनधुनिअकनिमुदितमयूरज्योंबूड़तजलधिपारसोपायो ४ अवधिआजुयोंकहतपरस्परबेगिविमाननिकटपुरआयो ॥ उतरिअनुजअनुगनसमेतप्रभुगुरुद्विजगणचरणनशिरनायो ५ जोजेहियेत्यरामतेहिविधिमिलिसबकेमनअतिमोदबढ़ायो ॥ भेंटीमातुभरतभरतानुजक्योंकहिप्रेमअमितअनमायो ६ तेहीदिनमुनिवृन्दअनन्दिततुरिततिलककोसाजसजायो ॥ महाराजरघुवंशतिलकको सादरतुलसिदासगुणगायो ७ ॥

टी० । सब समाचार सुनि पुरवासी परस्पर वार्त्ता करत तहां प्रथमके चरित्र छांड़ि प्रथम सेतु बांधिबो याते कहत कि यह अपूर्व आश्चर्य की बातहै ताते कहत कि सुनियत प्रभुने समुद्र में सेतु

बँधायो है कोशलपति श्रीरघुनाथजी के कुशलको सब समाचार कोऊ एक दूत भरतजीके पासको लायोहै १ कौन समाचार सो कहत हैं चित्रकूटते चलि विराध को मारे पुनः पंचवटी में शूर्पणखा की नासिका कानकाटि कुरूप कियो पीछे खर दूषण त्रिशिरा को नाशकीन तहांते आगे कबन्धको मारे बलसों अन्धमहाबली बालिको मारि कृपा के समुद्र रघुनाथजी दीनजानि सुग्रीव को बसाये राज्यदिये २ समुद्रतट विभीषण शरणमें आयो ताको अपनाय रावणको कुलसहित मूल बहायो भाव वंशसहित दुष्टन को मिटाइदियो देवतन की समाज को अभय बांहदै निवाजे ताते श्रेष्ठपानावाले बन्दीछोर कहाये ३ ऐसे समाचार एक एकनते सुनि जो जहां रहा सो तहांईसों प्रभुके दर्शनहेतु पुरवासी सब धाये कैसे आनंद भयो यथा मेघकी धुनि सुनि मयूर आनंदहोय व्याकुलता कैसी मिटी मानों समुद्र में बूड़त समय पारपायो ४ प्रभुके आइवे को अवधि दिन आजुहीहै यह परस्पर वार्त्ता करत रहैं ताही समय विमान शीघ्रही पुरके निकट आयो तहांते उतरि अनुग जो सेवक हनुमानादि अनुज लक्ष्मण तिनसहित गुरु जो वशिष्ठ द्विजगण जो अपर ब्राह्मण हैं तिनके पांयनको प्रभु माथ नवावतेभये ५ जो जौनी योग्य रहै ताको ताही विधि प्रभु मिलिकै सबके मनमें आनन्द बढ़ायो मातनको भेंटे शत्रुहनसहित भरत जीको भेंटे तेहि समय को प्रेम कैसे कहौं अनमायो कहे हृदयमें नहीं समातहै ६ ताही दिन मुनिवृन्दसहित वशिष्ठजी आनन्दते सब तिलक की साज सजाइ प्रभुको राजसिंहासनपर बैठायो महाराज रघुवंशके तिलक जो श्रीरघुनाथजी तिनके गुणानुवाद आदरसहित तुलसीदास गायो सेतुबांधबे शक्ति गुणहै दुष्टमारिबे वीर्यगुणहै सुग्रीवपै कृपागुण है विभीषणपै शरणपाल गुणहै लोकनको अभय करिबे में प्रताप गुणहै वशिष्ठादिके मिलिबे में मर्यादा पुरुषोत्तम गुणहै पुरवासिनके मिलिबेमें सौशील सौहृद गुण है भरतजीसों मिलिबेमें अनुराग गुणहै इत्यादि समूहगुणहैं ७ ॥

मू० । रागजैतश्री ॥ रणजीतरामराउआये ॥ सानुजस
दलससीयकुशलआजुअवधआनंदवधाये १ अरिपुरजा
रिउजारिमारिरिपुविवुधसुवासबसाये ॥ धरणिधेनुमहिदे
वसाधुसबकेसबशोचनशाये २ दईलंकथिरथप्योविभीष
णवचनपियूषपियाये ॥ सुधासींचिकपिकृपानगरनरना
रिनिहारिजियाये ३ मिलिगुरुबंधुमातजनपरिजनभयेस
कलमनभाये ॥ दरशहरषदशचारिवर्षकेदुखपलमेंबिसरा
ये ४ बोलिसचिवशुचिशोधिसुदिनमुनिमंगलसाजसजा
ये ॥ महाराजअभिषेकवरषितुरसुमननिशानबजाये ५
लैलैभेंटनृपअहिपलोकपतिअतिसनेहशिरनाये ॥ पूजिप्री
तिपहिचानिआदरेरामअधिकअपनाये ६ दानमानसन
मानिजानिरुचियाचकजनपहिराये ॥ गयेशोकसरसूखि
मोदसरितासमुद्रगहिराये ७ प्रभुप्रतापरविअहितअमं
गलअघउलूकतमताये ॥ कियोविशोकहितकोककोकन
द लोकसुयशशुभछाये ८ रामराजकुलकाजसुमंगल
सबनसबैसुखपाये ॥ देहिंअशीशभूमिसुरप्रमुदितप्रजाप्र
मोदबढ़ाये ९ आश्रमधर्मविभागवेदपथपावनलोगचला
ये ॥ धरमनिरतसियरामचरणरतमनोंरामासियजाये १०
कामधेनुमहिविटपकामतरु कोउविधिवामनलाये ॥ ते
तबअबतुलसीतेउजिनहितसहितरामगुणगाये ११ ॥

टी० । श्रीजनकनंदिनी लषणलाल कपिसेनसहित कुशल
पूर्वक श्रीमहाराज राजाधिराज श्रीकोशलेंद्रकुमार आजु आये
ताते श्रीअयोध्याजी में आनन्द बधावन बाजतहैं १ अरिपुर लंका
को जारि रिपुरावणको मारि देवतनको आनन्दते बसाये पृथ्वी के

गौवनके ब्राह्मणनके देवतनके साधुनके सबतरहके सब शोच नशा- वतभये २ विभीषणको लङ्काकी राज्यदेकर स्थिर करिकै थाप्यो भाव कल्पभरि इहां अचल राज्यकरि फेरि हमारे धामको आयो ऐसे वचनरूप अमृत पियाये सुधासों सींचि कपि भालुनको जिया- ये कृपाकी नजरिहेरि पुरके नर नारिनको जियाये३ जन सेवक परि- जन परिवारकेलोग मातु कौशल्यादि बंधु भरतादि गुरु वशिष्ठ तिनको प्रभुमिले मनभायो भयो सबको काहेते प्रभुके दर्शनको जोहै सुख ताते चौदहवर्षके वियोगके दुःखको एकपलभरमें बिस- राइदियो अभिप्राय यह कि जैसे कोऊ पदार्थ जातारहा ताको दुःख तवतक है जवतक वह मिलत नहीं जहां मिला तहां दुःखगयो ४ सुमंतादि जे षोड़शमंत्री पवित्रहैं तिनको बोलाइ वशिष्ठजी सुन्दर दिन शोधि मंगलके साज अर्थात् मंगलके जे चालिस अंगहैं यथा विप्र १ चौक २ कन्या ३ ध्वजा ४ पताका ५ कलश ६ वंदनवार ७ केतु ८ तोरण ९ चमर १० गान ११ वाद्य १२ नृत्य १३ दधि १४ दूर्वा १५ हरदी १६ अक्षत १७ चंदवा १८ दर्पण १९ सप्तान्न २० दीप २१ सवत्सधेनु २२ चित्राम २३ चतुरंगसेना २४ छत्र २५ व्यजन २६ घृत २७ वेदध्वनि २८ वंदी २९ मागध ३० सूत ३१ पंचपल्लव ३२ अंकुरारोपण जामें यव ३३ फूल ३४ फल ३५ के- ला ३६ वारमुख्या ३७ ताम्बूल ३८ धूप ३९ मीन ४० प्रमाणं यथा मंगलविधाने ॥ विप्राद्यंमणिचौकचारुकलशंदीपाब्जसत्प ल्लवं रंभावंदनवारकेतुचमरंदूर्वांकुरारोपणम् ॥ कन्यातोरणवि तानदर्पणध्वजाताम्बूलदध्यक्षतं छत्रंरोचनगानवाद्यव्यजनंपुष्पा ज्यधूपांगनाम् १ ॥ चित्रामधेनुश्चतुरंगसेना पौराणिकीमा गधवंदिगायकाः ॥ पताकयुक्तंतुफलादिमीनाखवेदयुक्तंशुभमंग लांगाः २ ॥ इत्यादि मंगलसाज सजाइ महाराज रघुनाथजी को राजसिंहासन पर बैठायो तासमय में अभिषेक का उत्सव देखि देवता निशान बजाये ५ नृप भूमिके राजा अहिप अनन्तादि नागन के राजा लोकपति इन्द्र वरुण कुबेरादि ते सब भेंट लै

लै आये अत्यन्त स्नेहपूर्वक श्रीरघुनाथजी को माथनाय पूजते भये तिनमें जाकी जाभांति की प्रीति ते जो आयो ताकी तैसही प्रीति पहिचानि तासों अधिक आदर सन्मान करि श्रीरघुनाथ जी अपनाइलिये भाव शोभा सुशीतलता गुणसों सबके चित्त अपनामें लगाइलियो ६ दानदियो मानकहे आदरसहित सन्मान कहे सतमान् अर्थात् हृदयते प्रीतिपूर्वक सत्कारकरि भाव जैसी रुचि ताके हृदयकीजानि याचकन को पहिरावतभये श्रीरघुनाथ जी के दान अरु कृपासों शोकरूपी तड़ाग सो सूखिगयो अरु मोद रूपी सरिता नदी ते गहिराये अथाह समुद्र समान भई अभिप्राय यह कि मोद समुद्र समताके आगे शोकतड़ाग सम तुच्छ सोऊ सूखिगयो नाममात्र रहिगयो ७ अहित जे अनहित असंगल जे विघ्न अघ जो पापादि उलूकनको सुखदायी अविद्या निशा तामें महामोहतम ताको प्रभुको प्रतापरूप सूर्यनते ताये कहे तपाये ताते लोपभयो अरु हितू जे हैं ते चक्रवाक अरु कमल सम तिनको विशोककिये भाव देवताआदिको राज्यसुख को बिछोह मिटे तेई कोकसमहैं सज्जन अनीति सों संपुटितरहे ते कमल सम प्रफुल्लित भये यहिते प्रभुको सुन्दर यश लोकनमें छाइरहाहै ८ कुलकाज लौकिक पारलौकिक जप तप सत्य शौच दान तीर्थ व्रत यज्ञ विद्या राजऋषि वा निज जन्मविवाहादि यावत् जगके कार्यहैं ते सब प्रभु की राज्य बिषे निर्विघ्न सुमंगलमयी होत भये ताते देव नाग नर वर्णाश्रम सब अपने योग्य सबप्रकार को सुखपाये ताते प्रजाप्रमोद बढ़ाये भाव आनन्दसहित प्रभुकी प्रशंसा करिरहे हैं अरु भूसिसुर ब्राह्मणते श्रीरघुनाथजीको आनन्दते आशीर्वाद देरहे हैं निरंतर ९ ब्राह्मणवर्ण में चारि आश्रम ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास क्षत्रियमें चारिवर्ण गृहस्थ धर्मशील तापस भक्त वैश्यमें चारि गुप्त गृहस्थ सुकर्म तापस साधु शूद्रमें तीनि गृहस्थ दास तीनिवर्ण सेवक देवसेवी देवदास भगवद्दास इत्यादि वर्ण आश्रमादि को धर्म विभाग कहे न्यारेन्यारे वेदमार्ग अनुकूल पवित्र पातकरहित

धर्म कर्मको मारग सब लोग चलावत भये ते सब अपने धर्म में निरत धर्म अनुकूल कर्त्तव्यता में निपुण अरु श्रीराम जानकी जीके चरण में रतकहे सब विकाररहित रामानुरागी हैं मानों राम जानकीके जायेकही पुत्रहैं यहां प्रभु भक्तवत्सलताते बालक सम सबको पालत ताते सब लोग अनन्यहैं १० मही कामधेनु भई वृक्ष कल्पतरु समभये मनवाञ्छित पावनहारी सुखभयो अरु काहूपर विधाता वाम न भयो काहूको काहूप्रकारकी पीड़ा नहीं ताते प्रजा सब सुखी तब रहैं गोसाईंजी कहत कि जे जन मन वचन कर्म करिके हित सहित श्रीरघुनन्दनके गुणनको गावतेहैं ते अबहूं सुखी हैं ११ ॥

मू० । रागटोड़ी ॥ आजुअवधआनन्दबधावनरिपुरणजीतिरामआये ॥ सजिसुविमाननिशानबजावतमुदितदेवदेखनधाये १ घरघरचौकचारुचन्दनमणिमंगलकलशसबनसाजे ॥ ध्वजपताकतोरणवितानवरविविधभांतिबाजनबाजे २ रामतिलकसुनिद्वीपद्वीपकेनृपआयेउपहारलिये ॥ सीयसहितआसीनसिंहासननिरखिजोहारतहरषिहिये३ मंगलगानवेदधुनिजयधुनिमुनिअशीशधुनिभुवनभरे ॥ वर्षिसुमनसुरसिद्धप्रशंसतसबकेसबसंतापहरे ४ रामकाजभइकामधेनुमहिसुखसंपदालोकछायो॥जन्मजन्मजानकीनाथकेगुणगणतुलसिदासगायो ५

टी० । रिपु रावणको जीति श्रीरघुनाथजी घरको आये ताते आजु अयोध्याजी में आनन्दको बधावन बाजतहै सु कहे सुंदर विमान बड़े साजसों सवाँरि सजि २ निर्भय ह्वै डंकाबजावत हर्ष पूर्वक अपने लोकनते देवता प्रभुको राजसुख देखबे हेतु धावते भये१ चंदन मणिश्वेत मणिमोतिनसों अथवा चंदन अरु मणिनसों सुन्दरी चौके घर २ में रचे मंगलमयी यवके अंकुरन सहित

कलशसजे दीपवरत पल्लव धान्यसहित ध्वजा चिह्न सहित पता-
का सदाफ़हरात बंदनवार फूल पल्लवकीझालरि या तोरन रेशमकी
झालरि जरी जरवफ़्त कारचोवी रेशमी वेलि बूटेदार वरके श्रेष्ठ
वितान जो चंदवातने हैं बाजा विविधभांति नगारा तासा जंगी
ढोल झांझ नरसिंहा तुरही वा मृदंग वीना रवावव तवला सारंगी
मंजीरा सितार तँबूरा ढोलक चिकारा डफ खँझरी मुरचंग जल-
तरंग उपंग इत्यादि विविधभांतिके बाजा बाजे २ सिंहासन की
सांगोपांग शोभा यथा प्रथम मंडूक तापै कालाग्नि रुद्र तापै कच्छ-
प तापै आधारशक्ति तापैशेष तापैवाराह तापैपृथ्वी तापैअयोध्या
जी ताके मध्य कनक रत्नमय मन्दिर तहां कल्पवृक्ष ताके तरेरत्न
वेदिका तापै दशावरण यंत्र राजमध्य षट्कोण तापै सिंहासनद्वि-
तीयावरण मण्डलमें पूर्व परमात्मा दक्षिण आत्मा पश्चिम अंतरा-
त्मा तृतीयावरण अष्टदल तापर पूर्व वासुदेव अग्नेयमें श्रीदक्षिण
संकर्षणनैर्ऋत्य में सरस्वती पश्चिममें अनिरुद्ध वायव्यमें कीर्ति
उत्तरमें प्रद्युम्न ईशानमें रति चतुर्थावरणमें अष्टदल पूर्वमें हनु-
मान् अग्नेय सुग्रीव दक्षिण भरत नैर्ऋत्य विभीषण पश्चिम ल-
क्ष्मण वायव्य अंगद उत्तर शत्रुहन ईशान जाम्बवन्त पंचमावरण
अष्ट दलाष्टो मंत्री पूर्व धृष्ट अग्नेय जयंत दक्षिण विजय नैर्ऋत्य
सौराष्ट्र पश्चिम राष्ट्रवर्द्धन वायव्यअकोपन उत्तर धर्मपाल ईशान
सुमंत षष्ठमावरण वारहदल तापै मुनि पूर्व में वशिष्ठ वामदेव जा-
बालि अपराजित गौतम पश्चिम भरद्वाज कौशिक वाल्मीकि
नारद उत्तर सनन्द सनक सनातन सनत्कुमार कमंडलधर सप्त-
मावरण षोडशदल तामें वानर पूर्व में नील नल सुखेन मयंद
दक्षिण सुपर्ण द्विविद चंदन गवाक्ष पश्चिमकिरीटकुण्डल श्रीवत्स
कौस्तुभ उत्तर शंखचक्र गदा पद्म अष्टमावरण वत्तिसदल तामें लो-
कपाल पूर्वध्रुवधरा सोमआप अग्नेय अनल अनिल प्रत्यूष प्रभास
दक्षिण वीरभद्र शंभुगिरीश अजैकपाद नैर्ऋत्य अहिर्बुध्न्यपिना-
की भुवनेश्वर कपाली पश्चिम दिशि तस्थान भव वरुण वायव्य

सूर्य वेदांग भानु इन्द्र उत्तर रवि गभस्त यम हिरण्यरेत ईशान दिवाकर मित्र विष्णु धात्र नवमावरण में दशो दिग्पाल पूर्व इन्द्र अग्नेय अग्नि दक्षिण यम नैर्ऋत्य में निर्ऋत्य पश्चिम वरुण वायव्य वायु उत्तर कुवेर ईशानमें ईशान पूर्व ईशानमध्ये ब्रह्मा नैर्ऋत्य पश्चिममध्ये विष्णु दशमावरणमें वज्रादि आयुध वज्रशक्ति दण्ड खड्ग पाश ध्वजा गदा त्रिशूल अम्बुज चक्र इति दशमावरण प्रमाणं सुन्दरीतंत्रे ॥ द्वितीयात्मादिकैर्देवैरष्टान्जेसूलकेतथा ॥ तृतीयांवासुदेवाद्यैरष्टपत्रैस्तथैवच १ चतुर्थेवायुपुत्राद्यैःपत्राग्रेपूर्वतःक्रमात् ॥ साथनेपञ्चमावृत्तिर्द्वितीयाष्टदलेतथा २ षट्द्वादशपत्र पुवशिष्टाद्यैर्महर्षिभिः ॥ सप्तमेषोडशाब्जेतुनीलाद्यैःकपिपुंगवैः ३ ध्रुवाद्यैरष्टमेज्ञेया द्वात्रिंशद्दलपद्मके ॥ इन्द्राद्यैर्भूपहेनित्यंनवमावरणंभवेत् ४ तदस्त्रैर्वज्रशक्त्याद्यैर्दशमावरणंशुभम् ॥ इत्यादि दश आवरणके मध्यमें सुन्दर रत्नमय सिंहासन तामें ज्ञान वैराग्य धर्म्म ऐश्वर्य येई चारि पावाहैं अरु अधर्म अज्ञान अवैराग्य अनैश्वर्य येई चारिपाटी हैं सवमन्त्र वीजमणिले जड़े हैं तापर पद्म आसनहै आनन्द ताकीजर ज्ञाननाल कर्णिकामें शेष सर्वतत्त्वदल पञ्चाशद्वर्णकेशरः तापैसूर्यमण्डल बारहकला तापै चंद्रमंडल षोड़शकला तापैअग्निमंडल दशकला तापर मायातत्त्वकला तत्त्व विद्या तत्त्व कमल दलनपर विमलाउत्कर्षनीज्ञाना क्रियायोगा प्रभा ईशानादि शक्ति ताके मध्य सुन्दर आसन तापै श्रीरघुवंशभूषण श्रीजानकीजी सहित विराजमान कैसी शोभाहै तन में श्याम गौरवर्ण नील पीतपटधारे शीशपै त्रिखण्डमुकुट इतचंद्रिका आछे सौगंधित वर भालपै तिलक इतमांगमें मोती सिंदूर भालमें वेंदा नेत्रनमें काजर काननमें ताटंक नासिकामें वेसरि उत कुण्डल वुलाक कमलसमनेत्र कण्ठमें कण्ठा वनमाल पदिक उत चन्द्रहार पचलरी हार हमेल वाजूवन्द चरी वलय मुद्रिका आरसी उत अंगद पहुंची मुद्रिका कटिमें किंकिणी पायँनमें मंजीर जेहरि विछिया महावर आदि शोभाकरिकै युक्त दक्षिणपै भरत

जी चँवर लिहे वायेंशत्रुघ्नजी व्यजनलिहे पीछे लक्ष्मणजी छत्र लिहे सन्मुख हनुमान्जी अस्तुति करत ताही अवसर में राज तिलक प्रभुको सुनि द्वीप द्वीपके राजा उपहार भेटकी सामग्री लै लै आवतभये कौनसामग्री हाथी घोड़ा रथ पालकी मणिमुक्ता रेसमपाट पाटांबर जरी आदिसों सबआइ श्रीजानकीजी सहित श्रीरघुनाथजीको सिंहासनपर विराजमान देखि हृदयते हर्षि जुहारत जुहार करत भेंट देत प्रेमसों सब देखत ३ स्त्री आदिके मंगलगान कोविदके वेदधुनि वन्दीजननकी जयधुनि मुनिनकी आशिषधुनि ते सब शब्दकी धुनि भुवनमें भरिरही है फूलवर्षि देवता अरु सिद्ध प्रभुकी प्रशंसा करिरहेहैं तेहि अवसर में सबके सब प्रकारके सन्तापनाश भये ४ श्रीरघुनाथजीकी राजमें भूमि कामधेनु होतभई सुख सहित सम्पदा सब लोकन में छाइरही है श्रीजानकीनाथ के परम दिव्य गुणनके गणसमूह जन्मजन्म प्रति तुलसीदास गानकरोहै यामें बाल्मीकिको अपनो अवतार सूचित करे अभिप्राय कि लङ्काकाण्डही में राज्याभिषेक बाल्मीकिहूजीने कहा अरु विशेष माधुर्य बाल्मीकिहूजीने गान कियो ताहीभांति इस ग्रंथमें गुसाईंजी माधुर्यही चारित्र गानकरेहैं ५॥

सवैया॥

हाटकहर्म्यगवाक्षमणिन्द्र विचित्रवितानदीपलतासो।
आसनपुष्पकमध्यछ्रताधृत चामरछत्रसखाचहुंपासो॥
मूर्धिकचाञ्चुतकीटप्रभास्य दृगांबुजद्वौमकराकृतभासो।
श्रीरघुराजप्रियायुतचाहत वैजनाथसदाउरवासो १॥

इति श्रीरसिकलताश्रित कल्पद्रुमसियवल्लभशरण विरचितेगीतावलीमणिदीपिकायांलङ्का काण्डसंपूर्णम्॥

इति

श्री गणाधिपतये नमः ॥

गीतावली सटीक ॥

उत्तरकाण्ड ॥

वामाङ्केजनकाधिराजतनयाशक्तीश्वरीशोभते ब्रह्मेशानपुरस्सराःसुरगणास्स्तोत्रैर्नुतिंकुर्वते ॥ व्यासागस्त्यकुशात्मजप्रभृतिभीरासस्ययाथार्थतोयस्यावोधिनवेदपारचरितंदेवायतस्मैनमः १ ॥

सू० । वनतेआइकैराजारामभयेभुवाल ॥ मुदितचौदह भुवनसवसुखसुखीसबसवकाल १ मिटेकलुषकलेशकलुषनकपटकुपथकुचाल ॥ गयेदारिद्दोषदारुणदम्भदुरितदुकाल २ कामधुकमहिकामतरुतरु उपलमणिगणनाल ॥ नारिनरतेहिसमयसुकृतीभरेभाग्यसुभाल ३ वर्णआश्रमधर्मरतमनवचनवेषमराल॥ रामसियसेवकसनेहीसाधुसुखरसाल ४ रामराजसमाजवर्णतसिद्धमुनिदिगपाल ॥ सुमिरिसोतुलसीअजहुंहियहर्षहोतविशाल ५ ॥

टी० । वनते आइकै श्रीअयोध्याजी में श्रीरघुनाथजी भूमिके पालनहारभये तिनको प्रभाव करिकै चौदह भुवनमें सबजीव सब सुख करिकैसुखी ताते सदा आनन्दहैं सबकालमें भूतकालमें पितृ स्वर्गवासी वर्तमानमें तौ सबसुखी है भविष्यमें सबमुक्तिके अधिकारीहैं १ सवजीव सुकृतीभये ताते कलुषपाप को करिबो मिटि गयो ताते दरिद्रगयो ताते क्लेशमिटे ताते दोषगयो कलुषन कही पग पर पगधरि सोइबो तृणखण्डनादि कलुषन मिटेते दारुण दुःखादिगयो कपटमिटेते दंभगयो कुपथमिटेते दुरित पापसंचित

गयो कुचालमिटे ते देशको दुकालपरिवो मिटिगयो २ पृथ्वीकाम-
धेनुभई वृक्ष कल्पवृक्षभये पाषाण मणिगणलाल इत्यादि भये ता
अवसर विषे नारिनर सब सुकृतीभये ताते विषमता सब मिटिगई
सुकृती करिकै सुन्दर भाग्यसों भाल भरत भये २ वर्णचारि ब्रा-
ह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र तामें ब्राह्मणमें चारि आश्रम गृहस्थ ब्रह्मच-
र्य वानप्रस्थ संन्यास इत्यादि अपने अपने धर्मविषे रतहैं विना ध-
र्म वर्ण आश्रम यथार्थ नहीं ह्वैसकत यथा ब्राह्मण जो कहिये जीव
ब्राह्मण है तो चर अचरकोजीव एकरूप है यथा नलकूबर यमला-
र्जुनभये अहल्या पाषाणभई काकभुशुण्डि शूद्रतेसर्प सर्पते ब्राह्मण
पीछे काकभये जड़भरत मुनिते मृगा मृगाते ब्राह्मणभये ताते जीव
कछु वर्णाश्रम नहीं जो कहो देह ब्राह्मण तो पांचतत्त्व करिसबकी
देह जन्म मरणक्षुधा पिपासा सबको एकरस अथवा माता पिता
कीदेह पुत्र अग्निदाह करत सो ब्रह्मदोष काहे नहीं होत ताते देह
ब्राह्मण नहीं है जो जातिकुल ब्राह्मण कहिये तो अनेक नीचेकुलते
ऋषीश्वरभये यथा शृंगीऋषि मृगीपुत्र कौशिकी कुशास्तृणे गौतम
सापृष्ठे बाल्मीकि बलमीकयां व्यासकेवट कन्याते वशिष्ठ वेश्या
पुत्र विश्वामित्र क्षत्रियते अगस्त्य कलशते उत्पत्ति मांडव मेडुकीते
मातंगी मातंगीपुत्र पाराशर चांडाली पुत्र इति पुनः कश्यप ऋषिते
सूर्यवंश क्षत्रिय चन्द्रमा वैश्यते चन्द्रवंश क्षत्रिय मत्स्योदरी केवट
कन्याते पांडु कौरव क्षत्रिय कश्यप ब्राह्मणते सूर्य क्षत्रिय तिनते
शनैश्चरशूद्र इति। वर्त्तमान में अनेक जातिते और जाति ह्वैगई
ताते जातिकुल ब्राह्मणादि नहीं प्रमाणंपद्मे॥ जन्मनाजायतेशूद्रः
संस्काराद्द्विजउच्यते। वेदाभ्यासीभवेद्विप्रोब्रह्मजानातिब्राह्मणः १
ताते वर्णाश्रम धर्म में रत प्रथम ब्राह्मणधर्म १० दोहा॥ देवऋषी
अरु विप्रकहि क्षत्रिय वैश्य बखान। शूद्रविडाल म्लेच्छ पशु श्व-
पंच सहित दशमान॥ सकल धर्मनिधि अर्थ विद पढ़ै पढ़ावैसोइ।
भिक्षासों करि जीविका देव विप्रसोहोइ॥ षट कर्मी तपसत्य
मय ऋषीविप्र सोजान। श्रद्धा त्रिफला मूलसों विप्र विप्र-

गुजरान ॥ अश्वचढ़ै आयुधगहै द्विजक्षत्रीयन शूर । खेतीगोरक्षा वणिज वैश्यविप्रसोपूर ॥ तैल लौण घृत दूध दधि तिल पुनि लाख सुनील । अरु मधु बेंचै विप्रहै शूद्र विप्र दुःशील ॥ भूतद्रोह शठकर्म रत परछिद्रहि नितदेखु । हिंसा में तत्पर सदा द्विज मञ्जारसु लेखु ॥ भरै जो वापी कूपसर वागादिक करिनाश । सन्ध्या अरु स्नान नहिं म्लेच्छ विप्र अघराश ॥ भक्षाभक्ष कृतघ्नअति गम्या-गम्य निशंक । पशु ब्राह्मण सो जानिकै सदा करो तेहि शङ्क ॥ निन्दक लोभी पिशुनअति निर्दय परधन हारि । विप्रजान सोइश्व पच द्विज दश विधि निरधारि ॥ ब्राह्मणके नव कर्म मुख्य शम दम शौच शांति दया ज्ञान विज्ञान शाप आशीर्वाद सामर्थ्य ब्राह्मण की आश्रम संज्ञा सो चारि गृहस्थ ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ संन्यास गृहस्थकर्म जो पदार्थ प्राप्तहोइ तामें सत्रहें अंश पुण्यकरे अतिथि कुटुम्ब सेवन तीनऋण होत प्रथम पितृऋणसों तर्पण श्राद्धकरि उद्धार होत ऋषिऋण तीर्थ व्रतदानकरि उद्धार होत एक देवऋण ताको इन्द्र वरुण कुवेर धर्मराज अग्नि ये पांच बलिदेइ विष्णु शिव देवी गणेश सूर्यपूजि विष्णुते मुक्तिमांगै इति गृहस्थकर्म ॥ अथ ब्रह्मचर्यकर्म ॥ विद्याध्ययन स्वयम्पाकी गुरु आज्ञा तत्पर इन्द्रियजित् इति ॥ अथ वानप्रस्थ ॥ ब्रह्मचर्य स्त्रीयुत वनमें तप करै इति । अथ संन्यासकर्म ॥ वैश्य त्रयदण्डधारी शैव एक दण्ड ग्रहण द्वैरात्रि न कहूंटिके ग्राम वास रात्रि भोजन धातु पात्र वा-हन त्याग वेद आज्ञा लिहे कर्मकरै परमहंस धर्म कर्म त्याग ब्रह्म-नेष्ठी ब्रह्मवेत्ता वैराग्यवान् इन्द्रियजित् इति ॥ अथ क्षत्रियकर्मधर्म ॥ खड्ग दान तपमें शूर तेजस्वी प्रतापी धैर्य्यवान् सावधान दक्ष विद्यामान् नीतिमान् युद्धमें अचल वेदविधानकर्म ईश्वरअर्पण क्षत्रियकी वर्म संज्ञा सो चारि भांति एक गृहितकर्म दूसरे धर्म वर्म सत्य शौच तपदान धर्म शील तीसरे तप वर्म जो स्त्रीयुतवन में तप करै यथा मनुसतरूपा चौथे भक्तिवर्म नवधा प्रेमा परायुत यथा सुरथ रुक्मांगद अम्बरीष अर्जुन भीष्म तिनको भक्त कही

इति ॥ अथ वैश्य कृषी वाणिज्य गोरक्षा तिनकी गुतसंज्ञा सो चारि एक गृहस्थ दूसरे कर्म गुप्त जो तीर्थ व्रत दान माता पिता गुरु ब्राह्मण गऊको मान तीसरे तापस तप गुप्त यथा सरवन चौथे साधुता गुप्त जाको मन शांत है भगवत् भक्तिरत यथा तुलाधार इति ॥ अथ शूद्र तीनिवर्ण की सेवा नम्रतायुत इनकी दास संज्ञा एक गृहस्थ दूसरे भगवद्दास यथा शवरी श्वपच रयदास आदि इत्यादि वर्णाश्रम अपने अपने धर्म में रत मनकरि वचनकरि हंस सम वेषधारी अर्थात् वचन मधुर वेष उज्ज्वल रामसियाके सेवक और नेही परकार्यसाधक सुमुख प्रसन्नमुख रसाल नम्रता युत ३।४ श्रीरघुनाथकी राजको समाज वर्णतहैं सिद्ध मुनि देवतादि-गपालादि ता अवसरके सुमिरे ते अजहूँ हृदयमें सुन्दर हर्षहोत यह गोसाईंजी कहत कि सो अवसर सुमिरे अजहूँ दुःख दूरिहोत ५ ॥

मू० । रागललित ॥ भोरजानकीजीवनजागे । सूतमागधप्रवीणवेणुबीणाध्वनिद्वारगायकसरससरागरागे १ श्यामलसलोनेगातआलसवशजमुहातप्रियाप्रेमरसपागे ॥ उनींदेलोचनचारुमुखसुखमाशृंगारुहेरि हारिहारेमारभूमिभागे २ सहजसुहाईछविउपमानलहैकविमुदितविलोकनलागे ॥ तुलसिदासनिशिवासरअनूपरूपरहतप्रेमअनुरागे ३ ॥

टी० । प्रथम राजसमाज प्रताप वर्णनकरि अब माधुर्यलीला विषे अध्यामकी रीतिते माधुरीकी अवलोकनि शृंगाररस में वर्णन करत ते राग बाजा में प्रवीण तिनके गानकी ध्वनि अरु वेणु वीणा इत्यादि बाजाकी ध्वनि द्वारपर होतहै करत कहीं रससहित राग रागे कही गावत सोई ध्वनिसुनि जागे यह शेषहै १ जागे की शोभा कहत सलोने कहीं शोभामयी श्यामलगातते प्रिया जो जानकीजी तिनके प्रेमानन्दमें पागे ताते आलस्य की वशते जमु-

हातहैं चारु कही सुन्दरनेत्र नींदके भरे तासमय मुखकी शोभा देखि देखि शृंगाररस हारिगयो अनेकन काम लज्जित ह्वै भागे एककी को कहै अर्थात् समता नहीं पावतहैं काहेते यहां प्रेमानन्द समाधि है २ सहजही में छवि सोई कही रोचक ताकी उपमा कवि नहीं पावत ताते आपुही हर्षितह्वै विलोकनलागे गोसाईंजी कहत कि यह अनूपरूपके प्रेममें दास अनुरागे रहत दिनरात तौ वर्णन कौन करिसकै ३ ॥

मू । रागकल्याण ॥ रघुपतिराजीवनयनशोभातनकोटिमयनकरुणारसअयनचैनरूपभूपमाई ॥ देखोसखिअतुलितछविसंतकंजकाननरविगावतकलकीरतिकविकोविदसमुदाई १ मज्जनकरिसरयुतीरठाढ़ेरघुवंशवीरसेवतपदकमलधीरनिरमलचितलाई ॥ ब्रह्ममण्डलीमुनीन्द्रवृन्दमध्यइन्दुवदनराजतसुखसदनलोकलोचनसुखदाई २ बिथुरितशिररुहवरूथकुंचित बिचसुमनयूथमणियुतशिशुफणिअनीकशशिसमीपआई ॥ जनुसभीतदैअकोररावेयुगरुचिरमोरकुण्डलछविनिरखिचोरसकुचतअधिकाई ३ ललितभृकुटितिलकभालचिबुकअधरद्विजरसालहासचारुतरकपोलनासिकासोहाई ॥ मधुकरयुगपंकजबिचशुकविलोकिनीरजपर लरत मधुपअवलिमानोबीचकियोजाई ४ सुन्दरपटपीतविशदभ्राजतवनमालउरसितुलसिकाप्रसूनरचितविविधविधिबनाई ॥ तरुतमालअधिबिचजनुत्रिविधकीरपांतिरुचिरहेमजालअन्तरपरितातेनउड़ाई ५ शंकरहृदयपुंडरीकनिशिवशहरिचंचरीकनिर्व्यलीकमानसगृहसन्ततरहेछाई ॥ अतिशयआनन्दमूलतुलसिदाससानुकूलहरणसकलशूलअवधमण्डलरघुराई ६ ॥

टी० । प्रथम जागरण वर्णनकरि अब मज्जन शृंगार वर्णन करत सो माधुरीको कहिबो सुनिबो सखिनको अधिकार है ताते सखी प्रति सखी कहति है हे माई रघुपति कमल नयन जिनके तनमें कोटिनमैनकी शोभाहै करुणारसके स्थान चैन कही आनन्ददायक सगुण भूपरूपहै हे सखी अतुलित छविहै ताको देखौ संत जो कमलवन हैं तिनके प्रकाश करिबेको रविहैं तिनकी कल कही सुन्दर कीर्ति ताको कवि शेषादि कोविद ब्रह्मादि समूह ते गावत हैं सोई रघुवंशवीर मज्जनकरिकै सरयूतीर ठाढ़ेहैं धीर जे ज्ञानी भक्तहैं ते आपन निर्मलमन लगाइकै पद कमल को सेवत हैं ब्रह्म मंडली ब्रह्मवेत्ता मुनीन्द्र मननशील तिनके वृन्दमध्य लोक के नेत्र चकोरनके सुखदाता चंद्रवदन सुखके सदन श्रीरघुनाथ जी विराजत हैं १ । २ शिररुहवार कुंचित टेढ़े वरूथसमूह बिथरित बिथुरे तिनके बीच फूलनके गुच्छा शोभित ताकी उत्प्रेक्षा करत फणिसर्प तिनके शिशु कही बालकन की अनी कही सेना सो मणिनसहित चन्द्रमाके समीप आइ तिनको देखि चन्द्रमा सभीत कही डरिकै अकोरदै कुण्डलरूप जो द्वैमोर तिनको अपनी रक्षा हेतु राखे काहेते सर्पको मयूर भक्षण करिलेत तिन कुण्डलनकी शोभा देखि चोर जो हैं सर्प बालक ते अत्यन्त सकुचात हैं ताते चन्द्रमाकेसमीप नहीं जाइसकत यहां पुष्पके गुच्छामणी हैं बिथुरे टेढ़ेबारते सर्पबालकन की सेनाहैं कुण्डल मयूरहैं मुखचन्द्रमा है कुण्डलकी आड़ बीच में परेते बारमुखपर नहीं आइसकत सोई संकोचहै मणि सर्पके गुप्तरहत यहां प्रकट काहेते लिखे जब रात्रिसमय सर्प भोजनहेतु बहिरात तबमणि निकारि ताके प्रकाश में भोजन करत सो यहां चन्द्रसमीप अमीपान हेतु आये ताते मणि प्रकट करिलियो यातेकहे ३ ललितनेत्रन सहित सुन्दरी भृकुटी माथे पै तिलक चिबुक ढाढ़ी ओठ दांत हँसनि इत्यादि रसभरी ऊपर अलकैं ताकेतर कपोल बीच में नासिका शोभायमान भृकुटी सोई द्वैभमर नेत्र कमल पै हैं तिन दोऊके बीच नासिका शुक है

मुख नीरजहै ताके रसपान हेतु अलकैं मधुपावली हैं ते लरत तहां नासिका सुवा सोई बीच कस्यो इहां नेत्र अरु मुख ताते द्वै कमल भृकुटी अलकैं ताते द्वैबार भ्रमर कहे नेत्र अलकैं उपमेय में नहीं हैं उपमा तें मालूम होत ४ सुन्दर पीतपट धारण त्रिशद वनमाल उर विषे भ्राजत तुलसी, कुन्द, मदार पारिजात, सरोरुह इत्यादि विविधविधि करिकै रचित ताकी उत्प्रेक्षा करत श्यामलगात सोई तमाल वृक्षहै ताके अधवीच वक्षस्थल में वनमाला श्वेत अरुण हरित सोई त्रिविध शुकोंकी पांति वैठीं है पीतपट हेम-जाल ताकी आड़में है ताते उड़ाय नहीं सकत है ५ शङ्करजी के उर कमल में हरि रघुनाथजी भ्रमर हैं वास करत निर्व्यलीक कपट रहित मनरूपी गृहमें निरन्तर छाइ रहेहैं ते अतिशय आनन्द के मूल सब प्रकारके शूल कही क्लेशके हरण हारे अवध के मण्डल भूषण ऐसे रघुराई तुलसिदासपर सानुकूल रहौ ६॥

मू०। राजतरघुवीरधीरभंजनभवभीरपीरहरणसकलसरयुतीरानिरखहु सखिसोहै॥ संगअनुजमनुजनिकरदनुजबलविभंगकरन अंगअंगछविअनंगअगणितमनमोहै १सुखमासुखशीलअयननयननिरखुनिरखुनीलकुंचितकलकुण्डलकलनासिकाचितपोहै॥ मनहुँइन्दुबिम्बमध्यकंजमीनखंजनलखि मधुपमकरकीरआइतकितकिनिजगोहै २ ललितगंडमण्डलसुविशालभालतिलकझलकमंजुतरमयंकअंकरुचिरबंकभौंहै॥ अरुणअधरमधुरबोलदशनदमकिदामिनिद्युति हुलसनिहियहँसनिचारुचितवनितिरछोहै ३ कंबुकंठभुजविशालउरसितारुणतुलसिमालमंजुमुकतावलियुतजागतजियजोहै॥ जनुकलिन्दनन्दिनिमणिइन्द्रनीलशिखरपरसि धसतिलसतिहंसश्रे

णिसंकुलअधिकोहै ४ दिव्यतरदुकूलभव्यनव्यरुचिर चंपकचयचंचलाकलापकनकनिकरअलिकिधौंहै ॥ सज्जनचषझषनिकेतभूषणमणिगणसमेत रूपजलधिवपुषलैतमनगयन्दवोहै ५ अकनिवचनचातुरीतुरीयपेखि प्रेममगनपगनपरतइतउतसबचकिततेहिसमोहै ॥ तुलसिदासयहसुधिनहिंकौनकीकँहातेआइ कौनकाजकाकेढिगकौनठांवकोहै ६ ॥

टी०। राजत इति भव संसार ताकी भीर जन्म मरण ताके भञ्जन कही नाशकर्त्ता त्रयतापादि पीरके हरणहार रणमें धैर्य-वान् ऐसे रघुवीरते सरयू तीरपै राजत हैं सोहैं कहे सन्मुख हे सखी तिनको निरखहु कैसे शोभित हैं जिनके संगमें भाई अरु वहुत मनुष्यहैं पुनः कैसे हैं दनुज दुष्टनके बल ताके तोरनहारहैं ऐसो शोभायमान रूप है जिनके एक एक अंगपरकी छवि अने-कन काम मोहत हैं १ सुखमा शोभा अरु सुख अरु शीलके स्थान जे नयन हैं तिन्हैं देखु ताके ढिग श्याम टेढ़े वारनमें कुण्डल की शोभा अरु नासिका जो चितको पोहेकही आपुमें लगाय लेतु ताको देखु मानो मुख चन्द्र मण्डल मध्य में नेत्र कंज मीन खंजन हैं तिन्हैं देखि अपनो सजातीय जानि भ्रमरकर शुक आयो इहां गोहै कहि सजाती तहां नेत्र खंजन जानि अपनो सजाती तहां नेत्रकंज जानि अलकावली सोई भ्रमर आये नेत्र मीन जानि स-जातीय विचारि कुंडल मकर आये नेत्र खंजन जानि अपनो सजाती पक्षी नासिका शुक आयो २ गोल ललित कपोल मण्डल विशाल भालपर तिलक झलकत मंजुतर कही सुन्दरोंते सुन्दर मुख चन्द्रमा तामें जो श्याम चिह्न होत सो इहां सुन्दरी टेढ़ी भौहैं हैं कोमल अरुण ओठ बोल मधुर बिजुली सी द्युति दांतनकी चमक सुन्दरिमंद हँसनि युत तिरछी चितवनि सो हृदयमें हुलास

करत यथा शंखमें तीनिरेखा तद्वत् कंठ भुजा विशाल कही लम्बायमान उरबिषे नवीन तुलसी को माला अरु मंजुल मोतिन को माला युत सोहत तिहिको जागत जे योगीश्वर ते जिवते जो-हतकही देखत हैं ताकी उत्प्रेक्षा करत श्याम शरीर इन्द्रनील मणि है कन्धा शिखरहैं तहांते परसिकै तुलसीकी माला कलिन्द नन्दिनी यमुनाजी की धारा है सो धसतकहीगिरत है तहां मो-तिनकी माला हंसनकी श्रेणी कही पांति है संकुल कही पूरण अधिको है एकमें एक लसत कही विराजमान हैं ३। ४ दिव्यतर दिव्यते दिव्य पीतवस्त्र भव्य कही सुन्दर मंगलीक नव्य कही नवीन सुन्दर वस्त्र हैं किधौं चम्पा के फूलनको समूह है किधौं बिजुली को समूह है किधौं सोनेके भ्रमरन को समूह है सोई प्रभु को रूप समुद्र है अंगके भूषण समुद्र मछरिनको निवास है इहां सज्जननके नेत्र झष कही मछली हैं तिनके रहिबेको निकेत हैं ताही रूप समुद्र में सखिनके मन रूप हाथीकी देही बोहलेत कही बूड़त उतरात ५ ता सखी के चातुरी के वचन अकनि कहीं सुनि विचारि शुद्ध हृदयते तुरीय अवस्था में प्रभुको देखि वा तुरीय जो रघुनाथजी तिनको देखि प्रेमसें मगन कही बूड़िगई ताते न इतको पगपरै न घरकी ओर न उतको पगपरै सरयूकी ओर ता समय सब चकितह्वैगई गोसाईजी कहत ता समय सखिन को यह सुधि नहीं है कि कौनकी हौं अरु कहांते आई हौं कौन काज करना है काकेढिगहौं कौन ठांवकी रहने वाली हौं ६ ॥

मू० । देखुसखिआजुरघुनाथशोभाबनी ॥ नीलनीरदवरणवपुषभुवनाभरण पीतअम्बरधरणहरणद्युतिदामिनी १ सरयूमज्जनकिहेसंगसज्जनलिहेहेतुजनपरहिये कृपाकोमलधनी ॥ सजनिआवतभवनमत्तगजवरगवनलंकमृगपतिठवनिकुँवरकोशलधनी २ सघनचिक्कनकुटिलचिकुरबिलुलितमृदुल करनिबिवरतचतुरसरससुख

माजनी ॥ ललितअहिशिशुनिकरमनहुंशशिसनसमर लरतधरहरिकरतरुचिरजनुयुगफनी २ भालभ्राजत तिलकजलजलोचनपलक चारुभ्रूनासिकासुभगशुकआननी ॥ चिबुकसुन्दरअधरअरुणद्विजदुतिसुघरवचनगंभीरमृदुहासभवभाननी ४ श्रवणकुंडलविमलगंडमंडित चपललिलितकलकांतिअतिभांतिकछुतिनतनी ॥ युगलकंचनमकरमनहुंविधुकरमधुर पिअतपहिचानिकरिसिंधुकीरतिभनी ५ उरसिराजतपदिकज्योतिरचना अधिकमालसुविशालचहुंपासबनीगजमनी ॥ श्यामनव जलदपरनिरखिदिनकरकला कौतुकीमनहुंरहिघेरिउडुगणअनी ६ मंदिरनपरखडीनारिआनँदभरी निरखिवर्षहिंविपुलकुसुमकुमकनी ॥ दासतुलसीरामपरमकरुणाधामकामशतकोटिमदहरतछविआपनी ७ ॥

टी० हे सखी आजु रघुनाथजी की शोभा बनीहै ताको देखु श्याम मेघ वरण सुन्दर स्वरूप आभरण कही सकल भुवन को भूषण है ता अंगविशे पीतवस्त्र धारण किहे सो दामिनीकी द्युति को हरत है १ इत्यर्थः ॥ सरयूजी में स्नान करिकै संगमें सज्जन लिहे जन जो दास तिनपर हेतु कही प्रीति है हृदयमें जिनके कृपा अरु कोमलताके धनी कही अधिक हैं जिनमें लंककटि ठवनि ऐंड़ सिंहकी ऐसी मत्त हस्ती की चालते श्रेष्ठ मंद मंद चाल ते कोशलधनी कुबेर हे सजनी भवनको आवत हैं २ सघन चिक्कन टेढ़ेबार स्नान किहेते बिलुलित कही अरुझिगेहैं तिनको चतुर जो रघुनाथ कोमल करनते बिवरत कही अरझा छड़ावत ताते रसभरी परम शोभा जनी कहे उत्पन्न भई ताकी उत्प्रेक्षा इहां बार जे हैं ते मानो सर्पन के सुन्दर बच्चा समूहहैं ते असी लंबे

हतु मुखचन्द्र ते समरलरत अरु हाथ मानों द्वै बड़े सर्प हैं ते अरुझे बार मुखपर ते सुधारब सोई धरहरि कही बीच बराउ करत बड़े सर्प छोटेनको समुझावत कि परारी वस्तु लेबेको जबरदस्ती करते हो ३ सुन्दर तिलक माथपर शोभित कमल ऐसे नेत्रनमें लंबीपलकें शोभित तापै मैनचाप सम टेढ़ी सुन्दर भृकुटी तिनकेबीच शुकको ऐसोसुख सुन्दर नासिका सुन्दरटेढ़ापै अरुण अधरसहित दांतनकी पांतिको प्रकाश शोभाधारण किहे वचनगम्भीर मन्दहँसनि भवसागरके दुःखको नशावनहारीहै ४ श्रवणन में कुण्डलते गंडजोहैं कपोल निर्मल तिनपर मंडितकही भूषितहैं ते चंचलहैं तिनकी कलकही सुन्दरक्रांति अतिकही अनेक भांति की कुछ अद्भुत पदार्थहै ताको तिन कुण्डलोंने तनीकही फैलाई है सोई कलित कही शोभितहै ताकी उत्प्रेक्षा करत कुण्डल सोई मानों द्वैकंजनकी मकर कही मछरा हैं मुख चन्द्रमाहै रूप मधुर अमृतहै ताको पानकरत सिंधुकी कीरति वर्णनकरि भाव तुम सिंधु के पुत्रहौ सो हमारो जीवबेको स्थानहै ताते हम तुम्हारे पदार्थ के आसरे बन्दहैं यह पहिचान करिकै ५ अधिकहै रचना जामें ऐसा पदिकहार ताकीज्योति उरबिषे विराजत ताकी चारोंतरफ गजमुक्तनकी सुन्दरमाला बनिरही है ताकी उत्प्रेक्षा करत रघुनाथजीको वक्षस्स्थल सोई मानों नवीन श्यामभेघहै तापर पदिक की ज्योति मानों सूर्यन की कला है ताको देखि गजमुक्ता सोई मानों कौतुकी नक्षत्रनकी सेनाहै सो घेरि रहीहै यहां मेघपर सूर्यन की कलाहोबो कौतुकहै ताको देखि नक्षत्रहू विपरीति कर्तव्यता मंजूर करो ताते मेघपर सूर्यनकी कलाको घेरिबैठे मेघ पै सूर्यको अभाव सूर्य के ढिग नक्षत्रअभाव६ श्रीगणमन्दिरनपर चढ़ि रघुनाथजीकी छवि देखि आनन्दकी भरी अनेक प्रकारके फूल अरु केसरिकी कनी पराग ताको बरषतीहैं गोसाईंजी कहत कि करुणा के धाम श्रीरघुनाथजी अपनी छवि ते सैकरन करोरि काम के मद हरत हैं ७ ॥

मू०। आजुरघुवीरछविजातनहींकछुकही ॥ सुभग सिंहासनासीनसीतारमणभुवनअभिराम बहुकामशोभा लही. १ चारुचामरव्यजनक्षत्रमणिगणविपुलदासमुक्तावलीज्योतिजगमगिरही ॥ मनहुंराकेशसंगहंसउडुगणबरहिंमिलनआयेहृदयजानिनिजनाथही. २ मुकुट सुन्दरशिरसिभालवरतिलकभ्रूकुटिलकचकुंडलनपरम आभालहीं ॥ मनहुंहरउरयुगलमोरध्वजकेमकरलागि श्रवणनकरतमेरकीबतकही ३ अरुणराजीवदलनयन करुणाअयन वदनसुखमासदनहासत्रयतापही ॥ त्रिविधकङ्कणहारउरसिगजमणिमाल मनहुंबगपांतियुगमिलिचलीजलदही ४ पीतनिर्मलचैलमनहुंमरकतशैलपृथुलदामिनिरहीछाइतजिसहजही ॥ ललितसायकचापपीनभुजबलअतुलमनुजतनुदनुजवनदहनमण्डनमही ५ जासुगुणरूपनहिंकलितनिर्गुण सगुणशम्भुसनकादिशुकभक्तिदृढ़करिगही ॥ दासतुलसीरामचरणपंकजसदा वचनमनकर्मचहैप्रीतिनितानिर्वही ६ ॥

टी०। अब सिंहासन परकी शोभा कहत आजुरघुवीरकी छवि कछुकही नहीं जात काहेते अनेकन कामकी ऐसी शोभाहै जिनमें सांची अरु चौदहों भुवनके अभिराम दाता ऐसे सीतारमण सुंदर सिंहासनपर आसीनहैं १ आसपास सेवक कोऊ चमरलिहे सुंदर कोऊ पंखालिहे कोऊछत्रलिहे तामें अनेक प्रकारके मणिनकेगण कहीं समूह मोतिनके लरनके गुच्छा तिनकी ज्योति जगमगाइ रहीहै ताकी उत्प्रेक्षा यहां क्षत्रमानों चन्द्रमाहै ताके संग चामर हंसहै पंखा मयूरहै मणि मुक्तावली मानों नक्षत्रहैं ते चन्द्रमा के साथनिजनाथ रघुनाथको हृदयमें जानिमिलिबेहेतु आयोहैं अपने

मालिक को मिलै हेतु २ हेममणिन करिकै रचित सुन्दर मुकुट शीशपर सोहत केसरिको उत्तम तिलक माथपर है टेढ़ी भौंहैं हैं बारनके समीप श्रवणनमें कुण्डलनकी परमशोभा प्राप्तहै ताकी उत्प्रेक्षा इहां कुण्डल मानों काम की ध्वजाके मकरकही मछली हैं ते कामके नाशकर्त्ता शिवके डरकरिकै शिवजी को स्वामी जानि मेल करिबे हेतु काननमें लागि वतकही करत हैं रघुनाथजी सों कि हमारे स्वामीको शिवजी नाशकरे ताते हमहूं डरित है आप स्वामीहौ हमारो मेल शिवजीसे कराइदेव तौ अभयहोई ३ करुणा के अयनकही स्थान लाल कमलदल नयन हैं शोभा को स्थान मुख ताकी मन्दहँसनि तीनिउँताप को नाश करनहारी है अपर भूषण अंग अंग के शोभित करविषे कंकन कही कड़ा शोभित सुन्दर वनमाला आदि उरपर गजमोतिन को हार श्यामशरीर मानों श्याम मेघ तापर मोतिन की माला मानों दुइ वगपांति मेघमें मिलिकै चलीहैं इहां प्रथमपद विषे रूपक अलंकार दूसरे में उत्प्रेक्षा अलंकारहै इहिपद विषे राजसमाजसहित सिंहासन पर वर्णत ४ श्यामशरीर मानों मर्कतमणिको पर्वत है तापर पीताम्बर निर्मलशोभित मानों पृथुलकही समूहदामिनी अपनो चंचल स्वभावतजि सहजही में थिरह्वैकै छाइरही है पीनकही पुष्ट भुजा आजानु अतुल है वल जिनमें तिनमें सुन्दरधनुषबाण धारण किहे मनुजको ऐसोरूप दैत्यवनको भस्मकरिबेको अग्निहै ५ अरु पृथ्वी के भूषण करनहार हैं जिनके रूपगुणको कोऊ निर्गुण वा सगुणकरिवर्णनकरै तौ कलितकही शोभित नहींहोत भाव यथार्थ करिकै निश्चयकोऊ नहीं करिसकत ताते शंभुसनकादि तिनकी भक्तिको दृढ़करिकै पकरी है ऐसे रघुनाथजीके चरणकमलन में तुलसीदासमनवचकर्मकरि निरन्तरप्रीतिकोनिर्वाहचाहतहै ६ ॥

मू० । रामराजराजमौलिमुनिवरमनहरणशरणलायकसुखदायकरघुनायकदेखौरी । लोकलोचनाभिरामनी

लमणितमालश्याम रूपशीलधामअंगअंगछबिअनंग कोरी १ भ्राजतशिरमुकुटपुरटनिर्मितमणिरचितचारु कुंचितकचरुचिरपरमशोभानहिंथोरी। मनहुँचंचरीकपुं जकन्दवृन्दप्रीतिलागि गुंजतकलगानतानादिनमणिरि झयोरी २ अरुणकंजदलविशाललोचनभ्रूतिलकभाल मण्डितश्रुतिकुण्डलवरसुन्दरतरजोरी। मनहुँशंबरारिमा रिललितमकरयुगविचारि दीन्हें शशिकहँपुरारिभ्राजत दुहुँओरी ३ सुंदरनासाकपोलचिबुकअधरअरुणबोल मधुरदशनराजतजबचितवतमुखमोरी। कंजकोशभी तरजनुकंजरागशिखर निकररुचिररचितविधिविचित्रत ड़ितरंगबोरी ४ कंबुकंठउरविशालतुलसिकानवीनमाल मधुकरवरवासविवशउपमासुनुसोरी। जनुकलिन्दजा तनीलशैलतेधसी समीपकन्दवृन्दवर्षतछविमधुरघोरि घोरी ५ निर्मलअतिपीतचैलदामिनिजनुजलदनील राखीनिजशोभाहितविपुलविधिनिहोरी। नैननिकोफल विशेषब्रह्मअगुणसगुणवेष निरखहुतजिपलकसफलजी वनलेखोरी ६ सुन्दरसीतासमेत शोभितकरुणानि केतसेवकसुखदेतलेतचितवतचितचोरी। वर्णतयहअ मितरूपथकितनिगमनागभूप तुलसिदासछविविलोकि शारदभइभोरी ७॥

टी०। राजनके जे राजा तिनके शिरमौर रघुनाथजी श्रेष्ठमु- निन के मनके हरणहार शरण सुग्रीव विभीषणादि के सुख देबे लायक ऐसे रघुनाथ को देखोरी हे सखियो जगत् के नेत्रन के अभिरामकही आनन्ददाता नीलमणिसम चमक अरु चिक्कन

तमालसम श्यामरूप शील गुणके धाम जिनके अंग में कोरिकही करोरिन कामकी छवि है १ पुरटसो नाता करिकै निर्मितकही वनो अरु मणिन करिकै रचितकही चित्रित ऐसो सुन्दर मुकुट शीशपर भ्राजत है ताकेतरे कुंचितकही टेढ़े कच जोहैं वारते प-रम सुन्दर तिनकीशोभा थोरी नहीं अर्थात् बड़ी है ते वारमानों चंचरीक कही भ्रमरनके गणहैं नेत्र अरु मुखतेई मानों कमलन के वृन्दहैं तिनकी प्रीतिहेतु गुंजारत हैं सो सुन्दरतान सहित गान करि मुकुट मानों सूर्य है तिनको रिझायो है जामें सदा उदितरहैं तौ कमल प्रफुल्लित रहैं २ लाल कमल दल समनेत्र विशालकही बड़ेतिनपर सुन्दरी भ्रू कही भृकुटी तिनके बीच माथपर तिलक मण्डित कही भूषित है अत्यंत सुन्दर श्रेष्ठ कुण्डलन की जोरी काननमें शोभित मानों शम्बरारि जो कन्दर्प ताको आरि ताके ध्व-जाके द्वै मकर सुन्दर विचारि शिवजीने चन्द्रमा को दीन्हें ताकी दुहूंओर विराजमान हैं इहां मुख चंद्रमा कुंडल कामके ध्वजाके मकर हैं ३ नासिका कपोल दाढ़ी सुन्दर जब मुखमोरिकै तिरछी चितवनि चितै मधुर वचन बोलत तब लाल ओठनमें दांतन की पांति कैसी शोभित होत मानों मुख नहीं कमल को कोशहै ताके भीतर बिजुली के रंगमें बोरि विधाता ने पद्मराग मणिके निकर कही समूह शिखर कही कँगूरा रचे हैं विचित्र कही आश्चर्यमय सुन्दरहैं इहां मुखकंज कोश है दंत पद्मरागमणि के शिखरहैं च-मकबिजुली को रंग है ४ शंखसम कंठ चौड़ी छाती तापर फूल युत तुलसीको नवीन माला ताके सुगन्धवश भ्रमर गुंजारतताकी उपमा सुनुरी हे सखी तुलसी को माला मानों कलिन्दजातकही यमुनाजी की धारा है रघुनाथजी को गात नीलशैल है तापर ते माला लटकीहै सोई मानों धारा धसी कही बहीहै ताके समीप जो भौंर सो मानों कंद कही मेघन के वृन्द हैं ते फूलनको रस पान करत में मुख ते चुइपरत सो मानों मधुरछविको घोरि घोरि वर्षत हैं गुंजारशब्दमानों गर्जन है ५ श्याम शरीरपर अत्यन्त निर्मल

पीतांबर कैसो सोहत मानों इयामसेघ अपनी शोभावढ़बे हेतु विविधप्रकारको निहोराकरिकै दामिनीको स्थिरकरि अपने समीप राखेहै इहां पीतचैल दामिनि सें रूपक जनु पदसें उत्प्रेक्षा नील जलद केवल उपमान ताते रूपकातिशयोक्ति तीनि मिलि शंकर अलंकार है त्रिगुणते परे अगुण ब्रह्मसो सगुणरूप श्रीरघुनाथजी नेत्रन को विशेषफल प्राप्तिहै तिन को पलक रहित ह्वै निरखहु तो जीवन जन्म सुफलकरिजानों ६ अत्यंत कृपाकरि सेवक को सुखदेत अरुजापर करुणाकरि चितैवेत ताका मनचित चोराइलेत भाव आपुमें लगाइलेत ऐसेकरुणाके स्थान श्रीरघुनाथजी जानकीजी सहित सुन्दर साकेत मन्दिरमें विराजमानहैं ताते यहरूप अमित है जाके वर्णन करतमें वेद अरु शेष जी थकितभये गोसाईं जी कहत जिनकी छविदेखि शारदाभोरी कही बौरही भई ७ ॥

मू० । रागकेदार ॥ सखीरघुनाथरूपनिहारु। शरदवि धुरविसुवनमनसिज मानभंजनहारु १ श्यामसुभगशरीरजनमनकामपूरणहारु । चारुचंदनमनहुंमरकतशिखरलसतनिहारु २ रुचिरउरउपवीतराजत पदिकगणमणिहारु। मनहुंसुरधनुनखतगणबिचतिमिरगंजनहारु ३ नीलपीतदुकूलदामिनिद्युतिविनिन्दनिहारु । वदनसुखमासदनशोभितमदनमोहनिहारु ४ सकलअंगअनूपनहिंकोउसुकविवर्णनिहारु । दासतुलसीनिरखतहीसुखलहतनिरखनिहारु ५ ॥

टी० । शरदकी निर्मलता सुखेते रविसुवन अश्विनीकुमार वा केवल प्रतापदै उपमा देदिये अरु मनमनसिजकीशोभा इत्यादिकनके अभिमानके भजनहार श्रीरघुनाथजी को रूप ताको हे सखी निहारु १ जनक की मनोकामनाके पूर्णकरनहार जो सुन्दर श्यामशरीरहैं सोई मानो मर्कतमणिको शिखर है तापर चन्दनको

लेप मानों निहारुकही बरफहै निहारस्तुपारस्तुहिनमित्यमरः २ उरबिषे सुन्दरयज्ञोपवीत अरु पदिक कहीजड़ाऊचौकी ताके ढिग गजमुक्तन को हार शोभित पीत यज्ञोपवीत श्याम तनमें हरित द्युति देखाति टेढ़ीरीतितेश्यामतनपरराजतसो मानों इन्द्रधनुष हैं गजमुक्ता नक्षत्रगण हैं ताके बीच पदिकसो तिमिरके गंजनहार सूर्यहैं ३ दामिनिकी द्युतिकी निन्दाकरणहारो विशेष निर्मलपीत वसन श्याम अंगपर शोभित मदन के मनको मोहनहारो शोभा को सदन सुन्दर वदन राजत है जिनको ४ मुख उर कर पदादि यावत्अंगहैं ते अनूपहैं जिनको वर्णन करनहारो कोऊ कवि नहीं है जो उपमा दैसकै काहेते गोसाईंजी कहत देखनहारो देखत ही में सुखको प्राप्तहोत ताते वर्णन करत नहीं बनत बिनभूषण भूषित तन ताको रूप कही ५ ॥

मू० । सखिरघुवीरसुखछविदेखु । चित्तभीतिसुप्रीति रंगस्वरूपताअवरेखु १ नयनसुखमानिरखिनागरिसुफ लजीवनलेखु । मनहुँविधियुगजलजविरचेशशिसपूर णमेखु २ भृकुटिभालविशालराजितरुचिरकुमकुमरेखु । भ्रमरद्वैरविकिरणिलायेकरनजनउनमेखु ३ सुमुखिके शसुदेशसुन्दरसुमनसंयुतपेखु । मनहुँउडुगणबाहुआ येमिलनतमतजिद्वेषु ४ श्रवणकुण्डलमनहुँगुरुकविक रतवादविशेषु । नासिकाद्विजअधरजनुरह्योकदनकरि वपुवेषु ५ रूपवर्णिनसकतनारदशंभुशारदशेषु । कहै तुलसीदासक्योंमतिमन्दसकलजनेषु ६ ॥

टी० । इहांप्रीतिके अंगकरिके चित्तकी माधुरीछवि को अवलोकन वर्णन तातेसहित अंग प्रीतिको अरु छविको लिखितहै प्रीति यथा । प्रणय प्रेम आशक्ति पुनि लगन लाग अनुराग । नेहसहित सब प्रीतिके जानत अंग विभाग १ मम तव तव मम प्रणय यह

सौम्यदृष्टिलेहिहोइ। प्रीतिउमँग सोइ प्रेम है विह्वलदृष्टी सोइ २ चितअशक्त आशक्तिसोइ यकटकदृष्टी ताहि। बनीरहै सुधिलगन कीउत्कण्ठादृगमाहि ३ जाकेरसमेंलीनचित चापदृष्टिसोइलाग। जासुप्रीतिलें रँगरँगे मत्तदृष्टि अनुराग ४ मिलनि हँसनि बोलनि भलो ललितदृष्टि सो नेह। प्रीतिहोय व्योहार शुभ दृष्टि अधीन सनेह ५ इति प्रीतिअंग। अयशोभाअंग॥ द्युतिलावण्यस्वरूप पुनि सुन्दरता रमणीय। कान्तिमधुरमृदुताबहुरि सुकुमारतागनीय १ शरदचन्द्रकी झलकसम द्युतितनमाहिं लखाइ। मुक्तापानियसम गनौ लावण्यता सुभाइ २ विनभूषण भूषितजुतनु रूप अनूपम गौर। सवअँग सुभग सुठौरशुचि सुन्दरता शिरमौर ३ देखीअनदेखी मनों रमनी अवनीसोइ। कांतिअंगकी ज्योतिसम भूमिस्वर्ण सीहोइ ४ देखत तृप्ति न मानिये तेहिमाधुरी बखान। परसेपरस न जानिये सोई मृदुताजान ५ कमलदलन सों सेजरचि कोमल वसन डसाइ। नाक चढ़त वैठत तहां सुकुमारता सुभाइ ६ इति शोभाके अंगहैं सो रघुनाथजीके रूपकीस्वरूपता कही अंगअंगकी माधुरी सो चित्तरूपी भीतिपर प्रीतिके जो अंगकहि आयेहैं सोई प्रीति के अंगहैं तिनको अवरेषुकही लिखिकै हे सखी रघुवीर के मुखमण्डलकी छवि ताको बुद्धिरूपी नेत्रन ते देखु चंचल वड़े कजरारे कीन मृग खंजनवारे लम्बी वरुनीयुत बनकवारे सव अंग सुठौर ऐसे पैने अनियारे नेत्रनकी सुन्दरता ताके प्रेमअंग प्रीतिरंगते चित्त भीतिपर लिखि बुद्धिकरि विकल दृष्टिते निहारि हे नागरि चतुर सखी आपनो जीवन जन्म सुफल करि लेखु नेत्रनकेसहित मुखकी शोभावर्णत मेघराशिपर चन्द्रमा शरदपूर्णिमा कोरहतताकी झलक समप्रकाशमय मुखकीद्युतिता को आशक्ति अंगप्रीति रंगते चित्त भीतिपर मुखकी द्युतिताको लिखि इकटक दृष्टिकरिचकोरवत् विलोकु तामुखमध्यमें नेत्र कैसेशोभित मानों शरदपूर्ण चन्द्र मध्य विधाताने द्वै कमल विशेष करिकै रचेहैं ते चंद्रमाकेविरोध ते विकाश कैसे होइँ ताको देखु आगे कहत २ ला

नेत्रनपर कामधनुष सम टेढ़ी भृकुटी तापर विशाल भाल तापर केसरिके तिलक की द्वैरेख जिनके देखबे की इच्छा सदारहत है ऐसी रमणीकता भृकुटी भालतिलक की ताको प्रणयअंग प्रीति रंगते चित्तभीतिपर लिखि सौम्य दृष्टिते देखु कैसे शोभित होत मानौ भृकुटीनहीं हैं भ्रमर हैं तैसो नेत्र कमलनके उन्मेख कही विकाशकरिवेहेतु तिलकरूपरविकी किरणिलाये जामें नेत्र कमल विकाश होय हम रसपानकरी ३ चिक्कनकारे चमकारे घुंघुवारे रसराज तम पन्नगवारे सुदेश अपने स्थानपर ऐसे अतरलगाये ऐसे वारनके बीच फूलनके गुच्छा तिनसहित वारन की मृदुता को लोग अंगप्रीति रंगते चित्तभीतिपरलिखि चोपदृष्टिते हेसुसखि देखु कैसे सोहत मानौ बारनहीं हैं अंधकार है फूल मानौ नक्षत्रहैं तिनकी वांहते द्वेषछांड़ि तिलक रविकिरणिके मिलन हेतु आयो ४ कनकमणिनकरिकै रचित ज्योतिवन्त चञ्चलकुण्डल कानन में शोभित तिनकी कांतिता ताकोलगन अंग प्रीतिके रंगकरिकै चित्तरूपी भीतिपर लिखि ताको उत्कण्ठा दृष्टिकरि देखु कैसी शोभाहै मानों श्रुति सोई वेद तामें कुण्डल गुरुकही वृहस्पति कवि शुक्राचार्य्य तेपरस्पर वेदमें वाद करिरहे हैं चञ्चलताकुण्डलन की सोई वादहै नासिकायुत बुलाक मुसक्यानियुतदांतनकी लावण्यता ताको नेह अङ्गप्रीति के रङ्गकरिकै चित्तरूप भीतिपर लिखि ललितदृष्टिकरि देखु ताही समीप अरुण रसीले कोमल ओठन की सुकुमारता ताको अनुराग अङ्गप्रीति रङ्ग करिकै चित्त रूपी भीतिपर लिखि ताके रङ्गमें नेत्ररँगे समेत दृष्टिकरि देखु सो नासिका दांत ओठ कैसेशोभित होत मानों मदन बहुवेषकरि यहां रहतहै नासिका शुकवेष तिल सुमनवेष बुलाक शुक्रवेष ओष्ठ कणवेष दांतहीरावेष दाड़िमबीज वेष कुन्दकली वेष मुसक्यानिशशिप्रभावेष कञ्जकोशमें थिरदामिनि वेष ओठ बिम्बके पक्केफलको वेष बन्धुक कुसुमवेष विद्रुम वेष इत्यादि वेषकरि मदनवास किहे है इहां नेत्रन की सुन्दरता प्रेमकरि विह्वल

दृष्टि मुखकी प्रकाशता आशक्तकरि यकटक दृष्टि भाल भृकुटी तिलककी रमणीकता प्रणयकरि सौम्यदृष्टि बारनकी मृदुलता लागकरि चोप दृष्टि कुण्डलकी कांतिता लगनकरि उत्कण्ठा दृष्टि दांतनकी लावण्यता नेहकरि ललित दृष्टि ओठन की सुकुमारता अनुरागकरि मत्तदृष्टि इत्यादिस्वरूपता प्रीति के रंगकरि चित्तपै लिखि ताकोदेखिनो वर्णन करे ५ जो बिनाभूषणै भूषित है ऐसोसुन्दररूप रघुनाथजीको ताके अंगअंगकी माधुरी जे देखें ते देखनहार तृप्त न होइँ सोई माधुरी सर्वांग प्रीति के रंग करि चित्तरूपी भीतिपर लिखि तन मन धन वारि अपनपौ बिसारि आत्मा समर्पि आधीन दृष्टिकरि हेसखी देखु कैसो रूप है जाको वर्णन मुनिभक्तन में श्रेष्ठ नारद ते नहींकरिसकत भक्तशिरोमणि शिवजी वर्णन नहीं करिसकत कविन में श्रेष्ठ शेष पण्डितन में शारदा ते वर्णननहींकरिसकत ताको मैं तुलसीदास नरन विषे मतिमन्द कैसे वर्णन करौं ६॥

मू०। राग जैतश्री॥देखोराघववदनविराजतचारु। जातनवरणिविलोकतहीसुखमुखकीधौं छबिवरनारिशिंगारु १ रुचिरचिबुकरदज्योतिअनूपम अधरअरुण सित हासनिहारु। मानौशशिकरबस्योचहतकमलनमहँप्रकटतदुरतनबनतविचारु २ नासिकसुभगमनहुँशशि सुन्दरचितवतचकितचरजअपारु। कलकपोलमृदुबोल मनोहररीझिचितचतुरअपनपौवारु ३ निगमशेषशारद शुकशङ्करवर्णतरूपनपावतपारु। तुलसिदासकहैकहौं कौनविधिअतिलघुमतिजडकूरगँवारु ४॥

टी०। हे सखी देखो राघवजूको सुन्दरवदन विराजत जाके देखतही देखनहार सुख में बूड़िजात ताते वर्णिनहीं जात तब प्रेम में विह्वलह्वै कछु कहत कि सुन्दर मुखहै कीधौं श्रेष्ठछविरूपा

नारि ताके अंग अंगको श्रृंगारहै प्रथम छविके अंगलिखेहैं १ सुंदर दाढ़ीपर लाले ओठनके मध्य दांतनकी ज्योति अनूप है तिनकी मन्दहँसनि उज्ज्वलता हे सखी निहारु सो हँसनि मानों चन्द्रमा की करकही किरणि है सो ओठरूप कमल में बसाचाहत सो विचार नहीं बनत ताते प्रकटत दुरत हँसनि आइबो प्रकटब है चन्दहोब दुरनि है २ सुन्दर नासिका मानों सुवाको मुख है यह आश्चर्य अपरमानि देखनहार चित चकितहै देखत हैं सुन्दर कपोल मधुरबोल मनको हरणहार ताको सुनि चित्तमें जे चतुरहैं ते रीझिकै अपनपौ जोहै देहकी सुधि वा अपनी आत्मा वारन करत ३ टेढ़े बारनमें सुन्दर कुंडल कमलसम नेत्रन पर सुन्दरी भृकुटी तापर सुंदर विशाल भालपर तिलक इत्यादि शोभाको सारस्वरूपहै कुण्डल नहीं हैं मानों कामके ध्वजाके मकरहैं भृकुटी धनुष है तिलकरेख बाणहै रघुनाथजीको रूपदेखि काम मोहित ताते चापशर मकर इत्यादि भूलिगये ४ सबको ज्ञाता वेद कविन में शेष कोविदन में शारदा ज्ञानिन में शुकदेव भक्तन में शङ्कर इत्यादि सब वर्णत तापै रूप समुद्रके पार नहीं जाय सकत गोसाईं जी कहत कि तारूपको मैं कौनी विधि कहौं बुद्धिकरिलघु मन करि जड़ चित्तकरि कूर कही कठोर सुजानता करि गँवार ५ ॥

मू० । रागबिलावल ॥ आजुरघुपतिमुखदेखतलाग तसुखसेवकसुरुखशोभाशरदशशिसिहाई ॥ दशनवसन लालविशदहासरसाल मानोंहिमकरकरराखेराजीवमनाई १ अरुणनयनविशालललितभृकुटीभालतिलकचारुतरकपोलचिबुकनासिकासुहाई ॥ बिथुरेकुटिलकचमानहुंमधुलालचअलिनलिनयुगलऊपररहेलोभाई २ श्रवणसुन्दरसमकुण्डलकलयुगमतुलसिदासअनूपउपमाकहीनजाई ॥ मनहुंमरकतसीपसुन्दरशशिसमीपकनकमकरयुतविधिविरचिबनाई ३ ॥

टी०। सुकही सुन्दर सुखपूर्वक अर्थात् अनुकूल हैं सेवकनपर हे आली ताते आजु रघुपतिको मुख देखते सुखदायक लागत जाकी शोभादेखि शरद पूर्णिमा सिहात है जामें दशनवसनकही ओठते लालहैं ताके बीच सुन्दरि हँसनि रसीलीहै सो मानों हिमकर चन्द्रमा ताकी करकही किरणैं हैं ताको मुख कमल मानों मनाइ कही विरोध छुड़ाइ आपुमें राखी है १ रतनारे विशालनेत्र तापै सुन्दरी भृकुटी तिनपर सुन्दरभाल तामें अत्यन्तसुंदर तिलक अरु सुंदर कपोल अरु टेढ़ी बीच में नासिका देखतमें सोहात श्यामचिक्कन टेढ़े बिथुरे बार मानों भ्रमरहैं ते शोभारूप मधुके लालच करि दोऊ नेत्र नलिन कही कमलहैं तिन पर लोभाइरहे हैं २ श्रवणनमें कुण्डलसम यथा कानसुन्दर ताहीसम कुण्डल सुन्दर युग्मकही दोऊ गोसाईंजी कहत कि ताकी उपमा कही नहीं जात जगमें ऐसो पदार्थ नहीं है जाकी समतादेइ ताते अनूपहै जैसी तिहूँकालमें नाहींभई ऐसी अद्भुत उपमा ठहरायो मानों कान नहीं हैं मरकतमणि के सीप हैं सुंदर कुंडल नहीं हैं मानोंकनक की मकर कही मछरी हैं तिनसहित मरकतकेसीप सुंदर चंद्रमा के समीप ब्रह्माने विशेष रचिकै बनायो है ३॥

मू०। प्रातकालरघुवीरवदनछविचितैचतुरचितमे रे॥ होइविवेकविलोचननिर्मलसुफलसुशीतलतेरे १ भालविशालविकटभृकुटीबिचतिलकरेखरुचिराजै॥ मनहुंमदनतमतकिमरकतधनुयुगलकनकशरसाजै २ रुचिरपलकलोचनयुगतारकश्यामअरुणसितकोये॥ जनुअलिनलिनकोशमहँबंधुकसुमनसेजसजिसोये ३ बिलुलितललितकपोलनपर कचमेचककुटिलसोहाये॥ मानोंविधुमहँबलरुहबिलोकिअलिविपुलसकौतुकआये ४ शोभितश्रव

णकनककुंडलकललंबितबिबिभुजमूले ॥ मनहुंकेकितकि गहनचहतयुगउरगइंदुप्रतिकूले ५ अधरअरुणतरदशनपांतिवरमधुरमनोहरहासा ॥ मनहुंसोनसरसिजमहँकुलशनितड़ितसहितकृतवासा ६ चारुचिबुकशुकतुण्डाविनिंदकसुभगसुउन्नतनासा ॥ तुलसिदासछविधामराममुखसुखदशमनभवत्रासा ७ ॥

टी०। हे मेरे चितचतुर प्रभातकाल रघुवीरके वदनकी छवि देखौ तौ तेरे विवेक के नेत्र मोहादि मलकरि रहितहोइँ नेत्रनके विषयरूप ताको इच्छा भरि निहारि ताते सफल होइ जगकी ताप जाइ ताते शीतलहो चितचतुर बड़ाईदै सन्मुखकरे १ विशालभालपर टेढ़ी भृकुटिनकेबीच केसरिके तिलककी रेखारूप द्वैकनकके वाण साज्योहै २ सुन्दरीपलकैंयुत नेत्र ताकेबीच तारक जो पुतरी हैं ते श्यामहैं अरु कोयेकही कोवा ते श्वेत अरुणमिश्रित हैं नेत्र सोई नलिन कही कमल को कोशहै पलक की ललामी बन्धूकदुपहरी के फूलनकीशय्याहै ताको सजिकै पुतरीरूप भ्रमर मानौ शयन किये हैं ३ श्याम टेढ़े अरुझेबार सुन्दर कपोलनपर देखत सोहातहैं मानौ मुखचन्द्रमें नेत्ररूप कमल आश्चर्य देखि तापै वाररूप भ्रमरसमूह कौतुककही परस्पर क्रीड़ाकरतआये ४ बिबिकही दोऊभुजा लम्बायमान तिनकी लूमपै कलकही सुन्दर कनकके कुण्डल श्रवणमें शोभित हैं मानौ मुखरूप चन्द्रमाते प्रतिकूलकही विमुख भुजरूप सर्पन को देखि तिनको कुण्डलरूप केकि जो मयूर सो पकरा चाहतहैं ५ अत्यन्त सुन्दर लाल ओठन के मध्य दांतनकी श्रेष्ठपांति ताकी मधुर हँसनि मनकी हरणहारी है दांत नहीं हैं मानौ हीरनको समूहहै हँसनिरूप तड़ित के साथ ओठरूप सोने के कमल में वास किहे हैं ६ सुन्दरदाढ़ीहै सुवाकीटोंटकी वनकको निन्दाकरनहारी उन्नत सुन्दर नासिका

है गोसाईंजी कहत कि छविको धाम राममुख सुखदाता दुःख भवकीत्रास नाशनहारहै ७॥

मू०। रागकेदार॥ सुमिरतश्रीरघुवीरकिबाहैं॥ होत सुगमभवउदधिअगमअतिकोउलांघतकोउउत्तरतथाहैं १ सुंदरश्यामशरीरशैलतेधसिजनुद्वैयमुनाअवगाहैं॥ अमितअमलजलबलपरिपूरणजनुजनमीशृँगारसविताहैं २ धारैबाणकूलधनुभूषणजलचरभौंरसुभगसबघाहैं॥ विलसतवीचिविजयविरदावलिकरसरोजसोहतसुषमाहैं ३ सकलभुवनमंगलमंदिरको द्वारविशालसोहाईसाहैं॥ जे पूजीकौशिकमखऋषियनजनकगणपशंकरगिरिजाहैं ४ भवधनुदलिजानकीविवाहीभयेविहालनृपालत्रपाहैं॥ परसिपानिजितकियोमहामुनिजोचितयेकबहूंनकृपाहैं ५ जातुधानतियजानिवियोगिनिदुखईसीयसुनाइकुचाहैं॥ जिनरिपुमारिसुरारिनारितेइ शीशउघारिदेवाईधाहैं ६ दशमुखविवशत्रिलोकलोकपति विकलबिनायेनाकचनाहैं॥ सुवसबसेगावतजिनकोयश अमरनागनरसुमुखिसनाहैं ७ जेभुजवेदपुराणशेशशुकशारदसाहितसनेहसराहैं॥ कलपलतहुकीकलपलतावरकामदुहहुकीकामदुहाहैं ८ शरणागतआरतप्रणतनको दैदैअभयपद औरनिबाहैं॥ करिआईकरिहैंकरतीहैंतुलसिदासदासनपरछाहैं ९॥

टी०। इहांतक माधुरी को अवलोकन तातेसखिनको अधिकार शृंगाररस में मुखकी विशेष शोभाकहे अव अपररसको वर्णहिं ऐश्वर्यसहित श्रीरघुवीर की बाहुन को स्मरण करतमात्रही

अत्यन्त अगम जो भवसागर सो सुगम होत कोऊ लांघत जे वासनारहित भक्त ते तुरन्त पार ह्वै जात जो वासनासहितहैं ते थाहै उतरतकही प्रारब्धअनुकूल जगमेंदुःखसुख भोगकरि कुछ देरपाइ पारजात १ श्यामरूप पर्वतते भुजारूप मानों द्वै यमुनाजी की धारा अथाह धसीं नीचे को वही हैं मितिरहित निर्मल बल सोई जलसों परिपूर्णहै यमुना सूर्यनते उत्पन्न भई हैं इहां शृंगार रस सोई सविताकही सूर्य है तिनते भुजारूप यमुना उत्पन्न भई हैं २ धारण किहे हैं वाण धनुष तेई दोऊ कूलहैं वा बाण जाकी धाराहै धनुष कूल द्वैभुजन के भूषण तेई जलचर हैं घाहैं कही अंगुरिनके वीचिके गावा तेई सुन्दर भ्रमर परतहैं शत्रुनको पराजय करि अपनी विजयपाई है ताकी बिरदावली यशको वर्णन सोई वीचिकही तरंगन को विलासहै सुषमा कही शोभा सहित जो कर शोभित सोई सरोज कही कमल हैं ३ जिनकी भय करिकै अमंगल रहा ऐसे राक्षसन को मारि रघुनाथजी मंगल ब्रह्मांड में कराये ताते सकल भुवन मंगलरूप मन्दिरके द्वारकी सुहाई कही सुन्दरी साहैकहे बाजूहैं भुजा भाव मंगल मंदिरको द्वार भुजन के आधार हैं ताको प्रमाण विश्वामित्रसहित ऋषीश्वर जिन भुजनको पूजि यज्ञरूप मंगल पूर्णकरे जनकजी पूजि प्रण स्वयंवर रूप मंगल पूर्णकरे गनपगणेश पूजि अग्र पूजनीय मंगलरूप भये शिवजी जिनको पूजि अविनाशी ह्वै काशीबिषे मुक्तिदाता भये जो अमंगल वेषकिहे मंगलराशिहैं गिरिजा जिनको पूजि शिवजीके अर्द्धांगमें वासपाइ सुहाग मंगलकरि पूर्ण भई इत्यादि ४ भव जो शिवजी तिनको धनुष जिन भुजन तोरि जानकीजी को विवाही ताको देखि दुष्टनृपाल ते त्रपाकही लज्जा के वश बिहाल भये अरु जे कृपा करि कबहूं काहू को नहीं चितये ऐसे तीक्ष्णस्वभाववाले परशुरामजीको जिन भुजनने महामुनि करे भाव सन्तोषरूप बनाये ५ श्रीजानकीजी को वियोगिनि जानि राक्षसनकी स्त्री कुचाहैं सुनाय दुःख देती भईं जिन भुजनते तेई

रिपुनको मारि तिन राक्षसिन को शीश उघारिकै धाहैं कहे दुहाई देवाइ हनुमानूजी के क्रोध की भय करिकै जे दुःखदायी राक्षसी तेई शीश उघारि जानकीजीकी दुहाईदिहिनि ६ तीनिहूंलोक के लोकपालन को विशेष वशकरिकै रावणने विकल करि नाक सों चना बिनवाये ऐसे रावण को वंशसमेत नाशकरि जिन भुजन ने सबको अभयकरे ताते सुबसबसे तीनिहूं लोक अमर स्वर्गवासी नाग पातालवासी नर मृत्युलोकवासी तिनकी स्त्री सनाहैं कही पतिनसहित अपने घर में निर्भय है आनंदसहित जिन भुजन को यशपावन सदा प्रेमते गान करतीहैं ७ जा भुजन को चारिउ वेद अठारह पुराण शेष शुकदेव शारदादि सराहत कही प्रशंसा करत हैं कि ये भुजा कल्पलतहु की कल्पलता वर कही श्रेष्ठहैं अरु काम धेनुहूं की कामधेनु हैं भाव जे कल्पवृक्ष कामधेनु सबको मनोरथ पूर्णकरत तिनहूंको मनोरथ पूर्ण करनहारी हैं ८ प्रणत कही नम्रतायुत जे आरत जीव शरणागत हैं तिन को अभयपद देदै ओर कही अंतलौं निर्बाह करतहैं गोसाईंजी कहत तेई भुजा अपने दासनपर छांहीं प्रथम करिआई हैं पीछे करिहैं अब करत हैं ९॥

मू०। रागभैरव॥ रामचन्द्रकरकंजकामतरुवामदेवहितकारी॥ सियसनेहवरबेलिवलितवरप्रेमबंधुवरबारी १ मंजुलमंगलमूलमूलतनुकरजमनोहरशाखा॥ रोमपरननखसुमनसुफलसबकालसुजनअभिलाखा २ अविचलअमलअनामयअबिरललिलितरहितछलछाया॥ शमनसकलसंतापपापरुजमोहमानमदमाया ३ सेवहिंशुचिमुनिभृङ्गविहँगमनमुदितमनोरथपाये॥ सुमिरताहियहुलसतुलसीअनुराग उमँगिगुणगाये ४॥

टी०। श्रीरघुनाथजी को करकमल शिवजी को हितकारी

कल्पवृक्षहै जानकीजीको स्नेह सोई एक सुन्दर श्रेष्ठलताहै तेहि करिकै वलित कही वेष्टित है बंधु लक्ष्मणजी को उत्तम प्रेम सोई जाकी वारी कही वेराहै १ उज्ज्वल मंगलको मूल जो तनहै सोई मूल यामें करज कही अंगुरी तेईहैं शाखा मनकी हरणहारी रोम सोई पत्रहैं नखसोई फूल सब कालमें सज्जनकी अविषाद सोई फलहै २ ताकीछांह अविचल सदा एकरस शीतलहै ताते संताप कही त्रयताप को नाश करत है अमलहै ताते मल पापादिकनकी नाशकरता है अनामय है ताते रुजकही रोग की नाशकरता है अविरल कही सघनहै ताते मोहतपनकी किरणि नहीं आइसकत देखवेमें ललित ताते मान मदको नाशकरता है छल करिकै रहित ताते माया की नाशकरता इत्यादि गुण जाकी छांह में ३ वांछालित शुचिकही पवित्र मनवाले मुनि ते भृङ्गह्वै सेवत केवल मकरन्दरूप माधुरी चाहत अरु जे मनोरथ पाइ मनमें आनंदह्वै सेवत ते विहंग ह्वै फल के ग्राहक गोसाईंजी कहत जे हृदयमें हुलास युतस्मरण करत ते भृंगह्वै जे अनुराग में उमँग अनुरागपूर्वक उमँग ते गुणनको गानकरत ते फलग्राहक विहंगहैं ४ ॥

मू० । रामचरणअभिरामकामप्रदतीरथराजविराजै ॥ शंकरहृदयभक्तिभूतलपरप्रेमअक्षयवटराजै १ श्यामवरणपदपीठअरुणतललसतविशदनखश्रेणी ॥ जनुरविसुताशारदासुरसरिमिलिचलिललितत्रिवेणी २ अंकुशकुलिशकमलध्वजसुन्दरभँवरतरंगविलासा । मज्जहिंसुरसज्जनमुनिजनमनमुदितमनोहरवासा ३ विनुविरागजपयागयोगव्रतबिनुतीरथतनुत्यागे ॥ सबसुखसुलभदासतुलसीप्रभुपदप्रयागअनुरागे ४ ॥

टी० । श्रीरघुनाथजी के चरणको तीर्थराजको सावयव रूपक

करि वर्णनकरत सुंदर मनोकामनाको दाता रघुनाथजीको चरण रूपतीर्थराज विराजतहै शङ्करकेहृदयमें जो भक्तिहै सोई भूमिथल है भक्तिमें जो प्रेमहै सोई चरणरूप तीर्थराजमें अक्षयवटहै १ पद को पृष्ठ श्यामवर्ण तलकही तरवा अरुणकही लालवर्ण नखनकी श्रेणीकही पांती ते विशदकही उज्ज्वल लसतकही विराजत हैं मानो यमुना सरस्वती गंगाजी मिलिकै ललित त्रिवेणी है नहिं चलीं यथा सरस्वती गुप्त तथा २ अंकुश वज्र ध्वजा कमलआदि जे चिह्न तेई भ्रमर अरु तरंगनको विलास है सज्जन तेई देवता हैं तिनके श्रवण कीर्त्तनकै प्रेमको पुलकांग सोई सुरसज्जन को मज्जनहै अरु मननशील जे मुनिजन मनको लगाइ आनन्दसों ध्यानकरत सोई वासकरिबो है ३ वैराग्य जप यज्ञ योग व्रत तीर्थ में तनुत्यागादि बिनाकिहे गोसाईंजी कहत कि प्रभुके पदप्रयाग में अनुरागकिहे सबसुख सबकही तुरन्तही सुलभ हैं ४ ॥

सू० । रघुवररूपविलोकुनेकुमन ॥ सकललोकलोचन सुखदायकनखशिखसुभगश्यामसुन्दरतन १ चारुचरण तलचिह्नचारिफलचारिदेतपरिचारिजानिजन ॥ राजतन खजनुकमलदलनपरअरुणप्रभारंजिततुषारकन २ जङ्घा जानुआनुउरउरुकटिकिंकिणियुतपटपीतसुहावन ॥ रुचि रनितंबनाभिसेमावलित्रिबलिबलितउपमाकछुआवन ३ भृगुपदचिह्नपदिकउरशोभितमुक्तमालकुंकुमअरुलेपन ॥ मनहुंपरस्परमिलिपंकजरवि प्रकट्योनिजअनुरागसुयश घन ४ बाहुविशाललललितशायकधनुकरकंकणकेयूरमहा धन ॥ विमलदुकूलदलनदामिनिद्युतियज्ञोपवीतलसत अतिपावन ५ कंबुग्रीवछविसीवचिबुकद्विजअधरकपोल बोलभयमोचन ॥ नासिकसुभगकृपापरिपूरणतरुणअरु णराजीवविलोचन ६ भृकुटिकुटिलवरभालतिलकरुचि

शुचिसुन्दरतरश्रवणविभूषण । मनहुंमारमनसिजपुरारिदियेशशिहिचापशरमकरअदूषण ७ कुञ्चितकचकञ्चनकिरीटशिरजड़ितज्योतिमयबहुविधिमणिगण । तुलसिदासरघुकुलरविछवि कविकहिनसकतशुकशम्भुसहस्रफण ८ ॥

टी० । अब नख शिखरूप वर्णन करत है मन रघुवरको रूप नेकु विलोकु तौ सुन्दर श्यामशरीर नखते शिखातक अंग अंग सुभग ठौरहै ताते सकल लोकके लोचनके सुखको देनहारो रूप है जो विनाभूषणै भूषित ताको रूपकही १ सुन्दर चरणनके तरवा तिनमें अरतालिसचिह्न तिनमें चारिमुख्य हैं दक्षिणपग में अँगुठा समीप वज्रकमल है अरु एँड़ी समीप ध्वज अंकुशहै ते चारिचिह्न कैसे हैं जे अपने जननकोजानि परचारिकही ललकारिकै चारिउ फल देत हैं यथा वज्र पापनाशक सो अर्थदेत कमल भवभयनाशक सो धर्म्म देत ध्वजा विजयदायक सो कामदेत अंकुश ज्ञानदायक सो मुक्तिदेत अरु नख कैसे सोहत मानों कमल के दलन के ऊपर प्रभात सूर्यन की प्रभायुत तुषार जो बरफ ताकी कणै रंजित कही शोभित हैं अँगुरी कमलदलन तुषारकण ललामी अरुणप्रभा २ चरण ऊपर जांघ तापर जानुनी कही टिहुनी तापर ऊरूइत्यादि उर में बलाउ कटि में किंकिणी युत पीतांबर सुहावन लागत है नितम्ब सुन्दरनाभी तापर त्रिबली तीनिरेखासो रोमराजी करिकै वलितकही वेष्टित है ताकी उपमा कछु कहत नहीं बनत ३ भृगुपदको चिह्न अरु पदिक जड़ाऊ चौकी औ मोतिन को माला अरु केशरिको लेप इत्यादि हृदयपर कैसे सोहत मानों कमल अरु रविपरसर्प अपनो अनुराग सुयशघन कही समूह ताको प्रकट्यो है भृगुलता कमलहै सो अपनो अनुराग सूर्यनपै प्रकट्यो सोई कुंकुमलेपहै पदिक प्रकाश मय सूर्यहैं ते अपनी किरणिबलते तम नाशकरि कमलको विकाशकरे ताको सूर्यरूप प्रकट मोतिन

को साला है प्रीतिते अनुराग होत कमलरविते प्रीतिकिहे ताते अनुरागप्रकट औ बाहुबलते सुयशहोत रवि अपने करबलते तम नाशकरि कमलको हितकरत ताते सुयशप्रकट४विशालकही लम्बायमान भुजा तिनसे ललितकही सुन्दर धनुषबाण धारणकर मूल में कंकनकही कड़ा शोभित भुजा में केयूरकही बहुतता महाधनकही अमोल नगजटित विमलकही निर्मल दुकूल वसन अर्थात् पीतरंगको जामा अंगविषे धारण कैसो शोभित जो दामिनीकी द्युति दलत अति पावन पीतरंग को नवीन यज्ञोपवीत शोभित ५ छविकी मर्याद सरीखे शंखसम ग्रीवमें तीनिरेखा तापर सुन्दर डाढ़ी ता समीप गोल कपोल ता ढिग अरुणरसीले ओठ तिनके बीच दाड़िमबीजसम दांत ता मुखते जो मधुरवचन सो भयकोहरत सुंदरनासिका नवीन अरुणकमलसम नेत्र सो कृपाते परिपूर्णभाव कृपातेभरे सज्जन पै अनुकूल ६ टेढ़ीभृकुटी श्रेष्ठ भालपर तिलक रुचिर केशरिको पवित्र अत्यंत सुन्दर कानन में कुण्डल इत्यादिक शोभित हैं मानों शिवजी ने कामको मारि ताके धनुषबाण अरुअभूषण मकरध्वजके सो चन्द्रमाको दियो है भृकुटी धनुषहैं तिलक बाणहैं कुण्डलमकरहैं मुखचंद्रमाहै ७ टेढ़ी चिक्कन बारन के ऊपर बहुतविधि मणिनकरिकै जटित प्रकाशमय कंचनको किरीट शिरपर शोभित इति नखशिख छवि रविकुल के रवि रघुनाथजी ताको वर्णन शुकदेव शंकर शेषादि कविनहीं कहि सकत सो तुलसीदास किमिकहै ८॥

मू०। रागकान्हरा॥ देखोरघुपतिछविअतुलितअति। जनुत्रिलोकसुखमासकेलिविधि राखीरुचिरअंग अंगनप्रति १ पदुमरागरुचिमृदुपदतलध्वजअंकुशकुलिशकमलयहिसूरति। रहीआनिचहुँविधिभक्तनकीजनुअनुरागभरीअन्तरगति २ सकलसुचिह्नसुजनसुखदा

यकऊरधरेखविशेषविराजति। मनहुंभानुमण्डलहिसँवार तधरोसूत्रविधिसुतविचित्रमति ३ सुभगअँगुष्ठआंगुरीअ विरलकछुकअरुणनखज्योतिजगमगति। चरणपीठउन्नत नतपालक गूढ़गुल्फजंघाकदलीजति ४ कामतूणतलसरि सजानुयुगऊरूकरिकरभहिबिलखावति। रसनारचितर तनचामीकर पीतवसनकटिकसेसरसावति। नाभीसर त्रिबलीनिसेनिकारोमराजिसेवारछविपावति ५ उरमुक तामणिमालमनोहरमनहुंहंसअवलीउड़िआवति ६ हृदय पदिकभृगुचरणचिह्नवर बाहुविशालजानुलगिपहुंचति। कलकेयूरपूरकंचनमणिपहुंचीमंजुकंजकरसोहति ७ सु जबसुरेखसुनखअंगुलियुतसुन्दरपाणिमुद्रिकाराजति। अँगुलीत्राणकमानबाणछवि सुरनसुखदअसुरनउरशा लति ८ श्यामशरीरसुचंदनचरचितपीतदुकूलअधिकछ विछाजति। नीलजलदपरनिरखिचन्द्रिका दुरनित्यागि दामिनिजनुदमकति ९ यज्ञोपवीतपुनीतविराजतगूढ़जत्रु वनिपीनअंसतति। सुभटपुष्टउन्नतकृकाटिकाकम्बुकण्ठ शोभामनमानति १० शरदसमयसरसीरुहनिन्दकमुख सुखमाकछुकहतनबानति। निरखतहीनयननिरुपम सुख रविसुतमदनसोमद्युतिनिदरति ११ अरुणअधरद्विज पांतिअनूपमललितहँसनिजनमनआकर्षति। विद्रुमरचि तविमानमध्यमानोसुरमण्डलीसुमनजयवर्षति १२ मं जुलचिबुकमनोहरहनुथलकलकपोलनासामनमोहति। पंकजमानविमोचनलोचन चितवनिचारुअमृतजलसींच ति १३ केशसुदेशगँभीरवचनवरश्रुतिकुण्डलडोलनिजि यजागति। लखिनवनीलपयोदरसितसुनिरुचिरमोरजो

रीजनुनाचति १४ भौंहैंबंकमयंकअंकरुचिकुंकुमरेखभाल भलिभ्राजति । शिरसिहेमहीरामाणिकमयमुकुटप्रभासब भुवनप्रकाशति १५ वरणतरूपपारनहिंपावतानिगमशेष शुकशंकरभारति । तुलसिदासकेहिविधिबखानिकहैयह मनवचनअगोचरमूरति १६ ॥

टी०। अति अतुलितछवि रघुपतिकीदेखो कैसीशोभितमानो विधाताने तीनिहूँलोककी शोभाबटोरि सुन्दर अंग अंगन प्रति राखीहै १ पदुमराग जो लालमणि सम ललित कही तरवा तिन में ध्वजा अंकुश वज्रकमल आदिचारि चिह्न ऐसी सूरतिके शोभितमानों चारिहूँ प्रकारके भक्तनकी अन्तर्गति कही अन्तरवासना अनुरागकी भरी आनिप्रभुके चरणनमें रहीहै चारि भक्तकौनहैं प्रथम आरत यथा गज द्रौपदी सुग्रीव जिनको प्रारब्ध पाय करिकै कुसंकट पर्यो ताको मिटाइबे हेतु पापनाश करिबेकी वासनाकरि प्रभुको स्मरणकरत सो प्रभुकी कृपाते पाप नाशभये ते सङ्कट छूटि गये तथा पापनाशक वज्रचिह्न है प्रमाणंमहारामायणे ॥ वज्राद्वज्रसमुत्पन्नोपापपंयद्दहेयतिच । ताते वज्रचिह्न नहीं है आरतभक्त को दुःख छूटिबे अर्थ पापनाशिबे की वासना है तरवाकी ललामी सोई अनुरागभरी है दूसरभक्त जिज्ञासू यथा परीक्षित पार्वती गरुड़ जे मोहादिफन्दामें बँधेते भवसागर परिबेकी भय ताके छूटिबेकी वासनाकरि महात्मनते उपदेश पाइ भक्ति पर आरूढ़हैं मोहादिफन्दते छूटिबे की भयनाशभई तथा कमलचिह्न भवभय नाशकप्रमाणं । पंकजातपंकजंजातंविष्णुहस्तेमुदावहम् । नलीयतेकदाचिद्वैतस्यध्यानभिवार्णवे ॥ कृतेपिकुत्रचिद्वासे पद्मपत्रमिवाम्भसा १ ताते कमलचिह्न नहीं है जिज्ञासूभक्त के भवसागर पार जाबेकी वासना है अनुरागभरी तृतीय अर्थार्थी भक्त यथाध्रुव अर्जुनविभीषणजे पराजय आदिकनकी ग्लानिमानि विजयकी वासनाकरि प्रभुकी शरणागत ते विजयपाइ सर्वांग सुख प्राप्तभयो

तथा ध्वजाचिह्न विजयदायक है प्रमाणं । ध्वजयाविजयोजातो ॥ ताते ध्वजाचिह्न नहीं है अर्थार्थीभक्तकी विजयकी वासनाहै चतुर्थ ज्ञानीभक्त यथा शुक सनकादि शम्भु जे सकल वासनात्यागि मत्त मातंग सरीखे मनको ज्ञानांकुश करि प्रभुके सम्मुख करत तथा अंकुशचिह्न मनको प्रभु सम्मुख करत प्रमाणंमहारामायणे ॥ अंकुशाद्ज्ञानसंजातं सर्वलोकमलापहम् । प्रापयत्येवसन्मार्गेमत्त मातंगजंमनः॥ ताते अंकुश नहीं है ज्ञानीभक्तको ज्ञानांकुशकरि प्रभु सम्मुख मनकरिबेकी वासनाहै २ सुजननके सुखदाता सब चिह्न सुन्दर हैं तिनके मध्य एँड़ी ते मध्यपर्यंत लाल रंगकी ऊर्ध्वरेखा दक्षिणपद विषेविशेष शोभित सो ऊर्ध्वरेखानहीं है मानों विचित्र मति विधिसुत जोविश्वकर्मा सो भानुमंडल सँवारतमें सूर्यकीरेखा दियो है पदकी अरुणता भानुमंडल है३ अबिरल कही घनी अँगुरी सुन्दर अँगुठा कछुक ललाई लिहे नखनकी ज्योति जगमगाइरही है पदकी पृष्ठि ऊंची नत कही शरणपालक घुटुनागूढ़ हैं तापै जंघा कैसी सोहत तथा कदली के खंभा सुन्दर ४ कामके तरकस के नीचेभाग सरीखे जानुनीकही दोऊ टिहुनी हैं तापै ऊरूकैसी शोभित जो हाथीके बच्चाको मानमर्दन करि त्रिलखावत है चामीकर सोना अरु रतनन करि रचित रसनाकही किंकिणीपर बसतिजो तरकस ता सहित पीताम्बर कटिमें कसे हैं ५ नाभी तड़ागहै तापै त्रिबली तीनि रेखा सोई निसेनी कही सीढ़ी हैं तापर रोमन की पांति सोई सेवारन की छविसम सोहत उरपै मणिन को अरु मोतिन को मनोहरमाला सो मानों हंसन की पांति उड़ी नाभी तड़ागपै आवतिहै ६ पदिक कही कंचनमणिन सों जटित चौकी अरु भृगुपद चिह्न जो भृगुलता सो उर कही हृदयपर शोभित वर कही श्रेष्ठ विशाल लम्बायमान भुजा जो जानुकही टिहुनी तक पहुँचत कलकही सुन्दर केयूर जो पहूँटासो कंचनसों निर्मित मणिनसों पूरि कही भरा सो भुजापै शोभित और कमलसम कर ताके मूलमें सुन्दर पहुँची सोहत ७ यवाकार रेखा सुन्दर नख

ऐसी अँगुलीसहित सुन्दर पाणि तेहि में मुद्रिका विराजमान रोदाकी चपेटकी रक्षाहेतु गोह के चामको बनत सो अँगुरी हुइ में पहिरि ताको अँगुलीत्राण कही प्रमाणंवाल्मीकीये । बद्धगोधांगुलित्राणौ । सोई अंगुलीत्राण अरु धनुष बाण ताकी छवि कैसी जो देवतनको सुखदाता अरु असुरन के उरमें शालतकही छेदत ८ श्याम शरीरपर चन्दनकी विचित्र रचना है ताही शरीर पर पवित्र पीताम्बर अधिक छविको छाइ रहो है मानों नीलमेघ पर चन्द्रिका को देखि दुरनि जो छिपिजावो ताको त्यागि थिर है दामिनि दमकिरही है श्याम तन मेघ चन्दन चन्द्रिका पीताम्बर दामिनि ९ पवित्र यज्ञोपवीत विराजत ताते गूढ़कही ढकीहै जत्रुवानि भुजा अरु अंसनकी संधि है तथा स्कन्धोभुजसिरोंसो स्त्रीसंधीतस्यैवजत्रुणीइत्यमरः । अंस जो कन्ध सो पीनकही ऊंचे विस्तृतहैं सुन्दर गढ़नि पीठिकी अरु कृकाटिका जो घांटी सो उन्नतहै कंबुजोशंख तेहिसम कण्ठमें तीनिरेखा ताकी छविको मन मानतकही प्रसन्नहोत कृकाटिका यथा कंबुग्रीवात्रिरेखासाऽवटुर्घाटाकृकाटिका इत्यमरः १० शरदसमयके कमलको निंदाकरनहारो मुख ताकी शोभा कछु कहत नहीं बनत ताको निरखतही में नेत्रनको अनूप सुखहोत कैसी द्युति है जो रविसुवन जो अश्विनीकुमार अरु मदन अरु चन्द्रमा तिनकी द्युतिको निन्दित करत है मुखकी द्युति ११ कोमल रसीले अरुणारे ओठनके बीच हीरासे दांतनकी पांतिकी शोभा अनूप है अरु जनके मनको खैंचनहारी ललित हँसनि है लालओठ नहीं हैं मानों मूंगाके रचित विमान हैं तामध्य दांतनहीं मानों देवतनकी मंडली है हँसनि नहीं मानों देवतनके समूह फूलनकी वृष्टि है १२ मञ्जुल चिबुककही सुन्दर डाढ़ीआदर्शसम सुन्दरगोलकपोलताके नीचेभागको हनुथलकही सोमनकोहरणहारहै सुन्दरनासिका मनकोमोहतहै कमलके मानको छोड़ावनहारहै नेत्रनकी चितवनि सुन्दरि अमृतजल समसींचत १३ केशजोबारसुदेशकही ऐंछे चिक्कन अपने स्थानपरवर कहीं

श्रेष्ठ वचन गम्भीर है श्रुति जो कान तिनमें कुंडलनकी डोलनि ज्ञा-
गतकही जीनमें प्रकाशकरत बार नहीं हैं मानों नवीनश्याममेघ हैं
तिनकोदेखि गंभीरवचन नहीं हैं मानों मेघकीगर्जनिहै ताकोसुनि
कुण्डल मानों सुन्दर मयूरकी जोड़ीहै ते हालत सोई मानों मोरकी
जोड़ी नाचिरहीहै १४ बङ्कहीटेढ़ीभौंहैं मानोंसुखचंदके अंककही
श्याम चिह्न रुचिर कुंकुमकही रेखा तिलक सो भालपर भली
प्रकारते भ्राजत हीरा माणिकमय हेमकोमुकुट शीशविषे शोभित
कोटिनसूर्यन सम जाकी प्रभा सब भुवनन में प्रकाश करत प्रमाणं
सनत्कुमारसंहितायां । भानुकोटिप्रतीकाशं किरीटेनविराजितम्
१५ वेद अरु शेष शङ्कर सरस्वती आदि वर्णत में रूप समुद्रको
पारनहीं पावत जो मनते वचनते नेत्रादि इन्द्रिन ते परे रघुनाथ
जीकी मूर्त्ति ताको तुलसीदास केहि विधि वखानिकै कहै १६ ॥

मू० । आलीरीराघोजीकेरुचिरहिंडोलनाझूलनजैये ।
फटिकभीतिचारुचहुंदिशि मंजुलमणिमयपौरि । गच
कांचलखिमनुनाचाशिखि जनुपांचशरसिफसौरि १ तो
रणवितानपताकचामरध्वजसुमनफलघौरि । प्रतिछांह
छविकविसाखिदेप्रतिसोकहैगुरुहौरि २ मदनजयके
खम्भसेरचेखम्भसरलविशाल । पाटीरपाटिविचित्रभौंरा
बलितबेलनलाल ३ डांड़ीकनककुंकुमतिलकरेखैंचिमन
निजभाल । पटुलीपदिकरतिहृदयजनुकलधौतकोमल
माल ४ उनयेसघनघनघोर मृदुझरिसुखदसावनलाग ।
बगपंक्तिसुरधनुदमकिदामिनिहरितभूमिविभाग ५ दादु
रमुदितभरसरितसरमहिउमँगजनुअनुराग । पिकमोर
मधुपचकोरचातकशोरउपवनबाग ६ सोसमयदेखिसो
हावनोनवसतसवांरिसवांरि । गुणरूपयौवनसीवसुन्द

रिचलाझुण्डनिझारि ७ हिंडोलशालविलोकिसबअंचल पसारिपसारि। लागींअशीशनरामसीताहिंसुखसोहाग निहारि ८ झूलहिंझुलावहिंओसरिनगावहिंसुहागगोंड मलार। मंजीरनूपुरवलयध्वनिजनुकामकरतलतार ९ अतिमुचतश्रमकनमुखनिबिथुरेचिकुरविलोलतहार। तम तड़ितउडुगणअरुणविधुजनुकरतव्योमविहार १० हिय हरषिवरषिप्रसूनवरषहिंत्रिबुधतियतृणतोरि। आनन्द जललोचनमुदितमनपुलकतनभरिपूरि ११ सबकहहिं अविचलराजनितकल्याणमंगलभूरि। चिरजीवजानकिनाथजगतुलसीसजीवनमूरि १२॥

टी०। अब पावसऋतुकी शोभा में झूला को विहार रामजानकीजीको सखिनके विहारके अन्तर्गत वर्णन करे हैं आलीराघोजी के रुचिर हिंडोलापै झूलनजैये कैसी शोभा है तहां निर्मल श्वेतरंग स्फटिक मणिकी भीति चारिउ दिशा में है अरु उज्ज्वल मणिहीरा आदिकनते रचितमय कही समूह पौरिकही दरवाज़ा है कांचकी जो गच है ताको देखि शिखी जो मयूर ताकीसमान मन नाचि उठत मानों गचकांच नहीं है पंचशर जो काम ताकी फांसीहै भाव विशेष शोभा ताको आगे कहत १ तोरण कहीं रंगरंगमणि मुक्तन की झालरिवितानजरी आदिकनके चँदवा पताकाफरहरात चामरध्वजा रेशमी वस्त्रपर हेमतारन सों कछु चिह्न अंकित सुमन वृक्षादिकन में वा कृत्रिम मणिनके वा गुच्छा आदि जहांतहां टँगे तथा फलनकी घौरी इत्यादि वस्तुशोभित ताकी प्रतिछांहकहीपरछाहीं गचकांचके भीतर देखत सो प्रतिछाहीं कविकी साखि दैकै अपनी प्रतिसों कहत कि गुरुहौरी भाव हम में शोभा तुमतेगुरुहै अभिप्राय कि जो वस्तु शोभित ताकी छाहीं कांच के भीतर शोभा अधिक देखावत अरु कविजन शोभाके जाननेवाले ताते कविकी

साखीदेतहै २ सरलकही सीधे सुंदर लम्बे खम्भ कैसे शोभित मानों कामने अपने विजय के खम्भरोप्यो है पाटीर चन्दन ताकी पाटी शोभित तिनमें चित्रविचित्र भौंरा तिनकरिकै वलितकही वेष्टितहै ताके मध्यमें वेलन लालहै जाकी आधार झूलारहत३ तामें कनक की डांड़ी कैसी शोभित मानों मनसिज काम ताके भालकही माथ विषे कुंकुम जो केसरि ताके तिलककी रेखाहै पटुली जो पटरा सो कैसो शोभित मानों रतिके हृदयमें कलधौत जो सोना ताको कोमल पदिकहारहै ४ सुखके देनहार सावनमास लागो आकाश में सघन समूहघन उनये हैं घोरधुनिते गर्जत मृदुझरि नान्ही२ बूँदी वरसिरही हैं तिनमें वकुलनकी पांति इन्द्रधनुष शोभित दामिनि दमकिरही है भूमि हरितहै विभागकही तरह तरहकी हरेरी है ५ सरिता नदी तड़ाग जलते पूरि तिनमें दादुर मुदितमनते बोलिरहे हैं मानों भूमि अनुरागते उमँगि रही है पिक कोयल मोर चकोर भ्रमर पपीहा ते शब्द उपवन बागन में करिरहे हैं ६ सो समय सोहावनदेखि नवशतकही सोरहों श्रृंगार यथा उबटनकरि वस्त्र पहिरि जावक लगाइ मांगगुहि सिंदूरदे तिलकरचि मेहँदी लगाइ अंग में अरगजा लगाइ फूलहार मणिहार पहिरि मीसीलगाइ पानखाइ अंजन लगाइ चातुर्य्यतासहित इति सोरहों श्रृंगार सजि ताके सहायक वारहआभूषण तहां भूषण तौ अनेकहैं परंतु वारहस्थान अंगमें भूषण करिवेके हैं ताते स्थानप्रति एक एक मुख्य कही बारह कहे यथा प्रथम शीश तामें अर्द्धचन्द्र कोट चूड़ामणि मांगफूल मांगमोती द्वितीय भाल तामें टीका वन्दी पटिका वुन्दा जुगुनू तृतीय श्रवण तामें कनिकार कर्णफूल उतन्ना वारी झुमका ताटंक चतुर्थ नासिका तामें बेसरिवुलाक नथलटकन पोलवा कील पञ्चम ग्रीव तामें कंठी त्रिमनी पंचम तिलरी पचलरी कंठशिरी चम्पकली कण्ठा षष्ठ हृदय तापै पदिकहार चन्द्रहार नागफनीहार हैकल हमेल जवमाला मणिहार सप्तम भुजा तामें भुजवल बाजू अंगद बांक जोसन अष्टम करमूल तामें चूरी पछे-

लवा जामधि बलय मूषकदन्ती पहुंची बलय नवम कटि तामें किं-
किणी नीबी दशम करअंगुरी तामें आरसी अंगुस्ताना मुद्रिका
घोटिया झुमकी छल्ला छाप एकादश घुटुना तामें जेहरि पायजेव
नूपुर पायल कड़ा गुजरी द्वादश पग अंगुरी तामें पकपान अनवट
बिछिया कनिष्ठिका चुटकी इत्यादि शृंगार भूषण सँवारि २ जे
सखी गुणकी रूपकी यौवनकी मर्य्यादा गुण यथा शीलवान् मधु-
भाषी सुन्दरचित पति अनुकूल सरलसुभाव चातुर्य्यतायुत चञ्च-
लतारहित मन्दचाल इति गुणरूप यथा बिन भूषण भूषित तन
स्वरूप यौवन चौदहवर्षकी अवस्था इत्यादि सुन्दरी झुण्डझुण्ड
समूह सखी झूलिबेचलीं ७ ते हिंडोलशालाकी शोभादेखि और
रघुनाथजी को सुख और जानकीजीको सोहाग निहारि वा रघु-
नाथजी की कृपाते अपनो सुख सोहागनिहारि अञ्चल पसारि
पसारिकै रामजानकीजीको आशीर्वाद देनलागीं जो सुख समाज
पाठहोइ तौ सुखकी समाज निहारि ८ आप झूलत औरनको
झुलावत ओसरी समेत औ सूहा औ गौड़मलारआदि तालस्वर
सहित गावतहैं मंजीर पायज़ेबके घुंघुरू नूपुरखाली घुघुल वलय
जो कंकणादिकनकी धुनि कैसी सोहत मानों कामके करकी तारी
हैं ९ अत्यन्त जो झूलामचत ताते श्रमकनी पसीना मुखन में
कनै छाई हैं तापै चिकुरबार बिलुलित कहीं अरुझे मणिनके हार
समेत मुख पै कैसी शोभा देत मानों बाररूप अन्धकार श्रमकन
रूप नक्षत्र मुखकी प्रकाशरूप तड़ित हाररूप अरुण सूर्यमुखरूप
चन्द्रमा इत्यादि मानों व्योममें विहार करतहैं १० हृदयते हरषि
फूलबरषि देवतनकी स्त्री निरखती हैं तृणतोरि जामें नजरि न
लागे वा तृण घुंघुटादि खोलि लज्जा तृणसमतोरि वा पलकच-
लिबो तृणतोरि वा निजमुखको तृणसम तोरि आनन्द को जल
नेत्रनमें भरा मनमें प्रमोद देहपुलकसों भरिपूरि रोमांचखड़े ११
कल्याण जो कुशल मंगल जो उत्सव तेहिकरिकै नित्य भरिपूरि
अचल राज्यसहित तुलसी के सजीवनमूरि जानकीनाथ जगत्

में चिरंजीव रहौ अस सब कहत हैं जामें सदा सुख रहै १२ ॥

मू० । रागसोहाव ॥ कोशलपुरीसोहावनीसरिसरयू केतीर ॥ भूपावलीमुकुटमणिनृपतिजहांरघुवीर १ पुरनर नारिचतुरअतिधरमनिपुणरतनीति ॥ सहजसुभायसकल उरश्रीरघुवरपदप्रीति २ ॥ छन्द ॥ श्रीरामपदजलजात सबकेप्रीतिअविरलपावनी ॥ जोचहतशुकसनकादिशंभु विरंचिमुनिमनभावनी ३ सबहीकेसुन्दरमन्दिराजितरा उरंकनलखिपरै ॥ नाकेशदुर्लभभोगलोगकरहिंनमनवि षयनिहरै ४ सबऋतुसुखप्रदसोपुरीपावसअतिकमनी य ॥ निरखतमनहिंहरतिहठिहरितअवनिरमणीय ५ बी रबहूटीविराजहींदादुरधुनिचहुँओर ॥ मधुरगरजिघन बरसहिंसुनिसुनिबोलतमोर ६ बोलतजोचातकमोरकोकि लकीरपारावतघने ॥ खगविपुलपालेबालकनकूजतउड़ा तसोहावने ७ बकराजराजितगगनहरिधनुतड़ितदिशि दिशिसोहहीं ॥ नभनगरकीशोभाअतुलअवलोकिमुनि मनमोहहीं ८ गृहगृहरचेहिंडोलनामहिगचकांचसुढार ॥ चित्रविचित्रचहूंदिशिपरदाफटिकपगार ९ सरलविशा लविराजहिंविद्रुमखम्भसुजोर ॥ चारुपाटिपुटपुरटकीझर कतमरकतभौंर १० मरकतभवँरडांड़ीकनक मणिजटित द्युतिजगमगिरही ॥ पटुलीमनहुँविधिनिपुणतानिजप्रक टकरिराखीसही ११ बहुरंगलसतवितानमुक्तादामसहि तमनोहरा ॥ नवसुमनमालसुगंधलोभेमंजुगुंजतमधुक रा १२ झुण्डझुण्डझूलनचलींगजगामिनिवरनारि ॥ कु सुमचीरतनसोहहींभूषणविविधसँवारि १३ पिकवयनी

मृगलोचनीशारदशशिसमतुण्ड ॥ रामसुयशसबगाव
हींसुस्वरसुसारँगगुण्ड १४ सारँगगौड़मलारसोरठसुहाव
सुघरनेबाजहीं ॥ बहुभांतितानतरंगसुनिगंधर्वकिन्नरल
जहीं १५ अतिमचतछूटतकुटिलकचछविअधिकसुन्दरि
पावहीं ॥ पटउड़तभूषणखसतहँसिहँसिअपरसखीझुला
वहीं १६ फिरिफिरिझूलहिंभामिनीअपनीअपनीबार ॥
विबुधविमानथकितभयेदेखतचरितअपार १७ वरषिसु
मनहर्षहिंसुरवरणहिंहरिगुणगाथ ॥ पुनिपुनिप्रभुहिप्रशं
सहिंजैजैजानकिनाथ १८ जैजानकीपतिविशदकीरति
सकललोकमलापहा ॥ सुरवधूदेहिंअशीशचिरजिवराम
सुखसम्पतिमहा १९ पावससमयकछुअवधवरणतसुनि
अघौघनशावहीं ॥ रघुवीरकेगुणगणनवलनितदासतुल
सीगावहीं २० ॥

टी० । श्रीसरयू सरिताके तटपै श्रीअयोध्याजी सोहावनी शोभित समूह भूपनके शिरोमणि नृपति जहां रघुवीर विराजमान हैं १ तहांकेवासी नर नारि अपने धर्मकरिबे में निपुण नीति में रत सहज सुभावही में सबके उरविषे प्रभुकेपदमें प्रीति है २ श्रीरघुनाथके पदकमलन में कैसी प्रीति सब अयोध्यावासिन के हृदयमें है अविरल कही सघन जाको शुकदेव सनकादि शम्भु चाहना करतेहैं जो ब्रह्माके मनमें भावती है अरु मुनिनके मनभावती है ३ तापुरीविषे सुन्दरमन्दिर सबके अजिर कही आंगन दिव्यमणिमय ताते राजाको मन्दिर अरु दरिद्रीको मन्दिर यह चिह्न नहीं लखि परत भाव नृपगृहसो भोगसरिस सदन सबकेरे नाक स्वर्ग के ईश इंद्र तिनको दुर्लभ जो भोग अवधवासी करतहैं परन्तु लोगन मन विषे करिकै नहीं हाराहै विषयवश नहीं है ४ सो पुरी सब ऋतुनमें सुखदेनहारी है परन्तु पावस विषे कमनीय कही अत्यन्य सुन्दर है

काहेते हरित भूमिकी जो रमणीकताहै सो निरखेते हठिकै मन को हरिलेत ताते पावस में अधिक है ५ ता हरित भूमिपर लालमणिसी बीरबहूटी विराजमान चारोंदिशाते दादुरकी धुनि है रहीहै मधुर गरजिकै मेघ बरसिरहे हैं ताशब्द सुनि मोर बोलत हैं ६ पपीहा मोर सुवा कबूतरआदि बोलिरहे हैं अपर पक्षी बालकनके पाले नगर में कुहकत अरु उड़ात ते अतिसुहावने लागत हैं ७ श्यामसघनमेघन में श्वेत बगुलनकी पाँति उड़ातिमें शोभा देखावत काहू दिशिमें इन्द्रधनुष उदयहै दिशिदिशि में बिजुली चमकि रहीहै इत्यादि नभकी अरु नगरकी शोभा अतुल है जो मुनिनके मनमें मोहकरत और जीवनकी को कहै ८ मन्दिर मन्दिरमें हिंडोलारचे हैं पृथ्वी बिषे कांचकी गचरची है सुढारबरोबरि निर्मल जलसम झलकि रही हैं रेशमी रंग रंग जरीआदिकनके चित्र विचित्र परदा द्वारनप्रति चारों दिशा में परेहैं तहां फटिक मणिकी पगारकही भीति शोभित है ९ सीधे लंबायमान वलिष्ठ मूंगाके खम्भा विराजमानहैं सुन्दर सोनेकरिकै रचित सुन्दरीपाटी मनको हरणहारी तिनमें मरकतमणिके भौंर प्रकाशमान लटके झरकत कही झलकिरही हैं १० मरतकमणि के भौंर अरु कनककी डांड़ी मणिनकरिकै जटित तिनकी द्युति जो प्रकाश सो जगमगाइ रही है पटुली जो पटरा कैसो शोभितहै मानों विधाताने अपनी सांची चतुरता सोई प्रकटकरिकै राखी है ११ श्वेत पीत अरुण हरित द्विरंग त्रैरंग चौरंग पँचरंग सादे जरीके कारचोबी कढ़े आदि बहुरंगके वितान कही चंदवा विराजमान तिनमें मोतिन के दामकही लरनके घपसाटँगेहैं तिनकी सुगन्धनमें लोभे मंजुकही मनोहर भ्रमर गुञ्जार करिरहे हैं १२ गुण रूप यौवनकीभरी गजकी ऐसी मन्दचाल कुसुमरंगके चीर तनमें धारणकरि सोरहो शृंगार सँवारि विविध प्रकारके भूषण सजिसजि ऐसी श्रेष्ठस्त्री झुंडझुंड मिलि झूलिबेको चली १३ कोयल सम मधुर वचन मृगासम बड़े बड़े नेत्र शरदपूर्णचन्द्र सम मुख जि-

नको ते सारंग गौड़ादि रागिनिन में सुन्दर स्वरते श्रीरघुनाथजी को सुयश सुन्दर प्रेमसहित गावतीहैं १४ सारंग गौड़ मलार सो-रठ सुहाव आदि सुघर रागिनिन बाजहीं भाव सुनैयाको प्रसन्न करदेती हैं तिनकी तानन की बहुत भांतिकी जो तरंगें हैं तिनको सुनिकै गन्धर्व किन्नर लाजतहैं भाव हमते अस गान नहीं बनत है १५ अत्यन्त झूलामचत ताके झोंका लागेते टेढ़ेवार छूटिकै मुखनपर परत भूषण खसि परत तहां बारनमें अरुझे पवन ला-गेते वस्त्र उड़त तेहि करिकै अधिक छवि स्त्री पावती हैं तिनको देखि हँसि हँसि अपर सखी झुलावती हैं १६ ती जो झुलावन वाली भामिनी हैं सो अपनी बारकही ओसरी पाइकै फिरि फिरि झूलतीहैं तिन सखिनसहित ऐसे अपार जो चरित प्रभुकेहैं नित्य तिनको देखत देवतनके विमान थकितभये १७ फूल वर्षिकै देवता हर्षपूर्वक रघुनाथजी के गुणनके सुन्दर गाथा वर्णनकरतमें बार-बार प्रभुकी प्रशंसाकरत कि ब्रह्माण्डके सुखदेनहारे जानकीनाथ की सदा जयजयकार बनीरहै १८ सबलोकनके मल जो हैं पाप तिन की आपहा कही नाशकरनहारी विशद कही उज्ज्वल कीर्त्ति है जिनकी ऐसे जानकीके पतिकी जयहोय देवतनकी स्त्री आशीर्वाद देतीहैं कि महासुख सम्पत्ति सहित रघुनाथजी चिरकाल जीव-हु १९ गोसाईंजी कहतहैं कि रघुवरके गुणके गान कही समूह ते नित नवल कही सदा नवीन हैं तिनको शङ्कर सनकादिक नारद हनुमानादि जे दासहैं ते सदा नित नवलगुणके गान गावत ताको पार नहीं पावत ताही समूहते अयोध्याजी विषे पावसऋतुको विहार सखिनसहित रघुवीर जानकी को मतिकी अनुहारि कछु महूं वर्णतहौं जाके सुनेते समूह पाप नाश होत २० ॥

मू० । रागआसावरी ॥ सांझसमयरघुवीरपुरीकीशो भाआजुबनी ॥ ललितदीपमालिकाविलोकहिंहितकरिअ वधधनी १ फटिकभीतिशिखरनपरराजितकंचनदीपअ

नी ॥ जनुअहिनाथमिलनआयेमणिशोभितसहसफनी २ प्रतिमन्दिरकलशनपरभ्राजहिंमणिगणद्युतिअपनी ॥ मानहुँविपुलप्रकटिपुरलोहितपठइदियेअवनी ३ घरघरमंगलचारएकरसहर्षितरंकगनी ॥ तुलसिदासकलकीरतिगावतजोकलिमलशमनी ४ ॥

टी० । दीपमालिका वर्णन आजु सांझ समय में रघुवीरपुरी की अपूर्व शोभा बनी है काहेते ललित जो दीपमालिका को उत्सवहै ताको अवधधनी जो श्रीरघुनाथजी सो हितकरिकै देखत हैं १ फटिकमणिकी भीतिके शिखरनपर कंचन के दीप बरिरहे हैं तिनकी अनीकही टेमिकी मुनी चारों दिशासें कैसी विराजमान हैं मानों हजारन फणिनपर मणी प्रकटधरि अहिनाथ जो शेषजी ते प्रभुके मिलिवेहेतु आयो है तिनके हजारों फणपर मणी आइ शोभित हैं इहां फटिकभीति शेष है दीप फण हैं टेमि मणि है २ मन्दिर२ प्रति कलशन के ऊपर मणिन के गण अपनी द्युति कही प्रकाश सहित भ्राजत ते मणी कैसी शोभित होत मानों अवनि जो पृथ्वी तामें लोहित जोहै मंगर तिनको विपुल कही समूह प्रकटकै अयोध्यापुरको पठैदियो तेई विराजमान हैं ३ रंक कोऊ हईनहीं है तब रंक लिखिवेको कौन प्रयोजन है इहां रघुनाथजी के प्रभावकरि जे प्रारब्धकरि रंकरहे तेऊ प्रभुकी राज्य में गनीकही धनी तिनकी समान सब हर्षित हैं ताते घर घरमें मंगलाचार एकरस ह्वैरहा है ऐसा प्रभाव जिनका तिन रघुनाथजीकी कल सुन्दर कीर्त्ति तुलसीदास गावत है जो कलिमल पाप ताकी शमनी नाश करनहारी ४ ॥

मू० । रागगौरी ॥ अवधनगरअतिसुंदरवरसरिताकेतीर ॥ नीतिनिपुणनरतियसबहिंधरमधुरंधरधीर १ सकलऋतुनसुखदायकतामहँअधिकवसन्त ॥ भूपमौलिमणि

जहँबसिनृपतिजानकीकन्त २ वनउपवननवकिशलयकु
सुमितनानारङ्ग ॥ बोलतमधुरसुखरखगपिकवरगुंजत
भृङ्ग ३ समयविचारिकृपानिधिद्वारदेखिअतिभीर ॥ खे
लहुसुदितनारिनरविहँसिकहेउरघुवीर ४ नगरनारिनर
हरषितसबचलेखेलनफागु ॥ देखिरामछविअतुलितउमँ
गतउरअनुरागु ५ श्यामतमालजलदतननिर्मलपीतदु
कूल ॥ अरुणकंजदललोचनसदादासअनुकूल ६ शिर
किरीटश्रुतिकुण्डलतिलकमनोहरभाल ॥ कुंचितकेशकु
टिलभ्रुवचितवनिभक्तकृपाल ७ कलकपोलशुकनासिका
ललितद्विजजोति ॥ अरुणकंजमहँजनुयुगपांतिरुचिरग
जमोति ८ वरदरग्रीवअमितबलबाहुसुपीनविशाल ॥ कंक
नहारमनोहरउरसिलसतवनमाल ९ उरभृगुचरणविरा
जतद्विजप्रियचरणपुनीत ॥ भक्तिहेतुनरविग्रहसुरवरगुण
गोतीत १० उदरत्रिरेखमनोहरसुन्दरनाभिगँभीर ॥ हाट
कघटितजटितमणिकटितटरटमंजीर ११ ऊरूजानुपीन
मृदुमरकतखंभसमान ॥ नूपुरमुनिमनमोहतकरतसुकोम
लगान १२ अरुणचरणपदपंकजनखद्युतिइन्दुप्रकाश ॥
जनकसुताकरपल्लवलालितविपुलविलाश १३ कंजकुलि
शध्वजअंकुशरेखचरणशुभचारि ॥ जनमनमीनहरणकहँ
वंशीरचीसँवारि १४ अंगअंगमेंअतुलितशोभावरणिन
जाइ ॥ यहसुखमगनहोइमन फिरिनहिंअनतलुभाइ १५
खेलतफागुअवधपतिअनुजसखासबसंग ॥ वरषिसुमन
सुरनिरखहिंशोभाअमितअनंग १६ तालमृदंगझांझडफ
बाजहिंपणवनिशान ॥ सुघरसरससहनाइनगावहिंसमय

समान १७ वीणावेणुमधुरधुनिसुनिकिन्नरगन्धर्व ॥ निज
गुणगरुअहरुअअतिमानहिंमनतजिगर्व १८ निजनिज
अटनिमनोहरगानकरहिंपिकबैनि ॥ मनहुंहिमालयशि
खरनिलसहिंअमरमृगनैनि १९ धवलधामतेनिकसहिंज
हँतहँनारिवरूथ ॥ मानहुँमथतपयोनिधिविपुलअप्सरा
यूथ २० किंशुकवरणसुअंसुकसुखमासुखनिसमेत ॥ जनु
विधुनिवहराहकरिदामिनिकरनिकेत २१ कुमकुमसुरस
अवीरनभरहिंचतुरवरनारि ॥ ऋतुसुभायसुठिशोभितदे
हिंविविधविधिगारि २२ जोसुखयोगयागजगजपतपती
रथतेदूरि ॥ रामकृपातेसोइसुखअवधगलिनरह्योपूरि २३
खेलिवसन्तकियोप्रभुमज्जनसरयूनीर ॥ विविधभांतिया
चकजनपायोभूपणचीर २४ तुलसिदासतेहिअवसरमाँगी
भक्तिअनूप ॥ मृदुसुसक्यायदीनतवकृपादृष्टिरघुभूप २५

टी०। वर सरिता सरयू के तीर अवधनगर अतिसुन्दर है तहां के वासी नर नारि ते नीतिपर चलिवे में निपुण हैं अरु धर्मकी जो धुरी है सत्य शौच तप दानादि तिनके धारण करिवे में धीरजवान् हैं १ श्रीअयोध्यापुरी सब ऋतुनमें सुखदायक तापर वसन्त में अधिक सुख देनहार है सब राजन के शिरोमणि राजा जहां श्री जानकी कन्त वास करत हैं २ तहि पुरविषे वन जे विशालगायेते भये तहां वन बारा हैं अशोक प्रमोद सन्तानक मन्दार पारिजात चन्दन चम्पक रमनक आम्र पलाश कदम्ब तमाल इत्यादि वन औ उपवन ते सब नवीनपल्लव लिहे अनेकरंगके फूल फूलिरहे हैं तिनपर कोयल आदि श्रेष्ठ पक्षी मधुर स्वरते बोलेरहे हैं और भौंर गुंजारि रहे हैं ३ सो समय वसन्त विचारि और द्वारपर भीर देखि कृपासिन्धु रघुवीर हँसिकै कहतभये कि नारि नर आनन्दते फागुखेलौ ४ ते प्रभुके वचनसुनि पुरके नर नारि हर्षसहित फागु

खेलिवेको चलतेभये ते रघुनाथजी की अतुलित छवि देखि तिनके हृदय में अनुराग उमँगि आयो ५ कैसी छवि है प्रभुकी तमाल अरु मेघतम श्यामतन है तामें निर्मल पीतरंगको वस्त्र धारण सुन्दर लाल कमल दलसम नेत्र जो सदा दासनपर अनुकूल कही प्रसन्न रहत ६ कांचनमणिन करिकै जड़ित प्रकाशमान मुकुट शीशपरहै चमकदार कुण्डल कानन में सुन्दर विशाल भाल परमन को हरणहारी केसरिको तिलकहै कारे चिक्कन चमकदार टेढ़ेबारहैं टेढ़ी सुन्दरि भृकुटी नेत्रनकी चितवनि भक्तनपै कृपा की भरी है ७ सुन्दर कल गोल कपोल सुवा के मुखसम सुन्दर नासिका अधरन के बीच सुन्दर दांतनकी ज्योति कैसी सोहति मानौ ओठरूप लालकमल के बीच दांतरूप मानो गजमुक्तन की सुन्दरी दुइपांती हैं ८ पीन पुष्ट लंबायमान असित हैं बल जिनमें ऐसी सुन्दरी भुजा हैं कंकणहार फूलनको गजरा करमूल में मनको हरणहार हैं उरविषे वनमाला शोभित है सुन्दर चरित पुनीत ॥ यथा भागवते ॥ रामस्यकोशलेन्द्रस्य चरितंकल्मषापहम् ॥ ताते पापनाशक पुनीत यश है जिनको ऐसे ब्रह्मण्यदेव ॥ यथा ॥ नमोब्रह्मण्यदेवाय ॥ याते द्विजहैं प्रिय ताते भृगुको चरण रघुनाथजी के उर विषे विराजत जिनके ते कैसे हैं सुर जो देव तिनते वरकही श्रेष्ठ हैं तीनिउ गुणते अरु गो जो इन्द्री तिनते अतीत कही परे हैं तेई परात्पर रूप रघुनाथजी ते भक्त जोहैं मनु आदि तिनके हेतु नर विग्रहमात्र नरका ऐसो रूप धारणकिहे इहां देव जो इन्द्रादिकन ते वर रघुनाथजीको कही तौ सामान्यहै ताते ब्रह्मा शिवसहित चौविस अवतारन विष्णु इत्यादि त्रिदेवनतेवर गुणतेपरे तत्रप्रमाणं सुन्दरीतंत्रे॥जानक्युवाच ॥ महाशम्भुर्महाविष्णुर्महामायाजलेशया ॥ महानहंकृतिर्विश्वंकारणानिचसर्वशः १ गुणत्रयप्रकृत्यैवसूर्येन्दूह्व्यवाहनः ॥ ब्रह्माविष्णुरीशरुद्रश्च वेदवेद्यऋषयस्तथा २ स्थावराजंगमाश्चैवयेचान्येभूतभाविनः ॥ एतेतावत्कलायोगिन् ममरामःस्वयंहरिः ३ वाराहपुराणे ॥ मत्स्यःकूर्मोनरा

होनरहरिरतुलोवामनोजामदग्निः सभ्राताकंसशत्रुःकरुणमयवपु म्लेंच्छविध्वंसनश्च ॥ एतेचान्येऽपिसर्वेतरणिकुलभुवोयस्यजाताःकलांशैस्तंव्यासंब्रह्मरूपंविमलगुणमयंरामचन्द्रंनमामि ४ सामवेदभरद्वाजसंहितायां ॥ अवतारावहवःसंतिकलाश्चांशविभूतयः ॥ रामएवपरब्रह्म सच्चिदानन्दमव्ययम् १ सर्वेषामवताराणामवतारीरघूत्तमः ॥ ब्रह्मसंहितायां ॥ पूर्णःपूर्णावतारश्च श्यामोरामोरघूद्वहः॥अंशान्नृसिंहकृष्णाद्याराघवोभगवान्स्वयम् १।१० उदरपरतीनिरेखा मनकी हरणहारी तिनकेतरेगंभीर नाभी ताके तरेहाटक सोना औ मणिनकरिकै जटित मंजीर जो किंकिणी सो कटितट विषे घटित कही शोभित रटकही शब्दकरिरही है११ उरुजानुजंघाआदि पुष्टअरु कोमल मरकतमणि के खंभा समानहैं पदमूल में नूपुर सुंदर कोमलगान जो मधुरशब्दहोत ताको सुनि मुनिन को मन मोहतहै १२ अरुणकमलवर्ण चरणन में चन्द्रमाकीसी प्रकाश नखनकी द्युतिहै ते कैसें चरणहैं विपुल विशालकही समूह हैं आनन्द जिनमें ते जनकसुताके करपल्लव करिकै सेवितकहे सेवाकी अग्रणीयहैं अभिप्राय कि जो कोऊ भक्तिज्ञान प्राप्त्यर्थ चरणकी सेवाचाहै तौ विना जानकीजी की कृपा प्रभुपदनकी सेवा नहीं वनि सकत तत्प्रमाणमगस्त्यसंहितायांश्रीमुखवाक्यंशिवंप्रति ॥ आह्लादिनीपराशक्तिस्तूयाःसात्वतसम्मताम्॥ तदाराध्यस्तदाराम स्तदाधीनस्तयाविना १ ॥ तिष्ठामिनक्षणंशम्भोजीवनंपरमंमम ॥ पुनःशिववाक्यंजानकींप्रति ॥ यावन्नतेसरसिजद्युतिहारिपादेनस्याद्रतिस्तरुनवांकुरखण्डितासे ॥ तावत्कथंतरुणिमौलिमनेजनानां ज्ञानंदृढम्भवतिभामिनिरामरूपे १३ कमलवज्रध्वजाअंकुश इत्यादि चारिचिह्न चरणन में शुभ कैसे शोभित हैं मानों जननके मन रूप मछरी पकरिबेको बंशी सँवारिकै रचीहै बंशीमें चारिअंगहोत चारा कांटा स्पाटपीठ डोरि तहां ध्वजा मनोरथ दाता सोई चाराहै अंकुश ज्ञानकरि मनको खैंचिलेत सो कांटा है कमल भी जलते विलग राखत सो स्पाटापीठ है वज्रपाप नाशकरिमन

शङ्ककरिदेत सो डारिहै अथवा जन जो चारि प्रकारके भक्त तिन को मनोरथरूप चारादै आपुमें मनको लगाइलेत आरतको सुख चारादै वज्रचिह्न वंशीसम मनको खैंचिलेत जिज्ञासूको परम तत्त्वचारा कमलचिह्न वंशी अर्थी को अर्थचारा ध्वजा वंशी ज्ञानको ज्ञानचारा अंकुशवंशी १४ अंगअंगमें अतुलित शोभाहै सो वर्णत नहीं बनत याहि शोभारूप सुखमें जाको मनमगनहोइ तौ फिरि अनते न लोभाइ १५ भाई और सखनको साथलिहे अवधपति आनन्दते फागुखेलत तासमय अनेकन कामकी शोभा ताको देवता हर्ष सहित फूलवर्षिकै निरखत हैं १६ निशान नगारा पणव ढोल झांझ मृदंगादि तालसहित बाजि रहे हैं तासमयके समान वसंत होरीआदि राग सुधारस सहित सहनाई में गाइरहे हैं १७ वीणा वेणुआदिकनकी मधुर ध्वनि सुनिकै किन्नर गंधर्व जिनके मनमें गानगुणनकी गरूरकोगर्वहै ते गर्वछांड़िमननते अपने गुरुगुणकोहरु कही हलुक मानतेहैं कि ऐसागुण हमारे विषेनहीं है १८ पिकको ऐसो मधुरस्वर है जिनको तेई स्त्री अपनी अपनी अटारिन परते मधुरस्वरते गानकरिरही हैं ते कैसी शोभितहोत मानो हिमाचल गिरिके शिखरपर देवतनकी मृगनयनी स्त्री विराजमान हैं १९ धवलश्वेत रंगके मन्दिरन ते जहां तहां स्त्रीगण समूह निकसती हैं ते कैसी शोभितहोत मानो क्षीरसागर मथत में समूह अप्सरा निकसती हैं व अप्सरै क्षीरसागर मथती हैं श्वेतधाम क्षीरसागर नारी अप्सरा २० ते स्त्री किंसुक कही लालरंग के अंकुश कही समूह निकेत जो मन्दिर तिनको कार कही बनायकै तामें निबाह कही समूह विधु जो चन्द्रमा सो राहकही वास करत है इहां लालघूंघुट दामिनि के निकेतकरि तामें मुखरूप समूह चन्द्रमा बसत २१ चतुरश्रेष्ठस्त्री ते सुरसकही सुन्दरघोरा अबीर केसरिको रंग सो लाख के कुमकुमन में भरत बहाइकै मारिदेहेत अरु अनेकप्रकारकी गारीदेती हैं सो ऋतुके स्वभावते सुन्दर शोभित होत सबको भलीलागत २२ यम नियम आसन

प्रत्याहार ध्यान प्राणायाम धारणा समाधि इत्यष्टांगयोग अश्व-
मेध गोमेध नरमेध वाजपेय इत्यादि यज्ञ सिद्धि साध्य सुसिद्धि
अरिकणी धनी शुभदिशा मुहूर्त कूर्मचक्र शोधि जीवन जनन
ताड़नादि संस्कार करि मंत्रस्पष्टाक्षर प्रतिसहस्र पादलक्ष पुरश्च-
रण भूमिशयन सत्यवचन सूक्ष्मभोजन श्रद्धा विश्वास युत इति
जप रवि सम्मुख अग्नि सेवन जलशयन फलाहार निराहारादि
तप पुष्कर नैमिषारण्य प्रयागादि तीर्थ इत्यादि सुकर्म करि सो
सुखचाहैं तौ दूरि है नहीं मिलि सकत भाव तीर्थादिकनते स्वर्ग
पर्यंत सुखमिलि सकत अरु यह सुख प्रेमापराभक्ति करि प्रभुके
नामरूप लीलाधाम में अनुराग करि आसक्त निशिदिन वासना
रहित प्रभुके चरणकमलमें प्रीति सो सुख विना प्रभुकी कृपानहीं
मिलिसकत अरु रघुनाथजी की कृपा करिके सोई सुख अयोध्या
जी की गलिन में भरिपूरि रह्यो है भाव जोई अवध गलिनमें जाइ
सोई सुखमें मग्न होइजाइ २३ वसंत खेलते रघुनाथजी सरयू
जलमें स्नान करतेभये तासमय याचकजन विविधप्रकार के भू-
षण वस्त्र निछावरि पाये २४ याचकनपर अनुकूल प्रभुको जानि
ता अवसर में तुलसीदास अनूप भक्तिमांगि भाव कलिकाल में
मेरी भक्ति निर्विघ्ननिर्वाह होइ सो सुनि रघुकुलके भूप श्रीरघुना-
थजी मधुर मुसक्याइ कृपादृष्टिते सो अनूपभक्ति देतेभये प्रभुकेमु-
सक्यायवेका यह हेतु कि जगमें कुटिल जीवनको उद्धारकी कांक्षा
ताते परस्वार्थी है याही हेतु अनूप भक्तिहै भावकलिकालके कुटि-
लजीवन को उद्धार करनहारी ताते अनूप प्रमाणंभक्तमाले ॥
कलिकुटिल जीवनिस्तारहित बाल्मीकि तुलसीभये २५ ॥

मू० । रागवसन्त ॥ खेलतबसन्तराजाधिराज ॥ नभ
कौतुकदेखतसुरसमाज १ सोहैंसखाअनुजरघुनाथसाथ ॥
झोरिनअबीरपिचकारिहाथ २ बाजैंमृदंगडफतालवेणु ॥
छिरकैंसुगन्धभरैंमलयरेणु ३ उतयुवतियूथजानकीसंग ॥

पहिरे पट भूषण सरस रंग ४ लिहे छड़ी बेंत सों धैं विभाग ॥ चाचरि गुमक गावैं सरस राग ५ नूपुर किंकिणि धुनि अति सुहाइ ॥ ललनागण जब जेहिं धरहिं धाइ ६ लोचन अँजाय फगुवा मँगाइ ॥ छाँड़हिं नाचहिं हाहा कराइ ७ चढ़ि खरनि विदूषक स्वाँग साजि ॥ करैं कूटनि पट गइ लाज भाजि ८ नरनारि परस्पर गारि देत ॥ सुनि हँसत राम भाइन समेत ९ वरषत प्रसून वर विबुध वृंद ॥ जय जय दिनकर कुल कुमुद चंद १० ब्रह्मादि प्रशंसत अवध वास ॥ गावत कल कीरति तुलसिदास ११

टी० राजन के राजा महाराजाधिराज श्रीकोशलेन्द्र कुमार दिव्य परिकर युत सरयूतट अवधपुरमें आनन्द ते वसंत खेलते हैं अपूर्व लीलाको कौतुक आकाशमें विमानारूढ़ देवतनकी समाज आनन्द ते देखत हैं १ भरतादि अनुज अरु अपर सखा ते किरीट कुण्डल आदि भूषण विविध प्रकार जरी आदिके वस्त्र धारण किहे किशोर अवस्था के समूह झोरिनमें अबीर कनकमणिन जटित करकमलन में लिहे हर्ष सहित रघुनाथजीके साथमें हैं २ ते केवड़ा गुलाबादि सुगन्धित जलमें केसरि आदि रंग घोरि पिचकारिन ते सखिनपर छिरकत मलय चन्दन कपूर आदि धूरि अबीर गुलालादि ते भरे कहीं मुखपै सखिनके झोंकि देत ताही आनन्द में मृदङ्ग डफ वेणु आदि बाजा ताल सहित बाजि रहे हैं ३ अब जानकीजी की शोभा कहत सरस रंग कही रसके भरे से भूषण अंग अंग में सजे रंग रंग के चीर धारण गजगति रूप योवनकी गरबीली मधुर स्वर वचन रसीली गुणकी गहेली ऐसी युवती अलबेली सखी यूथ समूह सो संगमें लिहे कोटिन रति वारी तनत तड़ित छटा धारी हरि दृग चकोर शरद पूर्ण चन्द्र वदनवारी जगदुत्पत्ति स्थिति लयकारी युग कुल उजियारी परम सुकुमारी श्रीमिथिलेन्द्र किशोरी ऐसी श्रीजानकीजी सहित आनन्द ते फाग खेलबे हेतु गतकही दूसरी दिशि विराजत हैं ४ सो धैं कही सुगंध केसरि मृगमद

कपूर चन्दन आदिके अरगजा ताके विभागकही बिलग बिलग अरु फूलनकी गुही बेंतकीछड़ी इत्यादि सखी कोमल कर कमलन में लिहे चाचरि झुमका आदि रसीलेराग मधुरस्वरते गाइरही हैं ५ ते सखी बरबस सखनके पकरिबे हेतु औचक चपलासी चमकि झमकि चाल शीघ्रपद परिवेत नूपुर किंकिणी के शब्दन की धुनि छमछम कामबाणकीसी प्रहारहोत सो अत्यन्त सोहावनी लागत ते गुणरूप गरबीले लोने लोने छैलछबीले कुँवर मृदुगात के मधुर सखाहैं तिनके जवजत्र जिनाजिन राजकुमारनको ललना कही सखीगण धाइकै पकरिलेती हैं ६ ते राजकुमारनके नेत्रनमें अंजन लगाइ टिकुली सेंदुर बिछियादि स्त्रिनके भूषण वस्त्र पहिराय युवतीवनाय जनकनन्दनी के सन्मुख नृत्यकराइ फगुवा मँगाइ हाहाकही चिरौरी कराइ तबसखी छांड़ती हैं ७ निपट करिकै लाज भागगईहै जिनकी ऐसे निरलज्ज ते विदूषक जे भांड़ तिनको ऐसो स्वांग साजिखर जो गदहा तिनपर सवारहै विविध भांतिकी कूटकरतहैं ८ परस्पर स्त्रीपुरुष गारीदेत तिनको सुनि भाइन सहित रघुनाथजी हँसतहैं या औसरकी गारी प्रमाणं होलिकामाहात्म्ये ॥ निर्लज्जपुंसस्त्रीचैवमासमात्रंतुलीलया ॥ कामगीतंतु नतस्या भगनामसहस्रकम् ९ दिनकर सूर्य्य तिनके कुलरूप कुमुदिनीकेप्रकाशक पूर्णचन्द्र श्रीरघुनाथजी तिनकी जयजयकारकरि श्रेष्ठ देवतनके वृन्द आनन्दते फूलनकी वृष्टिकरतहैं १० श्रीअवध के वासकी प्रशंसा ब्रह्माआदि देवता करतहैं माधुरी के अनुरागी याचक तिनको सुन्दर लीलारूप आनन्द के दानि रघुनाथजी की सुन्दरकीरति तुलसीदास गावत हैं ११ ॥

मू० । रागकेदार ॥ देखतअवधकोआनन्द ॥ हरषवरषतसुमनदिनदिनदेवतनकोवृन्द १ नगररचनासिखिनकोविधितकतबहुविधिवृन्द ॥ निपटलागतअगमज्यौं जलचरहिगमनस्वछन्द २ मुदितपुरलोगनसराहतनिर

खिसुखमाकन्द ॥ जिनकेसुअलिचखपियतराममुखारवि न्दमकरन्द ३ मध्यव्योमविलम्बचलतादिनेशउडुगणच न्द ॥ रामपुरीविलोकितुलसीमिटतसबदुखद्वन्द ४ ॥

टी०। देवतनकेवृन्द श्रीअवधको आनन्ददेखि प्रतिदिन आनन्द फूलनकी वृष्टिकरत हैं १ श्रीअवधनगर की दिव्य विचित्र रचना सीखबेहेत विधाता नगरको बहुत प्रकारते वृन्दवृन्द देखतहैं सो पुरकी रचना अगम लागत यथा जलचरको स्वच्छन्द अपनी इच्छाते गमनअगमहै भाव जलकी आश्रय चलिसकत तथा ब्रह्मा मायाकृत रचनाके अधिकारी तिनको अवधकी दिव्यरचना अगम लागतहै २ सुखमाकन्द श्रीरघुनाथजी मुखकमल को मकरन्द जो छविरूपीरस ताको जिन पुरवासिन के चख जो नेत्र ते अलि कही भ्रमरहै पानकरत ताते धन्यहैं ३ सूर्यचन्द्रमा नक्षत्रादि या पुरशोभा देखबे हेतु आकाशके मध्यमें विलम्ब करिकै चलत गोसाईं जी कहत कि ऐसी श्रीरघुनाथजी की पुरीहै जाके विलोके ते द्वन्द जो राग द्वेष ताकरिकै जो दुःख सो सब मिटिजात है ४ ॥

मू०। रागसोरठ ॥ पालतराजयह्योंराजरामधरमधुरी न ॥ सावधानसुजानएकरसरहतनयलयलीन १ श्वान खगयतिन्यावदेख्योआपुबैठिप्रवीन ॥ नीचहीनिमहिदे वबालककियोमीचुविहीन २ भरतज्योंअनुकूलजगनिरु पाधिनेहनवीन ॥ सकलचाहतरामहीज्योंजलअगाधहिमी न ३ गाइराजसमाजयाचतदासतुलसीदीन ॥ लेहुप्रेमज करिदेहुनिजपदप्रेमपावनपीन ४ ॥

टी०। सत्य शौच तप दान आदिजे धर्मकी धुरी हैं ताके धारणहार अरु सारासार वस्तु जानबे में सुजान सावधान हर्ष शोक रहित एकरस सदा प्रसन्नचित्त जिनको ऐसे राजा श्रीरघुनाथजी नय जो राजनीति तामें लयसहित लीनरहत भाव हर्ष सहित

नीतिपै आरूढ़ हैं ते राजाको यों कही था प्रकार पालत सो आगे लिखत १ नीति प्रवीण जो रघुनाथजी सो श्वान औ यतीको अरु खग उलूक औ गीधको न्याय आपु बैठिकै देख्यो भाव उचित निर्बाह कीन्हो श्वान मार्गमें बैठादेखि ब्राह्मणने लातमारी ताकी फिरिआदि रघुनाथजीते श्वानने करा तब प्रभु श्वानते पूंछ्यो कि जो विप्र तुम्हारे लातमारी है ताको कौनदण्डदेई श्वानबोल्यो कि याको यतीवनाय हाथीपर चढ़ाय नगर घुमाय शिवमन्दिर को अधिकारी करि दीजिये यहसुनि प्रभु ऐसही करि श्वानसे पूंछ्यो कि यामें विप्रको कौन दण्डभयो श्वानकह्यो पूर्वको मैं विप्रहौं एक बार शिवकी धान्यखाइ श्वानभयों यह जन्मभरि शिव धान्यखाइकै कौनदशाको प्राप्त होइगो यह चरित्र रामाश्वमेध में प्रसिद्ध है खगको न्याय एक गृध्रने उलूकको गृह बरबस छीनिलियो ताही हेतु दोऊ प्रभु समीप आये प्रभु पूंछ्यो पूर्व काको गृहआइ गृध्रने कह्यो मेरो गृहहै उलूकने कह्यो मेरो गृहहै तब प्रभु सचिवन को बोलाइ निर्वाहकराइ सो गृह उलूकको देवाइ ता गृध्रते प्रभु पूंछ्यो कि तैं कोहै जो हमारी राज्यमें ऐसी अनीतिकरी दण्डदेवेयोग्य ताने कहो कि मैं पूर्व जन्मको राजाहौं ऋषिकी शापकरि गृध्रभयों सो आपुके दर्शनते उद्धारभयों यह चरित्र पद्मपुराण सृष्टिखण्ड के सैंतिस अध्यायमें है प्रसिद्ध प्रमाणार्थ कुछ थोड़ा लिखतहौं ॥

गृध्रोलूकौप्रवसितौवहुवर्षगणानपि । अथोलूकस्यभवनं गृध्रःपापविनिश्चयः १ ममेदमितिकृत्वासौकलहंतेनकारयेत् । राजासर्वस्य लोकस्यरामोराजीवलोचनः २ तंप्रपद्यावहेशीघ्रंयस्यैतद्भवनंभवेत् । गृध्रोलूकौप्रपद्येतांजातकोपावमर्षणौ ३ अथदृष्ट्वारावदेन्द्रं गृध्रोवचनमब्रवीत् । सुराणामसुराणांच त्वम्प्रधानोमतोमम ४ मयालयंपूर्वकृतंवाहुवीर्येणवैप्रभो । उलूकोगृह्णतेराजंस्त्वत्समीपे विशेषतः ५ ईदृशोयन्दुराचारस्त्वदाज्ञालंघकोनृप । प्राणान्तकेन दण्डेनइसंशासितुमर्हसि ६ एवमुक्तस्तुगृध्रेणउलूकोवाक्यमब्रवीत् । शृणुदेवममज्ञाप्यमेकाचित्तोनराधिप ७ भवान्देवमनुष्येषु शा

स्तावैनरपुंगवः । एतच्छ्रुत्वाचवैरामः सचिवानाह्वयस्स्वयम्
गृध्रोलूकौविवदन्तौपृच्छातिसमरघूत्तमः । कतिवर्षाणिभोगृध्रतवे
दंनिलयंकृतम् ९ इयंवसुमतीरामसमनुष्यैबहुबाहुभिः । उच्छ्रिते
रचितायारातदाप्रभृतिमद्गृहम् १० उलूकस्त्वब्रवीद्रामंपादपैरु
पशोभिता । यदेवंपृथ्वीराजंस्तदाप्रभृतिमद्गृहम् ११ एतच्छ्रुत्वा
तुसचिवारामसेवाब्रुवंस्तदा ॥ उलूकःशोभतेराजन्नतुगृध्रोसहाम
ते १२ नीच एक शूद्र तपस्या करत रहै तेहि अनीति ते एक ब्रा-
ह्मण को बालक मरिगयो सो विप्र प्रभुसमीप आरतते कह्यो कि
आपके राज्य विषे अकालमृत्यु मेरो बालक मरिगयो यह कैसी
बातहै सो प्रभु सुनि मुनीशनते पूंछ्यो यहिका क्या कारण है तब
नारदजी कह्यो एक शूद्र तपस्या करत ताते विप्र बालक मरिगयो
सो सुनि प्रभु विमानपर सवारह्वै जहां शूद्र तपस्या करतरहो तहां
गये ताते पूंछ्यो कि तुम कौनहै तब वाने कह्यो मैं शूद्रहौं ताही
क्षण प्रभु वाको शीश काटिडारे तब बालक जीआयो यह चरित
पद्मपुराण में सृष्टिखण्ड के पैंतिस अध्याय में प्रसिद्ध है प्रमाणार्थ
कछु लिखेदेतहौं । एतस्मिन्नेवदिवसेवृद्धोजानपदद्विजः । मृतं
पुत्रमुपादायरामद्वारमुपागतः १ शुश्रावराघवःसर्वंदुःखशोकसम
न्वितम् । निवार्यतंद्विजंरामोवशिष्ठंवाक्यमब्रवीत् २ शूद्रस्तपति
दुर्बुद्धिस्तेनबालवधःकृतः । नारदेनैवमुक्तेतुसाश्चर्योरघुनन्दनः ३
ततोदिशंसमाक्रम्यदक्षिणांरघुनन्दनः । ददर्शराघवोभीमंलम्बमान
मधोमुखम् ४ उवाचराघवोवाक्यंधन्यस्त्वममरःप्रभुः । कस्यांयो
नौतपोवृद्धिर्वर्ततेदृढनिश्चयः ५ शूद्रंमांविद्धिकाकुत्स्थशम्बुकोना
मनामतः । भाषतस्तस्यकाकुत्स्थोखड्गन्तुरुचिरप्रभम् ६ निःकृ
ष्यकोशाद्विमलंशिरश्चिच्छेदराघवः । कर्मणायदिमेप्रीतोद्विजपुत्रः
सजीवतु ७ जिन माता पिताकी दई राज्य तिरस्कार कीन्हों ऐसे
भरतजी यथा अनुकूल प्रभुको सम्मुखहैं तथा उपाधिरहित नवी-
न नेह सहित सब जगत् प्रभुके अनुकूल ह्वै सब रघुनाथहीजी को
सुख सम्पत्ति वृद्धि चाहत जैसे जलकी अगाधता मीन चाहत २

ऐसो राज समाजको गानकरि तुलसीदास दीन है शरण चाहत ताको अपनो करि निजपदन में पवित्र प्रेम पुष्ट करि देहु ४ ॥

मू० । संकटसुकृतको शोचतजानिजियरघुराउ ॥ सह स्त्रद्वादशपंचशतमैंकछुकहैअबआउ १ भोगपुनिपितुआयुकोसोकियेबनैबनाउ ॥ परिहरेबिनजानकीनहिंऔरअनघउपाउ २ पालिबेअसिधारव्रतप्रियप्रेमपालसुभाउ ॥ होइहितकेहिभांतिनितसुविचारिनहिंचितचाउ ३ निपटअसमंजसहुविलसतसुखमनोहरताउ ॥ परमधीरधुरीणहृदयकिहर्षविस्मयकाउ ४ अनुजसेवकसचिवहैंसबसुमतिसाधुसखाउ ॥ जानकोउनजानकीबिनअगमअलखलखाउ ५ रामजोगवतसीयमनप्रियमनहिंप्राणप्रियाउ ॥ परमपावनप्रेमपरमितसमुझितुलसीगाउ ६ ॥

टी० सुकृतको संकट जियमें जानि शोच करत हैं बाराहजार पांचसै वर्ष में आयु जो आयुर्बल कछुक अबहै १ पिताकी आयुको भोग कछु शेषहै सो किहेते बनाउ बनत है त्याग विना और उपाय पापरहित नहीं है २ प्रेमपाल स्वभाव कैसे त्यागत बनै और व्रतको पालिबो असि कृपाण की धार सम है तो दोऊओर की हित कौन भांतिते होइ सो विचार नहीं बनत ताते चित्त में आनन्द नहीं ३ परम धीरज की धुरी के धारण करनहार हृदय में जिनके हर्ष विस्मय कबहूं नहीं मनोहर सुखसदा है ताहूपर असमंजसको विलास करतहैं निपटकै ४ अनुज भरतादि सेवक हनूमानादि सचिव सुमन्त्रादि अपरसखा ते सब सुन्दर बुद्धि के साधुहैं पर प्रभुको आगम लखत लखाउ चरित्र ताको दूसरा नहीं जानि सकत ५ परस्पर सम प्रीति के पवित्र परम प्रेम की मर्यादा समुझि तुलसी गावत है भाव परस्पर प्रीतिकरि प्रेम तो अगम है पर यह नरनाट्य लीलाहै ताको कौन जाननहारहै ६ ॥

मू० । रामविचारिराखी ठीकदैमनमाहिं ॥ लोकवेद सनेहपालतपलक्षपालहिंजाहिं १ प्रियतमापतिदेवताजे हिंउमारमासिहाहिं ॥ गुर्विणीसुकुमारिसियतियमनसमु झिसकुचाहिं २ मेरहीसुखसुखीसुखअपनोसोसपनेहुना हिं ॥ गेहिनीगुनगेहनीगुनसुमिरिशोचसमाहिं ३ राम सियासनेहवरणतअगमसुकविसकाहिं ॥ रामसीयरहस्य तुलसीकहतरामकृपाहिं ४ ॥

टी० । पूर्व पदकी आशय विचारिकै ठीककरि मनमें राखी लोक वेद दोऊ सनेह पालत में पल पल वीतत है १ प्रियतमा अत्यन्त प्रियत्व है जिनमें पतिदेवता पतिव्रता जिनको देखि उमा रमा सिहातहैं पतिव्रता तियनकी शिरोमणि ते सुकुमारी तापै गुर्विणी समुझि सकोच करतहैं २ अपनो सुखत्यागि हमारे सुख में सुखी ऐसी गेहिनी गुणनकी गेहनी ताको गुण समुझि सकोच में समात हैं ३ परस्पर स्नेह आगम को वरणत में सुकवि सकात हैं यह अगम रहस्य ताको तुलसी रामकृपाते कहत है ४ ॥

मू० । चरचाचरणिसोचरचीजानमणिरघुराइ ॥ दूत मुखसुनिलोकधुनिघरघरनिबूझीआय १ प्रियानिजअ भिलाषरुचिकहँकहतसियसकुचाइ ॥ सीयतनयसमेतता पसपूजिहौंवनजाइ २ जानिकरुणासिन्धुभावीविवशसक लसहाइ ॥ धीरधरिरघुवीरभारहिंलियेलषणबोलाइ ३ ता ततुरतहिंसाजिस्यन्दनसीयलैहुचढाइ ॥ वालमीकिमुनी शआश्रमआइथोपहुंचाइ ४ भलहिंनाथसुहाथमाथेराखि रामरजाइ ॥ चलेतुलसीपालिसेवकधर्मअवधिअघाइ ५ ॥

टी० । जानमणि सुजाननके शिरोमणि चर दूतनते चर्चा नगर की चरचि जानिराखी रजकसमाजादि दूतनके मुखते सुनि लोक

की धुनि आशय मनमें राखि घरमें घरनिते बूझतभये १ अपने मनकी रुचिकी अभिलाष कहो सकोच सहित कह्यो कि वनमें तपसिनको सपुत्रदारा पूजिबेकी लालसाहै २ ऐसेही होनहार ताते भावी सहाय भई धीरज धरि प्रभातही बोलावत भये ३ शीघ्र रथसाजि गंगातट ब्रह्मावर्त घाटपै ४ वहुत भली कही रजाय माथे राखि सेवक धर्मकी मर्यादा अघायके पाले यहिते अधिक और का होइसकत ५ ॥

मू० । आयेलषणलैसौंपिसियमुनीशहिंआनि ॥ नाइ शिररहेपाइआशिषजोरिपंकजपानि १ बाल्मीकिवि लोकिव्याकुललषणगरतगलानि ॥ सर्वविदबूझतनवि धिकीवामतापहिचानि २ जानिजियअनुमानहींसियस हसविधिसनमानि ॥ रामसद्गुणधामपरमितभईकछुक मलानि ३ दीनबन्धुदयालदेवरुदेखिअतिअकुलानि ॥ कहतवचनउदारतुलसीदासत्रिभुवनरानि ४ ॥

टी० । मुनीशहिं बाल्मीकिहिं माथनाइ आशीर्वाद पाइ करकमलजोरि ठाढ़ेभये १ ग्लानिते विह्वल सर्वविद सब जाननहार विधाताकी टेढ़ाई समुझि पूँछि नाहीं सकत २ अनुमानहीते सब जीमें जानि अनेकभांति आदरकीन्हो सद सुंदर गुणनकेधामके परमित कहे मर्यादाहैं तिन यह का बात कीन ऐसी मुनिकी मति मलान भई ३ दीननके बंधु दयाकेस्थान समीपते जात देखि त्रिभुवन पतिको यह प्रसंगको कौन कठोर हृदयहै जो खुलासा अर्थकरै ४॥

मू० । तौलौंबलिआपुहीकीबीविनयसमुझिसुधारि ॥ जौलौंहौंसिखिलेउँवनऋषिरीतिबसिदिनचारि १ तापसी कहिकहापठवतनृपतिकोमनुहारि ॥ बहुरित्यहिविधिआ इकहिहैंसाधुकोउहितकारि २ लषणलालकृपालनिपटहिं डारिबीननिसारि ॥ पालबीसबतापसिनज्योंराजधरमविचारि

चारि ३ सुनतसीतावचनमोचतसकललोचनवारि ॥ बालमीकिनसकेतुलसीसोसनेहसँभारि ४ ॥

टी०। शीघ्रगमन निवारणार्थ नम्रवचन कहत जौलौं हौं चारि दिन वनबासि ऋषिनकी रीति सीखिलेउँ तौलौं आपुहू रहिये कदाचित् स्वामी भय ता हेतु कहत कि आपुही विनयकीबो समुझिके सुधारिलेब १ काहेते नृपतिको मनहरणहारी ताको तपसी कहि तापसी बनाय कहा पठवतहौ तेहि विधिपूर्वक पतियुतवामाङ्गी आदिनाम फेरि कोऊ साधु हितकारी करैगो २ कृपालु निपटकै न बिसारि डारियो तनुसम्बन्ध मानिये तो राजधर्म विचारि यथा सब तापसी तथा मानिये ३ ऐसे सुनि सबके नेत्रनते आँसु पतित होत औरकीको कहै सो स्नेह वाल्मीकि न सँभारिसके ४ ॥

मू०। सुनिव्याकुलभयेउतरुकह्यौनजाइ ॥ जानिजियविधिवामदीन्हींमोहिंसरुखसजाइ १ कहतहियमेरीकठिनईलखिगईप्रीतिलजाइ ॥ आजुअवसरऐसेहूंचलेजानप्राणबजाइ २ इतहिंसीयसनेहसंकटउतहिंरामरजाइ ॥ मौनहीगहिचरणगमनेशिषसुआशिषपाइ ३ प्रेमनिधिपितुकोकहौमैंपरुषवचनअघाइ ॥ पापतेहिंपरितापतुलसीउचितसहेसिराइ ४ ॥

टी०। व्याकुलता ते जवाब न आयो जी में ऐसा विचारे कि वामविधाता सरोष है मोको सजाइ दीन्हीं १ हमारे हृदय की कठोरता देखि प्रीति लजाइगई काहे ते जो ऐसेहू अवसरमें प्राण बजाइ न चले हृदय विदीर्ण न भयो २ इत स्नेह उतरजाय दोऊ के सङ्कटमें परि मौनही चरणगहि सिखापन आशीष पाइ गवनतभये ३ प्रेमके समुद्र पिताको मैं कठोर वचन अघाइकै कहे त्यहि पापको परिताप दुख सहे ते चूकिहै ४ ।

मू० । गौनेभौनहीबारहिंबारपरिपरिपाँय ॥ जातज नुरथरचीकरलक्ष्मणगमनपछिताय १ अशनबिनुवन बरमबिनुरणबच्योंकठिनकुघाय ॥ दुसहसांसतिसहन कोहनुमानज्यायोजाय २ हेतुहौंसियहरणकोतबअ जहुंभयोसहाय ॥ होतहठिमोहिंदाहिनोदिनदइवदारु णदाय ३ तजोतनसंग्रामज्यहिलगिगीधयशीजटाय ॥ ताहिहौंपहुंचाइकाननचल्योंअवधसुभाय ४ घोरहृदय कठोरकरतबसृज्योंहौंविधिवाय ॥ दासतुलसीजानिरा ख्योकृपानिधिरघुराय ५ ॥

टी० । वारवार पायँनपरि मौनहींगौने यहि अयशको भाजन हमभये यह पश्चात्ताप में बूड़े रथपै कैसे देखिपरत यथा कर रची प्रतिमा १ भोजनबिन वनमें बच्यों बखतर बिन रणमें बच्यों क- ठिन कुघाउ शक्तिलागे पर हनुमान् सजीवनलाइ जियाये याते मेरो जीबो ऐसो सांसति सहिवे हेतुहैं २ प्रथम रावणके हरिबे को हेतु महींहौं प्रभु सौंपिगये मैं छाँड़ि चलागयों यह हेतु ताही अवसरको कुटिलकर्म हमारो अबहूं सहायभयो ताते यहि अयश को भाजनभये हमारो दाहिनो दिन जो होत ताहूमें दारुण दैव हठिकरिकै दायकही बावोंह्वैजात भाव प्रभुकी आज्ञाकरना दाहि- नो दिनमें दैव हठिकै वामह्वै ऐसे अयशनको पात्र बनायो ३ जाके हेतु संग्राममें तनतजि गीध जटायु यशीभयो ताको वनमें पठै मैं सहजही अवधको चल्यों ४ वाम विधाताने कठोर कर्त्तव करिवे हेतु घोरहृदय मोको सिरज्यो है सोई कृपानिधि जानि राख्यो ताते ऐसेकाज करिबेको मोको आज्ञादेते हैं ५ ॥

मू० । पुत्रीनशोचियेआइहौंजनकगृहजियजानि ॥ कालिहीकल्याणकौतुककुशलतुवकल्यानि १ राजऋ षिपितुससुरप्रभुपतितूसुमंगलखानि ॥ ऐसेहूथलवामता

बड़िवामविधिकीवानि २ बोलिसुनिकन्यासिखाईप्रीति गतिपहिंचानि ॥ आलसिनकीदेवसरिसियसेइयोसनमानि ३ न्हाइप्रातहिंपूजियोवटविटपअभिमतदानि ॥ सुवनलाहुउछाहुदिनदिनदेवअनहितहानि ४ पापतापविमोचनोकहिकथासरसपुरानि ॥ बालमीकिप्रबोधितुलसीगईगरुवगलानि ५ ॥

टी०। हे पुत्री यथा पिताके गृह आईहौ ऐसा जानि शोच न करिये हे कल्याण रूपा तव कुशल और कल्याणको कौतुक कालिही कहे शीघ्रहै १ तव पिता औ ससुर राजऋषि हैं प्रभुपति हैं तू सुन्दर मंगलकी खानि है ऐसेहु स्थानपर वामता ताते विधि की वानि रहनि वामकहे बड़ीटेढ़ी है २ कन्यामानि प्रीतिकी गति पहिचानि बोलाइ समीप सुनि सिखावन दीन कि आलसिन की गति देनहारी देवता गंगाजी तिनको सन्मान सहित सेवन करहु याहीमें तुम्हारो सब हितहै ३ प्रातही स्नानकरि वाञ्छित दाता वट विटपको पूजियो ताते अनहित की हानिहोइ अरु पुत्रनको लाभहोइ तिनको उत्साह प्रति दिन भाव त्रैलोक्य विजयी ह्वै पिताकी राज्य करेंगे इत्यादि दिनप्रति उछाह होइ ४ पुरानिप्रथमहीं ऋषीश्वरनकी भाषी रसकीभरी वात्सल्य रसकी भरी पुत्र सुखादि ताते तापको छोड़ावनहारी कथाकहि वाल्मीकि प्रबोध करे ताको सुनि कि पुत्र राजधानी की राज्य करिहैं याहीते उर प्रबोध पाय त्यागकी गरुग्लानि जातीरही ५ ॥

मू०। जबतेजानकीरहीरुचिरआश्रमआइ ॥ गगनजलथलविमलतबतेसकलसुमंगलदाइ १ निरसभूरुहसरसफूलतफलतअतिअधिकाइ ॥ कंदमूलअनेकअंकुरस्वादसुधालजाइ २ मलयमरुतमरालमधुकरमोरपिकसमु

दाइ ॥ मुदितमनमृगविहंगविहरतविषमवैरविहाइ ३
रहतरविअनुकूलदिनशशिरजनिसजनिसुहाइ ॥ सीयसु
निसादरसराहतसखिनभलीमनाइ ४ मोदविपिनविनोद
चितवतलेतचितहिचोराइ ॥ रामबिनुसियसुखदवनतुल
सीकहैकिमिगाइ ५ ॥

टी० । जबते सुन्दर आश्रममें आनि वासकीन्हीं तबते जल भूमि आकाशादि निर्मलहै सकल मंगलके दाता भये १ भूरुह वृक्षरससों रससहितभये अपरवृक्ष अत्यन्त अधिकायकै फूलत फलतभये कंदमूल अंकुरआदि ऐसे स्वादकेहैं जाके आगे अमृत लजातहै २ मलयगिरि परसि सुगंधित दक्षिण पवन बहिरही है हंस भ्रमर मयूर कोयलादि पक्षी अरु मृगा ते विषम वैरछांडि आनन्दमनते विहार करिरहेहैं परस्पर ३ दिनमें रवि सुखदायक रजनी में विमल आकाश तामें विविधनक्षत्रयुत श्वेत चांदनी फैलाये खिलरही है इति सजनी चन्द्रमाकी रजनी में सुहाई लागत भई इत्यादि आनन्द सखिनते सुनि तिनको भलोमनाइ आदरसहित प्रशंसा करती हैं ४ मोददायक वनमें विनोद तौ ऐसाहै जो चितवतही चित्तको चोराइ लेत ताहूपर वन सुखदायक कवि कैसे कहिसकै यथा ज्वरमें षट्रस स्वाद तथा ५ ॥

मू० । शुभदिनशुभघरीनीकोनखतलगतसुहाइ ॥
पूतजायेजानकीद्वैमुनिवधूउठिगाइ १ हर्षिवर्षतसुमनसुर
गहगहेवधायबजाइ ॥ भुवनकाननआश्रमनिरहेमोदमं
गलछाइ २ तेहिनिशातहँशत्रुसूदनरहेविधिवशआइ ॥
मांगिमुनिसोंबिदागवनेभोरहीसुखपाइ ३ मातुमौसीबहि
निहूतेसासुतेअधिकाइ ॥ करहिंतापसतीयतनयासीय
हितचितलाइ ४ कियोविधिव्यवहारमुनिवरविप्रवृन्दबो

लाइ ॥ कहतसबऋषिकृपाकोफलभयोआजुअघाइ ५ सरुखऋषिसुखसुतनकोसियसुखदसकलसोहाइ ॥ शूल रामसनेहकोतुलसीनजियतेजाइ ६ ॥

टी० । सुदिन शुभघरी उत्तमनक्षत्र शुद्धलग्न में द्वैपुत्र जाये तासमय आनन्दते मुनिवधू गान करनलागीं १ गहगहे उत्सवभरे बधाये बजाय देवता हर्षित फूल वर्षत हैं इत्यादि भुवनमें औ वन आश्रममें मोद मंगल छाइरहाहै २ लवणासुर वध हेत जात मग में तारात्री तहां निवासपरो याते विधि वश भोरहीं मुनिते बिदामांगि चलेगये ३ माता मौसी बहिनि सासु ते अधिकी तापसनकी स्त्री कन्या चितलाइकै हित करतीहैं ४ ब्राह्मणनके वृन्द बोलाइ विधि व्यवहार जातकर्म्मादि मुनि करतेभये तासमय सब कहत हैं कि ऋषिकी कृपाको फल आजु अघाइकै भयो ५ एक तो ऋषि हित सहित अनुकूल दूसरे पुत्रनको सुखइत्यादि सब सुखद परिसनेहको शूल हृदयते नहीं जातहै ६ ॥

मू० । मुनिवरकरिछठीकीन्ही बारहेकीरीति ॥ वन वसनपहिरायतापस तोषिपोषेप्रीति १ नामकरणसुअन्नप्राशनवेदबांधीनीति ॥ समयसबऋषिराजकरतसमाजसाजिसमीति २ बाललालनकहतकरिहैं राजसबजगजीति ॥ रामसियसुतगुरुअनुग्रहउचितअचलप्रतीति ३ निरखिबालविनोदतुलसीजातवासरबीति ॥ पियचरित सियचितचितेरोलिखतनितहितभीति ४ ॥

टी० । मुनिवर छठीकारि पुनि रीतिसहित बरहा कीन्हों तहां भोजनकराइ वनवसन पहिराइ तापसनको तोषिपोषे खुशी कै संतोषे १ वेदकी बांधीनीति दशकर्म वा षोडश संस्कार तिनमें नामकरण अन्नप्राशन आदि समय पाइकै समीत कहे सहित मित्रन समाजसाजि ऋषिराउ सब उत्सव करतहैं २ बालकनको

दुलरावत में कहत कि सब जगजीति राज्यकरि हैं ऐसे मुनि के वचन सुनि सब विचारत कि ऐसे माता पिताके पुत्र ताहूपै गुरु की अत्यन्त कृपा ताते जगजीति राज्यकरिबो उचित है यह अचल प्रतीति सबके मनमें है ३ बालकनको विनोद देखेते दिन व्यतीत होत रात्री में हित प्रीति भीतिपर जीवनको चरित्र नित चित चितेरो ह्वै लिखत रात्री शेष ४ ॥

मू० । बालकसियकेविहरतमुदितमनदोउभाइ॥ नाम लवकुशरामसियअनुहरतसुन्दरताइ १ देतमुनिमुनिशिशुखिलौनालेतधरतदुराइ॥ खेलखेलतनृपशिशुनकेबालवृन्दबोलाइ २ भूपभूषणवसनवाहनराजसाजसजाइ॥ वर्मचर्मकृपाणधनुशरतूणलेतबनाइ ३ दुखीसियपतिविरहतुलसीसुखीसुतसुखपाइ ॥ आँचपैउफनातसींचतसलिलज्योंसकुचाइ ४ ॥

टी० । बालक दोऊभाई वनमें आनन्दते विहरत कहीं खेलत हैं माता पिताके अनुहारि सुन्दरता है जिनकी १ मुनिबालकन के खेलौना मुनिदेत तिनको चोराइधरत बालकनके वृन्द बोलाइ राजकुमारन के खेल खेलत सो आगे लिखत २ भूषण मुकुटादि वसन जामा आदि वाहन हाथी घोड़ा रथ राजसाज चोपदार नकीव डंका निशान सवार पैदर महीमरातिबआदि साजि सजि वक्तरपहिरि ढाल तरवारि बाण धनुष तरकसआदि बनाइलेत इति राजकुमारन के खेल ३ विरहते दुःखी सन्तनको देखि सुख विरह अग्निकरि दूधपै दूधमा उफनात पुत्र सकोच जल तासों सींचत४ ॥

मू० । कैकयीजौलोंजियतरही ॥ तौलोंबातमातसों मुंहभरि भरतनभूलिकही १ मानीरामअधिककजननीतेजननिहुगहनिगही ॥ सीयलषणरिपुदवनरामरुखलखिसब कीनिबही २ लोकवेदमर्य्याददोषगुण गतिचितचखन

चही। तुलसीभरतसमुझिसुनिराखीरामसनेहसही ३ ॥

टी०। जबतक केकयी जीवतरही तौ मातुसों मुंहभरि हित सहित बात भरतजी भूलिहूके नहीं कहे १ रघुनाथजी केकयी को कौशल्याजीते अधिक माना कौशल्याजी गँवगांठ दुभांवकी नहीं गही सिया लषण रिपुदवनआदि ते रघुनाथजी को रुखदेख सब केकयी प्रीति प्रतीतिको निर्वाहकर्यो २ वेदोक्त महात्मनके मुख ते सुनि अपने मनमें समुझि सबको सारांश रामसनेहको भरतजी सहीकरि उरमें दृढ़करि राखे अरु लोकवेद मर्यादाको दोष गुण की गति न चित्तते चाहनाकियो न नेत्रनते चाहना कियो ३ ॥

मू०। रागरामकली ॥ रघुनाथतुम्हारेचरितमनोहर गावतसकलअवधवासी ॥ अतिउदारअवतारमनुजवपु धरेब्रह्मअजअविनासी १ प्रथमताड़काहतिसुबाहुवधि मखराख्योद्विजहितकारी ॥ देखिदुखीअतिशिलाशापवश रघुपतिविप्रनारितारी २ सबभूपनकोगर्वहरेउहरि भंज्योशम्भुचापभारी ॥ जनकसुतासमेतआवतगृह परशुरामअतिमदहारी ३ तातवचनतजिराजकाजसुरचित्रकूटमुनिवेषधरेउ ॥ एकनयनकीन्होंसुरपतिसुत वधिविराध ऋषिशोकहरेउ ४ पंचवटीपावनराघवकरि शूर्पणखाकुरूपकीन्हों ॥ खरदूषणसंहारिकपटमृग गृध्रराजकहँगतिदीन्हों ५ हतिकबन्धसुग्रीवसखाकरि बेधेतालबालिमारेउ ॥ वानररीछसहायअनुजसँग सिंधुनांघियशविस्तरेउ ६ सकलपुत्रदलसहितदशानन मारिअसुरसुरदुखटरेउ ॥ परमसाधुजियजानिविभीषण लंकापुरीतिलकसारेउ ७ सीताअरुलक्ष्मणसँगलीन्हे औरोजितेदासआये। नगरनिकटविमानआयोसब नरनारीदेखनधाये ८ शिव

विरंचिशुकनारदादिमुनिअस्तुतिकरतविमलबानी॥ चौद
हभुवनचराचरहर्षित आयेरामराजधानी ९ मिलेभरत
जननीगुरुपरिजनसहितपरमआनन्दभरे । दुसहवियोग
जनितदारुणदुख रामचरणदेखतबिसरे १० वेदपुराण
विचारिलगनशुभमहाराजअभिषेककियो ॥ तुलसिदास
जियजानिसुअवसरभक्तिदानतबमांगिलियो ११ ॥

टी० । हे रघुनाथजी तुम्हारे मनोहर चरितनको सब अवधवासी प्रेमते गानकरत यहि ग्रन्थमें माधुर्यलीलाहै ताते चरित मनोहरकहे अज अजन्म अविनाशी नाशरहित ऐसे ब्रह्मको सारांश राम ते अतिउदार महादानी भूमि पै अवतीर्ण ह्वै नरको ऐसो रूप धारण करयो १ ते कौन चरित करे प्रथम ताड़का मारे ते भवअवतार को प्रभाव सूचितभयो ताते प्रथम लिखे अरु याही द्वार सातोंकाण्ड को चरित्र सूचनकीन ता चरित्रको सब अवधवासी गावत द्विज विश्वामित्र के हितकारी हैं सुबाहुको मारि यज्ञकी रक्षाकीन शापवश शिलाभई ताको अतिदुःखित देखि रघुनाथजी गौतमनारि अहल्याको उद्धारकीन २ जनकपुर में शिवधनुष तोरि नृपन को अभिमान हरि विवाहकरि श्रीजानकी जी सहित आवत मगमें परशुरामजीको मद खण्डनकीन ३ पिता को वचन मानि राज्यतजि चित्रकूटमें मुनिको वेषधरे जयन्तको एकनेत्र फोरे विराध को वधकरि ऋषिनको दुःखहरे ४ शुक्रका शाप उद्धारकरि पञ्चवटी पावन करि शूर्पणखा को कुरूपकरि खर दूषण को संहारकरि कपटमृग मारीच मारि गीधको मुक्ति दीन ५ कवन्धको मारि सुग्रीव ते मित्रता करि तालवृक्ष वेधि बालिको मारि वानर रीछकी सेना लक्ष्मणजी सहित समुद्रमें सेतु बांधि यशको विस्तारकरयो ६ सेनपुत्रकुलसहित असुर रावण को मारि देवतन के दुःखटारे विभीषणको परमसाधुजानि लङ्कापुरी

की राज्यको तिलक दियो ७ सीता लक्ष्मणसहित अपर वानर रीछआदि जे दास तिन सहित पुष्पक विमानपर आरूढ़ह्वै अवध के निकट आये पुरके नर नारि देखिबेको धावतभये ८ शिव ब्रह्मा शुक नारदादि मुनीश्वर विमलवाणीते स्तुति करत हैं श्रीराम राजधानीको आये जानि चौदहों भुवनके चराचर हर्षित भये ९ गुरु वशिष्ठ जननी कौशल्यादि परिजनसहित भरतजी जिनको चाहतरहे ते प्रभु मिले ताते परमआनंद भरे हैं काहेते प्रभु के वियोग करिकै जनित उत्पन्न जो दुसह दारुण दुःख सो श्रीरघुनाथजी के चरणकमल देखे ते विसरिगयो १० वशिष्ठजी वेदपुराणते विचारि शुभ लग्न में महाराज कोशलेन्द्रकुमारको अभिषेक कही राजसिंहासनपर बैठाये सो शुभ अवसर जानि भक्ति दान तुलसीदास मांगिलियो ११ ॥

कवित्त ॥

सान्द्रनीलवारिदाभविभ्रदंशविमलांग मुकुटप्रकाशकर्णिकारगण्डभालहे । पूरणमयंकमुखनासिकाम्बुजाक्षश्रीवबृषभोन्नदंशपीन बाहुचापशार्ङ्गहे ॥ विस्तृतोरनागमणिदामनाभिरोमपांतिक्षौमवस्त्रधारमध्यलयेतूनतत्रहे । जंघाजानुऊरूरंभअंबुजांघ्रिभृङ्गरम्यरूपराघवेन्द्रबैजनाथतंनमामहे ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितासियवल्लभपदशरणागत बैजनाथविरचितायांगीतावल्यांमणिदीपिका टीकायामुत्तरकाण्डंसम्पूर्णम् ॥

तथा मोटे और चिकने काग़ज़ की और इसके काण्ड भी अलग २ मिलते हैं ॥

रामायण टीका रामचरणदासकृत किताबनुमा व पत्रानुमा ॥

इस विस्तृत टीकाको अयोध्यानिवासि रामचरणदासजी टीकाकारने निजदेशभाषा में करके रामायण को ऐसा सुगम करदिया कि जो थोड़ीभी विद्या रखते हों वे रामायणका पूरा आशय समझजावें और गूढ़ाशयों के समझने और भक्तिपक्षके बढ़ाने के लिये श्रुति पुराण और अन्य आचार्यों के श्लोकों से विभूषितकरके अतिसुन्दर मनोहर बनादिया कोई सन्देह अब तुलसीकृत रामायण की पुस्तक में इस टीका के देखने से रह नहींगया ऐसा विचित्र और विस्तृत टीका आजतक रामायण में नहीं हुआ है अवलोकन करने से अतीवानन्द होगा ॥

श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण

पूरे सातोकाण्ड अयोध्यापाठशाला के तृतीयाध्यापक पण्डित महेशदत्तकृत भाषा—यह वही पण्डितजी महाराज हैं जिन्होंने पहिले देवीभागवत और विष्णुपुराणका उल्था कियाहै दोभागों में यथातथ्य सुगमरीति से परिपूर्ण श्लोकके अनुसार हुआहै कोई शब्द भी छूटने नहीं पाया और श्लोक के जानने के लिये अंक भी लगादिये कि भ्रम न पड़े अक्षर टैपके बहुत पुष्ट डबलपैका अवकी दूसरी वार बड़ी होशियारी से छापीगई है ॥

रामायणतुलसीकृत टीका बैजनाथ कृत

इस उत्तमोत्तम नवीन विस्तृत टीकाको श्रीनवाबगंज प्रदेशान्तर्गत डेहवामानपुरके नम्बरदार बैजनाथजीने सकल आगम निगम पुराण स्मृति वेदान्तादि का सम्मत लेकर निर्मित किया है

प्रथम तो इस टीका में विशेष उत्तम वार्त्ता यह कियाहै कि सनातन भाषा अर्थात् देहातके बोलचालवाले शब्दों में अतिसरलता युक्त है दूसरे रामायण के किसी गूढ़ व सरल स्थल का आशय नहीं रहनेपाया कहांतक प्रशंसा करें—आजतक तो ऐसा टीका देखने में नहीं आया कि जिसके अवलोकनमात्रसे रामायणका अर्थ अच्छे प्रकार भासित होजायगा—इसके सिवाय इन्हीं महाशयने—रामायण कवितावली—बरवै—छप्पै—कुण्डलिया—दोहावली—विनयपत्रिका—रामायणसतसयी और यावत् श्रीगोसाईंजीकी काव्यहैं उन सबका तिलक सुन्दर आर्यभाषा में किया है—और वे सब इस छापेखाने में छापीगई हैं आशा है कि जो विद्वान् दृष्टिगोचर करेंगे परमानन्द होंगे ॥

रामनिवास रामायण

जानकीप्रसादजीकृत—जिसमें तुलसीकृतरामायण की रीति से सातोकाण्ड श्रीरामचन्द्रजन्मोत्सवबाललीला, विश्वामित्रयज्ञरक्षण, धनुर्यज्ञ, जानकीस्वयंवर, धनुर्भङ्ग, परशुरामसंवाद, वनगमन, जानकीहरण, रावणवध, भरतमिलाप, राज्याभिषेक, ज्ञानमार्ग रामगीता, प्रेमाधिकार, जानकीविजय, अश्वमेधयज्ञ, विनय नयनीति विचारादिकी ललित कथा अनेकछन्दों में वर्णित हैं ॥

रामायणअध्यात्मविचार भाषा

पं० यमुनाशंकरजी रचित जिसमें श्रीरामचन्द्रादि चारोंभाई और सर्व्वरामायण की पूरी कथा वेदान्तशास्त्र की रीति श्रुतिसमन्वयपूर्व्वक वर्णन कीगई है ॥